विद्वानों की

सम्मतियाँ।

२१ अप्रेल सन् १६१६ का

प्रताप लिखता है।

श्रीहरिदास कम्पनी की पुस्तकें

हिन्दी वहीखाता—मूल्य २) लेखक—बाबू कस्तूरमल बाँठिया। सब प्रकार के हिसाब-किताब के सीखने के लिये यह पुस्तक परम उपयोगी मालूम पड़ती है। बहीखाता, हुण्डी, पर्चा आँकड़ा, मीज़ान, जमा, पैठ, बैंक, चेक, लेखापाड़, सिलकबही, पक्कीबही आदि सभी बातों की इसमें बड़े अच्छे ढङ्ग से शिक्षा दी गयी है; कोई भी थोड़ी सी हिन्दी-मुड़िया जानने वाला मनुष्य अध्ययन करके एक अच्छा मुनीम बन सकता है। इसके लेखक इस विद्या के ग्रेजुयेट हैं और उन्होंने भूमिका में ये शब्द अत्यन्त मूल्यवान् लिखे हैं:—

"हम यह भूल से गये हैं कि, आज कल व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय वम् विश्वव्यापी है। विदेशी भाषा से, रीति रिवाज़ से तोल माप से एवम् आईन, मुद्रा-व्यवस्था आदि से तो हम लोग बिल्कुल कोरे हैं ही, परन्तु साथ में हम अपने ही देश की उपर्युक्त बातों के ज्ञान से भी अधिकांश में शून्य हैं।...यही कारण है कि, भारतवर्ष का सारा व्यापार विदेशियों के हाथ में है।"

समर्पण ।

नित्य पूज्य, प्रातःस्मरणीय
माताजी व पिताजी
को



इस प्रकार यह पुस्तक अपना प्रचार केवल मुनीमी करने वालों तक ही परिमित नहीं रखती, प्रत्येक देश-हितैषी को इस पुस्तक को एक बार पढ़ना चाहिये। क्योंकि संसार में एक नया औद्योगिक युग शुरू होने वाला है और उसका पहला सन्तरी 'इम्पीरियल प्रिफिरेंस' भारत के दर्वाज़े पर दस्तक दे रहा है! पुस्तक की छपाई तथा कागज़ भी बड़ा सुन्दर है। प्रत्येक पृष्ठ तस्वीर के माफिक मालूम पड़ता है!

"I have carefully read the book from cover to cover. I have no hesitation in pronouncing the book not only to be most interesting, but most instructive and highly useful. The Mahajani being ingraved in my family for more than five generations, I have been acquainted with the the Mahajani accounts from the nursery, so to say, but I have never had such a clear and systemetic view placed before me as your book does. It has been written with such a mastery of detail and bearing in mind the difficulties of strangers and novices that it will make the subject easy to grasp to any student. I am confident that it will meet a longfelt want."

R. B. Sardar. M, A., Kibe, M. V., M. R. A. S.,
Minister for Excise. Commerce and Industry,
Indore

द्वितीय संस्करण की



भूमिका

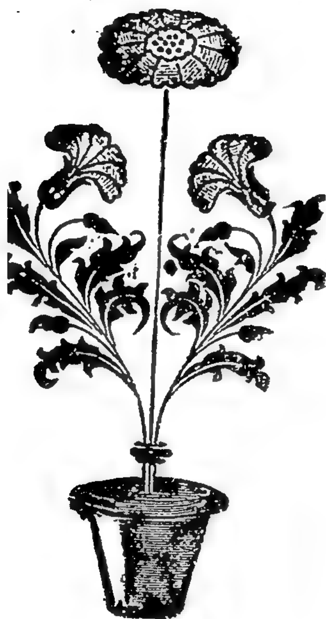
विज्ञ जनता के समक्ष 'हिन्दी बहीखाता' का यह द्वितीय संस्करण रखते हुए मुझे आज अत्यन्त हर्ष होता है। कई भूलों के होते हुए भी जो मुनीबी की शिक्षा की पाठ्य पुस्तकों में इसे मुख्य स्थान मिला है, वही इसके प्रति लोगों के प्रेम-दर्शन के लिये काफ़ी है। इस संस्करण में अधिकांश पृष्ठ फिर से लिखे गये हैं और जहाँ तक हो सका है, भूलें भी संशोधन कर दी गई हैं। इतना ही नहीं, वरन् कई आवश्यक बातें और भी बढ़ा दी गई हैं। नक़ल बही के जमा-ख़र्च के कतिपय उदाहरण बढ़ाये गये हैं। साथ ही इसके विद्यार्थियों के अभ्यास के लिए उदाहरण माला भी जोड़ दी गई हैं। मेरा विश्वास है कि विद्यार्थी को इस विषय के अभ्यास करने में यह अवश्य सहायक होगी। कतिपय उदाहरण हल भी कर दिये गये हैं।

परन्तु इस संस्करण के परिवर्द्धित अंश के प्रति दो शब्द कहना

आवश्यक है। विदेश से भारतवर्ष का व्यापार दिनों दिन बढ़ रहा है। इस बढ़ते हुए व्यापार में भारतवासी भी शनैः-शनैः अपना हाथ फैला रहे हैं। आज के बीस वर्ष पहले विदेशी व्यापार करने वाले भारतवासियों की कोठियाँ अगुलियों पर गिनी जा सकती थीं। परन्तु अब वह बात नहीं हैं। आयास और निर्यात दोनों ही प्रकार के व्यापार में भारतवासी उन्नति कर रहे हैं। परन्तु व्यापार का मुख्य आधार 'पड़तल' लगाने पर है। भिन्न-भिन्न देशों में भिन्न-भिन्न माप, तोल एवम् मुद्रा तो है ही, परन्तु एक ही वस्तु का भाव भी सर्वत्र भिन्न-भिन्न तोल व माप पर है। हमारे भारतवर्ष में रुई, बम्बई में खंडी से, जापान में निकलसे, अमरीका व इङ्गलेण्ड में पौंड से और मिश्र में कन्तार cantar से बिकती हैं। इसी प्रकार अन्य वस्तुयें हैं। अस्तु 'पड़तल' लगा सकने के लिये भिन्न-भिन्न देशों के माप, तोल, व मुद्रा आदि के ज्ञानकी पूर्ण आवश्यकता है। पाश्चिमात्य देशों में तो 'कामर्शल मिट्रालॉ-जी, नामकी यह एक पृथक् ही विद्या बन गई है। हमारे देशी भाइयों को इसका ज्ञान पाने के लिए, मेरे अनुमान से, अभी तक कोई भी साधन प्राप्त नहीं है। यह विषय बड़ा उपयोगी है। इसी-लिये मैंने इस प्राथमिक पुस्तक में 'बही खाते' की बड़ी-बड़ी बातों का समावेश न करते हुए इस विषय पर दो अध्याय बढ़ाना आव-श्यक समझा है। व्यापारियों को इससे सहायता मिलेगी, यह मैं नहीं कहता। परन्तु इस विषय के ज्ञाता विद्यार्थी में जिस एक गुण का होना अनिवार्य है, वह अवश्य प्रस्फुटित हो सकेगा।

'पड़तल' लगाने के लिये काग़ज़ पर काग़ज़ रंगने की उसे आवश्यकता न होगी। और न उसे अनेक समकालिक समीकरण पृथक्-पृथक् हल करने पड़ेंगे। आशा है जनता ज़रूर इसे अपनावेगी, और इसकी भूलों एवम् आवश्यकताओं से मुझे सूचित करती रहेगी।

अजमेर—मकर संक्रान्ति १९७८





"व्यापारे वसति लक्ष्मीः।"

यह कहावत आज प्रत्येक मनुष्य के मुंह पर चढ़ी हुई है। नौकरी के प्रति हर जगह घृणा बताई जाती है। स्वतन्त्रता का अपहरण करने वाली नौकरी को अपनी इच्छा से अब कोई स्वीकार करना नहीं चाहता। अपने परिश्रम के फल का विनिमय, चाहे वह परिश्रम नगण्य ही क्यों न हो, अकिञ्चित्कर वेतन से करने की किसी की भी इच्छा नहीं होती। यदि अपनी थोड़ी बहुत पूँजी से कोई ऐसा व्यवसाय अथवा व्यापार खड़ा किया जा सकता है कि, जिससे अपना और अपने परिवारके ख़र्चका पूरा पड़ सके, तो कोई भी नौकरी की इच्छा नहीं करता। यह हमारे लिये बड़े सौभाग्य की बात है। हमारे नवयुवकों की ऐसी प्रवृत्ति हमारे देश की भावी उन्नति का हमें

पूरी-पूरी आशा बंधा देती है। सच पूछिये तो, हमारा अधःपतन उसी समय से होने लगा है, जब से कि हम व्यापार की अपेक्षा दासता को भली तथा सुखप्रद मानने लगे हैं। यद्यपि हमारा निज का पूर्व इतिहास तथा संसार की समस्त बृहद् जातियों का इतिहास हमें व्यापार की श्रेष्ठता तथा सर्वोच्चता चिरकाल से दर्शा रहा था, तथापि हमारी प्रबल भावी हमें दासता की ओर ही खींच कर ले आयी है। परिणाम में, हम अपने पूर्व-गौरव को खोते हुए आज अवनति के अन्ध से अन्ध कूप में जा गिरे हैं! हमारा प्राचीन सार्वभौम राज्य आज कहाँ? और हमारी वह सर्व्वोच्च सभ्यता भी आज कहाँ? क्या-क्या कहें, हमारे पू वैभव का आज सब प्रकार से ह्रास हो चुका है। हमारे जीवन की अदनी से अदनी आवश्यकता के लिये भी दूसरों के मु ह की ओर लालसा-भरी तथा दीन दृष्टि से ताकनेकी आज हमारे लिये नौबत आन पहु ची है।

परन्तु हर्ष की बात है कि, समय ने अब पलटा खाया है। व्यापार और व्यवसाय की लहर प्रत्येक देश-सपूत के हृदय में आज हिलोरें मार रही है। आवश्यकता केवल इस ही बात की है कि, इस वैज्ञानिक युगमें, जिसके वाष्प और विद्यु च्छक्ति के अपूर्व आविष्कारों ने संसार के सब राष्ट्रों को एक दूसरे के सन्निकट और प्रतियोगिता में ला दिया है, उसे व्यापार करने की शक्ति सम्पादन करने के (अपटूडेट) सम-सामयिक साधनों से सुसज्जित किया जावे। प्रतियोगिता और प्रतिद्वन्द्विता की आधुनिक

वेगवती धाराओं के सामने प्राचीन शैली से बाँधे हुए व्यापार-गढ़ का टिकाव होना असम्भव है। कहने का तात्पर्य्य यह है कि, हम अपनी व्यापार-पद्धति में ज़माने के आविष्कारों का पूर्ण लाभ उठावें। समय-विभाग, परिश्रम-विभाग, औद्योगिक क्षमता आदि अर्थ-शास्त्रीय सिद्धान्तों का उनमें लाभदायी अनुकरण एवं अनुशीलन करें, तथा यह बात सदा स्मरण रक्खें कि, हमारे पाश्चात्य भाइयों ने इन्हीं आविष्कारों तथा सिद्धान्तों का समादर करते हुए, न कि हमारी तरह से अनादर करते हुए, समस्त संसार का व्यापार आज अपनी मुट्ठी में ले रक्खा है। जिन देश-हितैषियों ने सम्पत्ति-शास्त्र का कुछ भी अध्ययन किया है, वे इस बात को जानते हैं कि, आलपिन जैसी तुच्छ वस्तु बनाने के लिये इङ्गलैण्ड देश में सोलहवीं शताब्दी में ही परिश्रम को लगभग अठारह हिस्सों में बाँटा करते थे। आधुनिक समय में इससे भी सूक्ष्मतर परिश्रम एवं समय-विभाग उन देशों में औद्योगिक सफलता प्राप्त करने के लिये किया जाता होगा, यह बात इससे सहज ही हमारी समझ में आ सकती है।

जिस प्रकार श्रम-विभाग से व्यवसायों में हमारे पाश्चात्य भाइयों ने लाभ उठाया है, उस ही प्रकार व्यापार में भी वे लाभ उठा चुके हैं, उठाते हैं और उठाते रहेंगे। क्योंकि वे इस बात को भलीभाँति समझ चुके हैं कि, एक मनुष्य के ज़िम्मे एक काम कर देने से वह उसमें बड़ा दक्ष हो जाता है। उसकी नस-नस से वाक़िफ़ हो जाने के कारण ऐसी कोई कठिनाई फिर शेष नहीं

रहती, कि जिसके लिये उसे दूसरों के साहाय्य की अपेक्षा रखनी पड़े। वह स्वयं उसका रोग ढूँढ़ निकाल लेता है और स्वयं ही अच्छा भी कर लेता है इसके अलावा एक ही आदमी पर उस सारे व्यापार का उत्तरदायित्व नहीं रहता। एकही व्यक्ति समस्त व्यापार की देख-रेख अवश्य कर सकता है, परन्तु वही उसके प्रत्येक अङ्ग को उचित रीति से सम्पादन नहीं कर सकता। संसार में ऐसे अनेक उदाहरण मिलते हैं कि, एक आदमी में निरीक्षक एवं सञ्चालक की अच्छी योग्यता होती है, और दूसरे में आदेशानुसार कार्य्य करने की। प्रत्येक मनुष्य में मौलिकता पाई जाय, यह प्रकृति-नियम के विरुद्ध है। अतएव ऐसे व्यक्ति यदि पृथक्-पृथक् कार्य्य करें, तो उन्हें लाभ के बदले हानि उठानी पड़े, ऐसा भी भय रहता है। परन्तु इन दोनों की शक्तियाँ किसी एक कार्य्य के सम्पादन में यदि मिला दी जायँ, तो वह कार्य्य पूर्ण लाभप्रद हो सकता है।

जब हम समय-विभाग के विषय में अपनी तुलना अपने पाश्चात्य भाइयों से करते हैं, तो हमें अपने आप पर ही घृणा होने लगती है। हमारा जीवन भारकस पशुओं से भी कहीं-कहीं तो बदतर दीख पड़ता है। न खाने का पता, न सोने का पता, न धर्म्म का पता, और न कर्म का पता, न सभा है, न सोसाइटी, न पत्र बाँचना है और न लेख लिखना, न नाच है न रङ्ग, न शोक है न हर्ष, केवल लाओ-लाओ की ही हाय-हाय चहुँ ओर सुनाई पड़ती है। हमारे देशी व्यापारी प्रातःकाल छः बजे

उठ, अपने व्यापार में लग जाते हैं और रात के बारह बजे तक अनवरत परिश्रम से उसही की सेवा में लगे रहते हैं। पर शोक! कि १२ से १८ घण्टे तक लगा कर काम करते रहने पर भी, समय पर उनका काम पूरा नहीं होने पाता। इस कार्य्य-भार के कारण उन्हें न अपने स्वास्थ्य को बनाये रखने योग्य व्यायाम करने जितना समय ही अपने घर पर मिलता है और न कभी वे अपने घर से बाहर स्वच्छ वायु में घण्टे-आध घण्टे टहलकरही मन बहला सकते हैं। जब तक लेखक को उनके सहवास में रहने का सौभाग्य प्राप्त न हुआ था, तब तक उसका विश्वास था कि, इस देहशोषी परिश्रम के फल-रूप उन्हें व्यापार में भी असीम लाभ होता होगा। परन्तु लेखक का यह विश्वास निरा अविश्वास एवम् भ्रम ही नहीं रहा, वरन् ठीक-ठीक स्थिति का परिचय पाकर निराशा में परिणत हो गया है। चाहे बाहर से हम पूर्ण सुखी तथा धनोपार्जन करते मालूम पड़ें, परन्तु हमारा आन्तरिक जीवन बड़ा ही शोचनीय हो रहा है। हमारा अधिकांश लाभ सट्टे का लाभ है। हम नाम के व्यापारी कहलाते हैं, पर यथार्थ में दलाल एवं तुच्छ मज़दूर हैं। विदेशियों से सस्ता ख़रीद कर महँगा-बेचने-मात्र ही को हम व्यापार समझ बैठे हैं। दलाली और मज़दूरी से कलकत्ता, बम्बई आदि बड़े-बड़े नगरों के ख़र्च को पूरा पटकने के लिये हमको न जाने कितने प्रपञ्चों से अपने ही देश-भाइयों की जेबें कतरनी पड़ती हैं! दूध की मलाई न मिल सकने के कारण, जिस प्रकार दो बिल्लियाँ जले हुए दूध की खुरचन् (कढ़ाई में लगा हुआ

शेषांश) के लिये झगड़ती हैं, हमारे देशी व्यापारियों की भी ठीक वही दशा है। प्रबल प्रतियोगिता तथा प्रतिद्वन्द्विता के कारण एक व्यापारी दूसरे व्यापारी के ग्राहकों को तोड़, अपनी आय बढ़ाने की निरन्तर चेष्टा में लगा रहता है, परन्तु अन्य क्षेत्र में सचेष्ट नहीं होता। ग्राहकों को अपनी ओर आकर्षित करने के लिये आढ़त, दलाली आदि ख़र्च कमती लगाने और बट्टा (Discount) ज़ियादा देने का लोभ उनको दिलाया जाता है। वे भी 'लोभी गुरु लालची चेला, दोनों खेले दाँव—वाली उक्तिके अनुसार इस दिखावटी लाभ से ललचाये जाकर एक व्यापारी को छोड़ दूसरे के यहाँ सदा भागते फिरते हैं। प्रतियोगिता के बुरे परिणाम को रोकने के लिये यद्यपि आजकल बड़े-बड़े शहरों में व्यापारी-संस्थायें (Chambers of Commerce) स्थापित हो चुकी हैं, परन्तु सुधार अभी बहुत दूर है।

हम लोग हरेक बात की क़ीमत पैसे से आँका करते हैं। ख़रीदते समय हम कमती पैसा देना चाहते हैं, और बेचते समय अपनी वस्तुका ज़ियादा पैसा लेना चाहते हैं। हरेक बात चाहे वह परिश्रम (Skilled or unskilled labour) हो अथवा वस्तु (Commodity) हो, जिसके लिये हमें थोड़े दाम ख़र्चने पड़ें हम वही ख़रीदना पसन्द करते हैं। चाहे उसकी उपयोगिता (Utility) हमारे ख़र्च किए हुए पैसे से कई दर्जे कम हो, तो भी हम थोड़ी सी ज़ियादा रक़म ख़र्च कर अच्छी वस्तु अथवा निपुण परिश्रम (Efficient labour) नहीं ख़रीदते। पैसे को

धाता-विधाता मानने की हमारी कुछ आदत सी होगई है। इस ही प्रकार हम अपने व्यापार का नफ़ा जहाँ तक बन पड़े, अपने ही लिये संरक्षित रखना चाहते है। हम यह नहीं चाहते कि, हमारे व्यापार में हमारा भाई योग देकर अपना और हमारा दोनों का भला करे। इससे हम दोनों ही अपनी आजीविका उपार्जन कर लें, इस स्वार्थपरता के कारण हमारे देशी व्यापारी रात-दिवस अकेले ही परिश्रम करते हैं। ज़ियादा हुआ तो एक वैतनिक मुनीम बड़े शहरों के लिये रख लेते हैं। बढ़ते हुए व्यापार के लिये ऐसा प्रबन्ध योग्य होगा अथवा नहीं, इस बात का तनिक भी विचार नहीं करते। वे उसे अपने व्यापार का भागीदार बना नफा-नुक़-सान का उत्तरदायित्व उसके साथ बँटाने की अपेक्षा उसे नौकर रखना ठीक समझते हैं। नित्य प्रति १२ से १८ घण्टे तक इस तुच्छ वेतन के लिये तनतोड़ परिश्रम वह मुनीम करेगा अथवा नहीं इस बात का भी हमारे देश के व्यापारी कभी विचार नहीं करते। इस समय ये लोग ठीक अमेरिकादि देशों के उन सरदारों सरीखे हो जाते हैं कि, जो गुलामों को पशुओं से भी बदतर काम में लाते थे। इन मुनीमों और गुलामों में अन्तर केवल इतना ही दीख पड़ता है कि, उनकी सेवा प्रतिबन्धित नहीं होती, तथा सेठ लोग इन्हें अपना सारा व्यापार-भार सौंप देते हैं। ये मुनीम लोग सेठों की भाँति अपनी न्यायतत्पर बुद्धि तथा सत्यनिष्ठा अपने घरों के तलघरों में बन्द कर मुनीमात करने आते हैं। क्योंकि हमारे भारतीय व्यापारियों का ऐसा विश्वास है कि, व्यापार झूठ-अन्याय

आदि बातों के बिना सफल नहीं होता। ये मुनीम लोग काम पर आते ही इस बात की चेष्टा में लग जाते हैं कि, थोड़े अर्से के लिये मिले हुए इस स्वर्ग-राज्य में वे अपने दरिद्री घर को किस प्रकार मालामाल कर सकते हैं। अपने नियमित वेतन में ही सन्तोष करनेवाला कभी मालामाल हो गया हो, ऐसा उन्हें कोई भी दृष्टान्त नहीं सुन पड़ता। अतः कुछ दलालों की दलाली में से भाग बँटा कर, कुछ आढ़तियों के काम-काजमें गबन कर, और कुछ घरू सट्टा लड़ाकर, वे प्रतिवर्ष अपने वेतन से कई गुना अधिक धन अपने घरोंमें ला पटकने का प्रयत्न करते हैं। उनके मालिक सेठ भी जान बूझ कर इन करतूतों से आँख-मिचौनी खेल जाते हैं। उनका घर मालामाल होते हुए यदि मुनीम का घर भी मालामाल हो तो वे उसकी कुछ चिन्ता नहीं करते। मुनीम के इस अन्याय-पूर्ण व्यवहार से चाहे उनकी सत्कीर्ति में बट्टा लग जावे, परन्तु उन्हें आर्थिक लाभ होना चाहिये। धन्य है उनकी बुद्धि! और धन्य है उनका धन-प्रेम!!

आजकल व्यापार करने में पूँजी का बड़ा भारी प्रश्न है। नवीन शैली पर थोड़ी पूंजी से व्यापार नहीं चलाया जा सकता, उन्नति-शील संसार से नूतन शैली पर व्यापार करने के लिये लाखों ही नहीं, वरन् करोड़ों और अरबों रुपयों की एकत्रित पूँजी की आवश्यकता है। पौराणिक भारतवर्ष की एक-एक नगरी में चाहे असंख्य कोट्याधीशों का निवास रहा हो, परन्तु आज के आर्य्या-वर्त्त में, जिसमें हम निवास करते हैं, करोड़पतियों की अँगुली पर

गिनी जानेवाली संख्या ही शेष है। इस हालत में नवीन शैली पर व्यापार करने योग्य पूंजी जुटाने का केवल एकही मार्ग दीख पड़ता है; और वह यह है कि, हम सब अपनी-अपनी शक्ति के अनुसार धन देकर इच्छित व्यापार करने योग्य पूँजी का संग्रह करें। भारतवर्ष एक ग़रीब देश है, इस बात को कोई भी अस्वीकार नहीं करता। इसके दुःखी बालकों को दोनों समय भर पेट भोजन भी नहीं मिलता। सरकारी रिपोर्टों में लार्ड क्रोमर, लार्ड कर्जन प्रभृति सज्जनों ने भारत-जनता की औसत वार्षिक आय यद्यपि रुपया ३०) के लगभग कूती है, परन्तु इससे यह सिद्ध नहीं होता कि, कोई भी भारतीय इस से कम आय वाला अथवा आय-शून्य नहीं है। भिखारियों की, चोरों की, गुण्डों की, तथा अन्य प्रकार से दूसरों की आय पर छापा मार अपनी जीवन-लीला समाप्त करने वाले दुःखी जीवों की संख्या भी इस देश में कम नहीं है; तथापि औसत वार्षिक आय रु० ३०) मान कर सरकारी जेलों में बन्द बन्दियों के वार्षिक ख़र्च से यदि इसकी तुलना करें, तो हम अपने भाइयों की दीन-हीन दशा का परिचय ठीक-ठीक पा सकते हैं।

सरकारी कैदखानों में रक्खे जानवाले कैदियों का वार्षिक खर्च १९१५

प्रान्त	खूराक	बिस्तर आदि तथा कपड़े	औषधादि	योग
१ मध्यप्रदेश और बरार	रु० ३१-४-६	रु० ४-२-११	रु० २-१-४	रु० ३७-६-०
२ संयुक्त प्रान्त	„ ४१-३-६	„ ४-७-३	„ २-११-८	„ ४८-५-११
३ बिहार और उड़ीसा	„ ४३-६-६	„ ४-१०-१०	„ ६-१३-१	„ ५५-१-८
४ बंगाल प्रान्त	„ ४७-७-०	„ ६-२-३	„ ७-१०-१०	„ ६१-४-१

उपर्युक्त कोष्टक से हमें ज्ञात होगा कि, हमारे देश में ऐसा कोई भी प्रान्त नहीं है कि, जहाँ दुःखी से दुःखी जीवन निर्वाह करने का ख़र्च भी रु० ३०) वार्षिक से कम पड़ता हो। मध्यप्रदेश और वरार में २५.२ संयुक्त प्रान्त में ६१.२५, विहार और उड़ीसा में ८४.७, और बङ्गाल प्रान्तमें १०४.१६ फी सदी आयसे ज़ियादा जीवन निर्वाह का ख़र्च है, और सो भी दुःखीसे दुःखी जीवन का। यह बात तो साधारण समयों की है। आजकल जैसे असाधारण समयोंमें, जब कि मोटे से मोटे कपड़ेका भाव रु० २) फी रतल (३६ तोले) अथवा ।।।) फी गज़ का है, तथा गेहूँ फी रुपया ५ सेर है, जीवन-निर्वाह का ख़र्च आय से किस क़दर वढ़ा-चढ़ा होगा, यह पाठक स्वयं ही अनुमान कर सकते हैं। सब चीज़ों की कीमत दुगनी, चौगुनी, और किसी-किसी की तो सौ गुनी तक वढ़ गई है। परन्तु आय (Real wages) वढ़नेके वदले घट गई है, और घटती ही जा रही है। मौद्रिक आय चाहे हमें वढ़ती मालूम पड़े, परन्तु पैसे की क्रियात्मक शक्ति घट जाने से हमारी सच्ची आय (Real wages) वहुत कुछ घट गई है। अस्तु; हमारे ही देशवासियों की वचत की सहायता से नूतन शैली पर व्यापार चलाने योग्य पूँजी इकट्ठी कर सकने की इस दशा में आशा ही नहीं की जा सकती। अब रही उन धनिकों की वात, जिनकी आय औसत से कई सौ गुनी वढ़ी-चढ़ी है। इनकी संख्या भी इस ग़रीव देश में कुछ कम नहीं है। प्रत्येक समाज के इन धनिकों का सम्मिलित धन इतना तो अवश्य है कि, उसके एकत्रित उपयोग से उस

समाज के बालकों का पेट अच्छी तरह भरा जा सकता है। परन्तु शोक यह है, कि, हमारे धनिकों में बन्धु-प्रेम, भ्रातृ-सेवा, और देश की दाझ का अभी तक तनिक भी स्पर्श नहीं हो पाया है। वे देश के हित के लिये अपने-अपने नाम की पीढ़ियाँ चलाना छोड़, सबके सम्मिलित द्रव्य से कोई वृहत् व्यापारालय, उद्योग-शाला प्रभृति स्व-परोपकारी संस्थाएं खोलना नहीं चाहते। शिक्षा से अनभिज्ञ होने के कारण शिक्षित जनों की सलाह से वे न तो स्वयं लाभ उठाते हैं और न अपने द्रव्य से दूसरों ही का भला करते हैं। देशमें धनोत्पादन के तीन मुख्य साधन,—भूमि, परिश्रम और पूँजी की बड़ी ही शोचनीय दशा है। इस विषय में हमारे धर्म-गुरुओं का भी कुछ दोष है। उनका उपदेश सदा मुक्ति अथवा मोक्ष के प्राप्त करने का ही हुआ करता है। वे उपदेश करते हैं कि, इस मुक्ति अथवा मोक्ष प्राप्त करनेका सहज-सिद्ध साधन केवल त्याग अथवा निवृत्ति मार्ग ही है। व्यापार से लक्ष्मी बढ़ती है। बढ़ी हुई लक्ष्मी तृष्णा को बढ़ाती है, और तृष्णा-निवृत्ति मार्ग एवं मोक्ष के लिये अजेय बाधा है। मनुष्य जीवन के अतिरिक्त और किसी योनिमें मोक्ष प्राप्त नहीं किया जा सकता। अव्याबाध सुख के धाम मोक्ष को प्राप्त करना प्रत्येक मनुष्य का आदि कर्त्तव्य होना चाहिये। जो इसके लिये प्रयत्नशील नहीं होता, उसका मनुष्य जन्म ही वृथा है। दान इत्यादि पुण्य के हेतु हैं। मोक्ष पुण्य-पाप दोनों ही की निर्जरा से मिलता है इत्यादि—गृहस्थ-स्थिति का विचार किये बिना, दिये हुए इस उपदेश का फल यह होता है

कि, भव-भव भटकते हुए मुमुक्षु जीव जहाँ तक हो अपना कार्य संसार में संकुचित रखते हैं, और अपने सहृदय मित्रों को भी ऐसा ही करने का सदा उपदेश देते रहते हैं। इसके अतिरिक्त वे अध्यात्म मार्ग भी ग्रहण नहीं कर पाते। परिणाम में वे गृहस्थ-पद से भ्रष्ट होकर अपने जीवन को नीरस बना डालते हैं और देश की आर्थिक स्थिति को भी भारी धक्का पहुँचाते हैं।

प्यारे देश-बान्धवो! हमारे देश की तथा उसके व्यापार एवं व्यापारियों की संक्षिप्त में उपर्युक्त शोचनीय तथा गर्हणीय दशा हो रही है। उसको सुधारने का प्रबन्ध यदि न होगा, तो हमारा उत्थान होना असम्भव है। कहावत है कि "सर्वेगुणाः काञ्चन माश्रयन्ति"; और कञ्चन का लाभ व्यापार से होता है। अस्तु, इसके सुधारने के लिये शिक्षा-प्रचार और विशेषतः व्यापारी-शिक्षा प्रचार की आवश्यकता है। व्यापारी शिक्षा अन्यान्य शिक्षाओंकी तरह नहीं दी जा सकती, यह विश्वास एक अन्ध विश्वास एवं गर्ह्य है। सब शिक्षाओं की भाँति इसके भी Theoretical and Practical यानी सैद्धान्तिक और व्यावहारिक दो भेद हैं। व्यावहारिक शिक्षा का पूर्ण ज्ञान विद्यालय में नहीं कराया जा सकता, यह बात सत्य है। परन्तु वहाँ सैद्धान्तिक ज्ञान बड़ी अच्छी तरह से प्राप्त हो सकता है। और सिद्धान्त-ज्ञाता व्यवहारको असैद्धान्तिक की अपेक्षा बहुत शीघ्र ही सीख और समझ लेता है, इस बातको कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। इङ्गलैण्ड, जर्मनी अमेरिका और जापान आदि देशों में इस शिक्षा का आजकल किस प्रकार

उत्तरोत्तर वृद्धिङ्गत प्रचार हो रहा है, यही हमारे भाइयों की उपर्युक्त दलील को काटने के लिये काफ़ी है। राष्ट्र-निर्माताओं का उपर्युक्त दलील से अब विश्वास उठ चुका है, यह हर्ष की बात है। उनकी प्रेरणाओं से हमारे विश्वविद्यालयों में इस प्रकारकी शिक्षा दिये जाने का प्रवन्ध सर्वत्र किया जा रहा है। मुख्य-मुख्य शहरों में व्यापारी कौलेज भी स्थापित हो चुके हैं। परन्तु इन सवका लाभ हम सबको तब तक प्राप्त नहीं हो सकता, जबतक कि उक्त विद्यालयोंमें शिक्षा पाये हुए शिक्षित जन अपने ज्ञानको देश-भाइयों के हितार्थ भावी राष्ट्र-भाषा हिन्दी में लिपिबद्ध न करें, और इस शिक्षा के प्रचार के लिये जनता की ओर से कुछ स्वतन्त्र प्रयास न हो। हिन्दी-भाषा की पिछले वीस वर्षों में अतुलनीय उन्नति हुई है। इसके प्रत्येक अङ्गको सम्पूर्ण वनाने की चेष्टा की जा रही है, परन्तु दुःख है कि काव्य, साहित्य, अलङ्कार आदि जिन विषयों का पहले ही से इसमें ठाठ था, फिर भी वे ही विषय वृद्धि पा रहे हैं। वैज्ञानिक तथा व्यापारिक अङ्ग को पूरा करने की ओर अभी तक हम लोगों की जैसी चाहिये, वैसी दृष्टि नहीं गई है। हिन्दी-साहित्य-सम्मेलन आज ग्यारह वर्ष से हिन्दी-साहित्य का प्रचार कर रहा है। वार्षिक अधिवेशनों पर पढ़े जाने के लिये साहित्य-विषयक अच्छे गवेषणा-पूर्ण लेख लिखाकर मँगाये जाते हैं, और पढ़कर सुनाये भी जाते हैं। सम्मेलन की ओर से कुछ परीक्षाएं भी ली जाती हैं, जिनमेंअव हमारे नवयुवक अधिकाधिक वैठ रहे हैं। परन्तु व्यापार जैसे साहित्याङ्ग को पूर्ण करने के लिये

हमारा लक्ष्य अभी तक नहीं खींचा गया है। क्या यह हमारे लिये एक लज्जास्पद बात नहीं है? जो व्यापार हमारी उन्नतिके प्रत्येक कार्य में तथा हमें संसार के समस्त राष्ट्रों में समान पद दिलाने में शक्तिशाली है, उस ही के प्रति यदि हमारी ऐसी उपेक्षा रहे, तो फिर हम कैसे उन्नत हो सकते हैं? लार्ड बेकन जैसे महामति ने सोलहवीं शताब्दी में इङ्गलैण्ड की व्यापारोन्नति के विषय में जो अपनी पुस्तक (The Advancement of learning)में अपने हृदयोद्गार लिखे हैं, वे ही उद्गार आज हमारे देश के प्रत्येक हृदयमें से निकलें, तो इसकी उन्नति कुछ दूर नहीं है। उसने लिखा है:—

"शिक्षित लोगों ने व्यवसाय और व्यापार-नीति के विषय पर अपने विचारों को आज तक पुस्तक-रूप में एकत्रित नहीं किया है। इस अवहेलना के कारण सिर्फ पण्डितों की ओर ही नहीं, परन्तु शिक्षा के प्रति भी लोगों की श्रद्धा दिनों-दिन घट रही है। विद्वानों को व्यवसाय-ज्ञान-शून्य देख कर लोग बहुधा कहा करते हैं कि, पुस्तक-ज्ञान-व्यवहार-चातुर्य्य ये दोनों सहकारी नहीं हैं। गृहस्थाश्रम में मनुष्य को व्यवहार-नीति, राजनीति, और व्यवसाय-नीति,—इन तीनों का ज्ञान प्राप्त करना आवश्यक है। इनमें से पहली अर्थात् व्यवहार-नीति को तो पण्डित लोग अनादर की दृष्टिसे देखते हैं। वे कहते हैं कि, एक तो वह धर्म-नीति की अपेक्षा नीचे दर्ज़े की है, दूसरे वह चित्त स्थिरता के लिये शत्रु के समान है। राजनीति के विषय में यह बात है कि, जब शिक्षित लोगों को प्रजा-शासन का अवसर मिल जाता है, तो वे इस कार्य

को योग्यता पूर्वक चला सकते हैं। परन्तु ऐसा अवसर बहुत कम लोगों को और क्वचित् ही मिलता है। अब रहा व्यवसाय, सो इस विषय का ज्ञान प्राप्त करने के लिये कोई विशेष साधन नहीं है। ऐसे ग्रन्थ, जिनमें इस विषय का विस्तार-पूर्वक वर्णन किया गया हो, आज तक लिखे ही नहीं गये हैं। केवल छोटे-मोटे लेखों के अतिरिक्त और कोई पुस्तक नहीं है। ऐसे महत्व के विषय में, जिसका मनुष्य को अपने जीवन में पग-पगपर काम पड़ता है, छोटे-मोटे लेखों से काम नहीं चल सकता। फलतः बेचारे शिक्षित लोग इस विषय से प्रायः अनभिज्ञ रह कर जन-साधारण में हँसी के पात्र बनते हैं। यदि इस विषय पर अन्यान्य विषयों की नाईं ग्रन्थ निर्माण किये जायँ, तो मुझे विश्वास है कि, पढ़े-लिखे लोग उन्हें पढ़ कर थोड़ा अनुभव प्राप्त कर लेने पर, ऐसे लोगों से जो केवल अनुभव के सहारे ही काम चलाते हैं, अधिक योग्यता प्राप्त कर सकेंगे। जन साधारण के क्षेत्र में ही यदि शिक्षित लोग उन पर विजय प्राप्त कर सकें, तो कितना अच्छा हो।" लेकिन इतना ही नहीं, व्यापारी-शिक्षा की हम बुरी तरह उपेक्षा करते रहे हैं, इससे हमारे देशको बहुत हानि उठानी पड़ती है, इस बात को अब कोई अस्वीकार नहीं कर सकता। इस शिक्षा की ओर हमारा रुख पलटना चाहिये और वह भी केवल इसीलिए नहीं, कि यह उपयोगी है; वरन् इसलिए कि आगे आनेवाला ज़माना पहले के गये-गुज़रे ज़माने से बिल्कुल भिन्न है। गत विश्वव्यापी महायुद्ध ने संसार की सब ही बातों

में परिवर्त्तन कर दिया है। समस्त संसार अब एक नये विश्व-व्यापी महायुद्धकी आशङ्का कर रहा है, जो इससे कई गुणा भीषण होने वाला है। बड़े-बड़े अर्थशास्त्रियों ने इस समर को अनिवार्य बतलाया है। यह युद्ध बारूद गोलों का, हाविड-जर्स और सबमेरिनों का न होकर व्यापारी महासमर होनेवाला है। इस युद्ध में भाग लेने से एक भी राष्ट्र नहीं बच सकता। चाहे वह समान हो अथवा असमान—उसे इस युद्ध में ज़बरन भाग लेना होगा, और अपने अस्तित्व के प्रश्न को सब राष्ट्रों के सामने ही हल करना होगा।

इस महायुद्ध की तैयारियाँ कौन राष्ट्र किस प्रकार कर रहा है, यह बताने का अब अवसर नहीं है। प्रत्येक राष्ट्र, चाहे वह पहले से कितना ही तैयार हो, इस युद्ध की तैयारी के लिये व्यग्र है। क्या हमारा भारतवर्ष अब भी सुषुप्त अवस्था में ही ग़र्क़ रहेगा? और भावी युद्ध की कुछ भी तैयारी न करेगा?

इङ्गलैण्ड देश का व्यापार अब ही नहीं, वरन् बहुत वर्षों से सब युरोपीय राष्ट्रों की अपेक्षा बढ़ा-चढ़ा है। वहाँ व्यापारी-शिक्षा के प्रचार के लिये जनता और सरकार दोनों ही के सतत प्रयास जारी हैं; तथापि वहाँ के विद्वान् लोग समय-समय पर व्यापारी शिक्षा-प्रचार के लिये अपने देशवासियों के मीठी चुटकियाँ भरा करते हैं। कुछ ही वर्षों पहले मनचेष्टर नगर के एक प्रसिद्ध नेता ने तो यहाँ तक कह दिया था कि, "हमें विदेशी बाज़ारों में ऐसे व्यापारियों के सामने प्रतिस्पर्धामें खड़ा होना पड़ता है कि,

जो हम से विशेष उत्कृष्ट व्यापारी शिक्षा एवम् आयुधों से सुसज्जित हैं। इसका परिणाम भी वही होता है कि जो होना चाहिए, अर्थात् पारितोषिक भी उन्हीं को मिलता है, जो सुतीक्ष्ण बुद्धिवाले और सुशिक्षित हैं। हम यह भूल गये हैं कि, व्यापार अब दिन प्रतिदिन अन्तर्राष्ट्रीय एवम् विश्वव्यापी होता जा रहा है। स्पर्श बिन्दु बढ़ रहे हैं। इङ्गलैण्ड का चारों ओर समुद्र से घिरा होना भी हमारे लिये एक प्रकार की आत्म-हत्या के समान है। और हमारा विदेशी भाषा से, रीति-रिवाज़ से, मुद्रा-व्यवस्था से, तोल माप से, आईन आदिसे अभिज्ञ होना इस द्वैपिक विच्छेद के (Insular Isolation) दुष्परिणाम की ओर भी बढ़ रहा है।

उपर्युक्त कथन हमारे देश के लिए तो बिल्कुल ही सत्य है। भारतवर्ष भी तीन ओर से समुद्रसे और एक ओर ऊँचे से ऊँचे पर्वतों से घिरा होने के कारण, इङ्गलैण्ड की भाँति एसिया महाद्वीप से एक प्रकार से विच्छिन्न है। यहाँ के व्यापारीगण सट्टे ही समस्त देश का व्यापार मान बैठे हैं। परन्तु सट्टा और व्यापार बिल्कुल भिन्न है। हम यह भूल से गये हैं कि, आजकल व्यापार अन्तर्राष्ट्रीय एवम् विश्वव्यापी है। विदेशी भाषा से, रीति-रिवाज़ से, तोल-माप से एवम् आइन, मुद्रा-व्यवस्था आदि से तो हम लोग निरे कोरे हैं ही, परन्तु साथ में हम अपने ही देश की उपर्युक्त बातों के ज्ञान से भी अधिकांश में शून्य हैं। अतएव जो सूचना इङ्गलैण्ड जैसे सुपठित एवम् धनी देश के लिए दीगई थी, यदि

हम अपने ही लिए दी गई समझें तो कुछ हानि नहीं है। हमारा देश तो इङ्गलैण्ड की अपेक्षा धन व ज्ञान से शून्यवत् है।

अस्तु, इस स्थिति को सुधारनेके लिए एक ऐसे परिषद् की शीघ्र ही स्थापना की जानी चाहिए कि, जो हमारे देश के भावी स्तम्भ नवयुवकों को सभ्य संसार के साथ व्यापार करने योग्य, और सभ्य समाज के बराबर स्थान दिलाने योग्य बना दे। इससे दाल-रोटी की अतिशय महँगाई के इस ज़माने में हमारे नवयुवकों की अपने कुटुम्ब के भरण-पोषण की कठिनाइयाँ स्वतः ही दूर हो जायँगी। अन्य जाग्रत राष्ट्रों की भाँति ऐसे परिषदों की स्थापना हमारे इस अभागे देश में भी कभी की होजानी चाहिए थी, परन्तु यह हमारा ही दुर्भाग्य है कि, साधारण शिक्षा की भी यहाँ पर अभी तक शोचनीय दशा है। शिक्षा महगी होने के साथ-साथ दिनों-दिन कठिन एवम् जीवनशोषी होती जा रही है। जब हम भारतवर्षीय विश्वविद्यालयों के परीक्षा-परिणामों की ओर दृष्टि-पात करते हैं, तो हृदय दहल उठता है। लगभग ६० से ६५ प्रति सैकड़ा नवयुवकों की अभी प्रस्फुटित जीवनकली नादिरशाही तलवार से नष्ट कर दी जाती है। परन्तु संसारी जीवन्मुक्ति का एकमात्र फाटक ये ही विश्वविद्यालय होने से, इन्हीं के प्रति सिर की व्यर्थ टक्कर मारना और अन्त में जीवन्मृत होकर अन्त तक दुःखी जीवन बिताना ही हमारे नवयुवकों के दुर्भाग्य में बदा रहता है। अन्तर्राष्ट्रीय व्यापार में भाग लेना तो दूर किनार रहा, परन्तु ऐसी शिक्षा से वे अपने देश का वैदेशिक व्यापार भी अपने

ही हाथों में नहीं रख सकते। यही कारण है कि भारतवर्ष का सारा व्यापार विदेशियों के हाथ में है।

इङ्गलैण्ड आदि देशों में शिक्षा पाने के बड़े सुभीते हैं। वहाँ एक नहीं; दो नहीं, वरन् वीसों विश्वविद्यालय हैं। भारतवर्ष में जिसका क्षेत्र-विस्तार इङ्गलैण्ड तो कहाँ, परन्तु रूसको छोड़ समस्त यूरोप के वरावर है। अभी तक केवल पाच ही विश्वविद्यालय थे और जो अब ८ होगये हैं। इङ्गलैण्ड में विश्वविद्यालयों के अतिरिक्त और दूसरी भी कई संस्थायें हैं कि, जो शिक्षा-प्रचार में वहुत सहायता करती हैं। व्यापारी शिक्षा का प्रबन्ध यों तो इङ्गलैण्डके लगभग सब विश्वविद्यालयों में है। परन्तु उनमें से बरमिंघम, लण्डन, लीड्स आदि विश्वविद्यालय इस विषय में विशेष तौर से उल्लेखनीय हैं। इन विद्यालयों में उच्च से उच्च कोटिकी व्यापारी शिक्षा दी जाती है। परन्तु विश्वविद्यालयों की शिक्षामें जो एक भारी असुविधा है, वह वहाँ की पद्धति (Routine) की है। व्यापारी विषयों के साथ-साथ प्रत्येक विद्यार्थी को वहाँ कुछ ऐसे विषय भी पढ़ने पड़ते हैं कि, जिनका उसे व्यापार में हर घड़ी प्रयोजन नहीं रहता। इससे समय के साथ-साथ भावी व्यापारियों की उन्नति-वर्द्धक शक्तियों का भी भारी ह्रास होता है। अतः पाश्चिमात्य देशों के व्यापारियों ने अपनी व्यापारिक संस्थाओं के अन्तर्गत एक शिक्षा-विभाग प्रचलित कर रक्खा है, जिस में व्यापारी के हर घड़ी काम में आने वाले विषयों ही की एक मात्र शिक्षा दी जाती है। इसके अलावा, ये संस्थायें

फुरसत के समयमें ही पढ़ाती हैं, फीस भी बहुत कम लेती हैं और सैद्धान्तिक विवेचना को छोड़ नवयुवकों को विशेषकर व्यवहार कुशल, बनाने की चेष्टा करती है। इन संस्थाओं की परीक्षा में उत्तीर्ण विद्यार्थी को विश्वविद्यालय के उत्तीर्ण स्नातकों (ग्रेज्यूएटों) की अपेक्षा व्यापारी लोग सेवा के लिये बहुत पसन्द करते हैं। सरकार भी इन विद्यार्थियों का एवम् संस्थाओं का समादर करती है। इङ्गलैण्ड में आज ऐसी अनेक संस्थायें हैं, जिनमें से कितनी ही के नाम इस प्रकार हैं:—सोसाइटी आव् इनकार्पोरेट अकाउन्टेन्टस्, इन्स्टीट्यूट आव् चार्टर्डअकान्टेन्टस्, लण्डन चेम्बर आफ कामर्स, रायल सोसाइटी आफ आर्ट्‌स, वेष्ट राइडिङ्ग काउन्टी काउन्सिल, मिडलेण्ड काउन्टीज़ यूनियन, इन्स्टीट्यूट आफ वेङ्कर्स चारटर्ड, इन्स्टीट्यूट आव् सेक्रेटेरीज़ आदि। इन संस्थाओं में से कई पब्लिक और कई प्राइवेट हैं।

केवल इङ्गलैण्ड ही में व्यापारी शिक्षा का इस प्रकार प्रवन्ध हो, सो बात नहीं है। जर्मनी आदि देशों में, अमेरिका में, और यहाँ तक कि, जापान में भी इस प्रकार की संस्थायें स्थापित हैं। हमारा ही यह दुर्भाग्य है कि, हम सरकार से ऐसे प्रयत्नों के लिये भी वार-वार प्रार्थना करते रहते हैं कि, जिनमें हम पूर्णतया स्वतन्त्र हैं और अपने आप कुछ नहीं करते। विदेशी व्यापारी परीक्षाओं के पास करने कराने की ओर तो हमारा लक्ष्य लगा है, परन्तु यहाँ पर कोई भी व्यापारी परीक्षा चलाने की हम से चेष्टा नहीं की जाती। भारतवर्ष का व्यापार चाहे नष्टप्राय हो, परन्तु

विल्कुल नष्ट नहीं हुआ है। उसके पुनर्जीवन के लिये हमें ऐसे आदमियों की आवश्यकता है कि, जो देशी व्यापारी-पद्धति से अभिज्ञ होने के साथ-साथ आधुनिक संसार की व्यापार-पद्धतियों से भी अभिज्ञ हों। यह वात वैदेशिक पद्धतियों में प्रमाणिक होने से ही नहीं आ सकती। अतएव जीवन-सङ्घर्ष के महायुद्ध में यदि हमें अपना अस्तित्व क़ायम रखना अभीष्ट है, तो अब शीघ्र ही ऐसी एक संस्था स्थापित करनी चाहिये कि, जिसके उद्देश निम्नलिखित हों:—

(१) राष्ट्र भाषा 'हिन्दी' में और अन्य देशी भाषाओं द्वारा व्यापारी एवम् औद्योगिक शिक्षा का प्रचार करना, इस के लिये व्याख्यानशाला खोलना, और उसमें प्रसिद्ध-प्रसिद्ध अर्थशास्त्रियों एवम् व्यापारियों के हिन्दी आदि भाषाओं में व्यापार (सिद्धान्त व व्यवहार) और समसामयिक व्यापारी प्रश्नों पर ज़ाहिर व्याख्यान दिलाना।

(२) हिन्दी में और अन्य देशी भाषाओं में व्यापारी साहित्य लिखना, लिखाना, अनुवाद करना और अनुवाद कराना।

(३) उपर्युक्त ग्रन्थों को स्वयं प्रकाशित करना और अन्य प्रकाशकों को ऐसे ग्रन्थ प्रकाशित करने के लिये आर्थिक, एवं नैतिक सहायता देना।

(४) पहले एक व्यापारी मासिक, प्रयागस्थ विज्ञान परिषद् के मासिक 'विज्ञान' की श्रेणीका अथवा 'इन्स्टीट्यूट आफ बेङ्कर्स

मेगज़ीन' (इङ्गलैण्ड) की श्रेणी का निकालना अथवा और किसी से निकलवाना।

(५) व्यापारी विद्यापीठ खोलना, खुलवाना, तथा खुले हुये पीठों को उत्साहित करना एवं सहायता देना।

(६) व्यापारी शिक्षायें निर्म्मित करना, और इन परीक्षाओं के उत्तीर्ण विद्यार्थियों को लण्डन चेम्बर आफ़ कामर्स आदि संस्थाओं की भांति प्रमाण-पत्र देना।

(७) ऐसी परीक्षाओं को व्यापारियों एवम् देशी रियासतों से मान्य करवाना और इनके उत्तीर्ण छात्रों के कार्य्य का यथा शक्ति प्रवन्ध करना तथा करवाना।

(८) व्यापारी पुस्तकालय, वाचनालय एवम् प्रदर्शनी खोलना तथा खुलवाना।

(९) कमर्शल इण्टेलीजेन्स व्यूरो (Commercial Intelligence Bureau) स्थापित करना।

(१०) लेवर एक्सचेंज जैसी एक संस्था स्थापित करना, और हर एक शहर में करवाना, जहाँ कि धनी-मानी लोग अपनी भृत्य-सम्बन्धी आवश्यकताओं की नोंध करावें और भृत्यलोग अपनी सेवा की शर्तें नोंध करावें इत्यादि।

इन उद्देशों पर स्थापित संस्था हमारे देश की दशा सुधारने में अतिशय सहायी हो सकती है। इसका सदस्य भी हर एक आदमी वन सकता है। इन सदस्यों की ऐसे बड़े काम के लिए चार श्रेणियाँ की जा सकती हैं। पहली श्रेणी के सदस्य वे हों

हो सकते हैं, जो ५००) एक मुश्त सभाको भेंट दें और इस परिषद् के संरक्षक रहें। जो १००) दें, वे इस के लाइफ मेम्बर रहें और जो १२) रुपये वार्षिक देवें, वे परिसभ्य और जो ३) वार्षिक देवें वे सभ्य कहलावें। परिषद् द्वारा प्रकाशित मासिक इन सब को मुफ्त में मिला करे और अन्य प्रकाश्य पुस्तकें सभ्योंको छोड़ सब को मिला करें।

अन्त में इस पुस्तक के प्रतिपाद्य विषयके प्रति दो शब्द कह कर, इस लम्बे उपोद्घात से विश्राम लूंगा।

'नामा लेखा' अथवा 'बही खाते' का जानना प्रत्येक व्यापारी के लिये अनिवार्य्य है। सच पूछिए, तो व्यापारी शिक्षा की यह विद्या सब से प्रथम आवश्यकीय शिक्षा है। आज तक हमारे देश में इस शिक्षा के प्राप्त करने का एकमात्र साधन 'दूकानों की वहियों की नक़ल करना' ही माना जाता था। पाठशाला में इस विषय की कुछ भी शिक्षा नहीं दी जाती थी। हम लोगों का यह विश्वास सा रहा है कि, यह विद्या केवल व्यावहारिक ही है। इसमें सैद्धान्तिक विवेचना का तनिक मात्र भी समावेश नहीं हो सकता। यह सिद्धान्त मुझे बहुत खटकता था। मैं यह चाहता था कि, कोई साक्षर व्यापारी हमारी इस मान्यता का भण्डाफोड़ दे अथवा साक्षर व्यापार-विद्या-विशारद ही ऐसे तुच्छ विषय के लिये अपनी प्रौढ़ क़लम को घिसने की तकलीफ करे; परन्तु किसी को भी इसकी चेष्टा न करते देख कर, मैंने ही इतनी बड़ी धृष्टता की है। इस पुस्तक में मैंने साद्यन्त यही लक्ष्य रक्खा है

कि यह विषय स्कूलों में किस प्रकार उत्तमता के साथ पढ़ाया जा सकता है। इस कार्य्य में, मैं कहाँ तक सफल हो सका हूं इसका निर्णय विज्ञ जनता के हाथ में है।

हिन्दी भाषा में यह प्रथम ही साहस है। यदि इसे जनता अपनायेगी, तो मैं अपने परिश्रम को सफल समझूंगा। और फिर इसी प्रकार की सेवा करने की चेष्टा करूँगा। विज्ञ पाठकों से निवेदन है कि, इस की भूलों से मुझे सूचित करने की कृपा करें।

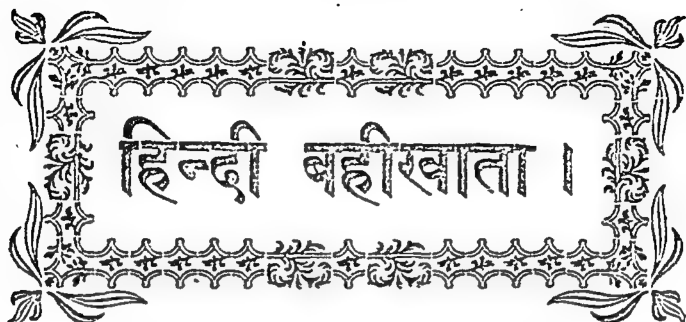
मेरे प्रातःस्मरणीय परम पूज्य पिता जी ने इस पुस्तक की हस्त-लिखित प्रति को साद्यन्त आलोडन करके इसकी कई भूलें संशोधन की है। उसके लिए मैं उनका चिरऋणी हूँ। इसी भाँति मेरे मित्र पण्डित हरिभाऊ उपाध्याय ने इस पुस्तक की भाषा संशोधन करनेका परिश्रम उठाया है, अतः उनका भी यहाँ उपकार मानता हू। इस पुस्तक के लिखने में मुझे 'फील्ड हाउस बुक कीपिङ्ग' और 'ऐयर इण्टरमिजियेट बुक कीपिङ्ग' और 'विद्या ज्ञान प्रकाश' आदि पुस्तकों से भी सहायता मिली है। अतः उनके लेखकों व प्रकाशकों का भी अनुगृहित हूँ।

२५ खजूरी बाज़ार,
इन्दौर,
मकर संक्रान्ति १९७५

विनयावनत

क० बाँठिया।





हिन्दी बहीखाता।

पहला अध्याय।



विषय-प्रवेश।

१। जिस विद्या अथवा कला से लेन-देन की रक़में इस प्रकार लिखी जायें कि, उनसे वर्ष के अन्तमें अथवा और किसी भी समय पर दूकान की सच्ची आर्थिक स्थिति का पता सुगमता तथा शीघ्रता से लग जाय, उसे 'नामा लेखा' कहते हैं।

२। मानव-जाति में जैसे-जैसे ज्ञान का प्रकाश बढ़ता गया है, वैसे-ही-वैसे व्यापार भी बढ़ता गया है। संसार-विकास के आदि में, जब कि मनुष्य की इच्छाएँ बहुत ही थोड़ी थीं—प्रत्येक

मनुष्य अपने ही परिश्रम से अपनी इच्छा-पूर्त्ति के सामान तैयार कर लेता था। पर समय के साथ-साथ उसकी इच्छाएँ भी पलटती और बढ़ती गयीं। यहाँ तक कि, उसकी अपनी ही मेहनत से तैयार किये हुए पदार्थों द्वारा पूर्त्ति करना उसके लिये असम्भव हो गया। इस अवस्था में उसे अपनी इन बढ़ती हुई इच्छाओं की तृप्ति का सरल तथा सुलभ साधन यही दीख पड़ा कि, वह अपनी मेहनत से तैयार किये हुए अतिरिक्त पदार्थों से अलटा-पलटा करे। परन्तु धीरे-धीरे इस अदला-बदली में भी बड़ी-बड़ी कठिनाइयाँ उपस्थित होने लगीं। तब मनुष्य ने मुद्रा या सिक्के का आविष्कार किया और उसकी सहायता से अलटा-पलटा किया जाने लगा। इससे यद्यपि वस्तु-विनिमय की (चीज़ों के बदले की) कठिनाइयाँ दूर हो गयीं, परन्तु क्रय-विक्रय या ख़रीद-फ़रोख्त की नई-नई कठिनाइयाँ बढ़ने लगीं। इस मुद्रा द्वारा मनुष्य अपनी अतिरिक्त वस्तुओं को बेचता और इस बिक्री से पाई हुई मुद्रा से अपनी चाह की वस्तुए ख़रीदता रहा। धीरे-धीरे यह ख़रीद-फ़रोख्त यहाँ तक बढ़ गयी कि, लोग एक दूसरे को उधार देने-लेने लगे। इस प्रकार जब व्यापार बढ़ता गया, तब मनुष्य के मन में स्वभावतः निम्न लिखित प्रश्न उठने लगे :—

(१) मुझे किस का कितना देना है ?

(२) मुझे किस से कितना लेना है ?

(३) मुझे लेन-देन से अथवा ख़रीद-फ़रोख्त से लाभ हुआ है कि हानि ?

(४) मुझे किस वस्तु के लेन-देन अथवा ख़रीद-फ़रोख्त से लाभ हुआ है और किस से हानि ?

(५) मेरा लेना देने की अपेक्षा ज़ियादा है अथवा कम ? यदि ज़ियादा है, तो मेरा मूलधन कितना है ? और यदि कम है, तो बाक़ी और कितना देना है ?

जान पड़ता है कि, इन सब प्रश्नों से ही हमारी इस कला का आविष्कार हुआ है। इस कला से सामान्य तथा गूढ़ तत्वों को जानने के पहले हमें इसके व्यावहारिक शब्दों की परिभाषाओं से गाढ़ परिचय कर लेना चाहिये।

जमा और नाँवें।

३। प्रत्येक लेन-देन अथवा ख़रीद-फ़रोख्त में धन अथवा उसके सम-फलोपधारी का स्थानान्तर होता है। प्रत्येक व्यापार में एक देता है और दूसरा लेता है। इसलिये जब कोई हमें कुछ देता है, तो वह चीज़ अथवा उसका मूल्य हम अपनी वहियों में उसका जमा करते हैं ; और जब हम किसी को कुछ देते हैं, तो वह अथवा उसका मूल्य हम अपनी वहियों में उसके नाँवें लिखते हैं। जो कुछ आता है वह सब जमा किया जाता है, और उसे 'जमा की रक़म' कहते हैं। जो कुछ हम देते हैं वह नाँवें लिखा जाता है और उसे 'नाँवे'' अथवा 'लेखे' की रक़म कहते हैं। जमा और नाँवे' व्यापारिक पाठशाला के 'अ आ इ ई' हैं। नक़ल

की बही के सिवा और सब बहियों में जमा सदा बाईं ओर ; और नाँवें सदा दाहिनी ओर लिखा जाता है।

बही।

४। जिसमें आय-व्यय (आमद-ख़र्च), क्रय-विक्रय (ख़रीद-फ़रोख्त), लेन-देन आदि का हिसाब रक्खा जाता है, उस पुस्तक अथवा रजिष्टर को 'बही' कहते हैं। इसमें अँगरेज़ी रजिष्टरों की भाँति कॉलम्स नहीं रहते, किन्तु सल डाल दिये जाते हैं। ये सल किसी बही में ८ किसी में १२ और किसी-किसी में १६ तक होते हैं। नक़ल बही के अतिरिक्त और-और बहियों में पहले का तथा बीच का सल 'सिरे के सल' कहाते हैं। इन बहियों में जमा-ख़र्च करते समय, हमें दो बातें विशेष ध्यान में रखनी चाहिये :—

(१) प्रत्येक जमा-ख़र्च इतना स्पष्ट हो कि, हम उसे अपनी स्मृति को थोड़ासा भी परिश्रम दिये बिना ही शीघ्र समझ सकें ; और दूसरे लोग भी अपने-आप समझ सकें। अर्थात् प्रत्येक जमा-ख़र्च की विगत पूरी-पूरी तथा स्पष्ट शब्दों में लिखी हुई होनी चाहिये।

(२) प्रत्येक क्रय-विक्रय, लेन-देन आदि इस ढँग से लिखा जाना चाहिये कि, हम शीघ्र ही उसका परिणाम जान जायँ। इस नियम का पूरा-पूरा पालन होने के लिये, एक प्रकार के और एक व्यक्ति के समस्त लेन-देनोंका एक ही वर्गीकरण होना आवश्यक है।

लेन-देन, क्रय-विक्रय आदि के बही में लिखे जाने को 'जमा-ख़र्च' करना कहते हैं।

खाता।

५। जिस में व्यक्तिगत तथा वस्तुगत समस्त लेन-देनों का वर्गीकृत संग्रह हो, उसे 'खाता' कहते हैं। इसीसे हमें दूसरे पैरे में किये हुए प्रश्नों का भली भाँति और सन्तोषकारक उत्तर मिलता है। व्यापार-सम्बन्धी सब प्रकार की वहियों में खाता-वही ही सब से अधिक उपयोगी तथा आवश्यकीय वही है। इसमें भिन्न-भिन्न वहियोंमें किये हुए समस्त जमा-ख़र्चोंका वर्गीकृत निदर्शन होता है।

६। खाता-वही के भिन्न-भिन्न हिसावों को भी 'खाता' ही कहते हैं। ये खाते वस्तुगत तथा व्यक्तिगत के विचार से दो प्रकार के होते हैं। वस्तुगत खातों को 'श्री खाता' और व्यक्तिगत खातों को 'धनीवार' खाता कहते हैं। श्री खातों में कपड़े-लत्ते माल-असवाव ख़र्च आदि के लेन-देनों का संग्रह होता है; और धनीवार के खातों में भिन्न-भिन्न लोगों तथा दूकानदारों के लेन देन संग्रह किये जाते हैं। इन खातों की पहचान करना भी कुछ कठिन नहीं है, क्योंकि धनीवार के खाते सदा 'भाई श्री' अथवा 'साह श्री' से प्रारम्भ किये जाते हैं, परन्तु श्री खाते केवल एक 'श्री' ही से प्रारम्भ किये जाते हैं।* जैसे हमें अपनी वही में यदि श्रीयुत हरिश्चन्द्रजी का खाता लगाना हो, तो इस प्रकार लगाया जावेगा :—

"।१॥ खाता १ भाई श्री हरिश्चन्द्रजी का है।"

---

* सजातीय को 'साह श्री' और सगोत्रीय एवम् विजातीय हिन्दू भाइयों को 'भाई श्री' लिखने की हमारे देशी लोगोंमें चाल है।

लेखक।

परन्तु, यदि हमें ष्टाम्प के ख़र्च का खाता लगाना हो, तो इस प्रकार लगाया जायगा :—

"।१॥ खाता १ श्री ष्टाम्प ख़र्च खाते का है।"

खातों के दूसरे दो भेद व्यापार-सम्बन्धी हैं। इनका विवेचन तीसरे अध्याय के २३ वें पैरे में किया गया है।

रोकड़-बही और नक़ल-बही।

७। खाता-बही के सिवाय व्यापारी को और भी कई बहिया रखनी पड़ती हैं, क्योंकि नाना भाँति के लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयों का हर घड़ी खाता-बही में दर्ज करना कठिन ही नहीं, बल्कि असम्भवसा है; और ऐसा करने से खाता-बही की विशुद्धता मारी जाने का भी भय लगा रहता है। शेष की सब बहियों में रोकड-बही और नक़ल-बही ही सब से उपयोगी तथा आवश्यकीय बहियें है। खाता-बही, रोकड़-बही और नक़ल-बही को यदि व्यापार-संसार की आद्य एवम् प्रधान बहियाँ कहें, तोभी कुछ अतिशयोक्ति न होगी; क्योंकि प्रत्येक लेन-देन का जमा-ख़र्च, रोकड़-बही अथवा नक़ल-बही में किये बिना, खाता-बही में नहीं किया जाता। व्यापारी रोकड़-बही से और नक़ल-बही से ही खाता तैयार करते हैं। यदि कोई रक़म खाता-बही में अशुद्ध खत चुकी हो, अथवा उसकी प्रकृति का हमें खाता-बही में लिखी हुई विगत से ठीक-ठीक

सन्बन्ध न मिलता हो, तो उस समय रोकड़ अथवा नक़ल-वही ही हमारी सहायता करती है। रोकड़ अथवा नक़ल-वही से खाता-वही में 'आँक' ले जाने को 'खताना' कहते हैं। जो रक़म खत चुकी हो, उसको तिरछी रेखा (/) अथवा विन्दु (०) से अङ्कित कर दिया करते हैं और पेटे में खाते का पृष्ठ लिख देते हैं।

८। जिस वही में प्रातःकाल से सायङ्काल तक के नक़द रुपयों के लेन-देनों का तथा क्रय-विक्रयादि का शुद्ध तथा स्पष्ट जमा-ख़र्च रहता है, उसे रोकड़-वही क़हते हैं। कहीं-कहीं इसे 'कच्चा रोज़ नामचा' अथवा 'कच्चा-चिट्ठा' भी कहते हैं। यह वही प्रायः १२ सली (सलकी) होती है। परन्तु जहाँ काम-काज थोड़ा रहता है, वहाँ यह वही ८ अथवा ८ से कम सल की भी बना ली जाती है। इस वही को दो सम भागोंमें विभक्त कर लिया जाता है। बायें हाथ की ओर का भाग जमा के लिये और दाहिनी हाथ की ओर का भाग नाँवें के लिये सुरक्षित रहता है। रोकड़-वही किस तरह लिखी जाती है, इसका विवरण दूसरे अध्याय में किया गया है।

९। नक़ल-वहीमें उधार लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयादिकों का शुद्ध तथा स्पष्ट जमा-ख़र्च रहता है। इसका मेल दैनिक होता है। इसमें उधार लेन देनों के तथा क्रय-विक्रयादिकों के सिवाय नक़द लेन-देन तथा क्रय-विक्रयादि का जमा-ख़र्च नहीं रहता। यह वही प्रायः आठ सली होती है, रोकड़-वही की भाँति यह वही जमा और नाँवें के लिये दो भागोंमें विभक्त नहीं की जाती। परन्तु

जमा और नाँवें के लिए इसमें ऐसा क्रम रक्खा गया है कि, यदि सिरे पर किसी खाते में एक रक़म जमा की जाती है, तो पेटे में उतनी ही रक़म किसी अन्य खाते अथवा खातोंमें नाँवें लिखी जाती है। नक़ल-वही का हर एक जमा ख़र्च पूर्ण होता है। नामा-लेखा में नक़ल-वही के जमा-ख़र्च ही कठिन तथा बुद्धि-परीक्षक होते हैं। इनका सविस्तृत वर्णन तथा विवेचन आगे किया गया है। इस वही के प्रथम सल को 'सिरे' का सल कहते हैं और बाक़ी के सब सल 'पेटे के सल' कहाते हैं।

मेल लगाना।

१०। एक पक्ष अथवा एक दिन के सारे लेन-देनों के संग्रहको मेल कहते हैं। यह मेल कच्ची रोकड़ तथा कच्ची नक़ल-वही में दैनिक और पक्की रोकड़ तथा पक्की नक़ल-वही में पाक्षिक होता है। इसके लगाने की शैली धर्म-भेद के अनुसार भिन्न-भिन्न है। भारतवर्ष एक धर्म-प्रधान देश है। यहाँ प्रत्येक कार्य्य के आरम्भ में अपने इष्टदेव को स्मरण करने का रवाज है। इस ही रवाज का अनुसरण व्यापारी-वहियों में भी मेल लगाते समय किया जाता है। उसमें जैनी लोग अपने इष्टदेव का और हिन्दू अपने इष्ट का उल्लेख करते हैं। जैसे :—

मेल रोकड़-वही का :—

।१॥ श्री परमेश्वरजी ।

।१॥ श्री गौतम स्वामीजी महाराज तणी लब्धि होजो, सं० १६७४ मि० चैत्र सुदी १२ ता० ४ अप्रेल सन् १६१७ ई०

।१॥ श्री गणेशजी सहाय छै ।

।१॥ श्रीगणेशजी महाराज सदा सहायी हैं, सं० १६७४ चैत्र सुदी १२ ता० ४ अप्रेल सन् १६१७ ई०

मेल नक़ल-वही का :—

।१॥ श्री परमेश्वरजी ।

।१॥ श्री गौतम स्वामीजी महाराज तणी लब्धि होजो, मेल नक़ल को सं० १६७४ का मि० चैत्र सुदी १

श्रीमहालक्ष्मीजी महाराज का भण्डार सदा भरपूर रहेगा ।

।१॥ श्री गणेशजी ।

।१॥ श्री गणेशजी महाराज सदा सहायी हैं, मेल नक़ल को सं० १६७४ मि० चैत्र सुदी १

श्रीमहालक्ष्मीजी महाराज का भण्डार सदा भरपूर रहेगा ।

पेटा ।

११। यदि असल रक़म का ब्योरा अथवा विवरण देना हो, तो असल रक़म के नीचे दूसरे सल से विवरण लिख दिया जाता है। इसे पेटे में लिखना कहते हैं। जैसे रामचन्द्र ने एक दरी ३।~) की, पान एक आने के, टाट पर्दे के लिये २) का और हरिकेन २) की, इस तरह कुल रु० ७।≈) का सामान घरू ख़र्च के लिए ख़रीदा। अब यदि वह अपनी ख़र्च-बही में सारी विगत देना चाहे, तो इस प्रकार देगा :—

७।≈) श्री ख़र्च खाते लेखे ।

३।~) दरी १

~) पान

२) हरीकेन लालटैन १

२) टाट पर्दे के लिये

७।≈)

हस्ते ।

१२। जो लेन-देन अथवा क्रय-विक्रय जिस के द्वारा किया जाता है, वह उसी व्यक्ति के हस्ते लिखा जाता है। हस्ते से द्वारा का अभिप्राय है। यदि स्वयम् मालिक ही प्रत्यक्ष जाकर रुपया देता-लेता है अथवा क्रय-विक्रय करता है, तो उस रक़म का हस्ते 'खुद' लिखा जाता है। परन्तु यदि यही लेन-देन अथवा क्रय-विक्रय मालिक के लिए उसके गुमाश्ते अथवा नौकरों द्वारा किया गया हो, तो उस गुमाश्ते अथवा नौकर का हस्ते किया जाता है। वही में रक़म का व्योरा लिखकर पीछे हस्ते लिखा जाता है। व्यापार-संसार में हस्ते का लिखा जाना बहुत ही आवश्यक है। इसके द्वारा समय पड़ने पर हम अपने पक्ष की सत्यता सिद्ध कर सकते हैं। वहियों में हस्ते का संक्षिप्त रूप 'ह' पूरे शब्द के वदले काम में लाया जाता है।



दूसरा अध्याय ।

रोकड़-वही ।

कच्ची व पक्की रोकड़-वही ।

१३। जिस वही में प्रातःकाल से सायंकाल तक के नगद रुपयों के लेन-देन तथा क्रय-विक्रय का शुद्ध एवं स्पष्ट जमा-ख़र्च किया जाता है, उसे रोकड़-वही कहते हैं। यह दो प्रकार की होती है। एक को कच्ची रोकड़-वही और दूसरी को पक्की रोकड़-वही कहते हैं। कच्ची और पक्की रोकड़-वही में भेद केवल इतना ही है कि, पहली में दैनिक और दूसरी में पाक्षिक मेल रहता है। दोनों ही वहियों में नगद रुपयों के लेन-देन तथा क्रय-विक्रय का जमा-ख़र्च रहता है। कच्ची रोकड़-वही स्वतन्त्र है, और पक्की रोकड़-वही कच्ची वही के एक पक्ष के पन्द्रह मेलों को संग्रह करके तैयार की जाती है। इन पन्द्रह मेलों का पक्की रोकड़-वही के एक मेल में संग्रह करते समय, एक खाते के समस्त लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयों को एक ही पेटे में ले लेते हैं। इस पक्की रोकड़-वही के दो मेलों का संग्रह कर 'रुजनावें' का एक मेल तय्यार किया जाता है। यह 'रुज़नावाँ' पक्की रोकड़-वही और पक्की नक़ल-वही दोनों को मिलाकर तय्यार किया जाता है।

रोकड़ मिलाना ।

१४। रोकड़-वही प्रायः १२ सली होती है। इसमें लिखना प्रारम्भ करने के पूर्व १० वें पैरे में बताई हुई शैली के अनुसार मेल लगाया जाता है। तत्पश्चात् सब से पहले गत दिवस की रोकड़ बाक़ी जमा की ओर 'श्री पोते बाक़ी' अथवा 'श्री रोकड़ बाक़ी' के नाम से लिखी जाती है। इसके बाद जिस क्रम से रुपया आता है उसी क्रम से जमा होता जाता है और जिस क्रम से दिया जाता है उसी क्रम से नाँवें लिखा जाता है। यदि प्रत्येक आय-व्यय, लेन-देन, तथा क्रय-विक्रय की 'नोंध' वही में भली भाँति की गई है, तो जमा और नाँवें की जोड़ का अन्तर पेटी में पड़ी हुई रोकड़ या रक़म के बराबर होगा। यदि ऐसा न हो, तो जानना चाहिए कि उस दिन की आय-व्यय की नोंध में कुछ भूल है। इस भूल का ठीक-ठीक पता लगा लेना 'रोकड़ मिलाना' कहते हैं। ध्यान रहे कि, जमा की जोड़ नाँवें की जोड़ से सदा बड़ी होती है। क्योंकि पास में जितने रुपये गत दिवस के बाक़ी थे और जितने रुपये इस दिन आये हैं, उन सब को मिलाकर—उससे ज़ियादा ख़र्च करके कोई कुछ भी नहीं बचा सकता। यदि वह कुछ रक़म बचाता है और फिर भी जमा की जोड़ नाँवें की जोड़ से कम है, तो समझना चाहिये कि उसे कहीं से कुछ रक़म मिल गई है, परन्तु वह उसे अपनी रोकड़-वही में जमा करना भूल गया है। अतः पेटी में पड़ी हुई रक़म से जमा और नाँवें की रोकड़-वही की जोड़ों का अन्तर जितना कम हो—उतनी रक़म हमारे

उस मेल में बढ़ती रहेगी और जितनी ज़ियादा हो—उतनी ही कमती रहेगी। इस भूल को ठीक करके मेल बन्द कर दिया जाता है। दोनों भागों के पहले सल को 'सिरे का सल' कहते हैं। जब जमा और नाँवे की सब रक़में यथास्थान रोकड़-वही में जमा-ख़र्च हो जाती हैं; तब सिरे के सलों को छोड़, बाक़ी सब सलों में होती हुई एक दोहरी लकीर जोड़ के वास्ते खींच दी जाती है। जमा की ओर की इस दोहरी लकीर के नीचे जमा की जोड़ और नाँवे की ओर की इस दोहरी लकीर के नीचे नाँवे की जोड़ लिख दी जाती है। तत्पश्चात् नाँवे की ओर पेटी में पड़ी हुई रक़म 'श्री पोते बाक़ी' अथवा 'श्री रोकड़ बाक़ी' आदि के नाम से लिखकर दोनों ओर की जोड़ें बराबर मिला दो जाती हैं, और फिर सिरे के सल से सब सलों में होती हुई एक दोहरी लकीर खींचकर मेल बन्द कर दिया जाता है। क्योंकि नाँवे की जोड़ जमा की जोड़ से पेटी में पड़ी हुई रक़म के बराबर कम है, इसलिये उसमें पेटी में पड़ी हुई रक़म जोड़ देने से दोनों ओर की जोड़ें समान अर्थात् एक हो जाती हैं।

उदाहरण १—बाबू भूपेन्द्रनाथ के पास मिती भाद्रपद शुक्ला १ सं० १९६४ को ४६५) रु० पोते बाक़ी थे। और दिन भर में निम्नलिखित देन-लेन तथा क्रय-विक्रय किया, तो बताओ उसके पास शाम को कितने रुपये बचे? बाबू तारकनाथ को ३००) और बाबू गोपालस्वरूप को १५०) दिये। अश्विनीकुमार से १०५०) और महेन्द्रकुमार से २४०) आये, और हिम्मतलाल को रजिष्ट्री

चिट्ठी से ३७५) के नोट भेजे। शाम को तीन बजे बाबू शिशिरकुमार घोष का हज़ारीबाग़ से एक पार्सल आया, उसमें ३७५) की गिन्नियाँ निकलीं। उस ही रोज़ शाम को उसे बाबू बाँकेबिहारीलाल को मानभूम ६००) रु० तार के मनीऑर्डर द्वारा भेजने पड़े। उपर्युक्त आय-व्यय को रोकड़ के रूप में भी प्रदर्शित करो।

।१॥ श्री परमेश्वर जी।

।१॥ श्री गौतम स्वामीजी महाराज तणी लब्धि होजो, सं० १९६४ मि० भाद्रपद शुक्ला १

४९५) श्री पोते बाक़ी
१०५०) बाबू अश्विनी कुमार घोष के जमा रोकड़ा आये ह० खुद
२४०) बाबू महेन्द्रकुमार के जमा रोकड़ा आये ह० खुद
३७५) बाबू शिशिरकुमार घोष के श्री हज़ारीबाग़ वालेके जमा गिन्नी नग २५ पार्सल में आई उसके प्र० १५) लेखे

२१६०)

३००) बाबू तारकनाथ के लेखे रोकड़ा दिये ह० खुद
१५०) बाबू गोपालस्वरूप के लेखे रोकड़ा दिये ह० खुद
३७५) भाई श्री हिम्मतलाल के लेखे नोट रजिष्टर में भेजे
९००) भाई बाँकेबिहारीलाल के लेखे तार मनीआर्डरमें रुपये तुम्हें मानभूम भेजे

१७२५)
४३५) श्री पोते बाक़ी

२१६०)

माल का जमा-खर्च करना।

१५। उपर्युक्त उदाहरण में केवल रुपये उधार देन-लेन का ही काम पड़ा है। परन्तु हम प्रतिदिन देखते हैं कि, व्यापारी अपने रुपयों का इसके अतिरिक्त भी अन्य कई प्रकार से उपयोग करता है। वह उससे माल ख़रीदता है, नौकरों का वेतन चुकाता है, माल लाने ले जाने का गाड़ी-भाड़ा आदि देता है, और खाने-पीने, पहनने आदि के आवश्यकीय कार्यों में भी यथाशक्ति ख़र्च करता है। इन सब कामों में आने वाली चीज़ो को हम ख़रीद लेते हैं और उनका मूल्य उनके एवज़ में वेचने वाले के सिपुर्द कर देते हैं। परन्तु इस प्रकार दिया हुआ रुपया हम अपनी रोकड़-वही में पाने वाले व्यक्ति के नाँवे' नहीं लिख सकते; क्योंकि वह उस रुपये के एवज़ में अपना माल अथवा सेवा वेचकर हम से उऋण हो चुका है। तब उपर्युक्त रीति से व्यय किये हुए रुपये या तो उसी ख़रीदे हुए पदार्थ के नाँवे'—यदि वह पुनः वेचने के लिये ख़रीदा गया है तो—लिखे जाते हैं, अथवा 'श्री ख़र्च खाते' लिखे जाते हैं। उदाहरणार्थ—रामचन्द्र एक चाँवलों का व्यापारी है। वह २०० मन चाँवल १०) मन के भाव से ख़रीद करता है। अब ये दो सौ मन चाँवल चूंकि उसने पुनः वेचने के लिये ख़रीदे हैं, इसलिए इसमें लगी हुई रु० २०००) की रक़म वह अपनी वही में 'श्री चाँवल खाते' नाँवे' मांडता है। परन्तु यदि वह २५) का कपड़ा, २०) के गेहूँ और १०) का घी ख़रीदने में ५५) ख़र्च करता है, तो इन ५५) को पृथक्-पृथक् पदार्थों के नाँवे' न लिखकर

समूचे ही 'श्री खर्च खाते' नावें लिख देता है, और उसके पेटे में सारी विगत खोल देता है। जैसे :—

५५) श्री खर्च खाते लेखे

२५) कपड़ा मलमल १ पगड़ी २ दुपट्टा जोड़ी १
२०) गेहूँ मण २॥) प्रा ८) रु: मन लेखै
१०) घोरत '५॥≈ भर प्रा०' ॥- लेष

५५)

१६। अपनी रोकड़-बही में माल खाता (अर्थात् चाँवल आदि का खाता) अलग लगाने का हेतु यह है कि, हम अपने माल खातों को देखकर शीघ्र ही अपनी व्यापार-स्थिति का तथा उसके हानि-लाभ का परिचय पा सकें। जितनी रकम का माल हम बेचते हैं, उतनी रकम हम माल-खाते में जमा करते हैं; और जितना माल हम खरीदते हैं, उसकी लागत हम माल-खाते नाँवें लिख देते हैं। इसलिए जब हमें अपने व्यापार की स्थिति का अथवा उसके हानि-लाभ का पता लगाना होता है; तब हम उस खाते की जमा और नाँवें की जोड़ें लगाकर उसका अन्तर निकाल लेते हैं; और फिर इस अन्तर की तुलना हम अपने गोदाम में पड़े हुए माल की लागत से करते हैं। अब यदि यह अन्तर जमा का है, तो हमारा कुल लाभ इन दोनों का योगफल होता है; और यदि नाँवें का, तो उस अन्तरसे जितना विशेष माल हमारे गोदाम

में भरा है, उतनाही हमारा लाभ होगा ; और यदि वह अन्तर हमारे गोदाम में पड़े हुए माल की क़ीमत से भी ज़ियादा है तो हमारा उतना ही नुक़सान है। ये सब बातें नीचे दिये हुए उदाहरण से स्पष्ट हो जायँगी।

उदाहरण २। बाबू कैलासनाथ एक शक्कर का व्यापारी है। उसने मिती चैत्र बदी १ को भाई आनन्दीलाल से ३०००) की शक्कर उधार ली, और उसमें से मिती चैत्र बदी ३ को भाई ताराचन्द को ७५०) की और मिती चैत्र बदी ४ को २७०) की शक्कर नक़द से बेच दी। इसके बाद उसने मिती चैत्र सुदी ७ को भाई फतेहचन्द से ६७५) को उधार और ३४५) की शक्कर नक़द से फिर ख़रीद की। अन्त में वह भाई हिम्मतलाल को मिती चैत्र सुदी १५ को १५००) की उधार शक्कर बेचकर देखता है कि, उसके गोदाम में १८००) की क़ीमत की शक्कर शेष रह गई है। अब यह बतलाइये कि, उसे व्यापार में क्या लाभ रहा ?

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्री शक्कर खाते का है।

७५०) मि० चैत्र बदी ३ भाई ताराचन्दजी को बेची	३०००) मि० चैत्र बदी १ भाई आनन्दी लाल से ख़रीदी
२७०) मि० चैत्र बदी ४ रोकड़ा से बेची	६७५) मि० चैत्र सुदी ७ भाई फतेहचन्द से ख़रीदी
१५००) मि० चैत्रसुदी १५ भाई हिम्मत लाल को बेची	३४५) मि० चैत्र सुदी ७ नगद रुपयों से
२५२०)	४०२०)
१८००) बाक़ी लेना माल पोते	३००) मि० चैत्र सुदी १५ नफा के
४३२०)	४३२०)
	१८००) बाक़ी लेना मि० चैत्र सुदी १५ तक

मालकी कच्ची व खरी क़ीमत।

१७। व्यापारी लोग बहुधा थोक-बन्द माल ख़रीदते हैं। थोक माल ख़रीदनेवालों को भाव में जो कुछ किफ़ायत होती है, सो तो होती ही है; परन्तु इसके अलावा उन्हें कुछ बटाव भी मिलता है। यह बटाव सैकड़े पर लगाया जाता है,इसको अंग्रेजीमें डिस्काउण्ट (Discount) कहते हैं। हमारे देशके भिन्न-भिन्न प्रान्तोंमें यह बटाव भिन्न-भिन्न नामों से परिचय पाता है। बटाव ख़रीदार का लाभ है। जिस समय ख़रीदे हुए माल का मूल्य चुकाया जाता है, उस समय यह बटाव ख़रीदार मालकी 'कच्ची क़ीमत' (Gross-value) में से काट लेता है। जो बाक़ी बचता है, वह उस मालकी 'खरी क़ीमत' (Net value) होती है। ख़रीदार यह खरी क़ीमत ही माल के बेचनेवाले को माल के एवज़ में चुकाता है।

बटाव व उसका जमा-ख़र्च।

१८। इस बटावका जमा-ख़र्च रोकड़-बहीमें दिखानेकी भिन्न-भिन्न शैलियाँ हैं। प्रथम तो व्यापारी जितने रुपये माल के एवज़ में देता है, उतने ही उस मालके नाँवे माँड देता है। परन्तु पेटेमें उस की कच्ची क़ीमत (Gross value) तथा बटाव (Discount) आदि का खुलासा अवश्य कर देता है। परन्तु कई व्यापारी ऐसा नहीं करते, वे रोकड़-बही में माल की कच्ची क़ीमत (Gross value)

ही माल के नाँवे माँड देते हैं ; और जो कुछ उन्हें बटाव के रूपमें मिलता है, उसे 'श्रीबटाव खाते जमा' के नामसे रोकड़-बहीमें जमा कर लेते हैं। जैसे, यज्ञदत्तने एक पेटी मलमल की १५० थानवाली ६॥≈) प्रति थान के भाव खरीदी। अब यदि वह ३॥) सैंकड़ा के हिसाब से बटाव काटे, तो अपनी बहियोंमें निम्नप्रकार से जमा-खर्च कर सकता है :—

(१)

९५६।≡)॥ श्री माल खाते लेखै मलमल पेटी १ थान १५० की खरीदी जिसके।
९९३॥) मलमल थान १५० प्र० ६॥≠) लेखै

३७।)। बाद बटाव के प्र० ३॥) लेखै
९५६।≡)॥ बाकी श्री सिरे—

(२)

३७।)। श्रीबटावखाते जमा	९९३॥) श्रीमाल खाते लेखै मलमल पेटी १ थान १५० की खरीदी
	९५६।≡)॥ रोकड़ादीना
	३७।)। बटाव खातेजमा कीना

१९। इस प्रकार के बट्टाके अलावा व्यापारियों को एक और प्रकार का बट्टा मिलता है। उसे 'रोकड़ा का बट्टा' कहते हैं। बम्बई कलकत्ता आदि बड़े शहरों में यह धारा है कि, खरीदार व्यापारी खरीदे हुए मालके रुपये उसही रोज़ न चुकावे। प्रत्येक माल के रुपये चुकाने की अवधि पृथक्-पृथक् है। परन्तु जो कोई व्यापारी उस अवधि से पहले रुपया चुका देता है, वह वेचनेवाले व्यापारी से साधारण बट्टा (Discount) के अलावा, जितने दिन पहिले रुपया चुकाता है, उतने दिनों का ब्याज भी दर ।।।) सैकड़े से उस रक़म का साथमें काट लेता है। इस बट्टाव का भी जमा-ख़र्च इसही प्रकारसे कर लिया जाता है।

उधार, क्रय-विक्रयादि का जमा-ख़र्च।

२०। ऊपर के कई पैरों में हम उदाहरणों द्वारा इस बातको समझा चुके हैं कि, रोकड़-वही में नक़द रुपयों के लेन-देन, क्रय-विक्रयादि का जमा-ख़र्च किस प्रकार किया जाता है। परन्तु आजकल उधार पर बहुतसा व्यापार होता है। उधार व्यापार करनेमें पैठकी बड़ी आवश्यकता है। जिनकी पैठ, साख अथवा क्रेडिट (Credit) श्रेष्ठ होती है, वेही लोग उधार व्यापार बहुत मोटे पाये पर करते हैं। ऐसे उधार क्रय-विक्रयों का तथा लेन-देनों का जमा-ख़र्च नक़ल-वही ही में किया जाता है। परन्तु नक़ल-

बही का जमा-ख़र्च जो ज़रा पेचीदा और कठिन है, उसे सरल बनाने के हेतु, इन लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयों का रोकड़-बहीमें जमा-ख़र्च किस प्रकार किया जा सकता है, यहाँ पर उसका जान लेना अब उचित होगा।

२१। जब हम कोई चीज़ उधार ख़रीदते हैं, तब हम उसका मूल्य उसी क्षण नहीं चुकाते, वरन् कुछ दिनों बाद चुकाते हैं। अथवा यों कहिये कि, उधार क्रय-विक्रय अथवा लेन-देन में रुपया तभी इधर-उधर नहीं होता। इसीलिये ऐसे लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयोंका जमा-ख़र्च जब रोकड़-बहीमें करना हो, तब जिससे हम पावें,उसका जमा करके, जिसे हमदें,उसके नाँवे लिख देना चाहिये। जमा और नाँवे दोनों ही ओर उस रक़म का उल्लेख हो जाने से हमारी रोकड़-बाक़ी में कुछ भी अन्तर नहीं पड़ सकता। जब माल एक व्यापारी से ख़रीद करके उसही वक्त दूसरे को बेच दिया जाता है, तब इस लेन-देनके जमा-ख़र्चमें कुछ कठिनाई नहीं पड़ती। क्योंकि जिससे हम ख़रीदते हैं, उसका जमा करके, जिसको हम बेचते हैं उसके नाँवे माँड देते हैं। परन्तु जब उधार मोल ली हुई वस्तु को हम उसी क्षण फ़रोख्त न कर सके हों, तो उसका जमा-ख़र्च रोकड़-बहीमें करनेके लिए उसकी लागत माल-खाते नाँवे माँड कर धनी अर्थात् वस्तु-विक्रेता की जमा कर ली जाती है। ऐसा करने से उस वस्तु की लागत के रुपये के लेनदार हम माल-खाते से रहेंगे। और यह माल-खाता उस समय तक हमारा ऋणी रहेगा, जिस समय तक कि वह

वस्तु बिक न जाय। उसके बिक जाने पर प्राप्त मूल्य अर्थात् बिक्री की रक़म मालखाते जमा हो जायेगी। परन्तु यदि वह फिर भी उधार ही बिकी हो, तो मूल्य माल-खाते जमा होकर ख़रीदार के नाँवे लिख दिया जायगा।

उदाहरण ३। एक किसान ने ५००) की पूँजी लगाकर मिती कार्त्तिक सुदी १ सं० १९६८ से खेती करना आरम्भ किया। उसने कार्त्तिक सुदी ३ को १००) के गेहूँ और कार्त्तिक सुदी ५ को बैल जोड़ी एक १००) की ख़रीदी। मिती कार्त्तिक सुदी ६ को किसना माली ने अपने कृषि-उपकरण (खेती करने के समान) उसे रु० ७५) में उधार बेच दिये। मिती कार्तिक सुदी १० को उसने रामा माली से १००) रुपये के चने उधार ख़रीदे और मिती कार्तिक सुदी १२ को अपनी बैल-जोड़ी ५०) में केसरा माली को उधार बेच दी। मितो कार्तिक सुदी १५ को उसने रामा माली से २००) नक़द उधार लिये और मिती अगहन (मगसर) बदी ८ को उसने ८०) किसना माली को उधार दे दिये। मिती मगसर (अगहन) बदी ७ को केसरा माली से ५०) आये। मिती अगहन (मगसर) बदी १० को ५०) नक़द और बदी १२ को ७५) रुपये के गेहूँ उसने रामा माली को उधार दिये। पूर्वोक्त रक़मों का ज़मा-ख़र्च रोकड़-बही में करके बताइये, कि उसके पास कुल कितने रुपये पोते बाक़ी रहे ? *

---

*सूचनाः—इस ख़याल से कि, यह विषय पाठशालाओंमें पढ़ाया जा सके, हमें उदाहरण तथा प्रश्न आदि देना अति आवश्यक मालूम

हुआ ; ऐसा करने में यद्यपि हमें कहीं-कहीं विषय के मूल तत्वों का उल्लङ्घन करना पड़ेगा। परन्तु विषय की उपयोगिता की दृष्टि से यह अनुचित नहीं जान पड़ता है। इससे यह न समझिये कि, नियम में परिवर्तन किया गया है। नियम के अनुसार कच्ची रोकड़ का मेल दैनिक ही होना चाहिये। परन्तु विषय को सुबोध बनाने के लिये हमें उसे उदाहरण में मासिक रूप में दिखाना पड़ा है।

।१॥ श्रीपरमेश्वर जी ।

।१॥ श्रीगौतम स्वामी जी महाराज तणी लब्धि होजो, मेल रोकड़ का मि० कातिक सुद १ सं० १९६८ से मि० मगसर बद १२ तक ।

५००) श्रीमूलधन खाते जमा कातिक सुद १ खा० पा० ३७

७५) भाई किसना मालीके जमा मि० कातिक सुद ६ कृषि-उपकरण खा० पा० ३७

१००) भाई रामजी मालीके जमा मि० कातिक सुद १० चना खा० पा० ३७

५०) श्रीकृषि खर्चा खाते जमा मि० कातिक सुद १२ बैल-जोड़ी १ वेची उसके

२००) भाई रामाजी मालीके जमा मि० कातिक सुद १५ रोकड़ा हं० खुद खा० पा० ३८

५०) भाई केसराजी मालीके जमा मि० मग-

१००) श्रीमाल खाते लेखे मि० कातिक सुद ३ गेहूँ खरीदे खा० पा० ३९

१००) श्रीकृषि खर्चा खाते लेखे मि० कातिक सुदी ५ बैल-जोड़ी १ खा० पा० ३९

१७५) श्रीकृषि खर्चा खाते लेखे मि० कातिक सुद ६ कृषि-उपकरण खा० पा० ३९

१००) श्री माल खाते लेखे मि० कातिक सुद १० चने खरीदे खा० पा० ३९

५०) भाई केसराजी माली के लेखे मि० कातिक सुद १२ बैल-जोड़ी १ तुमको वेची उसके खा० पा० ३९

सर बद ८ रोकड़ा ह० खुद खा० पा० ३८

७५) श्री माल खाते जमा मि० मगसर बद १२ गेहूँ बेचे जिसके खा० पा० ३६

१०५०)

८०) भाई किसना जी मालीके लेखै मि० मगसर बद ७ रोकड़ा दिये ह० खुद खा० पा० ३७

५०) भाई रामाजी मालीके लेखै मि० मगसर बद १० रोकड़ा दिये ह० खुद खा० पा० ३८

७५) भाई रामाजी मालीके लेखै मि० मगसर बद १२ गेहूँ बेचे उसके खा० पा० ३८

६३०)

४२०) श्रीपोते बाकी

१०५०)

तीसरा अध्याय।

खाता-वही।

व्यक्तिगत व वस्तुगत खाते।

२२। पहले अध्यायके पाँचवें पैरे में दी हुई परिभाषा के अनुसार खाता-वही से भिन्न-भिन्न लेन-देनों तथा क्रय-विक्रयों के वर्गीकरण (इकट्ठा किया हुआ) का बोध होता है। यही वही व्यापारिक वहियों में सर्वोपयोगी तथा सर्वोच्च गिनी जाती है। यदि इस वही के तैयार करने में पूरा-पूरी सावधानी रक्खी जाय, तो देश-देशान्तरों के आढ़तियों तथा अपने गाँव या शहर के दूकानदारों के हिसाब करने में अन्य वहियों की सहायता की आवश्यकता नहीं रहती। इस वही को अँगरेज़ी में लेजर (Ledger) कहते हैं। इसमें भिन्न-भिन्न लोगों के हिसाब रहते हैं। ये भी खाते ही कहाते हैं। ये खाते व्यक्तियों और वस्तुओं की दृष्टि से दो प्रकार के होते हैं—१ व्यक्तिगत और २ वस्तुगत। व्यक्तिगत खातों को "धनीवार का खाता" कहते हैं और वस्तुगत खातों को "श्री खाता"। इनका सविस्तर विवेचन पहले अध्याय के छटे पैरे में किया जा चुका है।

हमारे घरू व तुम्हारे घरू खाते ।

२३। इन दो भेदों के अतिरिक्त खातों के दो भेद और भी किये जाते हैं। ये भेद व्यापार-सम्बन्धी हैं। व्यापारी लोग एक देश से माल खरीदकर बेचने के लिये बहुधा दूसरे देश को चलान किया करते हैं। जिन व्यापारियों के चलानी का धन्धा या रोज़गार होता है, वे भिन्न-भिन्न नगरों में अपने आढ़तिये नियत कर लेते हैं। ये आढ़तिये दूरस्थ व्यापारियों का बहुत सावधानी तथा क़िफ़ायत से काम भुगताते हैं। इसके उपलक्ष्य में उन्हें कुछ रक़म मिला करती है। उसे आढ़त कहते हैं। उसका परिमाण—तादाद—चलानी के कार्य के लिए साधारणतया ॥) सैकड़ा और सराफी के लिए रु० १) हज़ार या ≈) सैकड़ा है।*

जब कोई व्यापारी बेचने के लिए किसी आढ़तिये को माल चलान करता है, तब उसकी लागत उस आढ़तिये के नाँवें नहीं लिखता। उसके लिए वह एक भिन्न खाता डालता है और उसी खाते के नाँवें उस माल की लागत तथा तत्सम्बन्धी सारा खर्च लिखता है। इसका कारण यह है कि, उस आढ़तिये ने स्वयं तो यह माल मँगाया था ही नहीं, व्यापारी ने निज की जोखिम पर भेजा है, अतएव उसके हानि-लाभ का भोक्ता (ज़िम्मेवार), स्वयं

---

* बम्बई में चलानी की आढ़त ॥।) सैकड़े की और हुण्डी ≡) सैकड़े गत दो वर्षों से दि मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स व दि हिन्दुस्थानी देशी व्यापारियों की सभा की ओर से कर दी गयी है।

व्यापारी ही हैं। इस भेजने वाले व्यापारी की अनुज्ञा बिना, उक्त आढ़तिये को इस माल को फरोख्त करने का कुछ भी अधिकार नहीं है। इस कारण वह एक पृथक् खाता लगाकर इसका हिसाब रखता है। इन खातों को व्यापारी लोग 'हमारे घरू खाता' कहते हैं। हमारे घरू खाता लगाने में पहले गाँव और पीछे आढ़तिये का नाम लिखा जाता है।

परन्तु यदि माल किसी के मँगाने पर चलान किया गया हो, तो तत्सम्बन्धी सारा खर्च मय उसकी लागत के मँगाने वाले व्यापारी के नाँवे लिखा जाता है और उसके हानि लाभ का ज़िम्मेवर भी भेजने वाला व्यापारी नहीं होता ; वरन् मँगाने वाला व्यापारी ही होता है। उत्तरदायित्व का भार पर-पुरुष पर पड़ जाने के कारण व्यापारी लोग ऐसे खातों को—"तुम्हारे घरू खाता" कहते हैं। इन खातों के लगाने में पहले आढ़तिये का नाम और पीछे गाँव का नाम लिखा जाता है। इन दोनों प्रकार के खातों का समावेश धनीवार अथवा व्यक्तिगत खातों में किया जा सकता है।

उदाहरणः—(१) खाता हमारे घरू।

।१॥ खाता १ श्री मन्दसोर खाते भाई श्री आसारामजी बल्देव-दास का है।

(२) खाता तुम्हारे घरू।

।१॥ खाता १ भाई श्री आसाराम बल्देवदास श्री मन्दसोर वालों का है॥

खताना ।

२४। खाता खताने के पूर्व खाता-बही को धनीवार के तथा श्री खातों के लिये दो भागों में विभक्त कर लेना चाहिये। श्री खातों को प्रायः बही के आदिमें ही लगाने की चाल है और प्रत्येक व्यापारी पहले पृष्ठ पर—'श्रीवृद्धि खाता' लगाता है। इसके बाद, मूलधन खाता, बटाव, हुण्डावन खाता, माल खाता, खर्च खाता, धर्मादा खाता, बीसो खर्च खाता आदि श्री खातों की बारी आती है। इनके लगा चुकने पर—एक दो पृष्ठ खाली छोड़ कर धनीवार के खाते लगाये जाते हैं। इनमें सब से पहले हमारे घरू खातों की बारी आती है; तत्पश्चात् तुम्हारे घरू धनीवार के खाते आते हैं। इनकी संख्या (विशेष) अधिक होती है। अतएव पहले इनकी प्रान्तवार मिसल तयार कर ली जाती है। फिर इनकी मिसलों का खाता-बही में आवर्त्तमान वर्गीकरण (Cyclic order) किया जाता है लेकिन जहाँ इनकी संख्या सैकड़ों पर पहुंचती है, वहाँ प्रान्तिक वर्गीकरण से काम नहीं चलता। वहाँ तो अकारादि क्रम से ये खाते लगाये जाते हैं।

२५। खाता-बही में मुख्य तीन बातें नोंधी—दर्ज की—जाती हैं। (१) रक़म, (२) रोकड़ अथवा नक़ल-पृष्ठ, और (३) मिती। इसके सिवा हर एक रक़म के साथ मिती के आगे थोड़े में उसका व्यौरा भी दे दिया जाता है। इससे एक सुभीता होता है। स्थानीय दूकानदारों के तथा विदेशस्थ व्यापारियों के हिसाब करने

में अन्य बहियों की सहायता की अपेक्षा नहीं रहती। हमने दूसरे अध्याय के अन्तिम उदाहरण को खता दिया है, जिस से ये सारी बातें स्पष्ट हो गईं हैं।

२६। यह खाता-बही प्रायः १२ सली होती है। परन्तु कहीं ८ और कहीं १६ सलकी भी बनाई जाती है। इन खाता-बहियों के एक पृष्ठ पर एक ही खाता नहीं लगाया जाता। इतना ही नहीं, वरन् सारे खाते इकसले भी नहीं होते अर्थात् बही की सारी चौड़ाई में एक ही खाता नहीं लगाया जाता; वरन् दो अथवा तीन तक होते हैं। बही में खाता लगाने वाला, अपने पिछले वर्ष के अनुभव से हरएक खाते के लिये योग्य स्थान (अवकाश) छोड़ता हुआ खाते लगाता चला जाता है; परन्तु उसका यह अनुमान प्रत्येक खाते के लिए सत्य नहीं ठहरता। जिस खाते में जमा की ओर जगह न रहे और नांवें की ओर काफी से ज़ियादा जगह बची रहे, तो शेष स्थान 'दुः * रक़म जमा की है' यह लिखकर जमा की रक़मों के लिये काम में ले लिया जाता है। इस ही प्रकार जमा की ओर के बचे हुए स्थान में नांवें की रक़में दर्ज कर दी जाती हैं। यह प्रथा अच्छी नहीं है; तथापि अन्त की २-४ रक़मों के लिए दूसरा खाता लगाने से अपेक्षाकृत उत्तम है। रोकड़ अथवा नक़ल-बही की खती हुई रक़मों के सिरे पर तिरछी रेखा अथवा बिन्दु बना दिया जाता है और पेटे में खाता-पृष्ठ लिख

*दुः=दुवारा अर्थात् दुबारा (सम्पूर्ण शब्द के लिये प्रथमाक्षर का प्रयोग किया गया है)।

दिया जाता है। इससे एक रक़म के दुबारा खताये जाने की आशङ्का बहुत ही कम रहती है।

कच्चा और पक्का खाता।

२७। रोकड़ तथा नक़ल-वही की भाँति यह खाता-बही भी दो प्रकार की होती है। एक को कच्ची खाता-बही कहते हैं और दूसरी को पक्की। कच्ची खाता-बही कच्ची रोकड़ तथा नक़ल-बही से तैयार की जाती है और पक्की खाता-बही रुजनावें से। हम पहले बता ही चुके हैं कि 'रुजनवाँ' रोकड़ तथा नक़ल-बही से तैयार किया जाता है। इसका प्रत्येक मेल मासिक होता है। पक्का खाता इसी रुजनावे से खताया जाता है। जिस खाते में रक़म की बिगत दी गयी हो, वह खाता 'बिगती खाता' कहाता है।

खतौनी उदाहरण ३ की।

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ श्री मूलधन खाते का है:—

५००) रो० पा० २६ मि० कार्तिक सुदी १

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ भाई किसनाजी माली का है:—

७५) रो० पा० २६ मि० कार्तिक सुदी ६ कृषि-उपकरण (खेतीका सामान)

८०) रो० पा० २६ मिती मगसर वदी ७ रोकड़ा।

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ भाई श्री रामा जी माली का है :—

१००) रो० पा० २६ मि० कार्तिक सुदी १० चना— मण लीना	५०) रो० पा० मि० मगसर बदी १० रोकड़ा दीना
२००) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी १५ रोकड़ा आया ।	७५) रो० पा० ३० मि० मगसर बदी १२ गेहू मण दीना (बेचा)

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ भाई केसराजी माली का है :—

५०) रो० पा० २६ मि० मगसर बदी ८ रोकड़ा आया ।	५०) रो० पा० २६ मि० कार्तिक सुदी १२ बैल जोड़ा १ तुमाने बेची तीका ।

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ श्री माल खाते का है :—

७५) रो० पा० ३० मि० मगसर बदी १२ गेहूँ मण बेचे ।	१००) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी ४ गेहूँ मण ख़रीदे ।
	१००) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी १० चना मण ख़रीदे ।

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ खाता १ श्री कृषि-ख़र्च खाते का है :—

५०) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी १२ बैल-जोड़ी १ का बेची ।	१००) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी ५ बैल जोड़ी १ ख़रीदी ।
	७५) रो० पा० २६ मिती कार्तिक सुदी ६ कृषि-उपकरण ख़रीदे ।

खाता डोढ़ा करना अथवा उठाना।



२८। जब रोकड़ अथवा नक़ल-वही आदि खताकर खाते तैयार कर लिये जाते हैं, तब हमें व्यापार में कितना हानि-लाभ हुआ है, हमारा कितना देना है और कितना लेना है, इत्यादि बातें जानने की इच्छा होती है। उपर्युक्त प्रश्नों को हल करने के लिये हम धनीवार के खाते डोढ़े करने को और श्री खाते उठाने को तैयार होते हैं। धनीवार के खातों को डोढ़ा करने एवम् उनको तोड़ने के पहले प्रत्येक खाते का व्याज जोड़ * लिया जाता है। व्याज के इन रुपयों का जमा-ख़र्च नक़ल-वही में करके, ये अङ्क खाते में खता लिये जाते हैं और तब प्रत्येक खाते की बाक़ी तोड़ी जाती है। और खाते डोढ़े कर दिये जाते हैं।

जिस खाते की जमा और नाँवें की जोड़ बराबर हो, वह खाता बराबर कहा जाता है। परन्तु प्रत्येक खाते की ये दोनों जोड़ें सदा बराबर नहीं होतीं ; इसलिए जिधर की जोड़ कम हो, उधर ही अन्तर की रक़म जोड़ कर दोनों ओर की जोड़ें बराबर कर दी जाती हैं। ऐसा करने को खाता डोढ़ा करना कहते हैं। जमा की बक़ाया को 'बाक़ी देना' और नाँवें की बक़ाया को 'बाक़ी लेना' कहते हैं। प्रत्येक खाते की जोड़ें इस प्रकार बराबर करके, सिरे के सलसे दोहरी लकीर दोनों ओर खींच कर, खाता बन्द कर

---

* खातों का व्याज लगाना अध्याय ६ में बताया गया है।

दिया जाता है। इसके बाद यदि खाते में रकम लेनी हो तो नाँवें की ओर; और देनी हो तो जमा की ओर वह अन्तर की रक़म लिख दी जाती है। इस रक़म का ब्यौरा किस प्रकार दिया जाता है, वह नीचे दिये हुए उदाहरण द्वारा स्पष्ट समझ में आ सकेगा।

उदाहरण ४। भाई रामचन्द्र नत्थूमल ने भाई हीराचन्द गुलाबचन्द श्री पालीवाले को इस प्रकार माल भेजा :—

चैत्र सुदी १ सं० १९६४	कपड़ा गाँठ १ रु० १५०)
वैशाख सुदी ७ „	केशर रतल १ रु० ४८॥।)
आषाढ़ वद ६ „	रोकड़ा दिये रु० ६०)
कार्तिक वदी ५ „	कपड़ा गाँठ १ रु० १३१।)

इसके एवज़ में उसे इस प्रकार रुपया मिला :—

चैत्र सुदी १०	हुण्डी १ रु० १५०) की हरनंदराय फूलचन्द के ऊपर की
जेष्ठ वदी ७ रजिस्ट्री से	नोट रु० ५०) के
आश्विन वद ४	हुण्डी १ रु० १३०) की पदमचन्द भूरा के ऊपर की

उपर्युक्त लेन-देन भाई रामचन्द्र नत्थूमल की वही में इस प्रकार लिखा जायगा :—

। श्रीः ॥

। १॥ खाता १ भाई हीराचन्दजी गुलाबचन्द श्री पालीवाले का है ।

१५०) मि० चैत्र सुदी १० हुंडी १ आई हरनंद राय फूलचन्द ऊपर	१५०) मिती चैत्र सुदी १ गांठ १ कपड़ा की भेजी
५०) मि० ज्येष्ठ बद ७ नोट रजिस्टरीमें आये	४८॥) मि० वैशाख सुदी ७ केशर रतल १ भेजी
१३०) मि० आश्विन बद ४ हुण्डी १ आई पदम चन्द भूरा ऊपर	६०) मि० आषाढ़ बद ६ रोकड़ा दिये
	१३१।) मि० कार्तिक बद ५ कपड़ा गांठ १ भेजी
३३०)	३९०)
६०) बाकी लेना	
३९०)	६०) बाकी लेना मि० कार्तिक सुद १ सं० १९६४ तक मुम्बई चलनका

उदाहरण ५। बाबू भगवानदास को व्यापार में नीचे लिखा आय-व्यय हुआ। इन आय-व्यय-सम्बन्धी खातों को उठाकर इसका वृद्धि खाता तैयार करो।

२६। ऊपर कहा गया है कि, प्रत्येक व्यापारी को अपनी व्यापार स्थिति को जानने के लिये धनीवार के खाते डोढ़े करने और श्री खाते उठाने पड़ते हैं। परन्तु यह बात अक्षरशः सत्य नहीं है। केवल उन्हीं श्री खातों को जो व्यापार-सम्बन्धी आय-व्यय के होते हैं (जैसे कि श्री ख़र्च खाता, श्री तार ख़र्च खाता, श्री आफिस भाड़ा-खाता, इत्यादि) हम अपनी व्यापार स्थिति का परिचय पाने के लिये उठाते हैं। इनसे अतिरिक्त जो 'श्री' खाते होते हैं, तो वे धनीवार के खाते की भाँति डोढ़े किये जाते हैं। इसका कारण यह है कि, व्यापार सम्बन्धी आय-व्यय के श्री खातों में यदि रक़म ज़ियादह नांवे मँडे अथवा जमा रहे तो वह किसी व्यक्ति विशेष से न तो वसूल करने की होती है और न किसी को देने की। व्यापार में जो कुछ ख़र्च होता है, चाहे वह किसी भी तरह से हो, सब नुकसान ही सा है। अतएव जो रक़म ऐसे श्री खातों में नांवे मँडी हो वह व्यापार के कमाये हुए मुनाफे में से बाद दे दी जाती है और यदि इन खातों में रक़म जमा हो तो उस मुनाफ़े में जोड़ दी जाती है। यानी इन खातों में जितनी देनी रक़म हो उतना ही हमारा लाभ विशेष है और जितनी लेनी हो उतनी ही हानि है। पूर्व इसके कि खाता-बही में श्री खाते इस प्रकार उठाये जायें, इन सब का जमा-ख़र्च नक़ल-बही में किया जाता है। यानी

जिन-जिन खातों में रक़म देनी निकलती हो, उतनी ही नक़ल-बही में 'श्री वृद्धि खाते' जमा कर इनके नाँवे माँड़ दी जाती है और जिन में लेनी हो सो वृद्धि खाते नाँवे माँड़ कर इनकी जमा कर दी जाती है। यहाँ से इन अङ्कों को भिन्न-भिन्न खातों में खता कर ऊपर लिखे मुताबिक खाते उठा दिये जाते हैं।

गुमाश्तों तथा सेवकों का वेतन ९००) मकान-किराया १५०) फुटकर खर्च ७५), ष्टाम्प ख़र्च २५), बटाव हुण्डावन दी ७॥), व्याज के आये ७५०), बटाव हुण्डावन के आये ५००), आढ़त दलाली के आये १५०)

उपर्युक्त आय-व्यय का जमा-ख़र्च नक़ल-बही में इस प्रकार होगा :—

११५०) श्रीवृद्धि खाते लेखे मिती कातिक वद १५ इस भाँति धनीवार का जमा कर तुम्हारे नाँवे लिखे।

ε००) श्री गुमाश्तों तथा नौकरों के वेतन खाते जमा, वेतन के लगते रहे सो जमा किये।

१५०) श्री मकान-किराया खाते जमा।

७५) श्री ख़र्च खाते जमा।

२५) श्री ष्टाम्प ख़र्च खाते जमा।

११५०)

१३६२॥) श्रीवृद्धि खाते जमा मिती कातिक वद १५ इस भाँति

धनीवारके नाँवें लिख कर तुम्हारे जमा किये

७५०) श्री व्याज खाते लेखे।

४६२॥) श्री वटाव हुण्डावन खाते लेखे।

१५०) श्री आढ़त दलाली खाते लेखे।

१३६२॥)

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्रीवृद्धि खातेका है :—

१३६२॥) न० पा० ४५ मि० कार्तिक बदी १५	११५०) न० पा० ४५ मि० कार्तिक बदी १५
	२४२॥) बाक़ी देना नफाके बचते रहे
१३६२॥)	१३६२॥)
२४२॥) बाक़ी देना नफा का	

माल खाता उठाना और उसकी बाकी तोड़ना।



३०। जिन श्री खातों की धनीवार के खातों की भाँति बाकी तोड़ कर डोढ़े करने को ऊपर कहा गया है उनमें से एक माल खाता है। इस खाते को उठाने को या हानि-लाभ का ठीक-ठीक हाल जानने के लिये गोदाम में बाकी बचे हुए माल की क़ीमत का अन्दाज़ा किया जाता है। इसका कारण यह है कि, ख़रीद किया हुआ माल, मालखाता उठाने के समय तक, सारा ही पीछे नहीं बिक जाता। अतएव जिस लागत का माल गोदाम में पड़ा हुआ है, यदि उसका अनुमान न करें और उसकी लागत अथवा मूल्य माल-खाते में जमा न करें, तो हमारा लाभ उतना ही कम और हानि उतनी ही ज़ियादा दीख पड़ेगी। माल जिस भाव से व्यापार के लिये ख़रीदा जाता है उसी भावमें पीछे नहीं वेच दिया जाता। यह बिक्री का भाव यदि ख़रीद के भाव से ऊँचा हो, तो हमें व्यापार में लाभ रहता है और यदि नीचा तो नुक़सान। इसलिये शेष बचे हुए माल की लागत जमा की ओर लिख कर, दोनों ओर को जोड़ों का अन्तर निकाला जाता है। यदि यह अन्तर जमा का हो, तो उतना ही हमारा लाभ है और यदि नावें का हो, तो उतनी ही हमारी हानि है। नक़ल-वही में इस अन्तर की रक़म का जमा-ख़र्च करके माल-खाता उठा दिया जाता है।

उदाहरण ६। नीचे लिखी हुई ख़रीदी और बिक्री का माल-खाता तैयार करके हानि-लाभ बताइये।

श्रावण बद	१	माल पोते बाक़ी	रु० १८००)
,,	२	रोकड़ा से ख़रीदी गाँठ १ मलमल की	,, ६००)
,,	३	अमरचन्दजी को बेचा	,, ५५८॥≶)
,,	४	रोकड़ा से बेचा	,, २२७॥≶)
,,	५	देवीचन्दजी से ख़रीदा	,, १०५०)
,,	६	हेमचन्द फतेचन्दको बेचा	,, २२६५)
,,	,,	श्रीकृष्ण रामनाथको बेचा	,, ४२०)
		श्रीमाल पोते बाक़ी	,, ४७२॥)

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्री माल खाते का है:—

५५६।।≈) मि० श्रावण बद ३ अमरचन्द
जीको बेचा उसके

२२७॥≈) मि० श्रावण बद ४ रोकड़ासे
बेचा उसके

२२६५) मि० श्रावण बद ६ हेमचन्द
फतेहचन्द को बेचा उसके

४२०) मि० श्रावण बद ६ श्री कृष्ण
रामनाथ को बेचा उसके

३५०२॥)

४७२॥) मि० श्रावण बद ७ माल पोते
बाक़ी

३६७५)

१८००) मि० श्रावण बद १ माल पोते
पुरानी बाक़ी लेना

६००) मि० श्रावण बद २ गांठ १ मलमलकी
रोकड़ा से खरीदी उसके

१०५०) मि० श्रावण बद ५

३४५०)

५२५) न० पा०५०मि० श्रावण बद ७ नफाका

३६७५)

४७२॥) बाक़ी लेना मि० श्रावण बद ७
तक माल पोते

५२५) श्री वृद्धि खाते जमा मि० श्रावण वद ७ माल खाते में
देने रहे, सो उसके नाँवे लिखकर तुम्हारे जमा किये पा०
५२५) श्री माल खाते लेखे मि० श्रावण वद ७, पा० ४६

माल खातेके विषयमें एक बात खास तौर से ध्यान में रखी जाने योग्य है और वह यह कि, जब तक हमारे पास गोदाम में माल शेष बचा हुआ है तब तक उसकी लागत तक की रक़म के लिये यह मालखाता हमारा ऋणी है। अन्य श्री खातों की भाँति इसमें लेनी अथवा देनी निकलती रक़म वृद्धि खाते नाँवे अथवा जमा कर देने से यह खाता बेबाक नहीं हो जाता। परन्तु शेष बचे हुए माल की लागत की रकम इस खाते में धनीवार के खातों की भाँति लेनी बोलती रहती है और उस हद तक इस खाते के साथ भी व्यक्तिगत खाते का सा ही बर्ताव आँकड़ा आदि तैयार करते समय किया जाता है।

श्री उदरत खाता।

३१। जिन रक़मों का जमा-ख़र्च—अनिश्चित विगत, अपूर्ण विगत, संमिश्रित विगत, अथवा अन्य किसी कारण से—किसी खाता विशेष में नहीं किया जा सकता हो, उनका जमा-ख़र्च जिस खाते में होता है, उसे उदरत खाता कहते हैं। इसकी आवश्यकता नक़द लेन-देन में पड़ा करती है। उदाहरण के लिये, कल्पना कीजिये कि, एक व्यापारी को उसके मुनीम ने देशाटन में

आढ़तियों के हिसाब करके रु० २२४०) रजिष्ट्री चिट्ठी द्वारा भेजे और लिखा कि, यह रक़म कौन-कौन से आढ़तिये से कितनी वसूल हुई है, उसकी विगत यहाँ लौटने पर लिख दूंगा। यह रक़म किसी खाता विशेष में तो जमा की ही नहीं जा सकती। क्योंकि जिन लोगों से यह प्राप्त हुई है उसका ब्योरा न तो अभी तक उसे मिला है और न उसे स्वयम् को मालूम ही है। और यदि यह रक़म ब्योरा, मिलने तक इसी प्रकार उपलक में रक्खी रहे, तो नाहक ब्याज की कसर लगती है। व्यापारी यह भी कसर नहीं खाया चाहता और विना उसकी वहियों में इस रक़म का जमा-ख़र्च किये व उसे अपने उपयोग में भी नहीं ला सकता। इस लिये इसका किसी भी तरह से क्यों, न हो, विगत न मिलने तक अपनी वहियों में जमा-ख़र्च होना ज़रूरी है। इस प्रकार की रक़मों के जमा-ख़र्च की दो शैलियाँ हैं:—(१) यह रक़म 'श्री उदरत खाते' हस्ते मुनीम मुन्नीलाल इस प्रकार विगत देकर जमा की जाय; अथवा (२) 'मुनीम मुन्नीलाल का हस्ते, खाता खोलकर उसमें जमा की जाय। इन दोनों तरीकों से जमा-ख़र्च करने का अन्तर केवल श्रेणी मात्र का है। उदरत खाता एक सामान्य खाता है। इसमें इस प्रकार की अनेक रक़मों का जमा-ख़र्च रहता है। हस्ते खाता इसी उदरत खाते की एक रक़म को लेकर खोला जाता है। इसमें केवल एक ही प्रकार की रक़मों का समावेश होता है। अस्तु; इस शैली से हमें प्रत्येक रक़म के लिये जिस की विगत अनिश्चित अपूर्ण अथवा संमिश्रित हो, एक पृथक् खाता लिखना पड़ता है।

६

उदरत खाता मिलाना और उसकी बाकी छाँटना।



३२। जब हम प्रत्येक अनिश्चित, अपूर्ण, अथवा संमिश्रित रक़म के लिए पृथक्-पृथक् खाता खोलें, तो हमें उनके मिलाने की अथवा उनकी बाक़ी छाँटने में विशेष झंझट नहीं उठानी पड़ती। व्यक्तिगत खातों की भाँति ये खाते भी, यदि इनमें जमा-खर्च की गई रक़मका यथास्थान जमा-खर्च करके ड्योढ़ नहीं कर दिये जायँ तो खड़े बोलते रहेंगे। और तब आँकड़ा तैयार करने के पहले इनका उठा देना हमें आवश्यक होगा। परन्तु उदरत खाते में खती हुई रक़मों का इस प्रकार सहज ही निबटारा नहीं हो जाता इस खातेमें एक मुश्त ही अथवा आई हुई रक़म टुकड़े-टुकड़े होकर वापिस आ अथवा दी जा सकती है, अथवा टुकड़े-टुकड़े दी अथवा आई हुई रक़म एक मुश्त आ अथवा दी जा सकती है। अस्तु, इस खाते की बाकी छाँटने के पहले इन सब का मिलान करना आवश्यक है। मिलान करने का अभिप्राय यह है कि, जिस व्यक्ति के हस्ते जो रक़म आवे अथवा दी जाय, वह उतनी ही उसके हस्ते पीछे उसी रूप में अथवा अन्य किसी प्रकार से दी जाना अथवा आना चाहिये। यदि इससे कमती अथवा ज़ियादा रक़म उस व्यक्ति के हस्ते दी अथवा आई हो, तो बाक़ी का हिसाब उस व्यक्ति से लेकर अथवा उसे देकर जमा और नांवें की

उसके हस्ते की रक़में सालके अन्त में बराबर कर दी जाती हैं। यदि वह व्यक्ति साल के अन्त तक भी इसका हिसाब न दे अथवा उसको न दिया जाय, तो अन्तमें उतनी ही रक़म उसके निजी खाते में नाँवे अथवा जमा कर, उदरत खाते की वह रक़म बराबर कर दी जाती है और खाता उठा दिया जा सकता है। अस्तु; इस खाते के मिलान करने का मुख्य साधन प्रत्येक रक़म के ब्यौरे में लिखा हुआ 'हस्ते' है। इसी से हम एक से दूसरी रक़म का इस खाते में विश्लेषण कर सकते हैं। इसके अतिरिक्त इस खाते के मिलान का अन्य कोई साधन नहीं है। अतएव इस खाते में हस्ते का लिखना नितान्त आवश्यक है। इस खाते में प्रत्येक रक़म की मिती न भी हो तो चल सकता है। क्योंकि इस खाते का ब्याज नहीं लगाया जाता है। इस खाते को मिलाने के लिये किसी भी ओर से बे-मिलाई हुई रक़म लेकर उसकी दूसरी ओर उसी हस्ते की रक़म की तलाश की जाती है। यदि दोनों मिल जायँ, तो उन पर एक प्रकार का चिह्न [बिन्दु ° अथवा टिक V] कर दिया जाता है। यदि दोनों में से एक बड़ी हो तो जिस ओर की रक़म छोटी हो उसी ओर इसको पूर्ण करनेवाली अन्य रक़म की तलाश की जाती है। और इस प्रकार आदि से अन्त तक मिल सकने वाली रक़मों का मिलान कर लिया जाता है और सब पर मिल जाने का चिह्न भी कर दिया जाता है। जो रक़में जमा और नाँवे की ओर नहीं मिलें उनकी एक पृथक् क़ाग़ज़ पर नक़ल करके इस उदरत खातेकी जोड़ें मिलाई जाती हैं। इस खातेकी

जमा की जोड़ बे-मिली हुई नाँवें की रक़मों की ज़ोड़ को मिला कर नाँवे की जोड़ से, बे-मिली हुई जमा की रक़मों की जोड़ के बराबर बड़ी होनी चाहिये। यानी नाँवें की बे-मिली हुई रक़मों को जमा की ओर, और जमा की बे-मिली हुई रक़मों को नाँवें की ओर लिख देने पर इस खाते की दोनों जोड़ें समान होनी चाहिये। क्यों कि यह कोई सच्चा खाता नहीं है। इसका उपयोग केवल जमा-ख़र्च के सुभीते के लिये है। अस्तु; जो रक़म इसमें जमा होती है वह आगे-पीछे जाकर अवश्य पीछे नाँवें में मँड जाती है। अस्तु, जब तक ये जोड़ें समान न हों, तब तक खाता मिला हुआ नहीं कहा जा सकता।

बे-मिली हुई रक़मों का या तो इस ख़ाते को बराबर करनेके पूर्व यथा स्थान जमा-ख़र्च कर दिया जाता है। और यदि यह सम्भव न हो तो हस्ते वाले व्यक्तियों का खाता खोल कर उसमें वे जमा नाँवें कर दी जाती हैं और उदरतखाते मिला दिया जाता है। इस खाते को अङ्गरेज़ी में सस्पेन्स एकाउण्ट (Suspence account) और देशी भाषामें उचंत ख़ाता, प्रचून खाता, उपलक खाता आदि भी कहते हैं।

श्री ग़लत खाता।

२३। व्यापारमें हमें कई एक ऐसे आढ़तियों अथवा ग्राहकोंसे भी काम पड़ता है कि, जो माल ख़रीद कर उसका रुपया बुरी नीयत से अथवा आर्थिक असमर्थता के कारण नहीं चुका सकते।

कुछ तो दिवाला निकाल देते हैं और कुछ रफूचक्कर हो जाते हैं। दिवालिये से तो सरकार की मार्फ़त अथवा फ़ैसला कर लेने पर हमें कुछ न कुछ मिल ही जाता है; परन्तु लापता होने वाले से हमें फूटी कौड़ी भी प्राप्त नहीं होती। परिणाम दोनों ही स्थितियों में यह होता है कि, हमारी सारी रक़म अथवा उसका कुछ अंश डूब जाता है। ऐसी रक़म को व्यापारी लोग 'ग़लत की रक़म' कहते हैं। जब हमें व्यापार में इस प्रकार की हानि सहनी पड़े, तो ऐसी रक़म, जो न दे सकें, उसको जमा कर 'श्री ग़लत उगाई खाता' नामक नया खाता खोल कर उसके नाँवें माँड देना चाहिये। यदि ग़लत खाते माँडी हुई रक़म कभी फिर वसूल हो सके, तो वसूल करके वह इसी खाते में जमा कर ली जाती है। यह ग़लत खाता श्री वृद्धि खाते का ही एक भेद है। इसकी बाक़ी तोड़कर श्री वृद्धि खातेमें अपने व्यापार का असली नफ़ा निकालने के लिये ले जाई जाती है।

यदि कोई आढ़तिया अथवा ग्राहक अपना संपूर्ण देना चुकाने में असमर्थ रहे और अपने कर्जदारों से प्रति रुपया जितने आने बन सके देकर उऋण हो जाय तो इस प्रकार आई हुई रक़म उस के खाते रोकड़ में जमा कर ली जाती है और बाक़ी लेनी रक़म श्री ग़लत उगाई खाते नाँवें माँड कर उसको जमा कर उसका खाता डोढ़ा कर दिया जाता है। उदाहरण के लिये मान लीजिये कि, श्रीयुत यज्ञदत्त में आपके रु० ३००) बाक़ी लेना है, और वह एक रुपये में ॥৶) ८ पाई देकर आपसे फ़ैसला कर चुकती

रुपये भर पाये की रसीद लिखवा लेता है। इस सबका जमा-खर्च इस प्रकार आपको करना होगा।

रोकड़ बही।

३००) श्रीयुत यज्ञदत्त का जमा तुम में शुँ ३००) बाकी लेणे थे सो तुम्हारे से प्रति रुपया ॥≈)८ पाई लेकर फैसला किया और खाते चुकती की रसीद लिख दी सो तुम्हारे इस प्रकार जमा किये २००) रोकड़ नोट नग दो १००) गलत उगाई खाते नाँवे माँड़ कर तुम्हारे जमा किये	१००) श्री गलत उगाई खाते नाँवे
३००)	

इस खाते को अंगरेज़ी में बेड डेब्ट एकाउण्ट [Bad debt account] कहते हैं।

श्री सिकमद वृद्धि खाता।

३४। बड़े-बड़े व्यापारियों में यह रिवाज है कि प्रत्येक साल का पक्का-आँकड़ा तैयार करनेके पहले, वे अपने सब आढ़तियों की

एक सूची तैयार करते हैं। और यदि उनमें से कोई व्यक्ति नादार अथवा अन्य किसी प्रकारसे अपना देना चुकाने में असमर्थ जान पड़ता हो तो इस प्रकार डूबने वाली रक़म का भी अन्दाज लगा लेते हैं। जितनी रक़म इस प्रकार वसूल होने में शंकित जान पड़े, उतनी ही वृद्धिखाते नाँवे माँडकर 'श्री सिकमद वृद्धि खाता' नामक नये खाते में जमा कर ली जाती है। ऐसा करने का कारण यह है कि, यदि कोई देनदार अपना देना चुकाने में किसी वर्ष असमर्थ हो जाय, तो हमारा उस वर्षका लाभ एकदम उतना कमती हो जायगा। अस्तु, हानि को प्रत्येक वर्ष पर लागू करनेके के लिये प्रति वर्ष के लाभ का कुछ अंश इस खाते के नाम से पृथक् कर दिया जाता है। और जब किसी आढ़तिये की रक़म वसूल नहीं होती है, तो वह इसी खाते में नाँवे माँड़ दी जाती है। इस खाते में देनी निकलती रक़म हमारा लाभ है और लेनी निकलती रक़म हमारा नुक़सान। इस खाते को अंगरेज़ी में बैड डेब्ट रिजर्व एकाउण्ट [Bad debt reserve account] कहते हैं।

प्रति वर्ष मुनाफ़े का कुछ अंश इस खाते में जमा करने के बजाय, कई व्यापारी अपनी कुल लेनी रक़मका ५ टके हिस्सा प्रति वर्ष इस खाते में जमा रखते हैं। यदि किसी वर्ष में इस खातेमें ५ टके से विशेष रक़म जमा हो, तो बाक़ी की रक़म नक़ल वही में जमा-ख़र्च करके श्रीवृद्धि खाते में फिरा ली जाती है। और यदि वह कम हो तो उतनी ही रक़म श्रीवृद्धि खाते में नाँवें माँड़कर इस खाते में जमा कर ली जाती है और पूरी ५ टका कार

ली जाती है। इस खाते में केवल ग़लत उघाई खाते में बाकी लेनी अथवा देनी रक़म का जमा-ख़र्च किया जाता है। यह सब विवेचन निम्न लिखित उदाहरण से स्पष्ट होवेंगे।

उदाहरण ७। कार्तिक शुक्ल १ सं० १६७५ को श्रीयुत माणिकचन्दजी की बहियों में रु० ७५०००) की लेनी रक़म का ५ टके के हिसाब से श्री सिकमंद वृद्धि खाते में रु० ३७५०) जमा हैं।

मि० चैत्र सुदी १ सं० १८७६ तक रु० २२५०) की गलत उघाई अनुमान की गई है। और इस मिती तक की कुल उघाई रु० ६७५००) की है। इस उघाई के ५ टके का व ग़लत उघाई का जमा-ख़र्च करके श्री सिकमंद वृद्धि खाता तैयार कीजिये। ग़लत उघाई खाते में रु० १५००) इस मिती तक जमा है।

|१|| खाता १ श्री सिकमंद वृद्धि खाते का है

३७५०) ना०पा०मि०कातिक सुदी १	२२५०) ना०पा० चैत्र सुदी
१९७५ जुनी बाकी देणा	१ गलत उघाई खाते
१८७५) ना० पा० मि० चैत्र सुदी १	जमा कर नाँवे माँडा
वृद्धि खाते नाँवें माँडे जमा कीना	२२५०)
५६२५)	३३७५) बाकी देना
	५६२५)

३३७५) बाकी देना मि० चैत्र सुदी १
सं० १९७६ तक

जमा-ख़र्च नक़ल वही का।

२२५०) श्री सिकमंद वृद्धि खाते लेखै मि० चैत्र सुदी १ आज मिती तक की उघाई की डूबत तिरंत बावत गलत उघाई खाते जमा कर तुम्हारे नाँवें माँडे।

२२५०) श्री गलत उघाई खाते जमा मि० चैत्र सुदी १ आज मिती तक की उघाई की डुबत तिरंत बावत तुम्हारा जमाकर श्री सिकमंद वृद्धि खाते नाँवें माँडे।

१८७५) श्री सिकमंद वृद्धि खाते जमा मि० चैत्र सुदी १ उघाई रु० ६७५००) की उसके ५ टकेके हिसाव से रु० ३३७५) बाद रु० १५००) गलत उघाई खाते में बाक़ी देने रहे सो जाने। बाकी रु० तुम्हारे यहां जमाकर श्री वृद्धि खाते नाँवें माँडे।

१८७५) श्री वृद्धि खाते नाँवें मि० चैत्र सुदी १ उघाई डूबत तिरंत बावत तुम्हारे नाँवें माँडकर श्री सिकमंद वृद्धि खाते जमाकीना।



आँकड़ा ।

३५। जिस विवरण पत्रिका से व्यापारी को अपने व्यापार की स्थिति का हाल जान पड़े, उसे 'आँकड़ा' कहते हैं। आँकड़ा प्रति वर्ष तैयार करने की चाल है। परन्तु जब हमें अपनी व्यापार स्थिति तथा धनकी न्यूनाधिकता का पता लगाना हो, तभी वह तैयार किया जा सकता है। यदि संक्षेप में कहें, तो 'आँकड़ा' देन-लेन की व्यवस्थाका परिचय करानेवाला कागज़ मात्र है। जो कुछ खातों में बाक़ी लेना है, उतना सब हमारा लेना और जो कुछ बाक़ी देना है वह हमारा देना है, जितना लेना देने की अपेक्षा कम हो उतनी ही हमें व्यापार में हानि है और जितना वह अधिक हो उतना ही हमें लाभ है। यह आँकड़ा तैयार करने के पूर्व खाता-वहीके सब खाते डोढ़े कर दिये अथवा उठा दिये जाते हैं।

आँकड़ा तैयार करना ।

३६। यह साधारणतया प्रति वर्ष तैयार किया जाता है। परन्तु अपने व्यापार की तथा लेन-देन की व्यवस्था से हर समय परिचित रहने के लिये, यह कभी-कभी त्रैमासिक (तिमाही) अथवा पाण्मासिक (छः माही) भी तैयार कर लिया जाता है। इसके तैयार करने की रीति इस प्रकार है:—खाता-वही में जो

खाते लगे हैं, उनकी जमा की बक़ाया जमा की ओर और नाँवे की बक़ाया नाँवे की ओर एक पत्र पर उतार ली जाती है। आँकड़े का फ़र्क़ सुभीते से मालूम हो जाय, इस ख़याल से ये जमा और नाँवे की बक़ाया मिसल-क्रमसे लिखी जाती है। एक मिसल में जितने खाते हैं, उनकी सब बक़ाया पेटे में लिख कर सब की जोड़ सिरेपर चढ़ा दी जाती है। इस प्रकार उतारी हुई जमा और नाँवे की बक़ायों का जोड़ लगाकर उनका अन्तर निकाला जाता है। यदि यह अन्तर वर्ष के अन्तिम दिवसकी पोते बाक़ीके बराबर हो, तो आँकड़ा बराबर मिला हुआ कहा जाता है।

व्यापारियों में एक अन्ध श्रद्धा पहले से चली आ रही है। वे कहते हैं कि, आँकड़ा बराबर न मिलाना चाहिये। यदि सौभाग्य-वश वह बराबर मिल भी जाय, तो उसमें जान-बूझ कर फ़र्क़ कर देते हैं। हमने इसका तत्व जानना चाहा, पर हमें किसी व्यापारी से सन्तोषजनक उत्तर न मिला। इस दशा में हम तो यही अच्छा समझते हैं, कि जबतक आँकड़ा पाई-पाई बराबर न मिल जाय, तब तक उसे न छोड़ना चाहिये। क्योंकि जहाँ अभी कुछ रुपयों अथवा पैसों ही का फ़र्क़ पड़ रहा है, वहीं पीछे भूल मालूम हो जाने पर, सैकड़ों तक का फ़र्क़ पड़ जाना कुछ असम्भव नहीं है। इसलिये आँकड़ा बराबर मिलाने में परिश्रम करना निरर्थक नहीं, वरन् बहुत आवश्यक है। इस सुधरे हुए कालमें परम्परागत अन्ध-श्रद्धा के भक्त बनकर सत्य बात को टालना अनुचित है।

जिस प्रकार हम दैनिक रोकड़-बही के मेल को पाई-पाई मिलाना नितान्त आवश्यक ही नहीं, वरन् अनिवार्य्य समझते हैं, उसी प्रकार इस आँकड़े के भी मिलान की बात है।

ऊपर कहा जा चुका है कि, आँकड़े में जमा और नाँवें की बक़ायाओं की जोड़ का अन्तर वर्षके अन्तिम दिनकी पोते बाक़ी के बराबर होना चाहिये। अब यह जानना आवश्यक है कि, यदि यह अन्तर रोकड़ पोते बाक़ी के बराबर हो, तो आँकड़ेके किस ओर और किस नाम से लिखा जाना चाहिये। यह पोते बाक़ी बची हुई रोकड़ हमारी पूँजी है, इसीसे हम आगामी वर्षके व्यापार का काम आरम्भ करते हैं। इसलिये हमारी पुरानी वहियोंमें यह रक़म नई वहियोंके खाते नाँवें लिखी जाकर, नई वहियों में पुरानी वहियों की जमा कर ली जाती है और पुरानी वहियों का आँक उठा दिया जाता है; अर्थात् यह पोते बाक़ीको रक़म आँकड़े में नाँवें की ओर नई वहियों में खाते नाँवें लिखी जाती है और आँकड़ा बराबर मिला दिया जाता है।

ऊपर बताई गई रीति के अतिरिक्त आँकड़ा तैयार करने की एक और रीति भी है। उस रीति में इस रीतिसे केवल इतनी ही भिन्नता है कि फिक्स्ड डिपोज़िट अर्थात् अमानत या मूलधन की बक़ाया की एवज़ में अन्तिम दिवस की रोकड़ बाक़ी पहले ही से लिख ली जाती है और इन बक़ायाओं का अन्तर मूलधन की बक़ाया से मिलाया जाता है। इस अन्तर के मूलधन की बक़ाया से मिल जाने पर आँकड़ा मिला कहा

जाता है। इन्हीं दोनों रीतियों का स्पष्टीकरण हम नीचे लिखे उदाहरणों द्वारा करते हैं :—

उदाहरण ८। पं० यज्ञदत्त शर्माकी, मिती कार्तिक वदी १५ सं० १६४८ तक, निम्न स्थिति है। उसका आँकड़ा तैयार करके यह बताओ कि, उसके पास अन्तिम दिन तक कितनी पूँजी रही ?

मिती कार्तिक वद १५ सं० १६४८ पोते बाक़ी रु०	१६३५)
माल पोते	४०६५)
हरदत्तमें लेना	१५००)
गोरीशंकरमें लेना	५५५)
फतेहचन्दमें लेना	२७०)
मोतीलालका देना	१२९०)
शिवचन्दका देना	१९९५)
फूलचन्दका देना	३७५)

॥ श्रीः ॥

।१॥ याद १ श्री आँकड़ा की सं० १९४७ का कार्तिक सुद १ से सं० १९४८ का कार्तिक बद १५ तक का—

३३००) मिसल दिसावरों की

१२६०) मोतीलाल को देने

१६६५) शिवचन्द के देने

३७५) फूलचन्द के देने

३३००)

५०५५) मिसल जिनस खाता की

५०५५) फिक्स्ड डिपोज़िट

८३५५)

२३२५) मिसल दिसावरों की

५५५) गौरीशङ्कर में लेना

१५००) हरदत्त में लेना

२७०) फूलचन्द में लेना

२३२५)

६०३०) मिसल जिनस खाता की

१९३५) पुरानी बहियों में लेना

४०९५) माल खाते में लेने

६०३०)

८३५५)

उदाहरण ६। भाई माणिकचन्दजी का वार्षिक लेन-देन नीचे लिखी भाँति है, तो आँकड़ा तैयार करके बताओ कि, अन्तिम दिवस की रोकड़ बाक़ी क्या होगी ?

नाज पोते ४८००), गुलाबचन्द्र में लेना १३६५), चिम्मनलाल में लेना ४३५), कपड़ा पोते ३६००), मोतीचन्द्र का देना १४७०), हिम्मतमलके देने रु० १५४५), ताराचन्द्र के देने रु० ६०००), प्रतापचन्द्र को देने रु० १६५०), अमरचन्द्र के देने रु० ५४०)।

।१॥ याद १ श्री आँकड़ा की भाई माणिकचन्दजी को।

७ ११५०५) मिसल दिसावरों की तुम्हारे घर

१४७०) मोतीचन्द्र के देने

१५४५) हिम्मतलाल के देने

६०००) ताराचन्द्र के देने

१९५०) प्रतापचन्द्र के देने

५४०) अमरचन्द्र के देने

११५०५)

१८३०) मिसल दिसावरों की तुम्हारे घर

१३९५) गुलाबचन्द्र में लेना

४३५) चिम्मनलाल में लेना

१८३०)

९६७५) मिसल श्री जिनस खातों की

४८००) नाज पोते

३६००) कपड़ा पोते

१२७५) जूनी (पुरानी) वहियों में लेना रोकड़ बाक़ी

९६७५)

११५०५)

चौथा अध्याय।

नक़ल बही।

३७। व्यापारी को सर्वोपयोगी पुस्तकों (बहियों) में से दो पुस्तकों का वर्णन तो पिछले अध्यायों में किया जा चुका है। अब इस अध्याय में हम उसकी तृतीय उपयोगी पुस्तक (बही) तथा उसके उपयोगका परिचय करावेंगे।

नक़ल-बही उधार लेन-देन तथा क्रय-विक्रयादिकोंके जमा-ख़र्च करने के काम में आती है। परन्तु इतने ही में इसका कार्य्यक्षेत्र समाप्त नहीं हो जाता है। संक्षिप्त में कहें, तो इसका कार्य्यक्षेत्र इतना विस्तृत है कि, जहाँ रोकड़-बही की गति नहीं पहुँच सकती, वहाँ यही बही व्यापारी को सहायता देती है। अर्थात् जो जमा-ख़र्च रोकड़-बहीमें आसानी से तथा उत्तम प्रकार से नहीं किये जा सकते, वे सब नक़ल-बहीमें बड़ी आसानी से तथा उत्तम प्रकार से किये जाते हैं। यही कारण है कि, व्यापारी लोग इस बही को भी मूल बहियों में स्थान देते हैं और इसके जमा-ख़र्चको बड़ा संमिश्रत—पेचीदा—तथा कठिन

बतलाते हैं। जो नक़लवही के प्रत्येक प्रकार के जमा-ख़र्चों का जमा-ख़र्च करने में सिद्ध होता है, वही पक्का नामादार कहाता है।

नक़ल बहीका स्वरूप।

३८। नक़ल वही भी दो प्रकार की होती है। एक कच्ची और दूसरी पक्की। इनका कार्य्यक्षेत्र व्यापार-भेदकी अपेक्षा से भिन्न-भिन्न होता है। सराफके यहाँ कच्ची नक़ल-वही हुण्डी आदिके नोंध व नक़ल लेनेमें काम आती है; परन्तु व्यापारीके यहाँ इसमें, दैनिक क्रय-विक्रय की नोंध होती है। बहुतसे सराफ पक्की नक़ल-वही रखते ही नहीं। वे इसका कार्य्य रूजनाँवे से ही लेते हैं। अतएव हम इसकी उपयोगिता के विषयमें कोई ख़ास बात नहीं कह सकते। परन्तु यह निर्विवाद है कि, उसका किसी न किसी रूपमें रखना प्रत्येक व्यापारी अथवा सराफ के लिये अनिवार्य्य है। यह वही प्रायः आठ सली होती है। इसमें नाँवे और जमाके अलग-अलग दो भाग नहीं होते, वरन् एकके पेटेमें दूसरा होता है, जहाँ तक सम्भव हो इस वही के सिरेमें रक़म नाँवे लिखी जाती है। और पेटे में जमा कर दी जाती है।

आँकड़ा जमा-ख़र्च करना।

३९। यह वारवार लिखा जा चुका है, कि खाता-वही में कोई भी आँक, बिना नक़ल-वही अथवा रोकड़-वही में जमा-ख़र्च हुए, नहीं आसकता। फलतः, साल की बाक़ियाँ भी, बिना इन दोनों

बहियों में से किसी एक में जमा-ख़र्च हुए, किसी भी प्रकार नये खाते में नहीं जा सकतीं। आँकड़े की परिभाषा करते समय कहा गया था कि, वह निरा व्यापार की स्थित और व्यवस्था दिखलाने वाला पत्र-मात्र है। इसी पत्र से यदि हम खाते में (नवीन खाता-वही में) भिन्न भिन्न खातों के आँक ले जाना चाहें, तो नहीं ले जा सकते। अतएव यह आवश्यक है कि, इस आँकड़े का जमा-ख़र्च किसी भी आद्य-वही में किया जाय। रोकड़-वही तो केवल नक़द लेन-देन और क्रय-विक्रय के जमा-ख़र्च के लिये है। अब व्यापार-सम्बन्धी जमा-ख़र्च करने की दूसरी वहियों में रह गयी केवल नक़ल-वही। सो इसी में आँकडे का जमा-ख़र्च किया जाता है। जमा-ख़र्च करने में, जो जमा की रक़में होती हैं, वे पुरानी वहियों खाते नाँवे माँड कर, पेटे में सब मिसलवार जमा कर ली जाती हैं। और नाँवे की रक़में पुरानी वहियों खाते जमा कर, मिसल वार नाँवे माँड दी जाती हैं। यहाँ से खताकर—सारे आँक नये खाते में ले जाते हैं। जिस प्रकार आँकड़ा नई वहियों में जमा-ख़र्च करना आवश्यक है, उसी प्रकार वह पुरानी वहियों में भी जमा-ख़र्च किया जाना चाहिये; अन्यथा पुरानी वहियों में देने-लेने के आँक योंहीं खड़े बोलते रहेंगे। यहाँ पर भी यही काम नक़ल-वही से ही लिया जाता है। पुरानी नक़ल-वही में जमा-ख़र्च करते समय, आँकड़े की जमा की रक़में नई वहियों की जमाकर, पेटे में मिसल-वार नाँवे माँड दी जाती हैं, और नाँवे की रक़म नई वहियों के नाँवे माँड कर मिसलवार जमा कर ली जाती हैं।

वीजक या भरतिया जमा-ख़र्च करना।



४०। आँकड़ा जमा-ख़र्च करने के अतिरिक्त नक़ल-वही वीजक जमा-ख़र्च करने में भी काम आती है। वीजक वह है, जिस में आढ़तिये के लिये ख़रीद किये गये माल की तादाद, क़िस्म (जात), भाव और लागत तथा तत्सम्बन्धी सारा ख़र्च और किस प्रकार वह भेजा गया है, उसका सारा हाल रहता है। वीजक भेजने का तात्पर्य्य यह है कि, माल पहुँच जाने पर आढ़तिया आये हुए माल को वीजक के मुताबिक़ सँभाल ले। यदि भूल से माल न्यूनाधिक चलान हो गया हो, तो वह तत्काल व्यापारी को लिखकर सुधरवा लिया जाता है; इस ही के आधार पर मँगाने वाला व्यापारी सायर पर महसूल (ज़कात) चुकाता है और तब ही उस माल को बेच सकता है। वीजक को अँगरेज़ी में इनवॉइस (Invoice) कहते हैं। इसमें जमा-ख़र्च करने की मुख्य बातें इस प्रकार हैं:—

(१) वीजक पाने वाले व्यक्ति का नाम तथा माल ख़रीदने की मिति।

(२) माल की तादाद तथा लागत।

(३) आढ़त तथा दलाली।

(४) धर्मादा।

(५) माल चढ़ाने का ख़र्च।

(६) बटाव अथवा छूट।

नीचे लिखे उदाहरण से ये बातें स्पष्ट हो जायेंगी ;—

उदाहरण १०। बम्बई के एक व्यापारी ने भीलवाड़ा शहर के अपने एक आढ़तिये, भाई रामगोपाल श्रीनिवास को, कपड़ा लट्ठा गाँठ ३, साठ-साठ थान की, प्र० ११॥≠॥) २, थानके हिसाब से, मि० आसौज वद १२ को ख़रीदकर भेजीं। यदि वह आढ़त दलाली प्र० ॥), धर्मादा प्र० ‐) सैकड़ा की लगावे और उसे माल चढ़ाने का ख़र्च १॥) पड़े, तो बताओ कि, वह अपने आढ़तिये को कितने रुपयों का बीजक किस प्रकार भेजेगा, और अपनी नक़ल-वही में किस प्रकार जमा-ख़र्च करेगा? वह आढ़तिया प्र० ≠) सैकड़े का बटाव भी काटता है।

नक़ल-वही में बीजक का जमा खर्च ।

२११०॥≋) भाई रामगोपालजी श्रीनिवास श्रीभीलवाड़ा वाले के लेखै, मि० आसौज वद १२ लट्ठा गाँठ ३ तुम्हें भेजी उसके ।

२१००) श्री माल खाते जमा ।

२१००) लट्ठा गाँठ ३,थान १८० प्र० ११॥≈॥)२

१०॥) श्रीआढ़त दलाली खाते जमा प्र० ॥) सैकड़ा।

१।-) श्री धर्मादा खाते जमा।

१॥) श्रीबारदाने खाते जमा माल चढ़ाई का।

२११३।-)

२॥≈) श्रीवटाव खाते लेखै वटाव दिया प्र०≈)सैकड़ा।

२११०॥≋) बाक़ी श्रीसिरे

आढ़तियेको बीजक भेजनेका नमूना ।

।१॥ श्रीपरमेश्वरजी ।

।१॥ सिद्धश्री भीलवाड़ा शुभस्थान भाई श्री रामगोपालजी श्रीनिवास योग्य श्रीमुम्बई वन्दर से लिखी माधोसिंह मिश्रीलाल का जुहार वञ्चना । अपरञ्च लट्ठा गाँठ ३ तुम्हें भेजीं, जिनकी

लागत तथा रेल-रसीद इस चिट्ठी के साथ सार लेना। पहुँचने से पहुँच तथा लागत जमा-खर्च की लिखना।

२११०॥≡) मि० आसौज वद १२ के हमारे इस भाँति
जमा करना।

२१००) लट्ठा गाँठ ३ थान १८० प्र० ११॥≈)॥२, लेखै
१३।-) आढ़त प्र० ॥), धर्मादा प्र० -) मुकादमी
१०॥) ११-) १॥)

२११३।-)

२॥≈) वाद बटाव के प्र० ≠) लेखै

२११०॥≡) बाकी खरा, अक्षरे रुपये इक्कीस सौ दस, आने ग्यारह, मिती आसौज वदी १२ के हमारे जमा करना। बिल्टी की पहुँच लिखना। माल की रास्ते की जल-जोखम तुम्हारी है। बीजक की भूलचूक दोनों तरफ लेनी देनी है। चिट्ठी पीछी देना, काम काज लिखना, सं० १९७४ मिती आसौज वद १३।

ऊपना जमा-खर्च करना और भेजना।

४१। जब कोई आढ़तिया किसी व्यापारी को माल बेचने के लिये चढ़ाता है, तब वह व्यापारी उसके लिखे मुताबिक़ माल को फायदे से बेचकर, अपनी आढ़त-दलाली आदि का ख़र्च उसके बिक्रे में से काटकर, बाक़ी रुपया तथा यह सारा हिसाब उस आढ़तिये को भेज देता है। यदि रुपया इस हिसाब के साथ नहीं भेजा जाता है, तो वह व्यापारी आढ़तियों को ऊपना के रुपये उसके हिसाब मुताबिक़ उसके नाँवे लिखने को लिख देता है। साथ के इस हिसाब को व्यापारी लोग ऊपना अथवा बिक्रा कहते हैं। इसका अँगरेज़ी नाम है (Account Sale) अकाउण्ट सेल। यह उपर्युक्त बीजक से हरेक बात में मिलता है। फ़र्क़ केवल इतना ही है कि, बीजक तो आढ़तिये का चढ़ाये हुए अथवा उसके लिये ख़रीद किये हुए माल का होता है और ऊपना बेच हुए माल का। ऊपना अथवा बिक्रे का जमा-ख़र्च भी नक़ल-वही में किया जाता है। बम्बई शहर में व्योपारी लोगों के माल बेचने तथा ख़रीदने, चढ़ाने आदि प्रत्येक काम के लिये मुकादम * होते

* बम्बई शहर में दिसावरों को माल चढ़ाने तथा वहाँ से आये हुए माल को उतारने का काम जो व्यापारी करते हैं, उन्हें मुकादम कहते हैं। ये इसके लिये अपनी एसोसियेशन के ठहराव-अनुसार मिहन्ताना लेते हैं। वह मुक़दमा कहलाती है। पार्सल सिलाना, गाँठ बाँधना, गाड़ी-भाड़ा, मुक़ादमी आदि जो कुछ मालके चढ़ाने अथवा उतराने में ख़र्च पड़ता है, वह सब बम्बई के व्यापारी लोग बारदाने खाते जमा-ख़र्च करते हैं।

हैं। इन मुकादमों को इसके उपलक्ष्य में मुकादमी मिलती है। इसका ठहराव उनकी एसोसियेशन करती है। रूईके मुकादमों की एसोसियेशन ग्रेन्स के मुकादमों की एसोसियेशन से पृथक् है। इन एसोसियेशनों का सङ्गठन तथा सञ्चालन अच्छा क्रमवद्ध है। उनके ठहरावों के विरुद्ध काम करने वाले सदस्य से सब प्रकार का व्यवहार स्थगित कर दिया जाता है। अस्तु; व्यापारी लोग जब कहीं से माल आता है, तो उसकी बिल्टी इन मुकादमों के सिपुर्द कर देते हैं। ये ही उसे माल-गोदाम से लाते हैं, सायर आदिका महसूल चुकाते हैं और उसके न विकने तक अपने गोदामों में भर रखते हैं। जब माल विक जाता है, तब ये मुकादम अपने सेठ को इत्तिला दे देते हैं और तोल होने पर उसका हिसाव सेठ के हवाले करते हैं। ये मुकादम लोग सब सेठों की एक-एक छोटी वही रखते हैं। पक्की वहियों में इस माल के विक्रे का जमा-ख़र्च करके, उसमें उसकी नक़ल उतार देते हैं। इस ऊपना में से वे अपनी मुकादमी, गोदाम-भाड़ा आदि, जो कुछ ख़र्च माल के उतराने से विकने तक उन लोगोंने उठाया है, सारा काट लेते हैं। व्यापारी लोग इस हिसाव को जाँचकर अपनी वहियों में जमा-ख़र्च कर लेते हैं। उनके और मुकादमों के बीच में लेन-देन का चालू खाता रहता है। इस लिये प्रत्येक माल को वेचकर, उसके विक्रे के खरे रुपये वे व्यापारियों को नहीं भेजते; वल्कि अपनी वहियों में उनके जमा कर लेते हैं। इसी प्रकार व्यापारी भी, माल भेजने वाले आढ़तिये के माल की विक्री के रुपयों में से अपनो आढ़त

आदि का ख़र्च वाद्कर, शेष के खरे रुपये उसके जमा कर लेते हैं और उस मुकादम के नाँवे लिख देते हैं। परन्तु इससे यह न समझना चाहिये, कि ऐसे सौदों में व्यापारी की ज़िम्मेवरी कुछ भी नहीं है। आढ़तिया व्यापारी से माल अथवा उसके रुपये का लेनदार है, न कि मुकादम से। हाँ, उसे मुकादमी भी अलबत्ता व्यापारी को मुजरा देनी पड़ती है। व्यापारी ॥) सैकड़े की आढ़त लेकर मुकादमी आदि का ख़र्चा नहीं उठाता। माल के वेचने में जो कुछ ख़र्चा पड़ता है, वह उसी को (आढ़तिये ही को) भुगतना पड़ता है।

उदाहरण ११। भाई गणेशदास कल्याणमल वम्बईवाले को उनके दो आढ़तियों में से भाई मानमल रिखवदास इन्दौर वाले ने मूँग वोरी ५ और पन्नालाल नन्दलाल उज्जैन वाले ने गेहूँ वोरी ३६ तथा उड़द वोरी ७ भेजा। उसको उसने नीचे लिखे भाव से निम्नलिखित मिति को वेच दिया। रीति के अनुसार (शरिस्ते के मुताविक़) आढ़त आदि खर्च लगाकर इन दोनों आढ़तियों के विक्रे तैयार करो और नक़ल में उनका जमा-ख़र्च करो। व्यापारी के मुकादम का नाम हंसराज अमोलख है।

आढ़तियों को भेजने के बिक्रे का नमूना।



।१॥ श्रीपरमेश्वरजी।

।१॥ सिद्धश्री इन्दौर शुभस्थान भाई मानमलजी रिखबदास योग्य श्रीममाई बन्दर से लिखी गणेशदास कल्याणमल का जुहार वञ्चना। अपरञ्च मूँग बोरी ५ आप की यहाँ बिकने को आयी थीं, सो मिती भादवा सुदी ११ को बिकी हैं। उसके बिक्रे इस चिट्ठी में सार लेना, पहुँच जमा-खर्च करके जल्दी लिखना।

३८॥।≠)। मि० भादवा सुद ११ के हमारे नाँवे माँडना

३६॥।) मूँग बोरी ५ हं० ६॥।) रतल २१ जिस की खण्डी

१॥) मन ४॥।) प्र०२८ लेखे

॥।-॥।) बाद आढ़त प्र० ॥) धर्मादा प्र०-) मुकादमीबोरी १ के≠)

≡)। ॥० ॥≠)

३८॥।≠)। बाकी श्रीखरा, अखरे अड़तीस रुपये सवा चौदह आने, मि० भादवा सुदी ११ के हमारे नाँवे माँडना। भूलचूक दोनों तरफ लेनी-देनी है। काम-काज लिखना। चिट्ठी पीछी देना। सं० १९७५ भादवा सुद १५।

ऊपल्रे अथवा बिक्रे का जमा-ख़र्च ।

६१०≋)॥ मुकादम हंसराज अमोलख के लेखै माल नीचे मुताबिक़ तुम्हारे मार्फ़त वेचा उसके ।

मिती भादवा सुदी ११ भादवा सुदी १४ भादवा सुदी १५
३६॥) ६८॥)। ५०१॥≋)॥

३८॥≠)। भाई श्री मानमलजी रिखबदास श्री इन्दौर वालों के जमा मि० भादवा सुदी ११ मूँग बोरी ५ तुम्हारी वेची जिसके इस भाँति :—

३६॥) मूँग बोरी ५ का वज़न हं० ३॥) रतल २१ जिस की खण्डी १।) मन ४॥) प्र० २८) लेखै

॥~)॥ बाद आढ़त प्र० ॥) धर्मादा प्र ~)
≋)। ॥०

मुकादमी बोरी १ के ⁄)
॥⁄)

३८॥≠)। बाक़ी श्री सिरे

५६१॥)। भाई पन्नालालजी नन्दलाल श्री उज्जैन वालोंके जमा इस भाँति :—

६७॥) मि० भादवा सुद १४

६८॥)। उड़द बोरी ७ वजन हं० १३) रतल १ जिसकी खण्डी ३॥)

मन ३) रतल १ प्र० ३७) लेखे

२।)। वाद आढ़त, धर्मादा, मुकादमी

।-)॥ ॥० ॥=)

६७॥) बाक़ी श्री सिरे

४६४)। मि० भादवा सुदी १५

५०१॥≡)॥ गेहूँ बोरी ३६ तोल हं०

७०॥) र०६ जिसकी खण्डी

१०।) मन ५।) र० ६ प्र०

४८) लेखे

७॥≡)। वाद आढ़त, धर्मादा, मुकादमी

२॥)। ।-) ४॥=)

४६४)। बाक़ी श्री सिरे

५६१॥)।

३-) श्री आढ़त खाते जमा

≡)। ।-)॥ २॥)।

।=)। श्री धर्मादा खाते जमा

॥० ॥० ।-)

६।=) श्री वारदाने खाते जमा

॥=) ॥=) ४॥=)

६१०≡)॥

चाँदी आदिके वायदे के सौदों का जमा-ख़र्च।

४२। वायदे के सौदे—चाँदी, रुई, अलसी, गेहूँ, ताँबा, पीतल, गिन्नी, कपूर, कपड़ा आदि—कई प्रकार के बम्बई के बाज़ार में चलते हैं। अन्य दिसावरों में अफ़ीम, घी, हुण्डी आदि के भी हुआ करते हैं। परन्तु इन सब का जमा-ख़र्च करने का मूलमंत्र एक ही सा है। अतएव यहाँ सिर्फ़ चाँदी के सौदे का जमा-ख़र्च करना बता देना ही पर्याप्त होगा। बम्बई कलकत्ते आदि प्रधान शहरों के व्यापारी लोग ये वायदे के सौदे अपने घरू अथवा आढ़तियों के खाते किया करते हैं। अपने घरू सौदा करने में उन्हें लाभ अथवा हानिका जमा-ख़र्च करना पड़ता है। परन्तु जब सौदा आढ़तियों के खाते किया जाता है, तो उनके हानि-लाभ के अतिरिक्त, अपनी आढ़त का भी जमा-ख़र्च उन्हें करना पड़ता है। वायदे की वलण (Settlement) के दिन जो वलण वह चुकाता है अथवा लेता है, वह यद्यपि वलण खाते रोकड़-बही में जमा उसी रोज़ हो जाती है, तथापि किस आढ़तिये को नफ़ा और किस को नुक़सान उठाना पड़ा है, यह उससे स्पष्ट नहीं होता। अतएव इस सब का जमा-ख़र्च नक़ल-बही में किया जाता है। इस जमा-ख़र्च में रोकड़ में वलण-खाते जमा या नाँवें माँड़ें हुए रुपये पीछे नाँवें-जमा हो जाते हैं। आढ़तियों के खाते वायदे पर बहुधा माल तोला अथवा तुलाया भी जाता है। तोलने अथवा

तुलाने में आये और दिये गये रुपयों का जमा-ख़र्च रोकड़-वही में देने वाले अथवा पाने वालेके नाम में से उसी समय हो जाता है। रुपया देने वाले को माल तोल दिया जाता है और रुपया पाने वाले से माल तुला लिया जाता है ; अतः न पहला हमारा लेनदार है और न दूसरा देनदार। उनका हमारा लेन-देन उसी समय बेबाक हो जाता है। परन्तु जिस आढ़तिये का माल हमने तोला है, वह उसकी विक्री की रक़म का हमारे से लेनदार है और जिस के खाते हमने माल तुलाया है, उससे उसकी लागत के हम लेनदार हैं। इस प्रकार का हमारा देना और लेना बताने के लिये तथा माल-खरीददार और विक्रेता का खाता बेबाक करनेके लिये, यह जमा-ख़र्च भी नक़ल-वही में पीछा फिरा दिया जाता है। इस प्रकार के जमा-ख़र्चों का एक नमूना अब नीचे दिया जाता है:—

वायदे के सौदे का जमा-ख़र्च।

उदाहरण १२।

७३॥) श्री आढ़त-दलाली खाते जमा। चाँदी मिती भादवा सुद १५ के वायदे की आढ़तियों के खाते तथा अपने घरू ली तथा वेची, जिस के नफे-नुक़सान के धनीवार के जमा नाँवे माँड़-कर आढ़त के जमा किये इस भाँति :—

३२३।) भाई गणेशलालजी सौभागमल श्री जावरा वाला के लेखे मि० आसौज वद १० चाँदी वायदे की तुम्हारे खाते ली तथा वेची, उसके नुक़सान के इस भाँतिः—

२७७४६।) चाँदी पेटी ५ प्र० ९७॥)

१३६८५)

पेटी ५ प्र० १००।≡) लेखे लीनी

१४०६१)

२६।) आढ़त दलाली पेटी १० की प्र० २॥≈) लेखे

२७७७२॥)

२७४४८॥) बाद् वेची पेटी ५ प्र० ९८।≡)

१३७७२॥)

पेटी ५ प्र० ९७॥≡)

१३६७६।)

३२३।) बाक़ी श्री सिरे

१०२७।) भाई श्री कृष्णजी विश्वनाथ श्री जावरा वाला के लेखे मि० आसौज वद १० चाँदी वायदे की तुम्हारे खाते ली वेची, उसके नुक़सान के

३३७९९॥) चाँदी पेटी १२ प्र० १००॥-)॥ लेखे ली

३१॥) आढ़त दलाली पेटी १२ की प्र० २॥≈)

३३८३१)

३२८०३।।।) वाद पेटियाँ बेचीं नग २ प्र० ६७।।।)
५४६०)
पेटी ५ प्र० ६७।।=) पेटी ५ प्र० ६७।।≡)
१३६६७।।) १३६७६।)

१०२७।) बाक़ी श्री सिरे—

१३१।) भाई श्री वल्लभ विजयराज श्रीरतलाम वाला के लेखे
मि० आसौज वद १० वायदेकी चाँदी की वलण का
२८७५।) चाँदी पेटी १ प्र० १०२।।≡) लेखे ली
२।।=) आढ़त दलाली पेटी १ का

२८७७।।।=)

२७४६।।=) वाद पेटी १ वेची प्र० ६८-)।।
१३१।) वाक़ी श्री सिरे

१२१।।=) भाई बलराम काशीप्रसाद श्रीलश्करवाले के लेखै
मि० आसौज वद १० चाँदी की वलण का
२८६४।।) चाँदी पेटी १ प्र० १०२।-) लेखै ली
२।।=) आढ़त दलाली पेटी १ का

२८६७।=)

२७४५।।।) वाद पेटी १ वेची प्र० ६८-)
१२१।।=) वाक़ी श्री सिरे

५६७॥।≈) भाई जोगीराम रामरतन श्रीभावल नगर वाले के
लेखे मि० आसौज वद १० चाँदी की वलण का
२६५०॥) चाँदी पेटी १ प्र० १०५।≈) लेखे ली
२॥≈) आढ़त दलाली पेटी १ का

२६५३≈)

२३८५।) वाद चाँदीपेटी १ प्र० ८५३)
५६७॥।≈) बाकी श्री सिरे

२१७१॥।)

२०५२॥) श्रीवलण खाते जमा इस भाँति धनीवार के आये

६७≈) ह० चौकसी हीरालाल बकोरदास,

३५)

रामकिशन मदनगोपाल

६२≈)

२२॥) ह० केदारमल साँवलराम,

१४)

केदारनाथ डागा

८॥)

६७१।) ह० गम्भीरचन्द कस्तूरचन्द,

६५१)

गम्भीरचन्द केदारनाथ

३२०।)

४४३॥≈) ह० चौकसी जेठा भाई कल्याण,

११६॥≈)

रामजीलाल रामस्वरूप

३२३॥)

३१२०।) ह० मिरज़ामलजी गजानन्द

१८७६)

रामगोपालजी मुछाल

१२४४।)

३२०।) ह० चिमनीराम मोतीलाल,

७८॥)

मोगीलाल अमृतलाल

२९१॥)

४६७५।)

२६२२॥) बाद वलण के दिये ह० वालूभाई मूलचन्द

१८७६)

कस्तूरचन्द रूपचन्द माधूसिंह मिश्रीलाल

१६७॥) ८४८॥)

२०५२॥।) बाक़ी श्री सिरे

६॥≠) भाई कस्तूरमल कल्याणमल श्री इन्दोरवालेका जमा

मि० आसौज वदी १० चाँदी की वलण का

२७८६) चाँदी पेटी १ प्र० ६६॥) लेखे वेची

२६।) बाद चाँदी पेटी १ को नजराना प्र० ६८≠)

पर ॥≡)

२७४७॥) नजराना की पेटी १ ली बोली जिस का

२॥≠) आढ़त दलाली पेटी १ की प्र० २॥≠)

२७७६।≠)

६॥≠) बाक़ी श्री सिरे

१६॥≠) भाई कस्तूरमल इन्दरमल श्री अजमेर वाले के जमा

मि० आसोज वदी १० चाँदी की बलणका

२७८६) चाँदी पेटी १ प्र० ६६॥) लेखै बेची

२७६६॥) चाँदी पेटी १ प्र० ६८॥-) लेखै ली०

२॥≡) आढ़त दलाली पेटी १ का

२७६६।≡)

१६॥≡) बाक़ी श्री सिरे

१६।) भाई माणकलालजी कस्तूरमल श्रीबीकानेर वाले के जमा

मिती आसोज वदी १० चाँदी की वलणका।

२७६६।≡) चाँदी पेटी १ प्र ६८॥≡)॥ लेखै बेची।

२७४७॥) चाँदी पेटी १ प्र० ६८≡) लेखै ली।

२॥≡) आढ़त दलाली पेटी १ प्र ॥≠)।

२७५०≠)

१६।) बाक़ी श्री सिरे।

२०६८।)

७३॥) बाक़ी श्री सिरे आढ़त का।

सूचना—चाँदी के वायदे की वलण प्रत्येक महीने की वदी १० को बम्बई में हुआ करती है और सुदी १५ को नज़राना (तेज़ी

मन्दी) सही बोला जाता है। वायदे के सौदों के लिये बम्बई के बाज़ार में चाँदी की एक पेटी २८००) तोले की वज़न में गिनी जाती है। इससे बढ़ती अथवा घटती की चाँदी के लिये प्रत्येक महीने की कृष्ण ५ को पञ्चायत से भाव निर्णय होता है। इसीके अनुसार बढ़-घट के दाम लिये-दिये जाते हैं। वायदे की पेटियाँ वदी ७ तक तुला लेना चाहिये, नहीं तो प्रत्येक दिन की देरी के लिये तुलानेवाले को प्र० ।॥) सैकड़े का व्याज देना होता है। चाँदी-सोने का सौदा बुलियन मरचेण्ट्स असोसियेशन, बम्बई के नियमानुसार होता है। जो पुस्तक के अन्त में परिशिष्ट 'ख' में उद्धृत है।

विदेश से आये हुए माल के बिक्रे का जमा-खर्च



उदाहरण १३।

८२१६॥) मेसर्स करशेटजी एण्ड बम्मनजी इम्पोर्टर्स एण्ड एक्स-पोर्टर्सके लेखे रूई गाँठ ७१ तुम्हारी मारफत जापान स्टीमर 'ईटोला' में भेजी उसके बिक्रे के तुम्हारे हिसाब मुताबिक़ तुम्हारे नांवें लिखे इस भाँति ता०८।७।२१ता०२०।१०।२१

७०००) १२१६॥)

८०६६॥)॥ पुजश्रीकुन्दनजी कालूरामजी श्रीमन्दसोरवाला

का जमा मिः आः सु० ३ मि० काः वद ४

७०००)　　　　१०६६॥≶)॥।

रूई गाँठ७१ आप की जापान स्टीमर'ईटोला' में भेजी उसके बिक्रे के इस भाँति जमा किये

६६२७॥≶)॥।२ इस भाँति

५४६०))५६ रूई गाँठ७१ का वजन रतल २७७३१बाद बारदानाके रतल६१७ जाते बाक़ी खरे रतल २७११४ जिस के दर १३३ $\frac{1}{2}$ लेखै पिकल २०३-३५५ दर २७.०० येन प्रति पिकल से

---

३१६))८६ बाद जापान के खर्चके येन

७६))३३ माल की उतराई, छँटाई, गोदाम में धराई, तुलाई, लदाई का

१३७))२६ कमीशन प्र० २॥)लेखै

२६)) ब्याज के खरीदार को मुजरे दिया सो

१६))६० तार खर्च के शब्द १४ दर येन १-४०

५०)) ५ गोदाम भाड़ा व
वीमा मास ३ के
१०) ६५ दलाली गाँठ ७१
की प्र०सेन १५लेखै

३१६))८६
५१७०))७० बाक़ी खरा येन जिस की
हुण्डी प्र० १६२ लेखै रुपये
सिरे चढ़ाये

१८५८-)२ बाद बम्बई के ख़रच के इस भाँति
१७०७॥≡)॥२ करशेटजी एण्ड वर्म्मन
जी मार्फत
१५४७॥≡)२ नूरजहाज का
येन८२७);५१
दर १८७)लेखै
३०≠)॥ नूरके व्याजके
दिन ७६ के
ता०२५।५।२१
से ता०१२।८।
२१ तक दर
६) टका लेखै
४५॥≠) जल वीमे का

८४॥) आफर आदि
के तारखर्चका

१७०७॥≡॥)२

१५०-।) हमारे खर्च के इस
भाँति

७६-)। आढ़त येन
५४६०))५६
कीप्र०१६२)
लेखै रु०
१०५४१॥=)
परप्र०॥)लेखै

७१) मुकादमी
गाँठ ७१
की प्र० १)
गाँठ १ लेखै

१५०-)।

१८५८-)२

८०६६॥=॥) वाक़ी खरा श्री सिरे
७६-।) श्री आढ़त खाते जमा
७१) श्री मुकादमी खाते जमा

८२१६॥)

नोट—जापान का प्रचलित सिक्का येन है। इसके सौ सेन किये गये हैं। सेन का सिक्का ताँवे का है और येन का सुवर्ण का। परन्तु एक येन के सोने का वजन केवल २५.७२ ग्रेन होने के कारण छोटे से छोटा प्रचलित सोने का सिक्का दस येन का टकसाल से पाड़ा जाता है। सोने और ताँवे के सिक्कों के सिवा चाँदी के भी एक येन, अर्द्ध येन, पौन येन आदि के सिक्के प्रचलित हैं। एक येन फिलहाल लगभग १॥।॰) के वरावर है। भारतीय नाणा बाज़ार में सौ येन का भाव दिया जाता है।

सिक्कों की भाँति जापानी तोल भी हमारी तोल से भिन्न-भिन्न प्रकार की हैं। मामूली तोल की इकाई 'कान' है। यह तोल में लगभग ८.२७ पौंड यानी ४ सेर २ छटांक के वरावर होता है। परन्तु चीज़ों के भाव सदा इसी ही इकाई पर नहीं किये जाते। हमारे यहाँ भी किसी का सेर पर, किसी का मन्न पर और किसी का अन्य वजन पर भाव रहता है। वम्बई से माल मँगाने वालों को तोल की विभिन्नता का पूरा परिचय होगा। इसी प्रकार जापान में भी अनेक प्रकार के तोल हैं। रुई का पिकल १३३$\frac{१}{३}$ पौंड का होता है। परन्तु अन्य चीज़ों का पिकल इससे भारी होता है।



पांचवां अध्याय।



अन्य व्यापारिक बहियाँ।

४३। पिछले अध्यायों में विद्यार्थी को व्यापारी की सब से उपयोगी तथा आवश्यकीय वहियों से परिचय कराने की चेष्टा की गयी है। इस अध्याय में अब उन वहियों से परिचय कराना बाक़ी रहा है, जिन को व्यापारीगण अपने-अपने सुभीतेके अनुसार, तथा व्यापार विशेष की आवश्यकता के लिये बना लिया करते हैं। रोकड़, नक़ल, तथा खाता-वही निस्सन्देह आवश्यक तथा मूल वहियें हैं। अतएव इनको जितनी स्पष्ट तथा साफ़ हो सके रखना चाहिये। परन्तु जब व्यापार दिनों-दिन बढ़ता जाता है, तब हमें इन मूल वहियों की विशुद्धता बनाये रखने के लिये कुछ सहायक वहियों की ज़रूरत होती है। सहायक वहियाँ इस लिये आवश्यक होती हैं कि, हमारा आँकड़ा जल्दी और पाई-पाई सही मिले। कहा जाता है कि, ग़लती होना स्वाभाविक है। हम सब रकार से चौकन्ने होकर कार्य्य करें, तोभी ग़लती कहीं न कहीं ह ही जाती है और वही फिर बहुत दुःख देती है। ऐसी ग़लतियों ा बचने के लिये व्यापारियों ने कुछ ऐसी वहियों की सृष्टि कर ली

है कि, वे भी आज कल के व्यापार-संसार में आवश्यक बहियाँ कहाने योग्य हो गयी हैं। इन सहायक बहियों की संख्या तथा इनका काम प्रान्त भेद और व्यापार-भेद से कुछ-कुछ भिन्न होता है। हम यहाँ पर प्रत्येक प्रान्त के भेद-प्रभेदों में नहीं पड़ना चाहते और न इतना सूक्ष्मतर कार्य अपनी इस प्राथमिक पुस्तक द्वारा कराना हमें अभिप्रेत ही है। इस लिये हम केवल बम्बई शहर में जो बहियाँ व्यापारियों के उपयोग में आती हैं, उनका ही परिचय करा देते हैं।

४४। सब से पहले हमें यह समझ लेना चाहिये कि, हमारा व्यापार किसी भी प्रकार से एक-देशीय नहीं है। प्रत्येक व्यापारी प्रत्येक व्यापार में अपना हाथ फसाना चाहता है। वह सराफी का काम करते हुए भी, चलानी का तथा आढ़त का काम करता है। साथ ही घरू व्यापार, आढ़तियों के लिये सट्टा और घरू सट्टा भी भिड़ाता रहता है। अतएव जो कुछ भी हम यहाँ लिखेंगे तथा बतावेंगे, वैसा काम कहीं भी व्यवहार में न चलते देखकर विद्यार्थीगण घबरा न जायें। उनके मनन करने तथा जानने योग्य बात केवल यही है कि, अमुक व्यापार में अमुक-अमुक प्रकार की बहियाँ आवश्यक होती हैं।

खतावाँ।

४५। खतावाँ पक्की नकल तथा पक्की रोकड़-बही से लिखा जाता है, यह कई बार लिखा जा चुका है। पक्की नकल तथा पक्की

रोकड़-वही में एक-एक मेल पन्द्रह दिन का होता है ; और ऐसे दो मेलों का एक मासिक मेल रूजनाँवें में उतारा जाता है। परन्तु जहाँ पक्की नक़ल-वही नहीं रखी जाती, वहाँ इसका भी काम रूजनाँवें ही से लिया जाता है। इसी प्रकार कितने ही व्यापारी पक्की रोकड़ नहीं रखते और उसका काम रूजनाँवें से लेते हैं। कितनेही व्यापारी रूजनाँवाँ ही नहीं रखते। वे पक्की नक़ल तथा पक्की रोकड़ से पक्का खाता तैयार कर लेते हैं परन्तु जहाँ पक्की रोकड़, पक्की नक़ल तथा रूजनाँवाँ तीनों ही रक्खे जाते हैं, वहाँ पक्का खाता रूजनाँवें से ही खताकर तैयार किया जाता है। रूजनाँवें की आवश्यकता आँकड़े का फ़र्क़ निकालने के लिये पड़ती है। जहाँ पक्की नक़ल न रखकर रूजनाँवें से ही उसका काम निकाला जाता है, वहाँ उसके मिलाने के लिये सब रक़मों के वाद हुण्डावन, वटाव नाँवें जमा करके रूजनाँवें का मेल मिला दिया जाता है। कच्ची वहियों से रूजनाँवाँ उतारने के पूर्व एक फड़द तैयार करलेनी चाहिये। फड़द एक प्रकार की रोकड़ तथा नक़ल-वही के पन्द्रह दिनों के जमाखर्च की खतौनी है। यह रूजनाँवें की विशुद्धता के लिये तैयार की जाती है। कोई-कोई विना फड़द तैयार किये, कच्ची वहियों से खाते की सहायता लेकर, रूजनाँवाँ उतारते हैं। इसमें कच्चे खाते के खताने की भूल असंशोधित रहजाने का पूरा-पूरा भय है पक्की रोकड़ और पक्की नक़ल से रूजनाँवाँ उतारने में फड़द तैयार करनेकी आवश्यकता नहीं। इसमें एक ही व्यक्ति की अथवा खाते की सब रक़में यथाशक्ति एक ही पेटे में आनी चाहिये।

पक्का खाता ।



४६। यह खाता रुजनाँवाँ अथवा पक्की रोकड़ तथा पक्की नक़ल से खता कर तैयार किया जाता है। कहीं-कहीं कच्ची वहियों से भी वह तयार कर लिया जाता है। उस दशा में, इसमें और कच्चे खातेमें सिवा नाम-भेद के और कुछ भेद नहीं रहता। साधारणतः इसमें और कच्चे खाते में यह विशेषता होती है कि, पन्द्रह दिन अथवा एक महीने की भिन्न-भिन्न मितियों में मँडी हुई कच्चे खाते की रक़में इस खाते में एक मुश्त खतती हैं और वे सब बिना मिति और विगत के खताई जाती हैं। सराफों को व्याज की सब से प्रधान कमाई है; और व्याज देन-लेन की ठीक-ठीक मिति नोंधी जाने पर निर्भर करता है। अतएव पक्के खाते में वे लोग प्रत्येक रक़म की मिति भी नोंधते हैं और उसे कच्चे खाते की मितियों से टकराकर प्रत्येक खाते का व्याज लगाना आरम्भ करते हैं। सराफ भी पक्का खाता बिगती नहीं खताते और व्यापारी लोग तो केवल इस में रक़मों के आँक ही तोड़ देते हैं। उनके लिये इस खाते का उद्देश केवल यही है कि साल भर की, कच्चे खाते की जोड़ें इस खाते की जोड़ों से टकराली जावें। यदि ये जोड़ें भिन्न हों, तो कच्चे खाते से तैयार किये गये आँकड़ेका फ़र्क़ शीघ्र मालूम हो सकता है और निकाला भी जा सकता है। पक्का खाता कच्चे खाते के इतना उपयोगी तथा आवश्यक नहीं है।

कच्ची नक़ल-बही।

४७। चौथे अध्याय में नक़ल-वही के विषय में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। वहाँ प्रसंगवश कच्ची नक़ल-वही का भी परिचय दिया जा चुका है। अतएव यहाँ पर उसके दोहराने की आवश्यकता नहीं। परन्तु इस विषय में यहाँ पर इतना और लिख देना हम आवश्यक समझते हैं कि, यह वही अँगरेज़ी की (Waste Book) वेस्ट बुक की तरह है। इसमें दैनिक उधार लेन-देनों के अतिरिक्त जाकड़ अर्थात् सरताऊ चीज़ दी-ली जाने की भी नोंध की जाती है। जब कोई चीज़ किसी ग्राहक को जाकड़ अर्थात् सरताऊ दी जाती है, तो इस वही में वह उसके नाँवें लिखी जाती है, परन्तु दाम सिरे पर नहीं चढ़ाये जाते। अब यदि वह चीज़ पीछे लौटा दी जाय, तो सिरे के सल में 'पीछी आयी मि०' लिख दिया जाता है। परन्तु जो सरताऊ गयी हुई वस्तु मुद्दत में पीछे न लौटे, तो दाम (ले जाने वाले धनी के) सिरे चढ़ा दिये जाते हैं और फिर यह रक़म पन्द्रह दिन के मेलों के साथ पक्की नक़ल-वही में उतार ली जाती है। सराफों के यहाँ कच्ची नक़ल इन कामों में नहीं आती। ये लोग इसमें दिसावर से आयी हुई अथवा देनी लगी हुई हुण्डियों की नोंध करते हैं। इन हुण्डियों के सिकरने और सिकराने पर रोकड़ अथवा नक़ल-बही में जहाँ जमा-ख़र्च होने को होता है कर लिया जाता है और

इस वही में उसी हुण्डी के छेका मार दिया जाता है तथा पेटे में नक़ल का अथवा रोकड़ का वह पृष्ठ जहाँ वह जमा-ख़र्च किया गया हो, लिख दिया जाता है।

सिलक वही।

४८। बम्बई शहर में चाल है कि, कच्ची रोकड़ अथवा रोज़-मेल के अतिरिक्त व्यापारी लोग एक सिलक-वही, डायरी अथवा चौपनियाँ नाम की एक हाथ-वही रखते हैं। इस वही में वे दैनिक नक़द लेन-देन का हिसाब लिखते रहते हैं और फिर उसकी नक़ल कच्ची रोकड़ में कर लेते हैं। इसका कारण यह है कि कच्ची रोकड़-वही के दैनिक मेल में भी एक व्यक्ति की अथवा एक खाते की रक़में एक ही पेटे में जमा-ख़र्च हों। इसके सिवाय इस वही का और कोई उपयोग नहीं है।

डायरी।

४९। इस डायरी से हमारा मतलब व्यापारी की उस वही से है, जिसमें वह अपने ऊपर अपने आढ़तियों द्वारा भिन्न-भिन्न मियादों [मुद्दत] पर पकती हुई हुण्डियों की नोंध, उनकी चिट्ठियों परसे, अपने सुभीतेके लिए करता है। ये डायरियाँ बम्बई शहर में रोज़-मेल के नामसे छपी हुई गुजराती में मिलती हैं। उनमें प्रत्येक मितिके लिए एक पृष्ठ होता है और सिरे पर मिति तारीख़ आदि सब बातें गुजराती और अङ्गरेज़ीमें छपी रहती हैं। ऐसी

डायरियाँ राष्ट्रभाषा हिन्दीमें छपाई जाने की ओर हमारे मारवाड़ी भाइयों का ध्यान जाना चाहिये। इस डायरी को तैयार करना रोकड़िया का काम है। दिसावर की चिट्ठियाँ आते ही रोकड़िया प्रत्येक चिट्ठीको पढ़ कर उनमें आई हुई हुण्डियोंकी नक़लोंकी नोंध इस डायरीके उसी पृष्ठ में कर लेता है, जिस मितिमें वह हुण्डी पकती हो। यह तो सिकारी जाने वाली हुण्डियों की बात है। परन्तु जो हुण्डियाँ दिसावर से हमारे जोग लेनी आई हों, उनकी नोंध इसी प्रकार इस डायरी में की जाती है। ग़लत मिति की [जिसकी मुद्दत पक चुकी है] हुण्डियों की नोंध उनके आने की मिति ही में की जाती है, न कि पकती मिति में। हुण्डी सिकारने के पूर्व इस डायरी से उसकी नक़ल मिलान कर ली जाती है और फिर हुण्डियोंके सिकारने के बाद इस डायरीमें छेके लगाकर रोज़ बाकी तोड़ ली जाती है। यह डायरी सुभीते के लिये तथा जोखम हल्की करनेके लिए रक्खी जाती है। अङ्गरेज़ी की इसकी अनुसारी बहियोंको बिल बुक (Bill Book) कहते हैं, जो सिकारने और सिकरनेवाली हुण्डियोंके लिए पृथक्-पृथक् रक्खी जाती हैं। पहली को बिल्स पेएबिल रजिस्टर (Bills Payable Register) कहते हैं और दूसरी को बिल्स रिसीवेबिल (Bills Receiveable) रजिस्टर। इस डायरीमें सिकारनेकी हुण्डियों की नोंधमें नोंधनेकी बातें ये हैं :—(१) हुण्डी लिखने वाले का नाम (२) हुण्डीके रख्या-वाले का नाम (३) हुण्डी की रक़म (४) हुण्डी की संख्या, यदि वह अङ्कित हो तो। यदि हुण्डी किसीके खाते की गई हो तो

जिसके खाते कीं जावें और जो करे, उन दोनोंका नाम नोंधा जाता है।

सौदा नूँध।

५०। यह वही आजकल बड़ी काम की हो चली है। बम्बई-कलकत्ता आदि बड़े-बड़े शहरों में इस वहीके बिना किसी भी व्यापारी का काम नहीं चलता। यह वह वही है, जिसमें हुण्डी, चिट्ठी, व्याज, वदला, सोना, चाँदी, गिन्नी, रुई, अलसी, गेहूँ आदि हाज़र अथवा वायदे के सौदों की नोंध की जाती है। दलाल जब सौदा करके आता है, तभी जिसके खाते सौदा किया हो, उस आढ़-तिये के नाँवें अथवा जमा करके, यहाँ जिस व्यापारी से सौदा किया हो उसका जमा नाँवें पेटेमें हो जाता है। इस सौदे की सारी विगत-व्यौरा सिरे और पेटेमें दोनों ही जगह खोली जाती है। साथमें दलाल का हस्ते भी लिखा जाता है। सौदा नोंध लेनेके पश्चात् सौदा रजू करनेवाले के नाम के लिए तथा दलाल की सही के लिए स्थान ख़ाली छोड़ दिया जाता है और फिर इस स्थानमें दलालकी सही ले ली जाती है। जब तक सौदा रजू न हो अथवा कबाला (Contract) न भुगते, सौदा दलाल की जिम्मे-दारी (जोखिम) पर रहता है और उस समय तक नफे-नुकसान का लेनदार-देनदार दलाल ही रहता है। इस वहीमें रोज़-मितिके अलग-अलग मेल लगाये जाते हैं। इस वहीके अतिरिक्त कई देशों में सौदा-नक़ल रखने की भी चाल है।

सौदा खाता।

५१। सौदा खाता सौदा नूंध से तैयार किया जाता है। सौदा नूंध में नोंधे हुए सौदे इस वही में धनीवार के खाते लगाकर खताये जाते हैं और फिर इनकी जोड़ लगाकर, किस व्यक्ति से कितना लेना और किसको कितना देना, इसका हिसाव मियाद अर्थात् मुद्दत पर लगाया जाता है। इस हिसाव लगाने को वलण का पाना तैयार करना कहते हैं। इस खातेके प्रत्येक हिसावमें ध्यान रखने योग्य ख़ास वात यह है कि लिया, वेची का सौदा वरावर हुआ है या नहीं। यदि पहले न हुआ हो, तो सौदा मुद्दत पर वरावर करना न भूलना चाहिये। इतना कर लेने पर वलण का पत्रक तैय्यार करना चाहिये। इस पत्रक की जमा और नाँवें की जोड़ें वरावर मिलनी चाहिये, क्योंकि, यह भी एक प्रकारका आँकड़ा यानी लेन-देन की व्यवस्था वतलाने वाला पत्र है। फ़र्क केवल इतना ही है कि, यह सौदे के नफे-नुक़सान की व्यवस्था वतलाता है। कोई भी व्यापारी, जो आढ़तियों के ही खाते सौदा करता है, नफे-नुक़सान पेटे अपनी जेवसे कुछ भी देना न चाहेगा; उल्टा वह सवसे अपनी मिहनतके लिए आढ़त लेनेका हक़दार है। इस दशामें यह अनिवार्य है कि, उसकी वहियोंके मुताविक देनी वलण की तादाद, लेनी वलणकी तादाद के समान ही होनी चाहिये।

सौदा खातेमें प्रत्येक वायदे की खतौनी अलग-अलग होती है।

फलावट की दिक़्क़त को हल्की करनेके ख़यालसे व्यापारी लोग हरेक वायदे के लिए भावका तथा सौदे का एक धड़ा (स्टेण्डर्ड) नियत कर लेते हैं। और उस भावसे ऊपर जितना भाव हो, केवल उतने ही रुपये उस सौदेके सिरे पर चढ़ाते हैं। उदाहरण के लिये मान लीजिए कि, एक व्यापारीने ५०० गाँठ ज़ीन भड़ोंच सितम्बर वायदेकी प्र० ६१५) के भावसे ख़रीदी। इस सौदेके यदि पूरे-पूरे रुपये फैलाये जायँ, तो २२८७५०) होते हैं। और यदि १०० गाँठके लिये ६००) के भावका धड़ा बाँध लिया जाय, तो हमारी फैलावट बहुत सीधी हो जाती है और जो बिना काग़ज़-पेन्सिल की सहायता के ही फैलाई जा सकती है। अब मान लीजिए, ये ही गाँठें ६६०) में बिक चुकी हैं। इस ख़रीद-बिक्रीके सौदेका सौदा-खाते में इस प्रकार जमा-ख़र्च रहेगाः—

सौदा खाता।

उदाहरण। (घड़ा नियत करनेसे)।

३००) न० पा० मि० भादवा वद.
गांठ ५०० ज़ीन भड़ोंच प्र० ९६०)

३००)

७५) न० पा० मि० आषाढ़ वद
गांठ ५०० ज़ीन भड़ोंच प्र० ९१५)
२२५) बाक़ी देना।

३००)

११२५०, बाक़ी देना नफा काट कर २२५)
प्र० ५० लेखै (क्योंकि १०० गाँठ
की सरासरी ५० खण्डी होती हैं)
नफा का टका

उदाहरण सौदा खाता (बिना धड़ा नियत किये) ।

२४००००) न० पा० मि० भादवा बद
गाँठ ५०० ज़ीन भड़ोंच प्र ९६०)

२४००००)

११२५०) बाक़ी देना नफाका

२२८७५०) न० पा० मि० आषाढ़ बद
गाँठ ५०० ज़ीन भड़ोंच प्र० ९१५)
११२५०) बाक़ी देना नफाका

२४००००)

इस खातेमें वलण हो जाने पर दिसावरके आढ़तियोंके खातोंमें आढ़त दलाली नाँवें माँड़कर सब खाते डोढ़े कर दिये जाते हैं और उनका जमा-ख़र्च पक्की नक़ल-वहीमें किया जाता है। नक़ल-वही का पृष्ठ सौदा-खातेके प्रत्येक खातेमें इस भाँति नोंध दिया जाता है—जमा-ख़र्च किया न० पा०।

जमा-वही।

५२। जिन व्यापारियोंके आढ़तका धन्धा या रोज़गार होता है, वे यह वही रक्खा करते हैं। इस वहीमें जिस आढ़तिये को माल भेजना हो अथवा जिसके लिये ख़रीद किया हो, उसके नाँवें माँड़ कर, पेटेमें जिन-जिन व्यक्तियोंका जो-जो माल जिस-जिस भावसे ख़रीदा हो वह सब जमा कर लिया जाता है। जो व्यापारी 'सही बुक' अथवा 'आँकड़ा वही' (इसका परिचय नीचेके पैरा में दिया गया है) नहीं रखते, वे इसी जमा-वहीमें प्रत्येक व्यापारीका माल जमा करके, वटावको बाद देकर सहीके लिये नीचे एक लकीर ख़ाली छोड़ देते हैं ; और मालके रुपये चुकाते समय जितने रुपये धनी को देते हैं, उतने पर उसकी सही करा लेते हैं। परन्तु जो सही के लिये 'सहीबुक' अथवा 'आँकड़ा वही' रखते हैं, वे मालकी कच्ची क़ीमत ही जमा-वही के सिरे चढ़ाते हैं और पेटे में हिसाब चूकी मिति लिख देते हैं। वटाव आदिका व्यौरा सही बुक अथवा आँकड़ा वहीमें खोल देते हैं। इसके अतिरिक्त कई

व्यापारियों में वटाव आदि सबका व्यौरा जमावहीमें देकर दिये गये रुपयोंकी सही ही सिर्फ सही-चुकमें लेनेकी भी चाल है।

आँकड़ा-वही।

५३। यह वह वही है, जिसमें ख़रीदे हुए मालका हिसाब चुकता कर रुपये देते समय व्यापारियों की सही ली जाती है। इस वहीमें दैनिक मेल लगाया जाता है। जमाकी ओर व्यापारी का नाम तथा जमावही-पृष्ठ और रक़म नोंधी रहती है और नाँवें की ओर कुल कच्ची रक़म व्यापारी के (हस्ते सहित) नाँवें लिखी जाती है। इसके पेटेमें जितने रुपये नक़द दिये गये हैं, वे एक ओर रोकड़ा के नामसे तथा दूसरी ओर वटाव, जो कि आढ़तिये ने व्यापारीसे काटा है, उसका एक कच्चा जोड़ दिया जाता है। इसके नीचे उघराणी वाले की (अर्थात् जो रुपया वसूल करता है) रुपये पानेकी सही ली जाती है। इस वहीके प्रत्येक मेल की तीन-तीन जोड़ें लगाई जाती है। एक सिरे की, दूसरे नक़द रुपये जो चुकाये गये हैं उनकी, और तीसरी वटाव की। यह सारी रक़म रोकड़ अथवा सिलक वहीमें, दूसरे अध्याय में वताई रीतिके अनुसार माल-खाते नाँवें माँड़ी जाती है। हिसाव चुकाने वाला जव जमावही से हिसाव चुकाता है, तव वह उस रक़म के नीचे चुकी मिति लिख देता है और रक़म व्यापारी के सिरे चढ़ा देता है। हिसाव न चुकने तक, यह सिरा जमावही में ख़ाली ही रक्खा जाने की चाल है।

जमावही और आँकड़ा-वही फिर रजू कर ली जाती है। उपर्युक्त विवेचन स्पष्ट करने के लिए, यहाँ पर हम जमा-वही और आँकड़ा-वही के एक-एक पृष्ठ उद्धृत करते हैं :—

नमूना जमा वही।

[जहाँ आँकड़ा-वही नहीं रक्खी जाती।]

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गौतम स्वामी जी महाराज तणी लब्धि होजो, मेल जमावही को मि० भादवा वद १ से वद १५ तक

१। श्री महालक्ष्मीजी का भण्डार सदा भरपूर रहसी

१०८१।॥≡)॥ भाई विजेरामजी शिवकिशन श्रीउज्जैन वालाके लेखै

मि० भादवा वद ५ लट्ठा गाँठ २ तुमको भेजी उसके नाँवें माँड़े न० पा० ८५

१०७१।)। ठाकर गोपालजी वालजी सुन्दरजी का जमा

१०८३।-)। लट्ठा गाँठ २ थान १००) रु० ८००) प्र० १।-)॥२

१०८३।-)।

४-) वाद बटाव का प्र० ।≠) लेखे
१०७६।)। बाक़ी श्री सिरे मि० भादवा
वद ६ ह० भूदरजी देवजी
सही ठा० गोपालजी बालजी सुन्दरजी रु०
१०७६।)। अंके रुपया एक हज़ार उन्यासी
सवा चार आना लिया छे भूदरजी देवजी
४-) श्री बटाव खाते जमा

१०८३।-)।

१।-)॥। बाद बटाव प्र० ≠) लेखे
१०८१॥≡)॥ बाक़ी श्री सिरे

नमूना जमा वही ।

[जहाँ आँकड़ा वही रक्खी जाती है ।]

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गौतम स्वामीजी महाराज तणी लब्धि होजो, मेल जमावही को सं० १६७५ मि० भादवा वद १ :से वद १५ तक

१। श्री महालक्ष्मी जी महाराज का भण्डार सदा भरपूर रहे ।
१०८३।-)॥ भाई विजेरामजी शिवकिशन श्री उज्जैन वाला के

लेखै मि० भादवा वद ५ लट्ठा गाँठ २ तुमको भेजी उसके नाँवें माँड़े न० पा० ८५

१०८३।~)॥ ठाकर गोपालजी वालजी सुन्दरजीका जमा

१०८३।~)। लट्ठा गाँठ २ थान १०० र० ८०० प्र० १।~)॥२

१०८३।~)॥ मि० भादवा वद ६

२०८३।~)॥

मेल आँकड़ा बही।

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गौतम स्वामी जी महाराज तणि लब्धि होजो, सं० १९७५ मि० भादवा वदी ६ शुक्रवार, ता० ३१ अगस्त सन् १९१८ ई०

ठा० गोपालजी वालजी सुन्दरजी
जा० पा० १०२, १०८३।-)॥

१०८३।-)॥ ठा० गोपालजी वालजी सुन्दर जी के लेखे ह० भूदरजी देवजी १०७९।)। रोकड़ी ४-) वटाव सही ठा० गोपालजी वालजी सुन्दरजी रु० १०७९।)। अंके रुपया एक हज़ार, उन्यासी सवाचार आने।

मुकादम अथवा बिल्टी नूँध वही।



५४। इस वही में मालके चढ़ानेवाले और वेचनेवाले मुक़ादमों के खाते लगाये जाते हैं, और जो विल्टियाँ जिस माल की उनको दी जाती हैं अथवा उनसे आती हैं, वे सब इनमें नोंधी जाती हैं। इन विल्टियों में ख़ास तौर पर नोंधने की वातें ये हैं :—

(१) मालकी तादाद तथा क़िस्म (ज़ात), (२) वज़न (खरा), (३) महसूल, (४) विल्टी का नम्बर और चलानी की तारीख़, (५) इन्वाईस नम्बर और मार्का, (६) भेजने वाले और पानेवाले का नाम, (७) और कहाँ से कहाँ को माल चढ़ा।

जव किसी माल की विल्टी किसा मुकादम को दी जाती है, तो वह उसके खाते में नाँवें लिखी जाती है और उसके नीचे उस मुकादम की सही ले ली जाती है। उस विल्टीके माल के विक जाने पर, उसके खाते की वाक़ी तोड़ने के लिये, वह पीछी जमा कर ली जाती है। रेल पार्सलों की रसीदें भी आढ़-तिये को भेजनेके पहले इस वही में नोंध ली जाती हैं। ऐसी विल्टियों तथा रसीदों के लिए जो मुकादम विशेष से न प्राप्त हुई हों, एक फुटकर खाता लगाया जाता है और ये सब उसी ही में नोंधी जाती हैं।

हिसाब बही अथवा लेखा-पाड़।

५५। इस बही में लोगों के खातों का ब्याज फैलाकर हिसाब तय किया जाता है। ब्याज फैलाने की रीति ६ वें अध्याय में दी गई है। इस ब्याज को कट-मिति का ब्याज कहते हैं। हिसाब-बही अथवा लेखा-पाड़ को ब्याज-बही भी कहते हैं। किसीको रुपया उधार दिया जाता है अथवा किसीसे खाते बाक़ी निकलाया जाता है, तो भी इस ही बही में उस व्यक्ति का खाता लगाकर एक आने के स्टाम्प पर धनी की सही ली जाती है। यह बही इसलिये बड़ी ही ज़रूरी है। स्टाम्प के विषयमें भारतीय स्टाम्प-नीति का नियम इस प्रकार है। जब खाते में केवल कर्ज़ की स्वीकृति ही हो और अदा करने के विषय में कुछ भी क़लम न हो, तो उसमें २०) रुपये से ऊपर की रक़म के लिये ८) का स्टाम्प काफ़ी है, परन्तु जब इस लिखावट में ब्याज आदि के बाबत कुछ लिखा-पढ़ी हो तो उस पर बाण्ड के अनुसार स्टाम्प लगाना चाहिये। (भा० स्टा० ए० धारा)

चिट्ठी नोंध।

५६। यह बही भी व्यापारी के बड़े काम की है। व्यापार-

संसार में चिट्ठी-पत्री अनिवार्य्य है। किस व्यापारी को क्या समाचार लिखा जाता है और उसका क्या जवाब आता है, इन सबकी एक सूची समय पर काम आने के लिये रखना, जैसे-जैसे व्यापार बढ़ता जाता है, आवश्यक होता जाता है। हमारे देश में भेजी जाने वाली चिट्ठियों की नक़ल रखने की चाल नहीं है। इस दशा में हम अपने आढ़तिये को उसके उज्र आदि बातों का क्या जवाब देते हैं, इसकी याद रखना आवश्यक ही नहीं वरन् अनिवार्य्य है। ऐसा न करने वालों को कभी-कभी भारी हानि उठानी पड़ती है। इसी प्रकार किस आढ़तिये ने हमें किस चिट्ठी में क्या लिखा था कि, जिसके प्रत्युत्तर में हमें वैसा जवाब देना पड़ा, इस बात को जानने के लिये प्रत्येक आई हुई चिट्ठी के भी मुख्य समाचारों को नोंध इस बही में की जाती है। ऐसा करने से दोनों पक्ष की बातें एकदम मालूम हो जाती हैं। चिट्ठी का नूँधना सराफी काम सीखने की पहली सीढ़ी है। इसमें पास होने वाला अच्छा सराफ बन सकता है। इस बही में खाते की भाँति प्रत्येक आढ़तिये का एक खाता लगाया जाता है। ये सब खाते चिट्ठी-नोंध में इकसले ही होते हैं और एक पृष्ठ में एक से अधिक खाता, जहाँ तक हो, नहीं लगाया जाता। प्रत्येक खाते के दो भाग जमा और नावें की तरह किये जाते हैं। जमा की ओर आई हुई चिट्ठियाँ और नावें की ओर दी गई चिट्ठियाँ नोंधी जाती हैं। प्रत्येक चिट्ठी के समाचारों को नोंधने के पहले सिरे के

सलमें 'चिट्ठी अथवा कारड, इसका इशारा कर दिया जाता है। तत्पश्चात् जमा की ओर चिट्ठी आने की मिति और नाँवेंकी ओर चिट्ठी देने की मिति नोंधी जाती है। इतना कर लेने बाद चिट्ठियों के समाचार नोंधे जाते हैं। आनेवाली चिट्ठियों की नोंध में चिट्ठी लिखने की मिति भी नोंधी जाती है।

चिट्ठी आदि कैसे नोंधना चाहिये, यह इस पुस्तक का विषय नहीं है; परन्तु फिर भी यहाँ पर इतनासा इशारा कर देना ठीक है, कि इसी काम में हरेक आदमी की व्यवहार-बुद्धि [Practical wisdom] की परीक्षा होती है; और इसी काम से निश्चय किया जासकता है कि, अमुक मनुष्य अपने व्यापार में सफल होगा अथवा विफल।



हल की हुई उदाहरणमाला ।

मिति चैत्र कृष्ण १५ सम्वत् १९७६, को मेरी वहियों में इस प्रकार लेन-देन था ।

लेना	लेना
२५०) अग्याराम	५००) गाड़ी-घोड़े का ख़र्च
६००) गोपालदास	३००) मुत्फरक़ात
६००) पापामल	४०००) मेज़ कुरसी आदि सामान मि० का० शु० १ तक
१०,०००) माल पोते मि० का० शु० १९७७ तक	६०००) कारखाने की मशीनरी
३५०००) माल खरीदा	२५००) हुँडियाँ सिकरनी वाकी
७५०) भाड़ा, सरकारी लगान आदि दिया	५००) मरम्मत खाते
५०००) मज़दूरी चुकाई	५०००) वैंक में जमा
६००) नौकरों को वेतन दिया	१००) पोते वाकी देना

देना	देना
२०००) वावूलाल के	२०००) हाथ की हुण्डी लिख कर दी

३०००) गुलाबराय के — ५०००) सुमतिलाल से व्याजू-उधार लिये।

४५०००) माल बिका

मि० चैत्र शुक्ला १, सं० १९७७ को निम्न लिखित लेन-देन हुआ—
पापामल का हिसाब रु० ८५५) लेकर चुकता कर दिया। हुंडी रु० ५००) की कस्तूरमल ऊपर की बैंक मारफत बटाई हुई पीछी लौट आई और उस पर ।।।) आने खरचा पड़ा सो बैंक ने खाते में नाँवें माँड़ दिये।

गुलाबराय का हिसाब ५ टके की छूट से चुकता कर दिया।

रु० २५००) की हुंडियाँ बैंक में कुल रु० ४५) बट्टे से बटा डाली।

कर्मचारियों के वेतन के लिये बैंक पर चेक एक रु० ३००) का एक निजी ख़र्च के लिये रु० ५००) का काटा।

सुमतिलाल को आज मिती तक व्याज के रु० ५०) दिये।

माल कुल उक्त मिती तक हमारे पास रु० ९०००) का शेष रहा।

उपर्युक्त लेन-देन की रोकड़ एवम् आवश्यक खाते तैयार कर बताइये कि मेरा क्या लेना-देना है और मुझे गत ५ महीनों में कितना लाभ रहा है। माल सम्बन्धी सारा ख़र्च माल-खाते में ही लगाइये और वृद्धि-खाता भी दिखाइये।

मि० अगहन सुदी ७ को जीवराज नेणसी के यहाँ से आपने माल रुपया २०००) का ख़रीदा; इस शर्त पर कि अगर आप रुपया उस रोज़से एक महीने में दे दें तो ।।।) सैकड़े का वह व्याज काट देगा।

अगर नहीं, तो उसे मिती जेठ सुदी ७ पूगती हुंडी पूरे दामों की लिखकर देना होगा। अब यदि उसके बैंक में इस समय रु० ४०००) ३ टके सैंकड़े के व्याज से चालू खाते में जमा हैं तो बताइये उसे क्या करना चाहिये ?

॥ श्रीः ॥

याद १ आँकड़े की मिती चैत्र कृष्ण, १५ सं० १९७७ तक।

१००००) मिसलधनीवारकी

२०००) भाई बाबूलाल का जमा

३०००) भाईगुलाबरायके जमा

५०००) भाई सुमति लाल के जमा

१००००)

४५०००) श्री बिकरी खाते जमा

२०००) श्री दिसावर की हुंडी खाते जमा

१८६००) श्री मूलधन खाते जमा

७५६००)

२०५०) धनीवार, मिसल

२५०) भाई अग्यारामके लेखै

९००) भाई गोपालदासके लेखै

९००) भाई पापामलके लेखै

२०५०)

४५०००) श्रीमाल खाते नावें

१००००) बाकी लेना मि०का०सुद१ १९७७ तक माल पोते

३५०००) माल नया खरीद किया

४५०००)

१३०००) मिसल १ जिनस खाते की

४०००) श्री फरनीचर खाते लेखै मिती काo सुदी १ संo १९७७ तक

६०००) श्री कारखानेके कल पुर्जे खाते लेखै

१३०००)

२५००) श्री हुंडी खाते लेखै बाज़ारकी हुंडी सिकरनी बाक़ी

७६५०) मिसल १ खर्चखातेकी

७५०) श्रीसरकारी लगानखाते

५०००) श्री मजदूरी खाते लेखै

६००) श्री वेतन खाते लेखै

१३००) श्री खर्च खाते लेखै

५००) गाड़ी घोड़ा का ख़र्च

३००) मुत्फरकात खरच

५००) मरम्मत खाते खरच

१३००)

७९५०)

५०००) दी सेंट्रल बैंक आफ इण्डियाके लेखे

१००) श्री पोते बाकी

७५६००)

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गोतम स्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान करें। मेल रोकड़ वहीका सं० १९७८का मितीचैत्रशुक्ल १

१००) श्री पोते बाकी

९००) भाई पापामलका जमा आप का
हिसाब चुकती किया इस भाँति
८५५) रोकड़ा आया
४५) छूटके तुम्हें दिये सो बटाव
खाते नाँव माँडे

९००)

५००।।।) दी सेंट्रल बंक आफ इण्डियाका जमा
हुण्डी १ कस्तूरमल ऊपरकी तुम को
दी वह नहीं सिकरी, सो पीछे तुम्हारे
जमा कर धनी के नाँवें लिखे

४५) श्री बटाव हुण्डावण खाते लेखै
भाई पापामल को छूटके दिये सो
नाँव माँडे

५००।।।) भाई अ०ब० के लेखे हुण्डा तुम्हारी
कस्तूरमल ऊपर की नहीं सिकरी
उसके खर्च सुदा नावे माँडे

३०००) भाई गुलाबरायके लेखे तुम्हारा
हिसाब चुकता किया इसलिये
२८५०) चेक १ सेंट्रल बेंक का
तुमको दिया

५०० हुण्डीके
|||) खरचके

५००|||)

१५०) श्री बटाव हुण्डावण खाते जमा
भाई गुलाबरायके हिसाब चुकता किया
उसमें छूट के मिले सो जमा किये
२८५०) दी सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया का
जमा चेक १ गुलाबराय को दिया
सो जमा किया
२५००) श्री हुण्डी खाते जमा बाज़ारकी
हुण्डियाँ बैंकमें बटाई उसके बैंकके
नाँव माँड कर जमा किए

१५०) छूटके तुमने ३०००) पर
प्र० ५) लेखे दिये

३०००)

४५) श्री बटाव हुण्डावण खाते लेखे हुंडीके
रु० २५००) की बैंकमें बटाई उसके
बट्टे के दिये सो नावें माँड़े
२४५५) दी सेंट्रल बैंक आफ इण्डियाके लेखै
हुण्डी नग २ रु० २५००) की तुम्हारे
मारफत ४५) के बट्टेसे बटाई उसके
३००) श्री वेतन खर्च खाते लेखै
५००) श्री मूलधन खाते लेखै निजी
खरच के लिये लिये

८००) दी सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया का
जमा चेक १ सेल्फ का काटे

७८००|||)

५०) श्री बरज खाते लेखै सुमतिलाल
को बरज के दिये

६८६५|||)

६०५) श्री पोते बाकी

७८००|||)

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ दी सेंट्रल बैंक आफ इण्डिया का है।

२८५०) रो० पा० मि० चैत सुदी १ सं० १९७८
चेक १ गुलाबराय केरर के का
८००) रो०पा०मि०चैत्र सुदी १ चेक १ सेलफका
५००॥।) रो० पा० मि० चैत सुद १ हुण्डी १
कस्तूरमलके ऊपर की नहीं सिकरी उसके

४१५०॥।)
३३०४।) बाकी लेना

७४५५)

५०००) मिती चैत बद १५ बाकी लेना
२४५५) रो०पा०मि० चैत सुदी १ हुण्डी रु०
२५००) की बटाई उसके

७४५५)

३३०४।) बाकी लेना मि० चैत सुदी १ सं०
१९७८ तक

॥ श्रीः ॥

।२॥ खाता १ श्री माल खात का है ।

४५०००) माल विकरी का जमा	१००००) मि० कातिक सुदो सं० १९७७ माल पोते बाकी
९ ००) मि० चैत सुदी १ माल पोते	३५०००) मिती माल खरीद किया
५४०००)	४५०००)
	९०००) न० पा० वृद्धि खाते जमाकर नाँवें माँडा नफाका
	५४०००)

॥ श्रीः ॥

|१|| खाता १ श्रीवृद्धि खातेका है।

६०००) ना० पा० मालका नफा का
१५०) श्री बट्टाव खाते गुलाबचन्दकी
छूटका आया

६१५०)

७५०) सरकारी टेक्सका दीना
५०००) श्री मजदूरी खाते जमाकर नाँवें माँड़ा
६००) श्री वेतन खाते जमाकर नाँवें माँड़े
१३००) श्री खरच खाते लेवै
६०) श्री बट्टाव खाते लेवै
४५) पापामल को छूट के दिये
४५) हुण्डी २५००) हुण्डावणका

६०)

३००) श्री वेतनखाते
५०) श्री वरज खाते लेवै

८३६०)

७६०) मुनाफा का

६१५०)

॥ श्रीः ॥

। १ ॥ याद १ श्री आँकड़ेकी मिती चैत सुद १ स० १९७८ तक

७०००) मिसल धनीवारकी

२०००) भाई बाबूलालके जमा

५०००) भाई सुमतिलालके जमा

७०००)

२०००) श्री दिसावरको हुण्डी खाते जमा

हुण्डियाँ सिकारनी बाकी

१८८६०) श्री मूलधन खाते जमा

१८६००) मिती काती सुद १ तक

७६०) मिती चैन सुद १ मुनाफाका

१६५०॥।) मिसल धनीवारकी

२५०) भाई अग्यारामके लेखे

६००) भाई गोपालदासके लेखे

५००॥।) भाई अ० व० के लेखे

१६५०॥।)

६०००) श्री माल खाते लेखै माल पोते बाकी

४०००) श्री फरनीचर खाते लेखै

६०००) श्री कारखानेकी मशीनरी खाते

३३०४।) दी सेंट्रल बेंक आफ इण्डिया के लेखे

१९३६०)

५००) बाद निजी खातेके लिए उठाये

१८८६०) बाकी श्री

२७८६०)

२६९५५)

९०५) श्री पोते बाकी

२७८६०)

उदाहरण १५

सं १६७४ के फागुन वदी १ से मैंने रु० १०००) से १ व्यापार करना शुरू किया। मिती फागुन वदी ३ को मैंने रु० २००)का माल ख़रीदा। वदी ५ को रु० १५०) का माल वेच भी दिया। वदी ७ को फिर ईश्वरशरनसे रु० १००)का माल उधार ख़रीदा। वदी १० को फूलचन्दको रु० ५००) का माल उधार वेच दिया। वदी १५को ईश्वरशरनको रु० ५००) माल पेटे दिये। सुदी ३ को फूलचन्द के रु० २५०) प्राप्त हुए। सुदी ७ को रु० १००) का माल नक़दसे ख़रीद किया। फूलचन्द सुदी ११ को फिर रु० ४५०) का माल ले गया। सुदी १३ को ईश्वरशरनका माल रु० ३५०) और ले आया। सुद १४को खेरूंज विक्री रु० २५०) की हुई। सुद १५ तक किराये का रु० १०) और मुत्फरकात रु० ६०) ख़र्च हुए। यदि शेष बचा हुआ माल रु० ४००) का हो तो बताइये मेरा लाभ क्या है? रोकड़ खाता भी तैयार कीजिए और फिर अन्तिम दिवस तकका आँकड़ा तैयार कीजिये।

। १ ॥ श्री गोतमस्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान करें। मेल रोकड़का सं० १९७४

मिती फाल्गुण बदी १ से सुद १५ तक।

श्री महालक्ष्मीजी भण्डार भरपूर रक्खैं।

१०००) श्री मूलधन खाते जमा मि०
/ फाल्गुन बदी १ रोकड़ी

१५०) माल खाते जमा मि० फाल्गुन
/ बदी ५ माल नक़द से बेचा उसके

२५०) श्रीयुत फूलचन्द के जमा मि०
/ फाल्गुन सुदी ३ रोकड़ी हः खुद

२५०) श्री माल खाते जमा मिती
/ फाल्गुन सुद १५ माल खेरूज बेचा उसके

१६५०)

२००) श्री माल खाते लेखे मि० फाल्गुण
/ बद ३ माल ख़रीदा उसके

५००) श्रीयुत ईश्वरशरण के लेखे
/ मिती फाल्गुण बदी १५ तक

१००) श्री माल खाते लेखे मि० फाल्गुन
/ सुद ७ माल ख़रीदा उसके

१०) श्रीमकान किराये लेखे
/ मिती फाल्गुन सुदी १५ मकान
किराया महीने १ का दिया उसके

६०) श्री ख़रच खाते लेखे मि० फाल्गुन
/

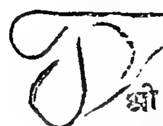
सुद १५ मुत्फरक़ात ख़र्च हुआ उसके

८७०)

७८०) श्री पोते बाक़ी

१६५०)

।२॥ श्री गोतमस्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान कर; मेल पक्की नक़ल का सं० १६७४ मिती फाल्गुन वदी १ से सुद १५ तक।



श्री महालक्ष्मीजी महाराजका भण्डार सदा भरपूर रहे

८००) श्रीमाल खाते लेखै मिती फाल्गुन वदी ७ माल श्रीयुत ईश्वर शरणसे ख़रीदा सो तुम्हारे नाँवें माँड़कर उसके जमा किये।

८००) श्रीयुत ईश्वरशरणका जमा मिती फाल्गुन वदी ७ माल तुमसे लिया सो माल खाते नाँवें माँड़कर तुम्हारे जमा किये।

५००) श्रीयुत फूलचन्दके लेखै मिती फाल्गुन वदी १० माल तुमने लिया उसके तुम्हारे नाँवें माँड़कर माल खाते जमा किये।

५००) श्री माल खाते जमा मि० फाल्गुन वदी १० माल श्रीयुत फूलचन्दजीने लिया सो उनके नाँवें माँड़कर तुम्हारे जमा किये।

४५०) श्रीयुत फूलचन्द के लेखे मि० फाल्गुन सुदी ११ माल तुमने ख़रीदा उसके तुम्हारे नाँवें माँड़कर माल खाते जमा किये।

४५०) श्री माल खाते जमा मि० फाल्गुन सुदी ११ माल श्रीयुत फूलचन्दजी ने ख़रीदा उसके उनके नाँवें माँड़कर तुम्हारे जमा किये।

३५०) श्री माल खाते लेखे मि० फाल्गुन सुदी १३ श्रीयुत ईश्वरशरण के यहाँसे माल लाये उसके उनके जमाकर तुम्हारे नाँवें लिखे

३५०) श्रीयुत ईश्वरशरणके जमा मि० फाल्गुन सुदी १३ माल

तुम्हारे यहाँसे आया सो उसके तुम्हारे जमाकर माल खाते नाँवें माँड़े।

३००) श्री माल खाते नाँवें मि० फाल्गुन सुद १५ माल खातेमें वढ़ते रहे, सो तुम्हारे नाँवें माँड़ कर श्री वृद्धि खाते जमा किये।

३००) श्रीवृद्धि खाते जमा मि० फाल्गुन सुद १५ माल खातेमें वढ़ते रहे, सो उनके नाँवें माँडकर तुम्हारे जमा किये।

७०) श्रीवृद्धि खाते लेखै मि० फाल्गुन सुद १५ खर्च खाते, मकान किराये खाते लगते रहे, सो तुम्हारे नाँवें माँडकर ये खाते उठाये।

१०) श्री मकान किराये खाते जमा मि० फाल्गुन सुदी १५ तुम्हारे जमाकर वृद्धिखाते नाँवें माँडे।

६०) श्री खरच खाते जमा मि० फाल्गुन सुद १५ तुम्हारे में लेने रहे, सो तुम्हारे जमा कर वृद्धिखाते जमा किये।

---

७०)

२३०) श्री वृद्धि खाते लेखै मि० फागुन सुद १५ वृद्धि खातेमें वढ़ते रहे. सो मूलधन खाते जमाकर तुम्हारे नाँवें माँडे

२३०) श्रीमूलधन खाते जमा मि० फाल्गुन सुद १५ नफा के वढ़ते रहे, सो वृद्धिखाते नाँवें माँडकर तुम्हारे जमा किये।

खतौनी ।

|१|| खाता १ श्री मूलधन खाते का है

१०००) रो० पा० १६१ मि० फाल्गुन बदी १	१२३० बाक़ी देना
२३०) ना० पा० १६४ मि० फाल्गुन सुद १५ नफा	
१२३०)	१२३०)
१२३०) बाक़ी देना मि० चैत्र कृष्ण १ से सं० १६७४ तक	

|१|| खाता १ श्री माल खाते का है

१५०) रो० पा० १६१ मि० फाल्गुन वदी ५	२००) रो० पा० १६१ मि० फाल्गुन बदी ३
५००) ना०पा० १६३ मि० फाल्गुन वदी १०	८००) ना० पा० १६३ मि० फाल्गुन वदी ७
४५०) ना० पा० मि० फाल्गुन सुदी ११	१००) रो०पा० १६१ मि० फाल्गुन सुदी ७

२५०) रो० पा० १६१ मि० फाल्गुन सुदी १५	३५०) ना० पा० १६३ मि० फाल्गुन सुद १३
१३५०)	१४५०)
४००) ना० पा० मि० फाल्गुन सुदी १५ मालपोते	३००) ना० पा० १६४ मि० फाल्गुन सुद १५ वृद्धिखाते से जमाकर नाँवें माँडा
१७५०)	१७५०)
	४००) मि० चैत्र कृष्ण १ बाकी लेना माल पोते रहा उसका

।२॥ खाता १ श्रीयुत ईश्वरशरण का है

८००) ना०पा० १६३ मि० फाल्गुन बदी ७ मालके	५००) रो०पा० १६१ मि० फाल्गुन बदी १५ नकद
३५०) ना० पा० १६३ मि० फाल्गुन सुदी १३"	५००)
	६५०) बाक़ी देना
११५०)	११५०)
६५०) बाक़ी देना मि० चैत वद १ सं० १९७४ तक	

|१|| खाता १ श्रीयुत फूलचन्द का है

२५०) रो०पा० १६१ मि० फाल्गुन सुद ३ रोकड़ा	५००) ना०पा० १६३ मि० फाल्गुन बदी १० मालके
२५०)	४५०) ना०पा० १६३ मि० फाल्गुन सुद ११ मालके
७००) बाक़ी लेना	६५०)
६५०)	७००) बाक़ी लेना मि० चैत्र बदी१ सं० १६७४ तक

|१|| खाता १ श्री मकान किराये खाते का है

१०) ना० पा० १६४ मि० फाल्गुन सुदी १५ वृद्धि खाते नाँवें माँड कर जमा किये	१०) रो० पा० १६१ मि० फाल्गुन सुदी १५ किराया महीने का
१०)	१०)

।१॥ खाता १ श्री ख़रच खाते का है

६०) ना० पा० १६४ मि०फाल्गुन सुद १५ वृद्धि खाते नाँवें माँड कर जमा किये	६०) रो० पा० १६४ मि० फाल्गुन सुदी १५ परचून ख़रच खाते लगे सो
६०)	६०)

।१॥ खाता १ श्री वृद्धिखाते का है

३००) ना० पा० १६४ मि०फाल्गुन सुद १५ माल खाते में बढ़ते रहे सो तुम्हारे जमाकर उसके नावें माँडे	७०) ना० पा० १६४ मि० फाल्गुन सुद १५ ख़रच व किराये के लगते रहे सो नाँवें माँडे
	७०)
	२३०) ना०पा० १६४ मि० फाल्गुन सुद १५ बाक़ी नफा का देना सो मूलधन खाते जमा किये
३००)	३००)

।१॥ याद २ आँकड़े की

६५०)	श्रीयुत ईश्वरशरण का देना
१२३०)	मूलधन जमा
१८८०)	

७००)	श्रीयुत फूलचन्द में लेना
४००)	श्री माल पोते बाक़ी
७८०)	श्री रोकड़ पोते बाक़ी
१८८०)	

उदाहरण १६ ।

यज्ञदत्तके निम्न लिखित व्यापारका वहीखाता तैयार कीजिए।

सम्वत् १९७५ जेष्ठ कृष्ण १

लेना		देना	
नकद रु०	२८३६॥।)	फूलचन्द का देना	२५०)
माल पोते	२५०३।)		
गयाप्रसाद में लेना	४०)	यज्ञदत्त का देना	५४३०)
गोकलचन्दमें लेना	३००)		

फतेहचन्द व्रजमोहन से नीचे लिखा माल मोल लिया

'गाँधी' नोट पेपर ब्लाक दर्जन	६ प्र० ४) दरजन,	रु०	२४)
'तिलक' „ „	४ प्र० ४) ”		१६)
'महात्मा गाँधी' पुस्तक	१२ प्र० २॥) प्र० पुस्तक,		३०)
'लोकमान्य तिलक' „	२४ प्र० ॥।) ”		१८)
		जोड़—	८८)

जेष्ठ कृष्ण २ हरीप्रसाद भगीरथ को बेची

देश-दर्शन	रु०	३)
लोकमान्य तिलक		६।)
हिन्द स्वराज्य		६)
	जोड़—	१३।)

जेष्ठ कृष्ण ३ नक़द से माल ख़रीदा १५८॥)

" ४ गयाप्रसादके हाथ बेची

अब्राहम लिंकन ३१॥)

आत्मोद्धार २॥)

भारत दर्शन ५)

जोड़...३६)

" ५ हिन्दी पुस्तक एजन्सी से आई

सेवासदन ४॥)

भारतकी साम्पत्तिक अवस्था ३५)

कवियोंकी अनोखी सूझ ५)

सप्तसरोज ५)

जोड़—४६॥)

" ६ गयाप्रसादकी रजिस्ट्री चिट्ठी आई ७६)

" १० मुत्फ़रक़ात ख़र्च के दिये १८॥।)

" ११ नक़द्से किताबें बेची ३४॥)

" १२ नक़दसे किताबें ख़रीदीं ५२॥)

" १३ हरिप्रसाद भगीरथ को पार्सल किया

नूरजहाँ ६।)

शाहजहाँ ४)

पृथ्वीराज रासो २३।)

जोड़—३३॥)

जेष्ठ सुद	१ हरिप्रसाद भागीरथका मनीआर्डर आया		१३)
”	२ फूलचन्द को वेची		
	विज्ञान और आविष्कार	४२)	
	हिन्दी शब्दसागर	३३)	
	रामायण (सटीक)	१०५)	
	” (गुटका)	६०)	
			जोड़—२४०)
”	३ फूलचन्दको एक मनियार्डर भेजा रु०		१०)
”	४ गंगा पुस्तक मालासे ख़रीदी		
	ख़ाँ जहाँ	२०)	
	पत्रावली	३६)	
	सूर सागर	४२)	
	भूकम्प	१६)	
			जोड़—११४)
”	५ हिन्दीपुस्तक एजेन्सीकी पुस्तकें आई		६६॥)
”	७ डाक-ख़र्च चिट्ठी आदिका		१०)
”	१५ मास भरकी खेरूज बिक्री		१४५६-)॥
”	१५ मकान किराया		१००)
”	१५ विज्ञापन छपाई व बटाई		५३।≈)
	शेष बचा हुआ माल		१७५०)

(रो० पा० १)   ॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गोतम स्वामी जी महाराज लब्धि प्रदान करें, मेल रोकड़ का सम्बत् १९७५ मि० जेठ बद १ से सुदी १५ तक

२८३६।।।) श्रीनवी बहियों खाते जमा रो० बाकी
पा० ११

७९) श्रीयुत गयाप्रसादका जमा मि० जेठ
पा० ७
बदी ९ रजिष्ट्री चिट्ठीमें नोट आये सो जमा किये

३४।।।) श्रीमाल खाते जमा मि० जेठ बद ११
पा० १
किताबें नक़द से बेचीं उसके आये

१३) श्रीयुत हरिप्रसाद भागीरथ का जमा
पा० १

१५८।।) श्री माल खाते लेखै मि० जेठ बद ३
पा० १
पुस्तक नक़दसे ख़रीदी उसके नाँवें लिखे

१८।।।) श्री ख़रच खाते लेखै मि० जेठ बद १०
पा० २
मुत्फरक़ात ख़र्च के लगे

५२।।) श्री माल खाते लेखै मि० जेठ बद १२
पा० १
नक़द से कितबें ख़रीदीं

१०) श्रीयुत फूलचन्द के लेखे मि० जेठ
पा० ६

जमा	नाँवें
(शे० पा०) मि० जेठ सुद १ मनिआर्डर तुम्हारा पाया सो जमा किया	सुद ३ मनीआर्डर से भेजे सो नाँवें लिखे
१४५६~)॥ श्रीमाल खाते जमा मि० जेठ सुद १५ पा० १ महीना भरकी खैरूज विक्रीका आया सो जमा	१०) श्रीडाकखर्च खाते लेखे मि० जेठ पा० २ सुद १५ टिकट लिफाफे मँगाये
	१००) श्री मकान किराया खाते लिखे मि० पा० २ जेठ सुद १५ किराया जेठ महीने का दिया सो नाँवें लिखा
	५३।≈) श्री खर्च खात लेखे मि० जेठ सुद १५ पा० २ विज्ञापन छपाई व बँटाई का
	४०३≈)
	४०१६।≡)॥ श्री पोते बाक़ी
४४२२॥~)॥	४४२२॥~)॥

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गोतम स्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान करें मेल पक्की नक़ल का; सं० १९७५ मिति जेठ वद १ से सुद १५ तक चलू।

५६८०) श्री जूनी वहियों खाते जमा मि० जेठ वदी १ जूनी
पा० ११
वहियों में धनीवार में लेने रहे सो नवी वहियों में धनी वार के नाँवे माँड़कर तुम्हारे जमा किये

२५०३।) श्रीमाल खाते लेखे मि०जेठ वदी१माल पोते बाक़ी
पा० १

२८३६।॥) श्री नवी वहियों खाते लेखै मि० जेष्ठ वद १ रोकड़ जूनी पोते बाकी

४०) श्रीयुत गयाप्रसाद के लेखे मि० जेष्ठ वदी १ जूनी
पा० ७
बाक़ी तुम्हारे में लेना सो नवी वहियों में तुम्हारे नाँवें लिख जूनी वहियों में जमा किये

३००) श्रीयुत गोकलचन्दके लेखै मि० जेष्ठ वदी १ जूनी
पा० १०
बाक़ी तुम्हारे में लेना सो नवी वहियों में तुम्हारे नाँवें लिख जूनी वहियों में जमा किये

५६८०)

५६८०) श्री जूनी वहियों खाते लेखै मि० जेष्ठ वदी १ जूनी

/ पा० ११

में धनीवार के देने रहे सो नवी वहियों में धनीवार के जमाकर तुम्हारे नाँवें माँडे ।

२५०) श्रीयुत फूलचन्द का जमा मि० जेष्ठ वदी १ जूनी

/ पा० ६

वहियों में तुम्हारे बाक़ी देना सो नवी वहियों में जमा कर जूनी बहियों में नाँवें लिखे

५४३०) श्रीयुत यज्ञदत्त का जमा मि० जेठ वदी १ जूनी

/ पा० ३

वहियों में तुम्हारे बाक़ी देना सो नवी वहियोंमें जमाकर जूनी वहियों में नाँवे लिखे

५६८०)

३२५॥) श्री माल खाते जमा माल धनीवारको पृथक्-पृथक् मिती

/ पा० १

में वेचा सो धनीवार के मिती वार नावें माँडकर तुम्हारे जमा किये

१३) श्रीयुत हरीप्रसाद भागीरथ के लेखे मि० जेठ वदी २

/ पा० ५

पुस्तकें इस मुताविक़ आपको वी०पी०पोष्टसे भेजीं उसके मालखाते जमाकर आपके नाँवें लिखे वी०पीनं

१३) देशदर्शन १ लोकमान्यतिलक ४ हिन्दस्वराज्य

३) १) ६)

३६) श्रीयुत गयाप्रसाद के लेखै मि० जेठ वदी ४ पुस्तकें
/ पा० ७

नीचे मुताबिक आप को वी० पी० से भेजीं उसके माल
खाते जमाकर आप के नाँवें लिखे वी० पी० नं०

३६) अब्राहमलिकन आत्मोद्धार भारतदर्शन

३१॥) २॥) ५)

३३॥) श्रीयुत हरिप्रसाद भागीरथके लेखै मि० जेठ बद १३
/ पा० ५

पुस्तकें नीचे मुताबिक वी० पी० भेजीं उसके नाँवें लिखे
वी० पी० नं०

३३॥) नूरजहाँ शाहजहाँ पृथ्वीराजराठौर

६।) ४) २३।)

२४०) श्रीयुत फूलचन्द के लिखे मि० जेठ सुदी २ पुस्तक
/ पा० ६

निम्नलिखित आप को डाक से भेजीं सो नाँवें लिखीं

७५) विज्ञान और आविष्कार, हिन्दी शब्दसागर

४२) ३३)

१६५) रामायण सटीक रामायण गुटका

१०५) ६०)

२४०)

३२५॥)

३४८) श्री माल खाते लेखै माल धनीवारसे पृथक् पृथक् मिती

/ पा० १

में ख़रीद किया सो धनीवारका मितीवार जमाकर तुम्हारे नाँवें लिखा

८८) श्रीयुत फतेचन्द व्रजमोहन का जमा मि० जेठ वद १

/ पा० ४

माल निम्न लिखित तुम्हारा लिया सो जमा किया

२४) गान्धी नोट पेपर ब्लाक द: ६ दर ४) द०

१६) 'तिलक' नोट पेपर ब्लाक द: ४) दर ४) द०

३०) 'महात्मा गाँन्धी' पुस्तक १२ दर २॥) लेखै

१८) 'लोकमान्य तिलक' ,, २४ दर ॥।) ,,

८८)

४६॥) श्री हिन्दी पुस्तक एजेन्सीके जमा मि० जेष्ठ वद ५

/ पा० ८

पुस्तकें तुम्हारे यहाँसे आई सो जमा कीं

३६॥) सेवासदन, भारतकी साम्पत्तिक अवस्था

४॥) ३५)

१०) सतसरोज कवियोंकी अनोखी सूझ
५) ५)

४६॥)
११४) श्री गंगा पुस्तक मालाके जमा मि० जेठ सुद ४
/ पा० ६
पुस्तकें तुम्हारे यहाँकी आईं उसके जमा किये
११४) खाजहाँ पत्रावली सूरसागर भूकम्प
२०) ३६) ४२) १६)
६६॥) श्री हिन्दी पुस्तक एजन्सीका जमा मि० जेठ सुदी ५
/ पा० ८
मुत्फरक़ात पुस्तकें तुम्हारी आईं उसके तुम्हारे
बीजक मुताबिक जमा किये

३४८)
१८२=) श्री वृद्धि खाते लेखै मि० जेठ सुद १५ खच खाते, मकान
/ पा० १२
किराया खाते आदि में लगते रहे सो तुम्हारे नाँवें माँड़
उनके जमा किये
७२=) श्री खर्च खाते जमा मि० जेठ सुद १५ तुम्हारे में
/ पा० २
लेना रहे सो जमाकर वृद्धि खाते नाँवें माँड़े
१०) श्री डाक-खर्च खाते जमा मि० जेठ सुद १५ तुम्हारे
/ पा० २

में लेने रहे सो जमा कर वृद्धि खाते नाँवें माँड़े

१००) श्री मकान किराये खाते जमा मि० जेठ सुद १५

/ पा० २

तुम्हारे में लेने रहे सो वृद्धि खाते नाँवें माँड़कर

तुम्हारे जमा किये

१८२॥)

खतौनी ।

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्री माल खाते का है

	१
३४॥।) रो०पा० १ मि० जेठ बद १० रोकड़ासे बेची	/२५०३।) ना० पा० १ जूनीबाकी लेना जेठ बद १ सं० १९७५ तक
१४५६-॥) रो०पा० २ मि० जेठ सुद १५ खैरूँज बिक्री	१५८॥) रो० पा० १ मि० जेठबद ३ नक़द ख़रीदा
३२५॥) ना० पा० २ धनीवार बेची उसके	५२॥) रो० पा० १ मि० जेठ बद १२ नक़द से ख़रीदा
१८१९।-॥)	३४८) ना०पा० ४ धनीवारसे ख़रीदी उसके
	३०६२।)
१७५०) ना० पा० १ जेठ सुद १५ माल पोते	५०७-॥) ना० पा० १ नफाके वृद्धिखाते जमा किये
३५६९।-॥)	३५६९।-॥)

॥ श्रीः ॥

|१|| खाते १ श्री ख़रच खाते का है

७२≈) ना० पा० ५ मि० जेठ सुद १५ वृद्धि खाते नाँवें माँड़कर जमा किये	२
	१८॥) रो० पा० १ मि० जेठ बद १० मुत्फरक़ात ख़र्च की
	५३।≈) रो० पा० २ मि० जेठ सुद १५ विज्ञापन ख़र्च का
७२≈)	७२≈)

॥ श्रीः ॥

|१|| खाता १ श्री मकान किराये खाते का है

१००) ना० पा० ६ वृद्धि खाते नाँवें माँड़ कर जमा किये	१००) रो० पा० २ मि० जेठ सुद १५ किराया जेठ महीने का
१००)	१००)

|| श्रीः ||

।१॥ खाता १ श्री डाकख़र्च का है।

१०) ना० पा० ५ श्री वृद्धिखाते नाँवें माँड़ कर जमा किये	१०) रो० पा० २ मि० जेठ सुद ७ टिकट लिफाफे के ख़र्चे

|| श्रीः ||

।१॥ खाता १ श्रीयुत यज्ञदत्त का है

५४३०) ना० पा० २ मि० जेठ वद १९७५ तक बाक़ी देना	२
३२४॥/।) ना० पा० १ मि० जेठ सुद १५ नफाके	
५७५४॥/॥)	

|| श्रीः ||

।१॥ खाता १ श्रीयुत फतेचन्द ब्रजमोहन का है | ४

८८) ना० पा० ४ मि० जेठ वद १ माल लिया
उसके

|| श्रीः ||

।१॥ खाता १ श्रीयुत हरिप्रसाद भागीरथ का | ५

१३) रो० पा० १ मि० जेठ सुद १ मनिआर्डर
आया

३३॥) बाक़ी लेना

४६॥)

१३) ना० पा० २ मि० जेठ वद २ माल
बेचा उसके

३३॥) ना० पा० ३ मि० जेठ वद १३
माल लिया उसके

४६॥)

३३॥) बाकी लेना मि० असाढ़
वद १९७५ तक

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्रीयुत फूलचन्द का है

२५०) ना० पा०२ बाक़ी लेना मि० जेठ बद
१६७५ तक

२५०)

६

२४०) ना० पा० ३ मि० जेठ सुद २
माल लिया उसके
१०) रो० पा० १ मि० जेठ सुद ३
मनीआर्डर भेजा

२५०)

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता श्रीयुत गयाप्रसाद का है

७६) रो० पा० १ मि० जेठ बद ६ रजिस्ट्रीसें
नोट आये

७६)

७

४०) ना० पा० १ मि० जेठ बद १
१६७५ जूनी बाक़ी लेना
३६) ना० पा० ३ मि० जेठ नद ४
माल लिया उसके

७६)

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता श्री हिन्दी पुस्तक एजेन्सी का है

४६॥) ना० पा० ४ मि० जेठ वद ५ माल आया	८
६६॥) ना० पा० ५ मि० जेठ सुद ५ माल आया	१४६) बाक़ी देना
१४६)	१४६)
१४६) बाक़ी देना मि० अषाढ़ वद १६७५ तक	

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्री गङ्गा पुस्तक माला का है

११४) ना० पा० ५ मि० जेठ सुद ४ पुस्तकें आईं	६
	११४) बाक़ी देना
११४)	११४)
११४) बाक़ी देना मि० अषाढ़ वद १६७५ तक	

॥ श्रीः ॥

॥१। खाता १ श्रीयुत गोकल चन्द का है।	१०
३००) बाक़ी लेना	३००) ना० पा० १ मि० जेठ वद १९७५ तक बाकी लेना
	३००) बाक़ीलेना मि० अषाढ़ वद १९७५ तक

॥ श्रीः ॥

।१॥ खाता १ श्री जूनी बहियों खाते का है	११
५६८०) ना० पा० १ मि० जेठ वद १	५६८०) ना० पा० २ मि० जेठ वद १

|| श्रीः ||

।१।। खाता १ श्री नवी वहियाँ खाते का है

२८३६।।) रो० पा० १ मि० जेठ वद १	२८३६।।।) ना० पा० १ मि० जेठ वद १

|| श्रीः ||

।१।। खाता १ श्री वृद्ध खाते का है

५०७~।।) ना० पा० १ मि० जेठ सुद १५ माल का नफा का	१२ १८२~) ना० पा० ५ मि० जेठ सुद १५ खर्च में लगते रहे ३२४।।।≡।।) ना० पा० १ मि० जेठ सुद १५ नफा के वढ़ते रहे सो यज्ञदत्तके घरू खाते जमा किये
५०७~।।)	५०७~।।)

॥ श्रीः ॥

।१॥ याद १ आँकड़े की ।

/६१०२॥≋॥) मिसल धनीवार की

८८) फतेहचन्द ब्रजमोहनका देना

१४६) हिन्दी पुस्तक एजेन्सीका देना

११४) श्री गंगा पुस्तकमालाका देना

५७५४॥≋॥) यज्ञदत्तका देना

६१०२॥≋॥)

/३३३॥) मिसल धनीवार की

३३॥) हरिप्रसाद भागीरथ में लेना

३००) गोकलचन्द में लेना

३३३॥)

१७५०) माल पोते बाक़ी

४०१६।≋॥) रोकड़ पोते बाक़ी

६१०२॥≋॥)

छठा अध्याय ।



बेंक तथा चैक ।



पूर्व इतिहास व कार्यक्षेत्र ।

५७। जिस प्रकार हमारे देशमें सर्राफ़ हैं, उस ही प्रकार पश्चिमी देशोंमें बेङ्क हैं। इनका कार्य क्षेत्र मुख्यतया चार प्रकार का है। यथाः—

(१) रुपया उधार लेना और उधार देना।

(२) देशी अथवा विदेशी हुण्डी लिखना, लिखाना, बेचना अथवा ख़रीदना।

(३) सरकार को आर्थिक सहायता देना।

(४) नोट आदिका चलाना।

ईसा की सत्रहवीं शताब्दी में, जब इन बेङ्कों के स्थापन करने की पाश्चात्य देशों में तजवीज हो रही थी, उस समय इनका उपरोक्त कार्यक्षेत्र निर्धारित नहीं किया गया था। आरम्भमें इनकी आवश्यकता देशकी मुद्रा-स्थितिके सुधारने के लिये जान पड़ी। अस्तु, इनका कार्यक्षेत्र यही रक्खा गया कि, भिन्न-भिन्न देशकी भिन्न-भिन्न माप-तोल की मुद्राओं को जमा कर, ये बेङ्क जमा

कराने वाले को देशकी स्टेण्डर्ड मुद्रा में एक प्रमाण-पत्र दे दें और वह मुद्राको भाँति हस्त-परिवर्तन करता रहे। इस ही उद्देश्य को लक्ष्य में रख कर वेनिस, जिनोआ, पिसा आदि इटाली के देशोंमें वेङ्क स्थापित किये गये थे। "वेङ्क आव् एम्स्टर्डम" नाम का जो वेङ्क सन् १६०९ ई०में हालेण्ड देश की राजधानी एम्स्टर्डम में स्थापित हुआ था, उसका भी यही उद्देश्य था। परंतु धीरे-धीरे समय के प्रवाह के साथ इन वेङ्कों का कार्यक्षेत्र इतना विस्तृत हो गया कि, फिर सनातन उद्देशको ओर लक्ष्य ही नहीं दिया जाने लगा। समय ने धीरे-धीरे उनके कार्य-क्षेत्र में उपरोक्त परिवर्तन किस प्रकार कर दिया है, इसका इतिहास पाठकोंको इस पुस्तिका में नहीं दिया जा सकता। परन्तु यहाँ पर इतना लिखना ही पर्याप्त होगा कि, आजकल ये वेङ्क इतना समिश्रित व्यापार करते हैं कि, जिससे हम उनका कार्य-क्षेत्र यथोचित प्रकार से बताने में असमर्थ हैं।

चालू व व्याज़ू खाते।

५८। इस पुस्तक से वेङ्कों के प्रथम के दो कार्यों का सम्बन्ध है। और अब यही बताना है कि, [ये कार्य किस प्रकार सम्पादन होते हैं। रुपया उधार देने अथवा लेने का कार्य कई प्रकार से किया जाता है। ग्राहकों के चालू खाते, व्याज़ू

खाते आदि अनेक प्रकार के खाते खोल कर वेंक रुपया उधार लेता है, और जमीन-जायदाद सोना, चाँदी, ज़ेवर आदि अनेक प्रकार का धरोड़ रख कर ग्राहकों को व्याज पर रुपया उधार देता है। ग्राहकों के लिये हुण्डी लिखता तथा मोल भी लेता है और उनके आढ़तिये का भी काम करता है। इस कार्य-सूची से हम जान सकते हैं कि, वेंक की आय व्याज, आढ़त, हुण्डावन आदि की वनी हुई है। जहाँ तक रुपया उधार देते, उधार लेने तथा हुण्डी लिखने और हुण्डी लिखाने, हुण्डो वेचने और हुण्डी खरीदने आदि से सम्बन्ध है, वहाँ तक इन वेङ्कों को तुलना हमारे सराफों से की जा सकती है, परन्तु आगे तक यह तुलना नहीं चलती। हमारे सराफोंके कार्य की इतने ही में इति श्री हो जाती है।

ये वेङ्क अपने ग्राहकों के लिये दो प्रकार के खाते रखते हैं। एक को चालू खाता अथवा करेण्ट एकाउण्ट (Current Account) कहते हैं और दूसरे को व्याज खाता अथवा डिपाजिट एकाउण्ट (Deposit Account) कहते हैं। अन्तर केवल इतना ही है कि, चालू खाते में जमा कराई हुई रक़म का उठाने के पूर्व वेङ्क को ऐसा करने की सूचना देना आवश्यक नहीं है ; और व्याजू खाते में जमा कराई हुई रक़म का शर्त पूरी होने पर ही ग्राहक उठा सकता है।



ब्याज की दर।

५९। जब बेङ्क में रुपया महीने, दो महीने, तीन महीने, छः महीने अथवा बारह महीने के लिये जमा कराया जाता है, तो उसे ब्याज-खाता अथवा डिपोज़िट एकाउण्ट कहते हैं। इसके ब्याज की दर जमा की शर्त पर निर्भर रहती है। जितनी ज़ियादा लम्बी अवधि जमा की होती है, उतनी ही ऊंची दर से उस रक़म का ब्याज उपजता है। इस खाते में रक़म जमा कराने पर बेङ्क की ओर से एक डिपोज़िट रसीद हमें मिल जाती है। इस रसीद में जमा कराने वालेका नाम, रक़म, ब्याज की दर व डिपोज़िट काल आदि स्पष्ट शब्दों में लिखे रहते हैं। समय पूरा होने पर यह रसीद लौटा कर रुपया अथवा नई रसीद ले ली जाती है। इस रसीद को डिपोज़िट रसीद कहते हैं।

६०। परन्तु जो मनुष्य अपनी रक़म को इस प्रकार बाँधना नहीं चाहते, वरन् अपनी चाह अथवा इच्छानुसार काम में लेना चाहते हैं, उनके सुभीते के लिये बेङ्क करेन्ट अथवा ड्राइङ्ग एकाउण्ट खोल लेता है। इसको हिन्दी में चालू खाता कहते हैं। इस रक़म का जमा कराने पर ब्याज जुड़ेगा अथवा नहीं, यह हमारे जमा कराने की शर्त पर आधार रखता है। प्रेसीडेन्सी बेङ्क*

* कलकत्ता, बंबई व मद्रासके तीनों प्रेसिडेंसी बैंकोंका 'इम्प रियल बेंक आफ इण्डिया' नामक एक सम्मिलित बेंक सन् १९२० के आरम्भसे कर दिया गया है।

व अन्य बड़े बेङ्क चालू खाते में जमा कराई हुई रक़म का व्याज बिल्कुल नहीं देते ; परन्तु जो इण्डियन जॉइण्ट ष्टाक बेङ्क हैं, वे चालूखाते खोलते समय ग्राहकों से शर्त कर लेते हैं कि, वे अपने चालूखाते में सदा कुछ नियमित रक़म जमा रक्खेंगे और इसके एवज़ में वे उनके चालूखातेका आपस में नक्की की हुई अथवा बेङ्क के व्याज की दरके मुताबिक़ व्याज जोड़ेंगे। जो बेङ्क चालूखातेका व्याज बिल्कुल ही नहीं देते, वे उसमें दिये हुए अथवा उस पर काटे हुए हुण्डी चेक आदि की आढ़त भी नहीं लगाते हैं। परन्तु जो इस खातेका व्याज जोड़ते हैं, वे आढ़त आदि नहीं छोड़ते। बेङ्कों की जमा के व्याज की दर उधार के व्याजकी दर से भिन्न होती है। जमा की व्याज की दर २) प्रतिवर्ष प्रतिशत और ३) प्रतिवर्ष प्रतिशत के मध्य में रहती है; परन्तु उधार की व्याज की दर सदा इससे ऊँची और व्यक्ति विशेष के लिये भिन्न-भिन्न रहती है।

सराफ और बेंक।



६०। हमारे देश में बेङ्कों से काम बहुत कम लिया जाता है। इनकी त्रुटि किसी अंशमें हमारी प्राचीन प्रथानुसार चलती हुई सराफी पेढ़ियाँ—गद्दियाँ—पूरी करती हैं। ये रुपया उधार देती

हैं तथा बड़े-बड़े शहरों में उधार लेती भी हैं। नीचे के दिसावरोंमें हुण्डी लिखती तथा खरीदती हैं। जब इन्हें रुपयों की आवश्यकता होती है, तब इन्हीं हुण्डियों को वापस बेचकर अथवा प्रेसिडेन्सी बैंक आदि में वटा कर रुपया वसूल कर लेती हैं। परन्तु आधुनिक व्यापार-संसार में इनका यह तुच्छ कार्य किसी भी गिनती में नहीं आता और न इनके पास इतना प्रचुर धन ही होता है कि, ये देशके व्यापार को भली भाँति सहायता दे सकें। विदेशी व्यापार इतना बढ़ गया है कि, उसमें लाखों ही नहीं; वरन् करोड़ों रुपये की दरकार होती है और इसके अलावा जोखम भी पूरी सारी उठानी पड़ती है। हमारी सराफी पेढ़ियाँ—गद्दियाँ—एक ही व्यक्तिकी पूँजी पर चला करती हैं। हरेक के पास क़रोड़ों का द्रव्य भी नहीं होता और न वह अपरिमित जोखम ही अपने सिर पर उठाया चाहता है। इसका परिणाम क्या होता है कि, देशका व्यापार विदेशियों के हाथमें शनैः शनैः चला गया है और चला जाता है। लाखों की पूँजी से अन्तर्देशीय (Internal) व्यापार वे भले ही चला लें; परन्तु इतनीसी पूँजी से, वैदेशिक व्यापार का कुछ काम नहीं चल सकता। अस्तु; आवश्यक है कि, हमारे धनी सराफ परिमित जोखमकी ओट महाजनी (Banking) पेढ़ियाँ—गद्दियाँ—खोल देश के व्यापार को उन्नत बनावें।

खाता खोलना ।

६२। बेङ्क में चालू अथवा डिपोज़िट खाता खोलने के पूव बेङ्क-प्रबन्धकर्त्ता (Manager) से मिलकर ब्याज आदि का निश्चय कर लेना चाहिये। इन बातों को तय करने के पश्चात् जब हम बेङ्क में रुपया जमा करा देते हैं, तो उसकी ओर से हमें एक पास-बुक (Pass Book) एक चेक बुक (Cheque Book) और एक क्रेडिट स्लिप बुक (Credit slip Book) मिलती है इस पास-बुकमें हमारे खाते लेन-देन किये हुए सब रुपयों का जमाख़र्च रहता है। यह बुक सदा हमारे पास ही रहती है। परन्तु समय-समय पर इसमें बेङ्क को दी हुई अथवा बेङ्क से आई हुई रक़मों का जमा-ख़र्च कराने के लिये यह बेंकवालोंके पास भेज दी जाती है। बेङ्कके कार्य-कर्त्तागण उसमें आजकी मिती तक की रक़मों का जमा-ख़र्च कर प्रधान कोषाध्यक्ष की सही करा कर वापस लौटा देते हैं। लौट आने पर हमें उस किताब से हमारी बहियों में लगे हुए बेङ्क के खाते की तुलना करने की कभी भूल न करनी चाहिये। यदि कोई रक़म पास बुक में भूल से ज़ियादा नाँवें मंड़ गई है अथवा कम जमा हुई है, तो उसे तुरन्त जाकर दुरुस्त कराना चाहिये। इस पासबुकका स्वरूप इस प्रकार का होता है।

Mr. K. M. Banthiya.

In account with the

Central Bank of India, Limited.

Date	Particulars.	Cheque No.	Dr.			Sig.	Cr.			Dr. or Cr	Balance.		
1919													
Mar 5	By Cash						Rs. 500	...	..				
" 7	" Cheque						" 625	5	9				
" 8	20 G. C. Dhariwal	8295	556	6	0						568	15	9
" 10	By hoondi						" 1025	...	..				
" 15	" Cash						" 500	...	...	Cr.	2093	15	9

चेक।

६३। जब हमें बेङ्क से रुपया उठाना हो अथवा उसके द्वारा किसी दूसरे को दिलाना हो, तो हम विना चेक काटे ऐसा नहीं कर सकते हैं। बेंकों का क़ायदा है कि, वे चेक के सिवाय और किसी तरह रुपया नहीं देते। चेक और कुछ नहीं है, केवल एक प्रकारका आज्ञा-पत्र है, जिस पर सरकारी ष्टाम्प लगी रहती है इस आज्ञा-पत्र की आज्ञा के अनुसार ही बेङ्क रुपया दे देता है। ऐसा करने से उसके सिर पर जोखम का भार नहीं रहता। परन्तु यदि वह आज्ञा-पत्र जाली हो अथवा अपूर्ण हो अथवा उसमें और किसी भी प्रकार की त्रुटि हो, तो बेङ्क उसको सिकारने के लिये वाध्य नहीं किया जा सकता और न इसके हरजे का ही बेङ्क देन-दार होता है।

६४। आज्ञापत्र प्रमाणित है अथवा नहीं, इसकी जाँच के लिये खाता खोलते समय ही बेङ्क प्रवन्धकर्त्ता ग्राहक से अपनी (Autograph Book) में सही करा लेता है और उसही सही के दस्तख़तों वाले चेक अथवा हुण्डी के सिकारने का वह उत्तर-दायित्व अपने ऊपर लेता है। अपने तथा सव ग्राहकों के सुभीते के लिये तथा धोखेबाज़ों के चंगुल में न पड़ने के लिये बेङ्क अपने ऊपर के चेक-फार्म छपवा कर १६—३२—६४ फार्म की कापियाँ वना लेता है। इन सव चेक-फार्मोंकी गिन्ती रखता है और ग्राहक को देते समय किस संख्या से किस संख्या तक की चेक बुक उसे दीगई

है उसकी नोंध अपनी वही में कर लेता है। इन चेक-फार्मों की छपाई वह ग्राहकों से नहीं लेता। ग्राहकों को उस पर लगे हुए ष्टाम्पों की ही क़ीमत देनी पड़ती है। ग्राहकों को इतना सुविधा देने के एवज़ में, वह उनके इन्हीं फार्मों पर काटे हुए चेकों को सिकारने के लिये अपने को बांधता है और किसी सादे कागज़ पर अथवा अन्य किसी भी प्रकार के फार्मों पर जो उसने नहीं दिये हैं, काटे हुए चेकों को सिकारने को वह वाधित नहीं रहता। इस विषयमें हम आगे चलकर और लिखेंगे।

चेक का फार्म।



९५। चेक बुक दो विषम-भागों में विभक्त रहती है। बायें हाथ की ओर छोटे भाग को काउन्टर-फाइल अर्थात् प्रतिपत्रिका कहते हैं; और दक्षिण ओर का बड़ा भाग चेक- फार्म होता है। ये दोनों भाग छिद्राङ्कित खड़ी रेखा से जुड़े हुए रहते हैं। इन दोनों भागों को स्याही से यथोचित लिखकर चेक-फार्म फाड़ लिखानेवाले धनीको सौंप दिया जाता है। (देखो चेक-फार्म का चित्र)

(Counterfoil) प्रति-पत्रिका

No.______

______19

______

______

Rs.______

(Cheque) चेक-फार्म

No______ Bombay______19

To

The Central Bank of India, Limited.

One anna Stamp

Pay ______ or order

Sum of Rupese______

______

Rs ______

बेअरर व आर्डर चेक।

६६। चेक दो प्रकार के होते हैं। एक बेअरर (Bearer) और दूसरा आर्डर (Order)। बेङ्कों में इन दो प्रकार के चेकों की कापियाँ अलग-अलग छपी हुई रहती हैं। जो ग्राहक जैसी कॉपी माँगता है, उसे वैसी ही दी जाती है। इन दोनों में अन्तर इतना ही है कि, बेअरर चेक को दिखानेवाले धनी के जोग ही सिकार देने की बेङ्क हामी भरता है, परन्तु आर्डर चेक पर उस धनी के नाम की बेचान हुए बिना वह नहीं सिकारता। बेअरर चेक में बेचान की कुछ आवश्यकता नहीं रहती। आर्डर चेक पर जिन-जिन हाथों में चेक परिवर्त्तन हुआ हो, उन सबकी बेचान होना ज़रूरी है।

चेक की बेचान।

६७। बेचान को अँगरेज़ी में (Indorsement) इण्डोर्समेण्ट कहते हैं। बेचान अर्थात् इनण्डोर्समेण्ट द्वारा रखेवाला धनी अर्थात् जिसके लिये चेक लिखा गया है, वह उस चेक की रक़म का अधिकार, जिसके नाम की बेचान हो, उसे दे देता है; एवम् अब उस चेक की रक़म का हक़दार वह बेचान वाला धनी हो जाता है। वह धनी भी अपने इस अधिकार को बेच अथवा हस्तान्तर कर सकता है। यह इण्डोर्समेण्ट अर्थात् बेचान साधारणतः दो प्रकार का होता है। एक को साधारण अथवा जनरल

कहते हैं। इसका दूसरा नाम कोरा अथवा ब्लेङ्क इण्डोर्समेण्ट भी है। और दूसरा इण्डोर्समेण्ट विशेष अथवा स्पेशल होता है। जनरल अर्थात् साधारण इण्डोर्समेण्ट वह है जिसमें अपना अधिकार बेचने अथवा हस्तान्तर करने वाला चेक के पीछे केवल अपनी सही ही कर देता है, परन्तु वह ऐसा किसके लिये करता है, इस बात का उसमें वह कुछ भी दाखला नहीं करता। दूसरा स्पेशल अथवा विशेष इण्डोर्समेण्ट वह है कि, जिसमें अधिकारक्रेता तथा विक्रेता दोनों ही का नाम लिखा रहता है। इण्डोर्समेण्ट अथवा बेचान के जाली होने की जोखम बेंक के सिर पर रहती है।

चेक सिकराना।

६८। चेक को ऊपरवाले बेङ्कके यहाँ लेजाकर उसका भुगतान माँगनेको अँगरेज़ीमें प्रेज़ेन्टिग (Presenting) कहते हैं। यह हमारे हुण्डीके देखानके सदृश है। अन्तर इतना ही है कि, हुण्डी का देखान होतेही उसका भुगतान नहीं मिल जाता, परन्तु चेक का देखान करते ही या तो भुगतान मिल जाता है, या उसे अस्वीकार कर दिया जाता है। जब किसी बेङ्कमें कोई चेक भुगतान के वास्ते दिखाया जाता है तो सिकारनेके पूर्व बेङ्क के कार्यकर्त्ता गण उसके लिखने वाले धनीका खाता तपासते—जाँचते—हैं। यदि खातेमें चेक के सिकारने जितनी फालतू रक़म जमा है और वह हर तरह से पूर्ण तथा संशय-रहित है, तो सिकार दिया जाता है,

अन्यथा नहीं सिकारनेके कारण का चिट लगा कर वह वापस, दिखाने वाले धनीको, लौटा दिया जाता है। जब खातेमें रक़म अपर्याप्त होती है, तो R/D (Refer to drawer) अथवा N/S (Not Sufficient funds) लिख कर वह लौटा दिया जाता है, परन्तु यदि खाते में रक़म पर्याप्त हो, और फिर भी किसी कारण से चेक अस्वीकार किया गया हो, तो वह कारण बता कर लौटा देते हैं। इस अस्वीकार करनेको अंग्रेजीमें डिसआँनरिंग (Dishonouring) कहते हैं।

चेक का नहीं सिकरना।

६६। फण्डके होते हुवे भी चेक निम्न कारणोंसे अस्वीकार कर दिया जाता है।

(१) चेक-लेखकके हस्ताक्षर आदर्श हस्ताक्षरों (Specimen signature) से भिन्न हो।

(२) चेकमें कोई काट-छाँट की गई हो, परन्तु लेखकने अपनी सहीसे उसकी तसदीक़ न कर दी हो।

(३) चेकमें, अक्षरोंमें तथा अङ्कोंमें लिखी हुई रक़म भिन्न-भिन्न हो।

(४) चेक बहुत पुराना हो (६ महीनेसे विशेष पुराने चेकको स्टेल चेक कहते हैं)।

(५) चेक-लेखक विक्षिप्त, दिवालिया अथवा पंचत्वको प्राप्त हो गया हो अथवा उसने उस चेकको न सिकारनेकी सूचना दे दी हो (Countermand)।

उपरोक्त किसी भी कारणसे जब चेक न सिकरे, तो उस चेकको खरीदनेवाला लिखनेवाले अथवा बेचनेवालेसे हुण्डी की भाँति उस चेककी रक़म तथा निकराई-सिकराई, रजिष्ट्री तथा बीमेका दुतरफा ख़र्चा और ब्याज लेनेका अधिकारी है।

चेक सिकारनेका उत्तर दायित्व।

७०। पहले कहा जा चुका है कि, बेअरर अथवा आर्डर चेकके सिकारनेका उत्तरदायित्व साधारणतः बेङ्क पर नहीं रहता। चेक-लेखक अथवा विक्रेता अपने इस उत्तरदायित्वका भार बेङ्क पर डालनेके लिये उसे दो तिरछी समानान्तर रेखाओंसे रेखाङ्कित कर देता है। इस रेखाङ्कित करनेको अँग्रेजीमें क्राँसिंग (Crossing) कहते हैं। इस प्रकार रेखाङ्कित करनेका यह प्रभाव होता है कि, ऊपरवाला बेङ्क उस चेकका भुगतान रखनेवाले धनी को अथवा बेचनवाले धनीको सीधे हाथों नहीं देता। इसका भुगतान पानेके लिये उन्हें किसी रजिष्टर्ड बेङ्कमें अपना खाता खोलना पड़ता है और उसके द्वारा ऐसे रेखाङ्कित चेकोंका भुगतान लिया जाता है। यदि ऊपरवाला बेंक रेखाङ्कित चेकका भुगतान

रजिष्टर्ड बेङ्कके अतिरिक्त यदि और किसीको दे देता है, तो उसकी ज़िम्मेवरी उसकी रहती है। और लेखक, यदि वह रक़म इच्छित व्यक्ति विशेषको नहीं मिली हो, तो बेङ्कसे पुनः वसूल कर सकता है। और यहीं पर हमारी सराफी पेढ़ियों—गद्दियों—तथा बेङ्कमें बड़ा भारी अन्तर आता है। वे, रजिष्टर्ड नहीं होनेसे, बेङ्कोंकी श्रेणीमें नहीं मानी जातीं और यदि उनके यहाँ ही क्रॉस्ड चेक आया हो, तो उसके भुगतानके लिये सर्राफ होते हुए भी उन्हें रजिष्टर्ड सर्राफोंकी शरण लेनी पड़ती है।

क्रासिंगके भेद।

७१। क्रॉसिङ्ग दो प्रकारका होता है। एकको साधारण और दूसरेको विशेष कहते हैं। साधारण क्रॉसिङ्गका अभिप्राय तो केवल इतनाही है कि, ऐसे चेक का भुगतान रजिष्टर्ड बेङ्क द्वारा ही दिया जावे। परन्तु जब कोई चेक विशेष तौरपर रेखाङ्कित कर दिया जाता है, तो फिर उसका भुगतान केवल उसही बेङ्क द्वारा मिल सकता है कि, जिसका नाम रेखाओं के बीचमें लिखा गया हो। ऐसे चेकों को स्पेशियली क्रॉस्ड चेक (Specially Crossed Cheques) कहते हैं। साधारण तथा विशेष क्रॉसिङ्ग जिस प्रकार किया जाता है, वह निम्नचित्रसे स्पष्ट होगा :—

साधारण अथवा जनरल क्रॉसिंग

& Co.

& Co.
Not negotiable.

Not negotiable.

विशेष अर्थात् स्पेशल क्रॉसिंग

Bank of India, Bombay.

Bank of India, Bombay.

Bank of India, Bombay.
Not negotiable.

७२। चेक लिखनेवाला, बेचनेवाला अथवा हस्ताक्षर करने वाला कोई भी उसे रेखाङ्कित कर सकता है। यदि चेक पहलेसे साधारण रेखाङ्कित हो और कोई विक्रेता अथवा हस्ताक्षर करने वाला उसे विशेष रेखाङ्कित करना चाहे तो वह ऐसा करता है, परन्तु इससे विपरीत करनेकी उसमें शक्ति नहीं है। ऐसे चेकों को सिकारनेके लिए बेङ्कका खाता खोलना ज़रूरी हो जाता है। जब चेक दूर देशान्तरमें डाकके मार्फत भेजना हो और उसकी जोखम अपने ऊपर नहीं उठानी हो, तो लेखक उसे रेखाङ्कित करके निश्चिन्त हो जाता है। फिर चेक खोनेसे भी उसकी रक़म नहीं डूबती—या तो उचित व्यक्ति को मिल जाती है और या उसही के खातेमें जमा रहती है।

नॉट निगोशिएब्ल चेक।



७३। बहुधा चेकों पर "Not Negotiable" लिखा हुआ हम देखा करते हैं। ऐसा लिख देनेसे उस चेकमें क्या विशेषता आजाती है? ऐसे चेकोंमें और रेखाङ्कित चेकोंमें क्या भिन्नता होती है? ऐसा करनेसे उसकी बेचानमें तो किसी प्रकारकी असुविधा नहीं उठती? इत्यादि बातोंका अब विचार करेंगे। (Not Negotiable) नॉट निगोशिएब्लिका हिन्दीमें अर्थ होता है 'न विक्रेय' परन्तु इसका तात्पर्य्य ऐसा नहीं है। इसका तात्पर्य यह है कि, यद्यपि यह चेक अथवा हुण्डी विक्रेय ज़रूर है; परन्तु यह ख़रीदने

वालेको सूचना दे देती है कि, तू मुझे ख़रीद भले ही ले, परन्तु ख़याल रख कि, मेरा विक्रेता कैसा है ? अस्तु, रेखाङ्कित चेकको Not-Negotiable कर देनेसे यह तात्पर्य निकलता है कि, ख़रीदनेवाला चाहे कितनाही प्रतिष्ठित पुरुष क्यों न हो, परन्तु वह ऐसे चेकको पाकर उसे शुभ नाम नहीं दे सकता और न आप ही ; यदि ऐसा चेक चोरीका हो तो, कलंकित होने से बच सकता है । अब यदि कोई व्यापारी ऐसे चेकको स्वीकार कर किसीको, माल दे और फिर वह चेक चोरा हुआ निकले तो उसे, यद्यपि वह निर्दोष है तो भी, उस चेक को उसके नियमित अधिकारी को सुपुर्द करना पड़ेगा और अपनी रक़म वसूल करनेके लिये अन्य कोई उपाय ढूंढ़ना होगा। यदि वह व्यक्ति लुच्चा लफंगा हो, तो उसे रक़मसे हाथ तक धोना पड़ेगा। आर्डरका चेक अथवा वह चेक जिस पर आर्डर अथवा वेअरर कुछ भी न लिखा हो, वे सब आर्डर चेक ही माने जाते हैं और वह विना वेचानके हस्तान्तर नहीं किये जा सकते हैं। उनपर Indorsement अर्थात् वेचान होना जरूरी है।

अन्यान्य ज्ञातव्य बातें।

७४। चेक-लेखकको जिन-जिन बातोंका चेक लिखते समय ध्यान रखना चाहिये, उन्हें बता कर इस अध्यायको समाप्त करेंगे।

१ तारीख़—चेकमें तारीख़ वही होनी चाहिये कि, जिस रोज़

वह लिखा गया हो। बे-मिती अथवा आगे-पीछे की मिती वाला चेक यद्यपि नाजाइज़ नहीं होता, परन्तु वे-मिती वाला अपूर्ण कह-कर और पीछे की मिती वाला, यदि बहुत पुराना हो तो, ष्टेल (Stale) कहकर और आगेकी मितीवाला अपरिपक्व कहकर अस्वीकार कर दिया जाता है। रविवार आदिकी तारीख़ होनेसे भी चेक नाजाइज़ नहीं होता। आगू मितीका चेक मिती पकने पर सिकरता है और वेङ्कको छुट्टी अथवा रविवारको पकनेवाला चेक छुट्टीके बाद अथवा सोमवारको सिकरता है।

२ परिग्राही को अर्थात् उसे, जिसे रुपया मिलना चाहिए, अङ्गरेज़ीमें पेई (Paye) कहते हैं। पेई अर्थात् परिग्राही का नाम शुद्ध तथा स्पष्टाक्षरोंमें लिखना चाहिए। जब हम स्वयम् ही परिग्राही अर्थात् पेई हों, तो नामके एवज़में Self अथवा Selves लिखा जाता है।

३ चेककी रक़म सदा अंकों और अक्षरोंमें—दोनोंमें, लिखी जानी चाहिए। अंकोंके लिये चेक-फार्मके बाईं ओर, नीचेके कोनेमें स्थान रहता है और अक्षरोंके लिये पेईके पास ही चेकके शरीरमें लम्बी लकीरें होती है। इन दोनों तरहसे रक़मको लिखनेका तात्पर्य यह है कि, चेककी रक़म-संदिग्ध न हो। सराफ़ नीतिकी आज्ञा के अनुसार वेंक अक्षरांकित रक़म को सही मानकर चेक सिकार सकता है। परन्तु फिर भी व्यवहारसे ऐसे चेक को एमाउण्ट्स डिफर (Amounts differ) अर्थात् रक़म भिन्न-भिन्न है, ऐसा लिखकर अस्वीकार कर दिया जाता। और यदि

रक़म एकमें लिखी गई हो और एक में न लिखी गई हो, तो ऐसे चेकको अपूर्ण कहकर अस्वीकार कर देता है।

४ चेक-लेखक के हस्ताक्षर सदा स्पष्ट अक्षरोंमें चेकके अधो भागमें (निचले भागमें) लिखे जाने चाहियें।

५ चेक लिखकर फाड़नेके पूर्व, उसकी प्रति-पत्रिका (Counterfoil) में मिती, परिग्राही और रक़मकी नोंध कर लेनी चाहिए और फिर चेक फाड़कर हवाले करना चाहिये। भरे हुए चेक का चित्र आगे देखिये।



No. 000
15th March 1907
In favour of Messrs
Madhosingji
Mishrilal
Balance of a/c
Rs 212/8/6

No. 000

15th March 1907

The Central Bank of India, Limited

ધી સેન્ટ્રલ બેંક ઓફ ઇન્ડીયા લીમીટેડ

दी सेंट्रल बैंक ऑफ इंडीया लिमि

BOMBAY

Pay Messrs Madhosingh Mishrilal or Bearer
Rupees two hundred twelve annas eight and pies six only

Rs 212-8-6

Cashier

Kris Santhing

Date 15-3-1919

Notes...	1000	—	—
Silver...	15	8	9
Gold ...			
Cheques	555	—	—
Hongkong Bk.			
"			
"			
"			
Rs.	1570	8	9

Particulars of Payment.

Notes...	1000	0	0
Silver...	15	8	9
Gold...			
Cheques	555		
Hongkong Bk.			
"			
"			
"			
Rs.	1570	8	9

The Central Bank of India, Limited.

Zaveri Bazar, Bombay, 15th march, 1919

Paid in to the credit of Mr.

H M Banthiya

the sum of Rupees One thousand and five hundred seventy, annas eight and pies nine only

in Current Deposit Account ________

By Self

Receiving Cashier...... *Entd.*________ *Cashier* ______ *Folio* ______ *Ledger-keeper.*

Chief Cashier ______

Notes at Rs. 10,000 each	—	—	—
" " 1000 "	—	—	—
" " 500 "		—	—
" " 100 "		—	—
" " 50 "	—	—	—
" " 20 "	—	—	—
" " 10 "	—	—	—
" " 5 "	—	—	—
Sovereigns	—		—
Silver	—	—	—
Copper...	—	—	—
	—	—	—
Rs.–			

क्लीअरिंग हाउस।

७६। वम्बई, कलकत्ता मद्रास और कराची में वेंकोंके परस्परके लेन-देनको निपटानेके लिए लगभग सन् १६०१ से क्लिअरिंग हाउस स्थापित हैं। क्लिअरिंग हाउस अँगरेज़ी शब्द है, इसका शब्दार्थ 'निकास-गृह' है। यह भी पाश्चिमात्य संस्था है और पाश्चिमात्य पद्धति पर संस्थापित वेंकोंकी अनुगामिनी होकर ही यह संस्था हमारे देशमें आई है।

व्यापार की वृद्धिके साथ इसका घनिष्ट सम्बन्ध है। वृद्धिके साथ-साथ व्यापार संमिश्रित और पेचीदा होता जाता है। यह संस्था ऐसे संमिश्रित और पेचीदा व्यापारके मार्ग को चिकना व सरल वनानेका काम देती है। पश्चिमीय देशों में इसका उपयोग आजकल प्रत्येक व्यापारमें किया जाता है। इसकी उपयोगिता समझनेके लिए उदाहरण लीजिए। कल्पना कीजिए कि, अ और व नामके दो शख्स या व्यापारी हैं। इनमें परस्पर लेन-देनका व्यवहार है। अ व को माल व रुपया आदि देता है और आवश्यकता पर आप भी उससे लेता है; इसी प्रकार व भी अ से लेन-देनका व्यवहार रखता है। जव कभी ये दोनों अपना लेन देन वरावर करना चाहते हैं, तव जितना रुपया अथवा माल जिस प्रकार एकको दूसरेसे प्राप्त हुआ है, उतनाही उतनी वेर दे-लेकर वे अपना हिसाव चुकता नहीं करेंगे। रुपया इधरसे उधर

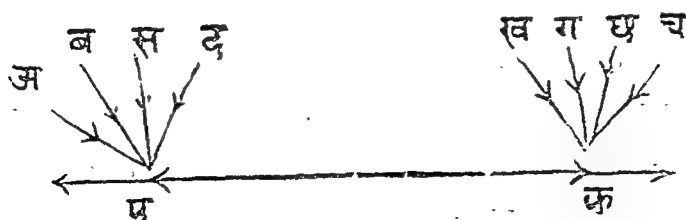
घसीटनेकी बेगार कर व्यर्थ ये अपना समय नष्ट नहीं करेंगे। सब लेन-देनोंके बाद जो कुछ बाक़ी लेनी अथवा देनी रक़म रही है, उतना रुपया ले-देकर हिसाब चुकता कर लेंगे।

७७। इसी उदाहरणको ज़रा और विस्तृत कीजिए और कल्पना कीजिए कि अ, ब, स, द, और फ नामके पाँच व्यापारी एक गाँव में रहते हैं। इस गाँवमें प नामका एक ही बैङ्क है। इसही बेंकमें सब व्यापारी अपना रुपया जमा रखते हैं, इनका व्यापार केवल अन्तरग्रामीण है। अब कल्पना कीजिए कि, अ को ब का कुछ रुपया देना है। इसको चुकता करनेकी दो युक्तियाँ हैं, प्रथम तो वह अपने प बैंक में जाय और वहाँसे अपने खाते में से रुपया निकाल कर ब के घर ले जाकर दे और अपना देना चुकती करे। दूसरे, बजाय इस प्रकार रुपया लाकर देने के वह ब को प बेंकका अपने खाते पर का एक चेकही काट कर दे दे। इन दोनोंका परिणाम एकही है परन्तु चेकके दे देनेसे अ के लिये बेंकसे रुपया लाकर देनेकी और ब को पीछे बेंकमें रुपया जमा करानेकी और बेंकको एकको गिनकर देने व दूसरे से गिन कर लेनेकी सब दिक़तें एकदम मिट जाती हैं, और न रुपया ही इधर-उधर करनेकी आवश्यकता होती है। बिना एक पैसेके इधर-उधर हुए, केवल बहियों के जमा ख़र्चसे ही दोनोंका लेन देन चुकता हो जाता है। बेंकमें जब ब, अ से पाया हुआ चेक अपने खातेमें जमा कराता है तो बेंक अ के खातेमें नाँवें माँडकर उस ब के खातेमें जमा कर लेता है। इसी प्रकार यदि ब को किसी

अन्यका देना हो, तो वह भी बेंककी बहियोंमें जमाखर्च फिरवा कर चेक द्वारा सहजही चुकता किया जासकता है। इस व्यवहारमें जो सबसे भारी लाभ है, वह इस वातका है कि, थोड़ेसे सिक्कों से घने सिक्कोंका काम निकल जाता है।

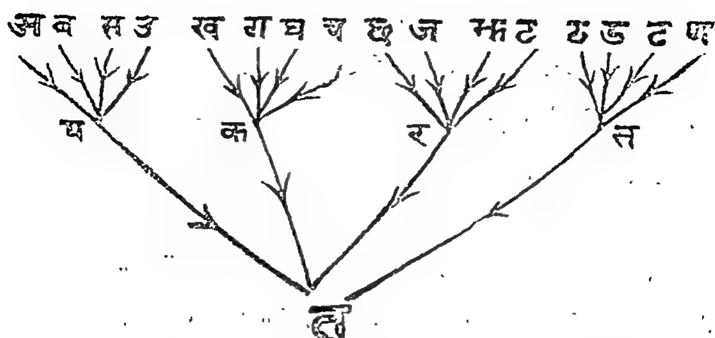
७८। अब इस उदाहरण को ज़रा और भी विस्तृत कीजिये। कल्पना कीजिये कि, उस ग्राममें एक के बजाय प और फ नामके दो बेंक हैं। प बेंक के अ, ब स और द नामके चार ग्राहक हैं और फ बकके ख, ग, घ और च नामके चार ग्राहक हैं। अ, ब, स और द नामके ग्राहकोंके परस्पर के लेनदेन, प बेंककी बहियोंमें जमा-ख़र्च कराकर, उपर्युक्त विवेचन के अनुसार सहज ही निपट जायेंगे। इसी प्रकार फ बैंक भी अपने चारों ग्राहकों के परस्पर लेन-देन निपटा देगा। परन्तु अ को ख को यदि कुछ देनालेना हो तो उसका निपटानमें इतना सहज नहीं होता। अ के लिये इस हालतमें वही दो मार्ग हैं, कि जो द्वितीय उदाहरण के अ और ब के लिए थे। अर्थात् बेंकसे रुपया लाना और ख को देना अथवा अपने बेंकका चेक ख को देना। अ से प बेंकका चेक पाने पर ख को उसका रुपया पानेके लिए स्वयम् भुगतान लेने प बैंक में जाना होगा और फिर वही रुपया ले जाकर अपने फ बैंकमें जमा कराना होगा। इतनी दिक्कत खुद न उठाकर वह उक्त चेक अपने फ बेंक को उसके खातेमें भुगतान लाकर जमा करनेके लिये यदि दे दे, तो उस हालतमें वही दिक्कत फ बेंकको उठानी पड़ेगी। परन्तु इसमें एक बात और विचारने को है और वह यह है कि, जिस प्रकार

अ को ख को कुछ देना था, उसी प्रकार फ बैंक के किसी ग्राहक को प बैंक के किसी ग्राहक को कुछ देना हो सकता है। इस हालत में प बैंकके पास फ बैंकके चेक जमा होनेके लिये आवेंगे और तब यह सारा व्यवहार प्रथम उदाहरणके अ और ब व्यापारी के लेन-देन को निपटाने का सा रह जाता है। एक बात और इस उदाहरणमें ध्यान देने योग्य है। और वह यह है कि प्रत्येक लेन-देन को निपटानेके लिए यदि मुद्रा हस्तान्तरित की जाती तो इसमें घने सिक्के की आवश्यकता होती। परन्तु इस प्रकार बैंकों की परस्पर सहायता लेनेसे मुद्रा की आवश्यकता बहुत न्यून हो जाती है। और इतनाही नहीं, वरन् कभी एक बैंकका लेना और कभी एक का देना होनेकी वजहसे प्रतिदिन रुपये को इधर-उधर करने की आवश्यकता नहीं रहती। जब कभी यह लेना-देना भारी हो पड़े, तब ही रुपया इधर-उधर करनेकी ज़रूरत होगी। इसी बात को समझाने के लिये निम्नाङ्कित चित्र उपयोगी होगा।



७६। उपर्युक्त उदाहरण में व्यवहार जगत् सरलसे सरल कल्पना किया गया है; परन्तु वह ऐसा नहीं है। जिन शहरों

में ऐसे साधनोंकी आवश्यकता प्रतीत होने लगती है, उनमें न तो व्यापार ही उतना सरल रहता है और न लेनदेन ही इस सरलता से निपटाया जा सकता है। कल्पना कीजिये कि, किसी शहरमें १० वैङ्क हैं। इनके प्रत्येक ग्राहक का भिन्न-भिन्न होना स्वाभाविक है। इन दसों वैंकोंमें किसीको किसीसे लेना और किसीको देना होगा। इस प्रकार यदि हिसाव लगाया जाय, तो दश वैङ्कोंमें परस्पर लेन-देन के जोड़ कुल ९×१०/२ यानी ४५ होंगे। अव यदि यही संख्या वढ़ाकर ५० कर दी जाय, तो ऐसे जोडोंकी संख्या कुल १२२५ या (५०×४९)/२ होगी। इस हालत में इन वैङ्कों के लेन देनके निपटानेमें वही कठिनाई आ उपस्थित होती है कि, जो वैङ्क का आविष्कार कर व्यापारियों के लेन देन निपटानेके लिए दूर की गई थी। अस्तु ; यदि ये वैङ्क भी अपनेमें से किसी एकको वैङ्कों का वैङ्क नियत करिये और उसमें प्रत्येकका रुपया जमा रहा करे, तो इन वैङ्कोंका लेन-देन भी उसी प्रकार सरलतासे निपटाया जा सकता है। इस हालतमें इस वड़े वैङ्ककी वहियोंमें देनदार वैङ्कके खातेमें नाँवें और लेनदार वैङ्कके खातेमें जमा करने जितना ही काम वाक़ी रह जाता है और रुपये के इधर उधर हस्तान्तरित करनेकी आवश्यकता ही दूर हो जाती है। यही वात इस नीचेके चित्रसे स्पष्ट होगी।



८० । व्यवहारमें इस प्रकारका काम करनेवाली बैङ्कोंकी बैङ्क कहीं भी नहीं है। हमारे देशमें सब बैङ्कें अपना खाता इम्पीरियल बेङ्क आव् इण्डिया में रखती हैं। परन्तु इन सबका लेन-देन चुकता करनेके हिसाबी कामके लिये एक पृथक् संस्था है। इस संस्थाको ही अङ्गरेज़ीमें क्लियरिंग हाउस कहते हैं। हिन्दीमें उसका निकासगृह, अनुचित नाम नहीं है। क्लियरिंग हाउसके सदस्य प्रत्येक बैङ्कका एक नौकर या गुमाश्ता नियत समय पर उसके ग्राहकों के आये हुये सदस्य-बैङ्कोंके चेक लेकर क्लियरिंगहाउस में चला जाता है। वहाँ पर उसे अपने ऊपरके भिन्न-भिन्न सदस्य बैङ्कोंमें आये हुए चेक दे दिये जाते हैं। इस प्रकार जब चेकोंका परस्पर लेन-देन हो जाता है; तो प्रत्येक बैङ्कका प्रतिनिधि क्लियरिंगहाउस के अधिकारीको अपने ऊपरके सिकारे गये चेकोंकी सूचना कर देता है और तब किस बैङ्कसे किस बैङ्कको कितना पाना और किसको कितना देना बाक़ी रहता है वह छाँटकर कुल लेन-देन का आँकड़ा बराबर मिला लिया जाता है। इसके बाद प्रत्येक

वैङ्क बाक़ी देनी रक़मों का एक चेक ,वैङ्कों के वैङ्क पर काट कर क्लियरिंग हाउसके अधिकारीको दे देता है। क्लियरिंगहाउसके अधिकारी जिस वैङ्कका रुपया लेना हो, उसे उतनाही चेक काट कर दे देते हैं। इस प्रकार असंख्य रुपयोंका लेनदेन प्रतिदिन केवल किताबी जमा-खर्चसे शीघ्र निपट जाता है।

८१। क्लियरिङ्ग हाउसके सदस्य प्रत्येक वैङ्कका यह नियम है कि, सदस्य वैंकोंके चेक प्रातःकाल १२ वजे पहले और सायंकाल २ वजे पहले खाते में दिये जाने चाहियें। प्रत्येक दिवस क्लियरिङ्ग हाउस द्वारा चेकका दोवार भुगतान होता है। १२ वजे पीछे जमा कराये हुए चेककी भुगतान दूसरे क्लियरिङ्गमें और दो वजे पीछेके चेकोंका दूसरे रोज़के प्रथम क्लियरिङ्गमें प्राप्त होता है।



सातवां अध्याय ।



हुण्डी-चिट्ठी ।

हुण्डी की परिभाषा ।

८२। व्यापार में स्वर्ण-रौप्य मुद्रा, नोट व चेक द्वारा धन इधर-उधर किया जाता है। परन्तु येही अर्थ हस्तान्तर एवम् स्थानान्तर करने के एकमात्र साधन नहीं हैं। बहुतसा अर्थ हस्तान्तर एवम् स्थानान्तर हुण्डी-चिट्ठीसे भी किया जाता है। बम्बई-कलकत्ता आदि प्रसिद्ध व्यापारी शहरों से व्यापार करने वाले व्यापार अधिकतर इसी साधन द्वारा अपने मँगाये हुए माल का रुपया चूकता करते हैं, हुण्डी क्या है ? नियत मिती के रुपया देने का निरा प्रतिज्ञापत्र मात्र। यही हुण्डीकी सरलसे सरल व संक्षिप्त परिभाषा हो सकती है। पाश्चात्य देशों में इन्हीं हुण्डियों को बिल आव् एक्सचेंज (Bill of Exchange) कहते हैं। भारतीय विक्रेय-पत्र आइन (Indian Negotiable Instruments Act) में बिल आँव् ऐक्सचेंज की व्याख्या इस प्रकार है :—

"बिल आफ एक्सचज एक अप्रतिबद्ध लिखित आदेश अथवा

आज्ञा है, जिससे लिखनेवाला ऊपरवाले व्यक्ति को लिखित रक़म ही रक्खेवाले धनी के अथवा जिसके लिए वह आज्ञा दे, अथवा जो उस आज्ञापत्र को लावे, उसे देने की आज्ञा देता है।" (धारा ५)*

उक्त आइनका क्षेत्र केवल बिल आफ एक्सचेंज, प्रामिसरी नोट एवम् चिक, इन्हीं तीनों विक्रेय-पत्रों तक ही परिमित है। हुण्डी आदि देशी विक्रय-पत्र एवम् अन्यान्य पत्र इसकी क्षेत्रपरिधि में बिल्कुल नहीं आते। इन पत्रों के विषय में, जहाँतक हो, प्रचलित रिवाज ही पर विशेष ध्यान दिया जाता है और उसके अनुसार झगड़ा पड़ने पर मीमांसा की जाती है; परन्तु जहाँ कोई इस सम्बन्ध का स्थानिक रिवाज नहीं, वहाँ इसी आइत के अनुसार मीमांसा हो जाती है और तप हुण्डी एक प्रकार से बिल आफ एक्सचेंज मान ली जाती है (कृष्णा-सेठ २६ वम्बई ८८)

हुण्डी के द्वारा लेनदार अपने सारे लेने का अथवा उसके कुछ अंश का अधिकार किसी अन्यपुरुष को दे देता है, इनकी सहायता से व्यापारी लोग व्यापारोचित क्रेडिट याने साख प्राप्त करते और आवश्यकतानुसार उसे घटा-बढ़ा सकते हैं। इनका उपयोग विशेष कर बड़े-बड़े व्यापारी शहरोंमें होता है। परन्तु जहाँ रोकड़ रुपया भुगताने में सुविधा न हो अथवा जहाँ व्यापारिक रूढ़ि के

---

* a Bill of exchange is an instrument *in writing* containing an *unconditinal* order, signed by the maker, directing a certain person to pay a *certain sum* of money only, to or to the order of a certain person or to the bearer of the instrument.
[see 5 Negotiable Inst. act]

अनुसार इनके द्वारा भुगतान हो सकता हो और यह रोकड़ भुगतान की अपेक्षा लाभप्रद हो तो इस दशा में भी हुण्डी द्वारा लेन-देन चुकता कर दिया जाता है। छोटे शहरों में इनका बहुत ही कम उपयोग होता है।

अँगरेज़ी हुण्डी का नमूना।



No. 1.

Rs. 2,000/

Bombay 18 th August, 1917.

Three months after sight, pay to our order Two thousand rupees, value received.

Messrs Kalyanmal & Co.
158, Cross Street,
Calcutta.

Banthiya & Co.

देशी हुण्डी का नमूना।



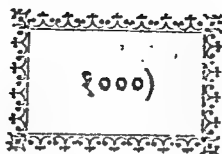
नं ५२६ पांच सौ उनतीस

निसानी हमारे घरू खाते नाँवें माँडना

दस्तखतः—कस्तूरमल बाँठया के हुण्डी लिखे मुजब सिकार देना

।१॥ श्री परमेश्वर जी।

।१॥ सिद्धि श्री कलकत्ता वन्दर शुभ स्थानेक चिरञ्जीवि कल्याण मल राजमल योग्य श्री वम्बई वन्दर से लिखी कस्तूरमल बाँठिया की आशीष वंचना अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) अक्षरे रुपया एक हजार की नेमे रुपये पाँच सौ का दूना पूरा यहाँ रक्खे साह श्री ऊँकारलालजी मिश्रीलाल पास मिती मगसर वद ८ आठम पूगा तुरत साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना सं० १९७० मिती मगसर वद ८ आठम।



(नेमे नेमे रुपया ढाइसौ का चौगुना पूरा
एक हज़ार कर देना)

।१।। चिरं० कल्याणमल राजमल जोग्य

१५८ सूतापट्टी,

कलकत्ता।

हुण्डी और साख

८३। एक समय और एक स्थान पर ख़रीद कर दूसरे समय अथवा दूसरे स्थान पर बेचना यही व्यापार-सफल होने का साधारणतः मूलमन्त्र माना जाता है। बाज़ार की गति का ठीक-ठीक अनुमान कर लेनेवाला एक सिद्धहस्त व सुफल व्यापारी है। बहुधा हमें अनुमान से ऐसा भास होता है कि, भविष्य में बाज़ार की गति अमुक होगी। अपने अनुमान के अनुसार उस समय व्यापार कर व्यापारी लाभ भी उठाते हैं। परन्तु इस प्रकार व्यापार करने में जो भारी असुविधा प्रत्येक व्यापारी को अनुभव होती है, वह उसकी आर्थिक स्थिति सम्बन्धी है। माथे वेचान के व्यापार में आर्थिक संकीर्णता इतनी बाधा-पूर्ण नहीं प्रतीत होती, जितनी कि पोते यानी ख़रीद के व्यापार में होती है। मुद्दत पर यदि बाज़ार हमारी धारणाके अनुसार तेज़ नहीं गया है और हम उसका तेज़ जाना एक प्रकार से निश्चित मानते हैं, तो इसका लाभ उठाने के लिये माल तुलवा लेने के सिवा और कोई अन्य उपाय ही हमारे लिए नहीं है। परन्तु अपनी आर्थिक अवस्था देखकर बहुधा हमें इस प्रकार के व्यापार से लाभ उठाने की हमारी इच्छा को दबाना पड़ता है। इसी प्रकार हज़ार माल ख़रीद कर भर रखने से भी हम हिचकिचाते हैं। अपने रुख़ से अपने एक मित्र व्यापारी ही को लाभ उठाते देख कर हमारा जी बहुत विकल हो

उठता है। परन्तु एक सिद्धहस्त व्यापारी इस प्रकार हताश नहीं होता। वह यह विचारता है कि, आज माल ख़रीद कर कुछ और बाद बेचने से मुझे लाभ ही होगा। अस्तु, जिसका इस समय अभाव है, वही उस समय मेरे पासमें प्रचुर परिणाम में होगा। अतएव अभी की कमी को मैं उस समय भलीभाँति पूरी कर सकूंगा। मेरी बाज़ार में पैठ भी जमी हुई है। बाज़ार से आवश्यकतानुसार रुपया उधार लाकर माल ख़रीद सकता हूँ; इतना ही नहीं, वरन् माल ख़रीद कर उसके एवज़ में नक़द रुपये के बजाय यदि मैं उस व्यापारी को कुछ मुद्दत की हुण्डी भी लिख कर दूँगा तो माल मुझे उचित परिमाण में मिल सकता है। यह बात सच है कि, रुपया उधार लाकर माल ख़रीदने में व्याज और हुण्डी देकर माल लेने में ऊँचा भाव अवश्य देना पड़ता है। परन्तु व्याज की अथवा कुछ ऊँचे भाव की रक़म उसके लाभकी अपेक्षा एक प्रकार से नगण्य होती है। अस्तु, व्यापारी इन दोनों को हानि नहीं समझता है। वह यह ख़याल करता है कि, घर की पूँजी लगाकर उसका व्याज गिनना अथवा दूसरे की पूँजी उधार ले कर उस से व्यापार करना, इन दोनों बातों में कुछ अन्तर नहीं है। यह सब विचार कर, वह माल ख़रीद लेता है और बेचने वाले को मुद्दती हुण्डी लिख कर उसके एवज़में दे देता है। अथवा बाज़ार में हुण्डी बेच कर मालका रुपया चुका देता है। सामने का व्यापारी भी ख़रीदार व्यापारी की सत्यनिष्ठा साधुता व साख आदि पर भरोसा रख, माल के एवज़ में उसकी हुण्डी स्वीकार कर लेता है

और माल उसके हवाले कर देता है। इस प्रकार हुण्डी हमारे व्यापारी की साख बढ़ाने में काम आती है।

मुद्दती व दर्शनी हुण्डी।

८४। ये हुण्डियाँ दो प्रकार की होती हैं। एक मुद्दती और दूसरी दर्शनी। मुद्दती हुण्डियों में, रुपया, उस हुण्डी में लिखी हुई मुद्दत पर अथवा उसके बाद मिलता है; परन्तु दर्शनी हुण्डी का रुपया हुण्डी का दर्शन कराते ही मिल जाता है। हुण्डी-चिट्ठी के मुख्य लाभ इस प्रकार हैं:—

(१) इनके द्वारा ऋण सहज ही में स्थानान्तर तथा हस्तान्तर किया जा सकता है।

(२) उधार लेन-देन बहुत सुभीते से तय होता है।

(३) इनके उपयोग से स्वर्ण-रौप्यादि मुद्राओं के भेजने का खर्च तथा मार्ग की जोखम नहीं उठानी पड़ती।

(४) इनके द्वारा ऋण की केवल नोंध ही नहीं हो जाती वरन् उसका नियमित स्वीकार भी हो जाता है। हुण्डीमें निश्चित रक़म तथा भुगतान का संशय-हीन समय लिखा होने के कारण ऋणी को उसका नियत समय पर भुगतान देना ही पड़ता है।

(५) हुण्डी विक्रेय है। इसके द्वारा हमारा व्यवसाय-धन बढ़ाया जा सकता है। एक व्यापारी को बहियों में भले ही

लाखों की उगाही हो, फिर भी वह धन-संकीर्णतासे दुखी हो सकता है; परन्तु इस आपत्ति-काल को वह अपने क़र्ज़दारों पर हुण्डियाँ लिख कर, बाज़ार में बेचने से निवारण कर सकता है। हुण्डी ख़रीदनेवालों को, मुद्दत हुण्डी की पकने पर, उनकी रक़म भुगतानके रूपमें वापस दे दी जाती है; परन्तु जो मुद्दत पकनेके पहले ही अपनी रक़म वसूल करना चाहें, वे पुनः उसको बाज़ार में बेच कर प्राप्त कर सकते हैं।

(६) यदि हुण्डी न सिकरे तो न्याय-विहित कार्रवाई से रक़म वसूल की जा सकती है।

(७) हुण्डी से अपने ख़रीदे हुए माल को बेच कर, मुद्दत पहले, रुपया इकट्ठा करने का अवकाश मिल जाता है।

हुण्डीके मुख्य अंग।



८५। चेक की भाँति हुण्डीके भी निम्न लिखित मुख्य अंग हैं। इनको ध्यान पूर्वक खूब स्पष्ट लिखना चाहिए। हुण्डीकी इबारत में काँट छाँट अथवा संशयापन्न अक्षरोंके होने पर बहुधा हुण्डी नहीं सिकरती और संशोधनके लिए पाछी लौटा दी जाती है। इससे ख़रीदारको नाहक़ व्याजकी कसर लगती है। अस्तु। मुख्य अंग इस प्रकार हैं:—

(१) ऊपरवाले धनीका नाम व स्थान:—देशी भाषाओंमें लिखी जाने वाली हुण्डी में ऊपर वाले धनीका नाम व स्थान दो

स्थानों पर लिखा जाता है, एक तो हुण्डीमें और दूसरे हुण्डीकी पीठ पर। हुण्डीकी पीठ पर लिखे जाने वाले नाम व स्थानके साथ पता यानी मकान नंबर, गली अथवा बाज़ार आदिका नाम लिखना न भूलना चाहिये। इससे हुण्डीके दिखाने वालोंको बहुत सुभीता रहता है।

अगरेज़ी में लिखी हुई हुण्डीमें ऊपर वाले धनीका नाम व स्थान केवल एकही जगह, हुण्डीके बायें हाथके नीचेके कोनेमें, लिखा जाता है। इसीमें उसका पूरा-पूरा पता लिख दिया जाता है।

(२) लिखनेवाला धनीका नाम तथा स्थान :—देशी हुण्डियों में, यह हुण्डी में 'जोग' लिखी ———— से ———— का जुहार बंचना।' इत्यादि स्थान में लिखा जाता है। और अँगरेज़ीकी हुण्डियों में स्थान हुण्डीकी दाहिने हाथके ऊपर के कोने पर, तारीख़के साथ व नाम हुण्डीके अधोभागके दाहिने कोने पर, लिखा जाता है। देशी हुण्डियोंकी भाँति इनमें हस्ताक्षर व लिखनेवाले का नाम दो बार नहीं लिखा जाता। यदि हुण्डी पर सही करने वाले को दूकान अथवा कम्पनीके नामसे सही करने का अधिकार नहीं हो तो वह परप्रो (Perpro.) अथवा फार (For) सही करता है। उसी में कम्पनीका नाम भी आजाता है ; जैसे—

Perpro. Banthiya & Co.
Namichand Baid.

फार व परप्रो दोनोंका एकही अर्थ है। एक अँगरेज़ी और दूसरा लेटिन भाषाका शब्द है। इसका अर्थ 'ब-हुक्म' है।

(३) रक़म :—यह अक्षरों एवम् अङ्कोंमें दोनोंही में लिखी जाती है। अङ्गरेज़ी हुण्डियोंमें अङ्कोंमें रक़म हुण्डीके बाईं ओर के ऊपरके कोनेमें, और अक्षरोंमें हुण्डी की इबारतमें लिखी जाती है। परन्तु देशी भाषा की हुण्डियों में रक़म का व्यौरा हुण्डी में तथा उसकी पुश्त पर सब मिला कर पाँच बेर किया जाता है। प्रथम तो 'अपरंच' के बादही हुण्डीकी रक़म अंकोंमें व अक्षरोंमें लिख दी जाती है। इसके बाद 'नेमे नेमे——का दुगना पूरा' इत्यादि लिखकर उसको और स्पष्ट कर दिया जाता है। यह सब हुण्डीकी इबारत में लिखा जाता है। हुंडीकी पुश्त पर एक कोठा बनाकर उसमें अङ्कोंमें रक़म खोल दी जाती है ; उसहीके नीचे 'नेमे नेमे————चौगुना पूरा————कर देना' लिखकर इसका बहुतही खुलासा तौर पर स्पष्टीकरण करा दिया जाता है। आज कल चेक, व हुण्डी आदि की रक़म को स्पष्टतया ज़ाहिर करनेके लिये एक मशीन भी आविष्कृत हो चुकी है, जिससे लाल स्याहीमें प्रत्येक चेक अथवा हुण्डी पर रक़म का खुलासा छाप दिया जाता है।

(४) साख्यावाला—इसे अँगरेज़ीमें पेई (Payee) यानी ग्राही कहते हैं। जिसके लिए हुण्डी लिखी जाती है, हुण्डीमें उसका ही साख्या लिखा जाता है। बहुधा हुण्डियोंमें साख्यावालोंके अतिरिक्त मारफत भी लिखा रहता है। मारफत का खुलासा पैरामें दिया है।

(५) मुद्दत तथा पुगती और लिखी मिती :—दर्शनी हुण्डीमें कोई मुद्दत नहीं होती। इसमें लिखी मिती व पुगती मिती दोनों एकही होती हैं। बम्बई 'मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स' के नियमा-

नुसार जिस हुण्डीमें लिखी मिती व पूगती मिती में अन्तर हो वह मुद्दती हुण्डी मान ली जाती है। मुद्दती हुण्डियोंमें आजकल मुद्दत का कोई विशेष प्रतिबंध नहीं है। व्यापारी अपनी सुविधा के अनुसार मुद्दत डाल सकता है। परन्तु पहले, जब कि भारतवर्ष के प्रसिद्ध व्यापारी-शहर रेल द्वारा एक दूसरेके निकट नहीं थे, इस सम्बन्धके निर्धारित नियम थे और प्रत्येक केन्द्र में दूसरे केन्द्रपर की हुण्डीकी मुद्दत निश्चित थी। उस समय दर्शनी हुण्डियाँ नहीं के समान थीं। अँगरेज़ीमें हुण्डियोंकी मुद्दत बहुधा ३०,६०, व ६० दिन की दी जाती है। कभी यह मुद्दत दिखानेके पश्चात् से (After sight) और कभी लिखी मितीसे (After date) दी जाती है। प्रत्येक में गिलासके तीन दिन और जोड़े जाते हैं। देशी हुण्डियों में गिलासके दिन ११ दिनसे कमती मुद्दतकी हुण्डीमें बिलकुल नहीं गिने जाते। ११ से २० दिनकी मुद्दत तक दिन ३ और २० दिनसे विशेष मुद्दत के लिये दिन ५, गिने जाते हैं। जहाँ खरे दिन दिन लिखे हों वहाँ गिलासके दिन नहीं जोड़े जाते।

(६) निशानी—इसका सम्बन्ध हुण्डीके जमा-खर्च से है। जिस हुण्डीमें निशानी नहीं होती, वह लिखनेवालेके ही नाँवें लिखी जाती है। परन्तु जब लिखनेवाला अपने वह नहीं, वरन् किसी अन्य आढ़तियेके खाते हुण्डी करता है, तो वह हुण्डीके सिरे पर उसका नाम लिख देता है। अँगरेज़ीमें इसका उल्लेख Valuereceived के पश्चात् किया जाता है।

(७) हुंडी लिखानेवालेके हस्ताक्षर।

(८) टिकट :—रु० २० से ऊपरकी दर्शनी हुण्डी पर एक आने का टिकट लगाया जाता है। परन्तु मुद्दती हुण्डी पर टिकटकी तादाद रुपयोंकी तादादसे बढ़ायी जाती है मुद्दती हुण्डियोंकी मुद्दत एक सालसे ज़ियादा की नहीं हो सकती मुद्दती हुण्डियों पर टिकट की तादाद कितनी चाहिये, यह परीशिष्टमें दिया गया है।

देशी व विदेशी हुण्डी।



८६। हुण्डियोंके दर्शनी और मुद्दती, दो भेद ऊपर बताये जा चुके हैं। परन्तु ये भेद केवल उपभेद मात्र हैं। मुख्य भेद हैं, देशी व विदेशी। देशी व विदेशी दोनों ही हुण्डियाँ दर्शनी और मुद्दती दो दो प्रकारकी होती हैं। इन हुण्डियों के नियम कुछ कुछ भिन्न हैं।

देशी हुण्डी वह है, जो भारतवर्ष ही में लिखी गई हो और भारतवर्ष ही में सिकरे। परन्तु भारतीय विक्रेय यन्त्र नीति (Indian Negotiable Instruments act of 1881) के अनुसार देशी हुण्डी वह है जो वृटिश भारतमें लिखी गई हो और वृटिश भारत में ही सिकरे। इस परिभाषा से देशी रियासतों में लिखी गई हुण्डियाँ एक प्रकार से वैदेशिक संज्ञा में गिनी जा सकती हैं। इन हुण्डियों का नमूना पैरा ८२ में दिया जा चुका है। विदेशी व मुद्दती देशी हुण्डी का भी नमूना नीचे दे दिया गया है। पहली को अङ्गरेज़ी में फॉरेन (Forei.n) और दूसरी को इनलैण्ड (Inland) बिल आफ एक्सचेंज यानी हुण्डी कहते हैं।

विदेशी हुण्डी का नमूना ।

No. 6. Exchange for £ 1,000-15-10d. *Bombay, 20th September, 1920.*

Stamp
Rs. 13-8-0.

Ninety days after sight, pay this First of Exchange (second and Third of the same tenor and date not paid) to the order of the Eastern Bank Limited the sum of Pounds One thousand Shillings fifteen and pence ten only, value received, and charge the same to our account.

To

Messrs Thornelt & Fehr.
No. 3, Axela Chapel,
London E. C. 2.

Banthiya & Co.

देशी मुद्दती हुण्डी का नमूना ।

टिकट पन्द्रह आनेके



॥ श्री परमेश्वरी जी ।

।१॥ सिद्ध श्री मुम्बई वन्दर शुभस्थानेक भाई श्री नारायण दासजी गणेशदास योग्य श्री रतलाम से लिखी गणेशदास शिवप्रसाद का प्रणाम वञ्चना । अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अक्षरे रुपया एक हज़ारकी नेमे रुपया पाँच सौ का दूना पूरा यहाँ रक्खे भाई सौभागमल जी चाँदमल पास मिती आसौज वद १ एकम् थी दिन २१ इकवीस पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना। सं० १९७२ मिती असौज वद १ एकम्* ।

यह एक मुद्दती हुण्डी का नमूना है। दर्शनी हुण्डियों में "थी दिन २१ पीछे" के स्थान पर "पूगा तुरन्त" लिखा जाता है। इस परिवर्त्तन के अतिरिक्त दर्शनी और मुद्दती हुण्डी की लिखावट

---

* बनारस, मिर्जापुर, फर्रुखाबाद, और देहली इन चार नगरों में "रोकड़ी थानेरा थान बिना जावते हुण्डी चलन का दीजो" लिखा जाता है।

कोटा, लश्कर, हैदराबाद, नागपुर, इन्दौर और भिवानी में "धनी जोग रुपया हुण्डी चलन का दीजो" लिखा जाता है।

इन अपवादों के अतिरिक्त बाकी शेष दिसावरों में हुण्डी में "साह जोग रुपया हुण्डी चलन का दीजो" लिखने की चाल है।

में कोई अन्तर नहीं होता। उपरोक्त रीति से हुण्डी लिख कर उसके सिरे पर निशानी (जिसके खाते हुण्डी की गई हो उसका नाम) कर दी जाती है। इसके बाद सेठ अथवा मुनीम, जिसे हुण्डी पर सही करने का अधिकार हो, उसकी सही कराकर हुण्डी दे दी जाती है। हुण्डी के पूठ पर ऊपर वाले धनी का नाम, पता, स्थान, व कोष्ठा आदि जिस प्रकार किये जाते हैं, सब पैरे ८२ में लगे हुए हुण्डी चित्र से स्पष्ट होगा। छपाई सुलभ तथा सस्ती हो जाने के कारण आजकल व्यापारी लोग हुण्डी-फार्म छपा लेते हैं। इन छपे हुए फार्मों में उपरोक्त सातों बातों के खाने पूर्ण करना ही केवल शेष रहता है। यह हुण्डी फार्म दो भागों में विभक्त होता है। छोटा भाग प्रति पत्रक कहाता है। इसमें हुण्डी की नक़ल होती है। हुण्डी फाड़ कर देने के पूर्व उपरोक्त सातों बातों की प्रतिलिपि इस प्रति पत्रक में कर ली जाती है।

साह जोग व धनी जोग हुण्डी।

८७। दर्शनी हुण्डी को साइट ड्राफ्ट कहते हैं। यह दो प्रकार की होती है। साह जोग और धनी जोग। साह जोग हुण्डी वह है कि, जिसका रुपया साह अर्थात् सराफ महाजन को अथवा उसके मारफत भुगतान दिया जावे। और धनी जोग हुण्डियों में साधारणतः इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं है।

जिन शहरों में "धनी जोग रुपया हुण्डी चलन का दीजो" इस प्रकारकी हुण्डी लिखने की चाल है, उनको छोड़ कर शेष सब धनी जोग हुण्डियाँ राख्यावाला अथवा बेचनेवाले धनी जोग सिकारी जाती है इनसे यह अभिप्राय कदापि नहीं है कि, इनका भुगतान ले जानेवाले शख़्स को ही दे दिया जाय। आइन के अनुसार ऐसी हुण्डियाँ विक्रेय भी नहीं हैं। जेठा प्र० रामचन्द्र १६ बम्बई ६७०)। शाह जोग हुण्डी में भुगतान लेनेवाले के नामकी पेचान होना आइन के रूह से आवश्यक है। बिना पेचानकी हुंडी की नक़ल भी नहीं दिखाई जा सकती। परन्तु हुण्डियों (देशी) के सम्बन्ध में प्रचलित रिवाज़ही की ओर विशेष ध्यान दिया जाता है। केवल उन्हीं बात में आइनका सहारा लिया जाता है कि, जिनके सम्बन्धमें कोई प्रचलित रिवाज़ न हों। इनकी तुलना (क्रास्ड और अनक्रास्ड) रेखाङ्कित और रेखाहीन आर्डर चेकोंसे की जाती है। यदि शाह जोग हुंडी बिना साह अथवा सराफ़के और किसी ऐसे व्यक्तियोग कि, जिसकी पैठ-प्रतिष्ठा की शोध-खोज ऊपर वाले धनीने नहीं की है सिकार दी गई है, तो उसकी जोखम ऊपर वाले धनी पर रहती है। लिखने वाले धनी के झगड़ा करने पर उसे उस हुण्डी की रक़म मुजरे देनी पड़ती है। परन्तु धनी जोग हुण्डी में उत्तरादायित्व का यह भार ऊपरवाले धनी पर नहीं आता। आजकल इन दोनों भेदों पर विशेष लक्ष्य नहीं दिया जाता। प्रायः सारी ही हुण्डियाँ साह जोग लिखी जाती हैं। और उनका भुगतान साह जोग ही दिया जाता है।

निकराई सिकराई ।

८८। हुण्डी लिखने में सदा सावधानी से काम लेना चाहिये। शीघ्रता तथा घबराहट से काम करने का कभी-कभी भारी एवज इस काम में देना पड़ता है। विशेष कर उपरोक्त सात बातें बहुत सावधानी के साथ स्पष्टाक्षरों में लिखी जानी चाहिये। यदि किसी भी प्रकार से सशंकित हुईं, तो हुण्डी बेसिकारे लौटा दी जाती है और इस से हुण्डी लेखक को, राख्यावाला को इस हुण्डी पीछी लौट आनेका हर्जाना भरना पड़ता है। इस हर्जाने को निकराई-सिकराई कहते हैं। इसका हिसाब प्रत्येक शहर के लिए भिन्न-भिन्न है।

मारफत ।

८९। बहुधा एक व्यापारी को अपने विदेशस्थ आढ़तिये पर एक ही मुद्दत की, और एक ही रक़म की, एक ही धनीको अनेक हुण्डियाँ लिखकर देनी पड़ती हैं। ऐसे समय पर भूल-चूक हो जाने का अथवा हुण्डी के खो जाने पर जोखम का बड़ा डर रहता है। इस डर को हटाने के लिये व्यापारी लोग रक़म, मुद्दत अथवा राख्या आदि में कुछ न कुछ परिवर्तन अवश्य कर देते हैं। जो रक़म तथा मुद्दत अपरिवर्त्तनशील हो, तो फिर राख्या में मारफत और लिख दी जाती है। ऐसा करने से राख्यावाला बिल्कुल अशक्त हो जाता है। विना मारफत वाले की बेचान के उसे

उस हुण्डी का रुपया नहीं मिलता और न वह किसी को उसका स्वत्व ही बेच सकता है।

सिकरी चिट्ठी।

९०। हुण्डियाँ सदा सीधी ही देनी नहीं लग जातीं ; अर्थात् हुण्डी लिखाने वाला सीधा ही ऊपर वाले धनी के पास मुद्दत पकने पर हुण्डी सिकराने को नहीं जाता। बहुधा वह उस हुण्डी से व्यापार करता है, अथवा अपना क़र्ज़ चुकाता है। ऐसा करने के लिये वह हुंडी हस्तान्तर करता है। सिकरने के पहले हुंडियाँ बहुधा कई वेर हस्तान्तर हो जाती हैं। प्रत्येक हस्तान्तर-कर्ता को उस पर हस्तान्तर करते समय बेचान करना पड़ता है। यदि हुंडी मुद्दत पकने पर न सिकरे, तो प्रत्येक पूर्वाधिकारी अपने उत्तराधिकारी का देनदार होता है और उसे उसकी निक-राई-सिकराई देनी ही पड़ती है। यदि किसी हस्तान्तर-कर्ताको अपने ऊपर ऐसा उत्तरदायित्व न लेना हो, तो वह बेचान के साथ इतना और लिख देता है—"यदि ऊपरवाला धनी न सकारे तो अमुक धनी से हुंडी सिकराना।" और ऐसा लिख देनेपर, ऊपर-वाले धनी के हुंडी अस्वीकार करने पर, उल्लिखित व्यक्ति से हुंडी सिकरा ली जाती है। इस प्रकार लिखनेको सिरा करना अथवा ईडास करना कहते हैं। यदि सिरे वाला धनी भी हुंडी नहीं सिकारे, तो उस हस्तान्तर-कर्ता की भी वही स्थिति रहती है, जो अन्य हस्तान्तरकर्ताओं की हो। सिरा हरेक हुंडी पर नहीं

होता। सिरा वही धनी करता है जिसकी पैठ सुदृढ़ हो। इन सिराओं की संख्या परिमित भी नहीं। प्रत्येक हस्तान्तर करने वाला सिरा कर सकता है। निकराई-सिकराई माँगने के पूर्व इन सब सिरेवालों से हुंडी का भुगतान माँगना आवश्यक है। इन सारों के अस्वीकार कर देने पर, हुंडी वाले को निकराई-सिकराई तथा हुंडी की रक़म उसका व्याज व खर्च आदि सब अपने उत्तराधिकारी विक्रेता से प्राप्त करने का सत्व प्राप्त हो जाता है। इस को जिकरी चिट्ठी भी कहते हैं। जिकरी चिट्ठी वाले को हुंडी का भुगतान, जिस रोज़ दिखाई जाय, उसी रोज़ देना पड़ता है।

जोखमी हुण्डी।

६१। देशी हुंडियोंमें एक और हुंडी होती है, जिसे जोखमी हुंडी कहते हैं। यह अँगरेज़ी की डोक्यूमेण्टरी हुंडी (Documentary Bill) के समान है। परिभाषा के अनुसार हुंडी एक अप्रतिबद्ध आदेश है। परन्तु जोखमी हुंडी माल के पहुँचने अथवा न पहुँचने पर सिकारी अथवा लौटा दी जाती है। सादी हुंडियों में इस प्रकार का कोई प्रतिबन्ध नहीं रहता। यदि वह भेजे गये माल के एवज़ में ही की जायँ, तो भी उनका सिकरना माल के पहुँचने पर निर्भर नहीं करता। इन्हें देनी लगने पर प्रचलित रिवाज के अनुसार सिकारना ही पड़ता है। यदि इनके सिकारने के बाद ऊपर वाले धनी को मालूम हो कि, उसका मँगाया हुआ माल मार्ग में जल गया है, तो इनकी जोखम उसको उठानी पड़ती है।

परन्तु जोखमी हुंडी में यह बात नहीं है। इसका खरीद करने वाला मालके बराबर पहुँचने की जोखम अपने ऊपर ले लेता है। इस दृष्टि से वह सब प्रकार का आजकल का बीमा एजेण्ट है। बहुधा ऐसी हुंडियों में अच्छा लाभ भी रह जाता है। जब से मार्ग की व माल भेजने की असुविधायें दूर हो गई हैं, इन हुण्डियों का भी तभी से उपयोग भी कम हो गया है। एक प्रकार से आजकल ये हुंडियाँ अप्रचलित ही हैं।

प्रचलित रिवाज।

६२। हुंडी लिखने तथा भुगतान करनेके नियम सर्वत्र एकसे नहीं हैं। कई स्थानोंमें भुगतान लेने और कइयोंमें देनेके लिये जाना पड़ता है। इसी प्रकार कई स्थानोंमें ३ कई में ५ और कोई-कोई में ११ सिती आगेकी हुंडी लिखी जाती है। अधिकांश हुंडियाँ जिस रोज़ लिखी जाती हैं, उनमें उसी रोज़की मिती डाली जाती है। कलकत्तेमें हुण्डीका भुगतान लेने जानेका रिवाज है, परन्तु बम्बई में भुगतान भेजा जाता है। भुगतान आदिके नियम इन बड़े-बड़े शहरोंमें स्थानीय व्यापारी संस्थाओंने एकत्रित कर अपने सदस्य व्यापारियोंके लिए प्रकाशित करा दिये हैं। हुण्डीके नहीं सिकरने पर,उसकी निकराई-सिकराई पानेके लिये,इन्हीं संस्थाओंके प्रमाण-पत्रकी आवश्यकता होती है। बम्बईमें, 'दी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स;' 'दी हिन्दुस्थानी देशी-व्यापारी एसोसियेशन' 'पञ्च ऑफ

ऐसोसियेशन, आदि संस्थायें हैं। ये केवल अपने सदस्य व्यापारीके लिये ही नोटरी पब्लिक व पंचायत कोर्ट का काम करती हैं। परिशिष्ट 'क' में वम्बईकी 'दी मारवाड़ी चेम्बर आफ कामर्स'के हुंडी चिट्ठीके संशोधित नियम उद्धृत कर दिये गये हैं। सहकारी सहयोगी संस्थाओं के नियमोंमें जहाँ कहीं फेर है, वह भी अपवाद रूपमें दे दिया गया है। ज्ञातव्य नियम निम्नलिखित हैं :—

(१) दर्शनी हुंडी लिखी मितीसे दूसरे रोज़ पकती है।

(२) हुंडी की नक़ल प्रातःकालसे सायंकालके ४॥ वजे स्टेण्डर्डटाइम तक ली जाती है। 'पञ्चआँफ एसोसियेशन'के नियमानुसार हुंडीकी नक़ल का समय वम्बई टाइम से ३ वजे है। वैंक अथवा कम्पनीकी हुंडियोंकी सव दिन ११ वजे से ३ वजे (स्टे० टा०) तक और शनिवारको १ वजे तक नक़ल ली अथवा दिलाई जा सकती। है। पञ्चआँफ ऐसोसियेशनका हुण्डी-चिट्ठीका व्यापार रविवार व अन्यान्य वैंककी छुट्टियोंके दिन वैंकोंकी भाँति वन्द रहता है।

(३) हुंडी के भुगतान का समय सायंकाल दियावत्ती तक का है। पञ्चआफ ऐसोसियेशनका भुगतान-समय वम्बई टाइम छः वजे और वैंक अथवा कम्पनीका सव दिन सायंकालके ४ अथवा ५ वजे (स्टे० टा) और शनिवारको सायंकालके २ वजे से ३ वजे तक है।

(४) जिन मुद्दती हुण्डियोंकी मुद्दत पक गई हो, उनकी नक़ल दर्शनी हुण्डियोंके अनुसार और जिसमें मुद्दत वाक़ी हो, उनकी किसी समय नक़ल ली अथवा दी जा सकती है।

(५) मुद्दती हुंडीका भुगतान पकती मितीसे दूसरे रोज़ दिया-लिया जाता है।

(६) हुण्डी ३ दिन तक सिकारनेके लिये ऊपरवाला खड़ी रख सकता है।

(७) खड़ी रहने पर हुण्डीका व्याज दर ।।।) सैकड़ेसे लिया और दिया जाता है। व्याज वारोंसे और नक़ल मितीसे ली-दी जाती है।

(८) जिकरीवाली हुण्डी, ऊपरवालेके ३ दिन तक नहीं सिकारने पर, चौथे दिन जिकरीवालेको दिखाई जाती है। यदि जिकरी वाला उसी दिन व्याज सहित भुगतान नहीं करे, तो दूसरे रोज़ ऐसोसियेशनके प्रमाण पत्र अथवा छाप लगवाकर हुण्डी पीछे लौटा दी जाती है। एकसे विशेष जिकरीवाली हुण्डी अनुक्रमसे एक एक जिकरीवालेको दिखाई जाती है।

(९) जिकरीवाला हुण्डी सिकारे तो रसीद पर रुपया ले लिया जाता है। हुंडी जिकरीवालेको कोरे पूठे दे दी जाती है। रसीदका टिकट जिकरीवाला देता है।

(१०) विना टिकटकी अथवा अधूरे टिकटकी हुंडीकी नक़ल नहीं ली जाती। यदि हुंडी पर पहलेसे टिकट नहीं लगा हो अथवा कमती हो, तो नक़ल देनेके पहले अन्तिम शख्सको टिकट लगाना अथवा पूर्ण करना होता है।

(११) पकती मिती दो हों तो हुंडी तीसरे रोज़ और यदि वह टूट जाय तो उसी रोज़ उसकी नक़ल ली-दी जाती है।

(१२) भुगतान में यदि रोकड़ा रुपया न दिया जाय तो

(क) रुपया ६०० तक हुण्डी वाला स्वीकार करे, यदि उस समय अवकाश न हो, तो रात को अथवा दूसरे दिन १२ बजे तक भेज दे।

(ख) रु० १०००) से रुद्र २५००) तकका तोड़ा एक हो तो लेनेवाला जहाँ भेजे वहाँ जावे।

(ग) यदि एकसे ज़ियादा तोड़े हों, तो एक केवल एक जगह जावे।

(१३) हुण्डीके सौदे व भुगतान के नियम।

(क) तैयार हुण्डीके सौदेका भुगतान व हुण्डी ४॥ बजे स्टे० टा० तक लेना व देना।

(ख) अमावस्या अथवा पूनमके सौदेकी हुण्डियों का भुगतान सरकारी बत्ती तक लेना-देना एवं हुण्डी नीचे लिखे मुताबिक़ लेनी-देनी :— तदोपरि व्याज दर ॥) सैकड़े से लेना-देना।

(१) दर्शनी हुण्डी रातके १२ बजे (स्टे० टा०) तक लेना देना।

(२) मुद्दती पुर्जा सुदी ५ अथवा वदी ५ के रातके १२ बजे (स्टे० टा०) तक लेना-देना।

(३) हाथकी लिखी हुंडी तीसरे दिन रातके १२ बजे (स्टे० टा०) तक लेना-देना।

(१४) पैठ सम्बन्धी नियम।

(१) बम्बईकी लिखी हुण्डीकी पैठ दिन ३ के अन्दर तक लेना-देना।

(२) दिसावरकी लिखी हुण्डी की पैठ दिन २१ तक लेना-देना।

(१५) हुण्डी तथा चेकके भुगतानमें नोट या रुपया लेना। चेक नहीं लेना। यदि रोकड़ा रुपया नहीं दे सके तो हुण्डी या चेक चेम्बरमें दिखाकर पीछा फेर देना और निकराई सिकराई के लिये चेम्बरसे मेजरनामा करा लेना।

(१६) हुंडी दिखाये पीछे खो जावे तो पैठ मँगाकर भुगतान लेनी-देनी।

(१७) बम्बईमें निकराई-सिकराई के नियम।

(क) निकराई सिकराई दर १॥) सैकड़े से लेनी-देनी।

(ख) दुतरफा रजिस्ट्री का खर्च लेना-देना।

(ग) व्याज रुपया देनेकी मितीसे रुपया पीछा आने की मिती तक ॥) आना का लेना-देना।

नोटः—हुण्डावनके भावका फरक न लेना और न देना।



पैठ परपैठ व मेजरनामा।

६२। व्यापारमें सुभीतेके लिये व्यापारियोंने सब प्रकारके साधन रक्खे हैं। मुद्राके इधरसे उधर तथा उधरसे इधर भेजने-मँगानेकी तक़लीफ हटानेके लिये इन हुंडियोंका आविष्कार हुआ है, यह हम पहलेही वता चुके हैं। इन हुंडियोंसे स्वत्व वेचा और ख़रीदा जाता है। यदि डाकमें अथवा अन्य किसीभी कारणसे ऐसी हुंडियों के खो जाने पर इस खोये हुए स्वत्वको पुनर्लाभ करनेका कोई भी साधन न होता, तो कोई भी व्यापारी इन हुंडियों को, चाहे उनसे कितनाही लाभ और सुविधा क्यों न हो, कभी नहीं ख़रीदता। परन्तु हुण्डीके स्रष्टा, दूरदर्शी व्यापारियोंने इस स्वत्वकी पुनर्प्राप्तिके लिये पैठ, परपैठ और मेजरनामे का भी हुंडीके साथहीं आयोजन कर दिया है। हुंडीके खो जाने पर पैठ से, पैठके खोजाने पर परपैठसे और परपैठके खोजाने पर मेजर-नामासे खोया हुआ स्वत्व पुनर्लाभ हो जाता है। पैठ और परपैठ हुण्डी लिखने वाला धनी ही लिखता है; परन्तु मेजरनामा समस्त पञ्च महाजन मिलकर लिखते हैं। मेजरनामा लिखानेका प्रसङ्ग आजकल वहुतही कम पड़ता है। इन पैठ, परपैठ और मेजरनामा आदिके दिखाने, भुगतान देने तथा लेने आदिके नियम वही हैं, जो हुण्डियों के हैं। अस्तु, दोहराना निरर्थक है।

पैठ, परपैठ और मेजरनामाकी एक-एक नक़ल वतौर नमूने के दे दी गई हैं।

हुण्डी

सं० १२१, निशानी

ह० ऊपरवाले का नाम

राख्यावाले का नाम मारफत

पूगती मिती (मुद्दत) लिखी मिती

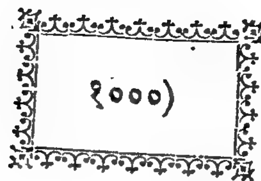
सं० १२१ एक सौह इक्कीस

निशानीः—हमारे घरू खाते नाँवें माँडना

ह० प्रतापमल सेठिया का हुंडी लिखे मुजब सिकार देसी



। १ ॥ सिद्ध श्री बम्बई बन्दर शुभस्थानेक साहजी श्री माधूसिंहजा मिश्रीलालजी योग्य श्री उदेपुर से लिखी बदनमल सेठिया को जुहार वंचियेगा। अपरंच हुण्डी १ रु० १०००) अक्षरे रुपये एक हज़ार की नेमे रुपये पाँच सोहके दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गंभीरमलजी पास मारफत भाई अनोपचंदजी गंभीरमल मिती आसोज सुद १ पूगा तुरत रुपया साह जोग हुंडी चलन का देना संवत १९७४ चोहत्तर मिती आसोज सुद १ एकम् ।



नेमे नेमे रुपया ढाई सोह का चौगुणा पुरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ साहजी श्री माधूसिंह जो मिश्रीलाल जोग
८४।८६ धनजी स्ट्रीट
बम्बई २

पैठ

॥ श्री परमेश्वरजीः ॥

। १ ॥ सिद्ध श्री बम्बई बन्दर शुभस्थानेक साहजी श्री माधूसिंहजी मिश्रीलाल योग्य श्री उदैपुर से लिखी बदनमल सेठिया का जुहार बंचियेगा। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) अक्षरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गंभीरमलजी पास मारफत भाई अनोपचन्दजी गंभीरमल मिती आसोज सुद १ एकम् पूगा तुरत साह जोग हुंडी चलन की लिखी थी। वह हुंडी राख्या वाला धनी खोई कहता है। सो हुंडी खोगई होवे, तो अपना रोज़नामा, खाता, रोकड़, नक़ल, चौकस देखकर इस पैठ को सिकार दीजियेगा। कदाचित् हुंडी आगे सिकार दी होवे, तो यह पैठ रद्द है; पढ़कर फेर देवें। सनद नग २ दो राजके ऊपर की हैं, जिस में से सनद १ एक के दाम हम राजको भर देवेंगे। सम्वत् १९७३ आसोज सुद १५ पूनम। लिखी प्रतापमल सेठिया को जुहार बञ्चावसी।



नेमे नेमे रुपया ढाइ सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देसी

।१।। साहजी श्री माधूसिंहजी मिश्रीलाल जोग्य
८४—८६ धनजी स्ट्रीट, बम्बई ३

परपैठ

। १ ॥ श्री परममेश्वरजी:

। १ ॥ सिद्ध श्री मुम्बई बन्दर शुभस्थाने साहजी श्री माधूसिंह जी मिश्रीलाल योग्य श्री उदयपुर से लिखी वदनमल सेठिया का जुहार बञ्चना। अपरञ्च हुंडी रुपया १०००) की अक्षरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सौह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गम्भीरमलजी पास मारफत भाई अनोपचन्दजी गम्भीरमल मिती आसोज सुद १ एकम पूगा तुरत साह जोग रुपया हुंडी चलन की लिखी थी जिसकी पैठ लिखी मिती आसोज सुद १५ पूनम को। सो रक्खा वाला धनी कहता है कि हुंडी और पैठ दोनों ही खो गई हैं। सो हुंडी और पैठ दोनों ही खो गई होवें, तो अपना रोज़नामा, खाता, नक़ल तथा रोकड़ चौकस देखकर इस परपैठ प्रमाण सिकार दाम देना। जो हुंडी अथवा पैठ आगे सिकारी होवे, तो यह परपैठ रद्द है; पढ़ कर फेर देना। सनद नग २ तुम्हारे ऊपर की हैं, जिनमें से सनद नग १ के दाम मुजरा देंगे। सं० १९७४ मिती कातिक सुद ४



नेमे नेमे रुपया ढाई सौ के चौगुने पूरे
एक हजार कर देना

॥७४॥ सोह श्री माधूसिंहजी मिश्रीलाल जोग
श्री मुम्बई

मेजरनामा

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री मुम्बई बन्दर शुभस्थाने सर्वोपमा लायक सकल सराफे के पञ्च समस्त योग्य श्री उदैपुर से लिखी सकल सराफे के पञ्च समस्त का जुहार वंचना। अपरंच हुंडी १ रु० १०००) की माधूसिंहजी मिश्रीलाल ऊपर लिखी यहाँ से चन्दनमलजी सेठिया की; रक्खें गम्भीरमलजी पास मारफत भाई अनोपचन्दजी गम्भीरमल मिती असोज सुद १ एकम् पूगा तुरत रुपया साह जोग हुंडी चलन का जिसकी पैठ मिती असोज सुद १५ पूनम और परपैठ मिती कातिक सुद ४ चौथ को लिखी थी। परन्तु रक्खेवाला धनी कहता है कि, हुंडी तथा पैठ तथा परपैठ तीनों ही खोई गई हैं। सो यदि हुंडी, पैठ तथा परपैठ तीनों ही खो गई होवें, तो ऊपरवाले धनी का रोज़नावाँ, खाता, नक़ल और रोकड़ चौकस तपास कर इस मेजर प्रमाणे सिकार दाम दिराना। और जो हुंडी, पैठ अथवा परपैठ तीनों में की कोई भी सिकर गई होवे, तो यह मेजर रद्द है; पढ़कर फेर देना। सनद नग ४ ऊपर वाले धनी पर की हैं, जिनमें से नग १ के दाम मुजरे भरेंगे।
मिती पौष कृष्ण ५ पंचमी

साक्षी १ सेठ गणेशदासजी लक्ष्मीदासजी की

साक्षी १ ————————
साक्षी १ ———————— साक्षी पञ्चोंकी
साक्षी १ ————————
साक्षी १ ————————

आठवां अध्याय।



हुंडी चिट्ठीका लेखा

हुंडावन।

६३। गत दो अध्यायोंमें हमने बैङ्क, चेक, हुण्डी, चिट्ठी आदिके विषयमें सामान्य ज्ञान प्राप्त कर लिया है। अब इस अध्यायमें इन हुण्डी-चिट्ठी आदिके जमा-ख़र्च किस प्रकार किये जाते हैं और कितने प्रकारके होते हैं, इसका उल्लेख करेंगे।

६४। जिन देशोंमें मुद्रा सुव्यवस्थित तथा एक होती है, वहाँ हुण्डीका व्यापार विशेष सम्मिश्रित नहीं होता। हुण्डी ख़रीदनेवाला रुपया भेजनेका ख़र्च, जोखम और व्याजकी हनि आदि का हिसाब लगाकर हुण्डी ख़रीदता है। यदि यह सारा ख़र्च हुण्डीके भावसे थोड़ा है, तो वह हुण्डी न ख़रीदकर अपने क़र्ज़को चुकता करनेके लिये रुपया भेजता है न कि हुण्डी। अस्तु, जब हुंडी का भाव इस ख़र्च की सीमासे आगे चढ़ जाता है, तो हुण्डी की माँग घट जाती है और इससे भाव मन्दा रह जाता है। इसही प्रकारसे हुण्डी का भाव विशेष मन्दा भी नहीं जाता, क्योंकि विशेप मन्दी

होजानेके कारण व्यापारी लोग थोकवन्द हुण्डी उँचे भाव में वेचने के लिये ख़रीद लेने पर उतारू हो जाते हैं, इससे भाव पीछा वढ़ जाता है। हुण्डी की दर की ऊँची और नीची दो सीमा हैं। इसका भाव सदा इन्हीं सीमाओंके वीचमें ऊँचा-नीचा होता रहता है। परन्तु आकस्मिक घटनासे इस नियमका भी कई वार खण्डन हो जाता है।

९५। यह तो हुई उन देशों की वात, जहाँ की मुद्रा समान है। परन्तु जब हम ऐसे देशों पर की हुण्डी का विचार करते हैं कि, जिनमें मुद्राव्यवस्था भिन्न-भिन्न हैं, तो कई आपत्तियाँ उपस्थित हो जाती हैं; तव हमारा हुण्डी का व्यापार वहुत संमिश्रित हो जाता है। रुपया भेजने का ख़र्च, जोखम और व्याज की हानिके अतिरिक्त मुद्रा-धातु के मूल्य का भी हुण्डी ख़रीदते समय विचार करना पड़ता है। मुद्राधातु भी यदि भिन्न हो, तो हमारी कठिनाई और भी वढ़ जाती है। इस अध्याय में समान मुद्राव्यवस्था की हुण्डियोंके जमाख़र्च का ही सिर्फ़ वयान किया गया है। हमारे वृटिश भारत में सर्वत्र रुपया काम में आता है। यही हमारी लेखा-मुद्रा (Money of Account)और मूल्य माध्यम (Standard of Value) है। इसी को कलदार रुपया भी कहते हैं। परन्तु देशी रियासतों में भिन्न रौप्य मुद्रा प्रचलित है। एक उदयपुर [मेवाड़] की रियासत में ही चार प्रकार की रौप्य-मुद्रा चलती हैं। ऐसे देशों में हुण्डी का भाव निर्णय करने में तथा उसको समझने में नवीन विद्यार्थी को वड़ी कठिनाई रहती है, अतः उसी का यहाँ पर थोड़ा विवेचना करेंगे।

कच्चा व पक्का नाणा।

९६। कलदार रुपये को पक्का और देशी रुपये को कच्चा रुपया अथवा नाणा कहते हैं। कलदार १८० ग्रेन का होता है। परन्तु कच्चे रुपये के तोलका तथा उसकी शुद्धताका कुछ ठिकाना नहीं रहता। इनके लिये कोई एक नियम नहीं है। इन प्रान्तों में बम्बई आदि अगरेज़ी भारतीय नगरों परकी हुण्डी का भाव वहाँ की देशी मुद्रा में होता है। जिस किसी का इन देशी नगरों से व्यापार-सम्बन्ध है वह जानता होगा कि, उसका तद्देशीय आढ़तिया अपनी चिट्ठी में भाव की रघोती देते समय हुण्डी के भाव भी इस प्रकार लिखता है :—

हुण्डी दर्शनी, मिती आषाढ़ सुद १५

१०६।≊)　　　　१०६)

इन भावों से क्या अभिप्राय है? ये भाव यह बतलाते हैं कि, उस दिवस जिस रोज़ की यह चिट्ठी लिखी हुई है, उस नगर के बाज़ार में हुण्डी का यह भाव था। अर्थात् यदि कोई वहाँ का व्यापारी रु० १०००) कलदार का क़र्ज़ हुण्डी द्वारा चुकाना चाहता है, तो उसे उस रोज़ यह क़र्ज़ चुकाने के लिये अपनी देशी मुद्रा में रु० १०६।≊) देने पड़ते हैं। परन्तु यदि वह कुछ मुद्दत बाद उस हुण्डी का रुपया माँगना स्वीकार करता है, तो उसे १०६।≊) से कुछ कम अपने रुपया १००) कलदार के क़र्ज़ के वास्ते देने पड़ते हैं।

६७। जब हुण्डी का भाव कच्चे नाणे में होता है, तो वह बाहर का बट्टा कहाता है और जब भाव पक्के नाणे में होता है, तो वह भीतरका बट्टा कहाता है। हुण्डी का भाव ख़रीदार को लाभकारी है अथवा नहीं, इसके जानने का बीजमन्त्र यह है:—

"जब भाव हमारी मुद्रामें हो तो ऊँचा भाव हानिकर है और नीचा लाभकर और जब भाव वैदेशिक मुद्रामें हो तो ऊंचा भाव लाभप्रद और नीचा हानिकर।"

यहाँ पर हम कच्चे पक्के नाणे के हिसाब की उदाहरणमाला देना उपयोगी समझते हैं।

उदाह० १७। यदि उदयपुरमें हुंडी का भाव १२१॥) का हो तो रु० १५००) कलदार की हुंडी लिखानेके लिये कितने कच्चे रुपये हमें देने पड़ेंगे? उ० १८२२॥)

उदाह० १८। मि० आश्विन कृष्ण ८ को जयपुरमें कलकत्तेकी हुंडी का प्र० १३१॥) का भाव था। और मुझे कलकत्ते की रु० १७५१) की हुंडी बेचनी पड़ी, तो बताओ मुझे कितने कच्चे रुपये मिले? उ०२३०२॥-)

उदाह० १९। रु० ३४३१) पक्के के प्र० ११३) के भावसे कितने कच्चे हुए? उ० ३८७७।)॥

उदाह० २०। यदि किशनगढ़में हुंडी का भाव ११३॥) का है और मैं रु० ३५३१) कच्चे लेकर किसी व्यापारीके पास हुंडी लिखाने को जाता हूं, तो बताओ वह मुझे कितने की हुंडी लिख देगा? उ० ३८५६॥)

उदाह० २१ रु० ३१५०) कच्चोंके प्र० ७७|||) लेखै पक्के करो।

उ० २४४६≠)

उदाह० २२। रु० १५||) कच्चोंके प्र० ८२।) के लेखैसे पक्के करो

उ० १२|||)

उदाह० २३। रु० १००) पक्केके ८१||) लेखैसे कच्चे करो।

उ० १२२||≋)|

हुण्डी अथवा चेककी नक़ल।

७६। कोई व्यापारी जब अपने आढ़तिये पर हुंडी करता है, तो उसकी सूचना अपने विदेशस्थ आढ़तिये को वह शीघ्र दे देता है। ये आढ़तिये पहलेसे सूचना पाये बिना व्यापारियोंकी लिखी हुई हुण्डियाँ नहीं सिकारते। सूचना देनेके लिये हुण्डी की प्रतिलिपि ही नहीं भेजदी जाती, परन्तु चिट्ठीमें उसकी नक़ल लिख दी जाती है। हुण्डी की नक़ल वह है कि, जिससे लेखक, रक़म, राख्या और मुद्दत इन चार बातों का स्पष्ट ज्ञान हो। इसके लिखने की परिपाटी यह है:—

॥ श्रीपरमेश्वरजी ॥

। १ ॥ सिद्धश्री मुम्बई बन्दर शुभस्थानेक साह श्री माधूसिंह जी मिश्रीलाल योग्य श्री अजमेर से लिखी माणकलाल कस्तूरमल को जुहार वंचियेगा। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) की राख्या

भाई गणेशदास कल्याणमल श्रीकोटावाला पास मि० आसोज सुद २ पूगा तुरत की राज ऊपर की है, सो देनी लगे सिकार दीजियेगा। चिट्ठी पाछे देवें कामकाज लिखावें। सं० १६७४ आसोज वद १५।

उक्त चिट्ठीके पाने पर बम्बई का व्यापारी इसकी नोंध अपनी डायरी के उस पृष्ठ पर कि, जिस रोज़ वह हुंडी पकती हो कर लेता है। मुद्दत पकने पश्चात् हुंडीके देनी लगने पर, उस नक़ल से उसका मिलान कर साहजोग हुंडी भर देता है। यदि इन दो नोंमें किसी भी प्रकारसे अन्तर हो अथवा संशय हो तो वह हुंडी खड़ी रक्खी जाती है और उसकी आढ़तियेको तार द्वारा इत्तिला दे दी जाती है। उसकी अनुमति आने पर वह हुंडी सिकार दी जाती है अथवा लौट जाने दी जाती है।

हुण्डी नोंध वही।

६६। बम्बई के व्यापारी लोग एक वही ऐसी रखते हैं, जिसमें आई अथवा देनी लगी इन दोनों प्रकारकी हुण्डियों की नोंध रहती है। यह वही केवल याददाश्तके लिये है। इससे कोई विशेष कार्य नहीं निकलता। इस वहीमें हुण्डीके आनेपर ऊपरवाले व्यापारीके नाँवें माँड़कर, पेटेसे हुंडीकी रक़म आढ़तियेकी जमा कर ली जाती है। यदि हुंडी पर टिकट नहीं लगा हुआ हो, तो टिकट की क़ीमत बाद देकर रुपये जमा किये जाते हैं।

जो हुंडियाँ देनी लगी हों वे भी इसी भाँति इसी वहीमें आढ़तिये के नाँवें माँड़ी जाती हैं और पेटेमें जिसके जोग भरने की हों उसकी जमा की जाती है। सर्राफ लोग इस वहीको कच्ची नक़ल वही कहते हैं। कई व्यापारी इस वही के अतिरिक्त एक भुगतान-वही और रखते हैं। उसमें जिसके जोग हुंडी भरी जाने को है, उसका नाम व पता आदि नोंधा जाता है। परन्तु जो इस प्रकार नाम व पते के लिये एक पृथक् वही नहीं रखते, वे नक़ल वही ही में हुंडी जमा कर साथमेंही पता-ठिकाना सब लिख लेते हैं।

१०० । वम्वई-कलकत्ता आदि वड़े-वड़े व्यापारी शहरोंमें वहींके व्यापारियों पर की हुंडियाँ साधारणतः आती हैं। ये व्यापारी किसी आढ़तिये के लिए तो हुंडी सिकरवाते हैं और किसीके लिये सिकारते हैं। इस सिकारने और सिकराने के अतिरिक्त हुंडीका काम इन नगरों में वहुत कम होता है। अस्तु, पहले हुंडी के उपयुक्त दो जमाख़र्च जान लेना हमारे लिए उपयोगी है। प्रत्येक जमाख़र्च दो प्रकार से किया जा सकता है।

उदाह० २५ । भाई वेणीराम जोईतादास वम्वई वाले के यहाँ मिती आसोज सुदी ११ को सूरतके आढ़तिये भाई मनसुख राम इच्छारामकी डाकसे हुंडी १ रुपया ४२५) की भाई जूठाभाई गड़वड़दास ऊपरकी लिखी सूरतसे निर्भयराम दलपतरामकी राख्या उसके (आढ़तिये) के पास मिती भादवा वदी ७ गुजराती मिती पहुचती आई और उसी रोज इटोलावाले भाई नाथालाल मोतीलाल की लिखी हुई हुंडी १ रु० २२२५) उसके ऊपर लिखी, राख्या

शिवशंकर नर्मदाशङ्कर पास मिती आसोज सुदी ८ पहुँचती भाई गड़बड़दास नगीनदास जोग देनी लगी। ये दोनों ही हुण्डियाँ सिकर गईं तथा सिकार भी दी गईं। कृपया इनका जमा-खर्च भाई वेणीराम जोईतादास की वही में करके बताइये। हुण्डी की नकल लेना।

कच्ची-नक़ल वही।

॥ श्रीः ॥

।१॥ श्री गोतम स्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान करें मेल कच्ची नक़ल वही का मिती आसोज सुद १२ सं० १८७४ का

४२५) भाई भूठा भाई गड़बड़ दास के लेखै हुंडी १ तुम्हारे ऊपर की हमारे जोग लेनी आई उसके लिखी सूरत से निर्भयराम दलपतराम की राख्या जमावाले पास मिती भादवा वदी ७* गुजराती लिखी पूगती

४२४॥।ई) भाई मनसुख राम इच्छाराम श्री सूरतवाले का जमा हुंडी १ भाई भूठाभाई गड़बड़ दास ऊपर की तुम्हारी लेनी आई

* गुजराती पञ्चाङ्गमें पहले शुक्लपक्ष और पीछे कृष्णपक्ष होता है। अस्तु, हमारा और गुजरातियोंका शुक्लपक्ष तो एक होता है। परन्तु कृष्ण पक्षमें एक महीनेका अन्तर रह जाता है। जैसे उपर्युक्त उदाहरणमें मिती भाद्रपद वद ७ गुजराती है, वह हमारे पञ्चाङ्गसे आसोज वद ७ होती है।

ऊपर मुताविक उसके स्टाम्प के वाद कर तुम्हारे जमा किये

।) श्री ष्टाम्प खाते जमा

४२५)

२२२५) भाई नाथालाल मोतीलाल श्री इटोलावालेके-लेखै मिती आसोज सुद ६ हुंडी १ हमारे ऊपर की तुम्हारी लिखी देनी लगी उसके राख्या शिवशङ्कर नर्मदाशङ्कर पास मिती आसोज सुद पहुँचती सो नाँवें माँड़ी।

२२२५) भाई गड़वड़दास नगीनदास का जमा हुंडी १ हमारे ऊपर की तुम्हारे जोग आई ऊपर मुजव सो जमाकी ठि० भुलेश्वर फिरंगीदेवलके सामने ;

जमाख़र्चः—पहली रीति।

इसके अनुसार हुंडी के सिकरने एवम् सिकराने पर भाई वेणीराम जोइतादास अपनी रोकड़-वही में जिसको रुपये दिये हैं और जिसके रुपये आये हैं, उनमेंसे किसीके नाँवें जमा नहीं करता, वरन् जिस आढ़तिये के खाते वह हुंडी सिकारता और सिकरवाता है, उन्हीं के नामका अपनी रोकड़ वहीमें जमाख़र्च कर, पेटे में हुंडी की नक़ल और रुपये जिसे दिये जायँ अथवा जिससे आयें यह सब व्यौरा हस्ते सहित खोल दिया जाता है यथाः—

।१॥ श्री गोतम स्वामीजी महाराज लब्धि प्रदान करें मेल रोकड़ का सं० १९७४ मिती आसोज सुदी १२

४२४॥≡) भाई श्री मनसुखरामजी इच्छाराम श्रीसूरत वाले के जमा हुण्डी १ रुपया ४२५) की भाई झूठा-भाई गड़बड़दास ऊपर की लिखी सूरत से निरभयराम दलपत राम की राख्या, तुम्हारे पास मिती भादवा वद ७ गुजराती पूगती,

४२५) नोट ह० दलपतराम

।-) वादटिकट का

४२४॥≡ वाकी श्री सिरे

२२२५) भाई श्री नाथालाल जी मोतीलाल श्रीईडोलावाले के लेखै मिती आसोज सुद ६ *हुंडी १ हमारे ऊपरकी लिखी तुम्हारी सिकारी, राख्या शिव-शङ्कर नर्मदाशङ्कर पास मिती आसोज सुद ८ पूगतो,

२२२५) ह० गड़बड़दास नगीन दास जोग ह० गिरि-वरसिंह

दूसरी रीति।

इसके अनुसार हुंडीकी रक़म जिसके जोग वह सिकारी जाय अथवा जो सिकारने आवे उस ही के नाम से उदरत अथवा पर-चून अथवा इसी प्रकार के किसी अन्य खाते में रोकड़ वही में

---

* हुण्डी जो सिकारी जाती है, वह सदा पूगा तुरत की मितीसे दूसरी मिति की लिखनेवाले आढ़तिये के नाँवें लिखी जाती है। परन्तु जो सिकरती है, वह सिकरनेकी मिति में ही जमा होती है।

नाँव अथवा जमा कर ली जाती है। फिर एक दिवस की समस्त सिकरी एवम् सिकारी हुई हुण्डियों का जमा-खर्च नक़ल-वही द्वारा फिरा दिया जाता है। इससे सिकारने वाले और सिकराने वाले व्यक्ति के उसी खाते में पीछी रक़म नाँवें अथवा जमा हो जाती है और वह खाता इस प्रकार अपने आप वरावर होता जाता है।

रोकड़ वही।

।१॥ श्री गोतम स्वामी जी महाराज लब्धि प्रदान करें; मेल रोकड़ का सं० १६७४ मिती आसोज सुद १२

४२५) श्री परचून खाते का जमा ह० भूटा भाई गड़वड़ दास का जमा हुण्डी १ ना० पा० १५८ हस्ते दल० राम	२२२५) श्री परचून खाते हस्ते गड़वड़ दास नगीनदासके नाँवें हुण्डी१ना० पा० १५७ हस्ते गिरवरसिंह

मेल पक्की नक़ल वही का।

पक्की नक़ल वही।

।१॥ श्री गोतम स्वामी जी महाराज लब्धि प्रदान करें, मेल पक्की नक़ल का सं० १६७४ मिती आसोज सुद १ से सुद १५ तक

४२५) श्री परचून खाते ह० भूठाभाई गड़वड़दासके लेखे मिती

आसोज सुद १२ हुंडी १ तुम्हारे ऊपर की भाई मनसुख राम इच्छाराम सूरतवाले की आई लिखी सूरत से निर्भय राम दौलतराम की राख्या जमावाला पास मिती भादवा वद ७ गुजराता पहु चती उसके तुम्हारे नाँवे माँड़कर उसके जमा किये

४२४॥।=) भाई मनसुखराम इच्छाराम श्री सूरतवाले का जमा मि० आसोज सुद १२ हुँडी १ भूठाभाई गड़बड़दास ऊपरकी ऊपर मुनाबिक लेनी आई उसके ष्टाम्प बाद कर तुम्हारे जमा किये और ऊपरवाले के नाँवें लिखे।

-) श्री ष्टाम्प खाते जमा हुंडी पर टिकट १ लगवाया उसके

४२५)

२२२५) भाई नाथालालजी मोतीलाल श्री इटोलावालेके लेखै मिती आसोज सुद ६ हुंडी १ हमारे ऊपर की तुम्हारी लिखी भाई गड़बड़दास नगीनदास जोग आई रख्या शिवशंकर नर्मदाशंकर दास मि० आसोज सुद ८ पहु चती उसके तुम्हारे नाँवें लिख कर उनके जमा किये

२२२५) भाई गड़बड़दास नगीनदास के जमा मि० आसोज सुद १२ हुण्डी १ हमारे ऊपर की लिखी इटोला से भाई नाथालाल मोतीलाल की ऊपर मुताबिक

तुम्हारे जोग देनी लगी, सो तुम्हारी जमाकर इटोलावाले के नाँवें लिखी।*

हुण्डीके १६ प्रकार के जमा-खर्च।



१०१। हुंडी की नक़लें १६ प्रकार की हो सकती हैं। जिन में से ८ नकल तो 'हमारे घरू' हुंडियोंकी होती हैं और ८ 'तुम्हारे घरू' हुंडियों की। पहले हम 'हमारे घरू' हुण्डियों की ८ प्रकार की नक़लें और उनके जमा-ख़र्च का उल्लेख करेंगे।

'हमारे घरू' हुण्डी की ८ नक़लें।



१०२। 'हमारे घरूँ' हुण्डी की निम्नलिखित ८ नक़लें होती हैं:—

(१) हम स्वयमेव अपने व्यापारी पर हुंडी करें।

---

*नोटः—उपर्युक्त प्रणाली से हुण्डीका जमा-ख़र्च करनेमें प्रत्येक रकम का दोहरा जमा-ख़र्च करना पड़ता है। इतना ही नहीं, वरन् साथके साथ स्थानीय व्यापारियों का एक परचून खाता भी दिन-दिन लम्बा होता जाता है। उदरत खाते अथवा उसी प्रकार के किसी खातेके मिलाने और बाकी छाँटने में कितनी असुविधा है, यह प्रत्येक नामदार जानता है। अस्तु, छोटे व्यापारी लोग जिनके यहाँ हुण्डी का व्योपार थोड़ी रुपसे है, वे बहुधा प्रथमशैली पर ही जमा खच करते हैं। सराफों में दूसरी शैली ही अधिक प्रचलित है।

(२) हम स्वयमेव अपने व्यापारी से हमारे ऊपर हुंडी कराव।

(३) हम अपनी इच्छा से दिसावर में हुण्डी लेनी भेजें।

(४) हम अपनी इच्छा से दिसावर से हुंडी लेनी मगावें।

(५) हम अपनी इच्छासे एक दिसावरवाले व्यापारी द्वारा दूसरे दिसावर के व्यापारी पर हमारे खाते हुंडी करावें।

(६) हम अपनी इच्छा से एक दिसावरके व्यापारी द्वारा दूसरे दिसावर के व्यापारी को हमारे खाते हुंडी भिजावें।

(७) हम अपनी इच्छा से दूसरे दिसावर की हुंडी मंगावें।

(८) हम अपनी इच्छासे एक दिसावर के व्यापारी द्वारा दूसरे दिसावर के व्यापारी जोग हुंडी बटानी भिजावें अथवा भेजें।

उपरोक्त ८ प्रकारकी 'हमारे घरू' हुण्डियाँ हो सकती हैं। यह सब हम अपनी इच्छासे करते-कराते हैं। इस व्यापार के हानि-लाभ के भोक्ता भी हम ही हैं। जो आढ़तिये हमारे इस व्यापार में हमारी सहायता करते हैं, तथा दिसावरों में हमारे लिये काम करते हैं, उन्हें सरिश्ते मूजब आढ़त वगैरः भी हमें देनी पड़ती है। हुंडी के पीछे ख़र्च इस प्रकार पड़ता है :—

आढ़त ≠) सैकड़ा
सिकराई ।-) हज़ार
परखाई ≠)॥ हज़ार
दलाली -) सैकड़ा
धर्मादा ≠)॥ हज़ार

अर्थात् एक सौ रु० १००) की हुंडी के पीछे आढ़त, दलाली,

सिकराई, परखाई आदि का ख़र्चा मिलाकर।) पड़ता है इसके सिवाय रजिस्ट्री डाक आदि का ख़र्च पृथक् उठाना पड़ता है।

उपर्युक्त आठ नक़ल की हुण्डियोंका जमा-ख़र्च।

१०३। पृष्ठ २७१ से २७७ तक में दी हुई हुंडियों के अवलोकन से उपरोक्त ८ प्रकार की हुंडियों का भाव स्पष्ट समझ में आ सकेगा। ये हुंडियाँ रतलाम के व्यापारी गणेशदास शिवप्रसाद ने अपने घरू खाते बम्बई के आढ़तिये गणेशदास ठाकुरदास के ऊपर की हैं अथवा उससे कराई हैं. अथवा उसको लेनी भेजी हैं अथवा उससे लेनी मँगायी हैं अथवा उसके द्वारा अपने जयपुर के आढ़तिये भाई गणेशदास नारायणदास के ऊपर कराई हैं, जोग भिजाई हैं अथवा भेजी हैं। जो हुंडी उसने की हैं अथवा ख़रीद कर भेजी हैं उनका भाव तो उसे मालूम ही रहता है एवम् उन्हीं के अनुसार वह उसका जमा-ख़र्च अपनी वही में खेंच लेता है। परन्तु जो हुंडियाँ दिसावर के आढ़तियों से अपने ऊपर काराई हैं, अथवा लेनी मँगाई हैं, अथवा अपने खाते दूसरे दिसावर के आढ़तिये पर कराई हैं, अथवा उसे लेनी भिजाई हैं, उनका जमा-ख़र्च वह अपनी वहियों में उस आढ़तिये की चिट्ठी में आये हुए भावों के अनुसार करता है। अब हम इनका जमा-ख़र्च पृथक् बताते हैं। स्मरण रहे, यह सारा जमा-ख़र्च पक्की नक़ल-वही अथवा रुजनाँवाँ-वही में ही होगा, न कि रोकड़-वही में।

'हमारे घरू हुण्डी' १

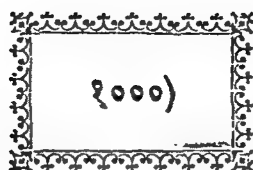
सं०

निशानीः—हमारे घरू नाँवें माँडसी

द०

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री बम्बई बन्दर शुभस्थानेक भाई गणेशदास जी ठाकुरदास योग्य श्री रतलाम से लिखी गणेशदास शिवप्रसाद का जुहार वंचना। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सौ के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेश दास किसनाजी पास मिती भादवा वदी ८ आठम से दिन ४५ पैंतालीस पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना। सम्वत् १६७४ चौहत्तर मिती भादवा वदी ८ आठम—



नैमे नैमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री गणेशदासजी ठाकुरदास योग्य
श्री बम्बई

(१) भाई गणेशदास शिवप्रसादने उपर्युक्त हुंडी भाई गणेश दास ठाकुरदास श्री बम्बई वाले के ऊपर अपने घरू खाते लिख कर भाई गणेशदास किसनाजी को प्र० २५) लेखै दी है। इस-लिये नक़ल-वही में इसका जमा-ख़र्च इस प्रकार रहेगाः—

१२५०) भाई गणेशदास किसनाजी के लेखै मिती भादवा वद ८ हुण्डी १ रु० १०००) की श्री बम्बई को भाई गणेश दास ठाकुरदास ऊपर की तुम्हें दी लिखी यहाँ से हमारी राख्या तुम्हारे पास मिती भादवा वद ८ थी दिन ४५ पीछे की प्र० २५) लेखे सो नाँवे माँडे।

१०००) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाइ वालेका जमा मिती आसोज सुद १३ हुण्डी १ ऊपर मूजब नक़ल की तुम्हारे ऊपर की उसका तुम्हारा जमा किया।

२५०) श्री हुण्डावन खाते जमा

१२५०)

हमारे घरू हुण्डी २

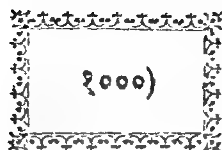
सं०

निशानी :—तुम्हारे घरू खाते नाँवें माँडना

रु०

।१॥ श्री परमेश्वर जी

।१॥ सिद्ध श्री रतलाम शुभस्थानेक भाई गणेशदास जी शिवप्रसाद योग्य बम्बई से लिखी गणेशदास ठाकुरदास का जैगोपाल बञ्चना अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ारकी नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशलालजी सौभागमल पास मिती आषाढ़ सुदी १५ पूनम से दिन ५१ इक्यावन पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलनके देना संवत् १६७४ चौहत्तर मिती अषाढ़ सुदी १५ पूनम ।



नैमे नैमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

॥१॥ भाइ श्री गणेशदासजी शिवप्रसाद जोग
श्री रतलाम

(२) यहाँ गणेशदास शिवप्रसाद ने नं २ की उपर्युक्त हुण्डी अपने ऊपर वम्बई से भाई गणेशदास ठाकुरदास द्वारा अपने घरू खाते कराई है, जिसका भाव गणेशदास ठाकुर दासने अपनी चिट्ठीमें प्र० ८० का लिखा है। इसका जमा-ख़र्च इस प्रकार होगा :—

१०००) श्री वम्बई खाते भाई गणेशदास जी ठाकुरदासका जमा, मि० भादवा सुद ११ हुण्डी १ हमारे ऊपर लिखी ममाई से तुम्हारी, राख्या भाई गणेशलालजी सौभागमल पास, मिती आषाढ़ सुद १५ थी दिन ५१ पीछे की सो हमारे घरू खाते जमाकर तुम्हारे नाँवें माँडी।

८००) भाई गणेशदासजी ठाकुर दास श्री मुम्बई वाले के लेखे मिती आषाड़ सुद १५हुण्डी १ हमारे ऊपर हमारे घरू तुम्हारे से उपर्युक्त नक़ल की कराई जिसके प्र० ८०, लेखे तुम्हारे नाँवें माँडे।

२००) श्री हुण्डावण खाते लेखै।

१०००)

'हमारे घरू' हुण्डो ३

सं०

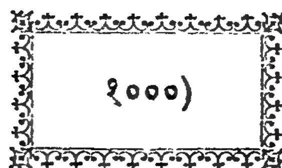
निशानी

द०

हुंडी लेनी भेजी रतलाम से गणेशप्रसाद शिवप्रसाद भाई गणेशदासजी ठाकुरदास श्री बम्बई वाले योग्य 'हमारे घरू'

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री बम्बई बन्दर शुभस्थानेक भाई गणेशलाल सोभागमल योग्य श्री रतलाम से लिखी मगनीराम बभूतसिंह को जुहार वंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोहके दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास शिवप्रसाद पास, मिती भादवा दूसरा वदी ६ नौमी से दिन ४५ पैंतालीस पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना। संम्वत् १९७४ चौहत्तर मिती भादवा दूसरा वद ६ नौमी



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१।। भाई श्री गणेशलाल सौभागमल जोग
श्री बम्बई

(३) भाई गणेशदास शिवप्रसादने उपर्युक्त नम्बर ३ की हुण्डी भाई मगनीराम बभूतसिंह से भाई गणेशलाल सौभागमल ऊपर की प्र० २५) लेखै लिखा कर, अपने आढ़तिये भाई गणेशदास ठाकुरदास को अपने घरू लेनी भेजी है। इसका नक़ल-वहीमें जम ख़र्च इस प्रकार होगा :—

१२५०) भाई मगनीरामजी बभूतसिंहके जमा मिती भाद्वा दूजा वद १ हुण्डी १ रुपया १०००) की, भाई गणेशलाल सौभागमल ऊपर की, लिखी तुम्हारी, राख्या हमारा, मिती भाद्वा वद दूजा ६ थी दिन ४५ पीछे की ख़रीदी प्र० २५) लेखै जिसके जमा किये।

१०००) श्री मुम्बई खाते भाई गणेशदासजी ठाकुरदास के के लेखै मिती आसोज सुद १४ हुंडी १ युपर्युक्त नक़ल की तुमको हमारे घरू लेनी भेजी जिसके तुम्हारे नाँवें लिखे।

२५०) श्री हुन्डावन खाते लेखे।

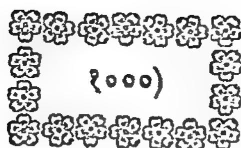
१२५०)

'हमारे घरू' हुण्डी ४

हुंडी ख़रीद भेजी बम्बइ से गणेशदास ठाकुरदासने भाई गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलाम वाले जोग 'तुम्हारे घरू'

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री रतलाम शुभस्थानेक भाई श्री मगनीरामजी घभूतसिंह योग्य श्री बम्बई से लिखी गणेशलाल सौभागमलका जुहार बञ्चना। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) को अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सौह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलाम वाले पास, मारफत गणेशदास ठाकुरदास, मिती सावन वदी ९ नौमी से दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना। सम्वत् १९७४ चोहत्तर मिती सावन वदी ९ नौमी



नेमे नेमे रुपया अढ़ाइ सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री मगनीरामजी वसूनसिंह जोग
श्री रतलाम

(४) भाई गणेशदास शिवप्रसाद रतलामवाले ने उपर्युक्त नं० ४ की हुंडी भाई गणेशदास ठाकुरदास बम्बई वाले मारफत अपने घरू खाते प्र० ८०) का लेखै ख़रीदवा कर मँगाई है। अस्तुः इसका जमाख़र्च इस प्रकार होगा।

१०००) भाई मगनीराम बभूतसिंहके लेखै मिती भादवा दूजा सुद १५ हुण्डी १ तुम्हारे ऊपर लिखी मुम्बई से भाई गणेशलाल सौभागमल की, राख्या हमारा, मारफत भाई गणेशदास ठाकुरदास, मिती सावन वद ६ थी दिन ५१ पीछे की लेनी आई उसके नाँवें लिखे।

८००) श्री ममाई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदासका जमा मि० सावण वदी ६ हुंडी हमारे घरू तुमने रतलाम की प्र० ८०) लेखै ख़रीद कर भेजी, सो तुम्हारे लिखे मुताबिक जमा किये

२००) श्री हुण्डावण खाते जमा

१०००)

'हमारे घरू' हुंडी ५

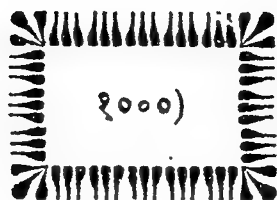
सं०

निशानी श्रीरतलाम खाते गणेशदास शिवप्रसाद के नाँवें माँडजो

द०

॥१॥ श्री परमेश्वरजी

॥१॥ सिद्ध श्री सवाई जैपुर शुभस्थानेक भाई गणेशदास नारायणदास जोग श्री ममाई से लिखी गणेशदास ठाकुरदासका जैगोपाल वंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रु० एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सौ का दूणा पूरा इटे राख्या भाई नैनसुखदास मुलतानचन्द पास मिती सावन वदी १० थी दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का दीजो। सं० १९२ सावण वदी १०



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सौ का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री गणेशदास नारायणदास जोग
श्री सवाई जयपुर

(५) भाई गणेशदास शिवप्रसाद ने अपने बम्बई के आढ़तिये भाई गणेशदास ठाकुरदास के मारफत अपने जयपुर के आढ़तिये भाई गणेशदास नारायणदास पर उपर्युक्त नं ५ की हुण्डी कराई है, जिसका भाव बम्बई से प्र० १०३॥) का आया है। उसही के अनुसार भाई गणेशदास शिवप्रसाद अपनी बहियोंमें इस प्रकार जमा-ख़र्च निकालता है :—

१०३५) श्री ममाई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदास के लेखै मिती सावण वद १० हुण्डी १ हमारे घरू तुम्हारे से कराई भाई गणेशदास नारायणदास श्री जयपुर वाले ऊपर, लिखी (हमारे खाते मुम्बई से तुम्हारी, राख्या नैनसुखदास मुलतानचन्द पास मि० सावण वदी १० थी दिन ५१ पीछे की प्र० १०३॥) लेखै सो तुम्हारे नावें माँडी।

१०००) श्री जयपुर खाते भाई गणेशजासजी नारायण दास का जमा हमारे घरू मिती भादवा दुजा वदा ६ हुण्डी १ तुम्हारे ऊपर हमारे खाते मुम्बई से भाई गणेशदासजी ठाकुरदास से करवाई जिसके नाँवें लिखे।

३५) श्री हुण्डावन खाते जमा।

१०३५)

'हमारे घरू' हुंडी ६

सं०

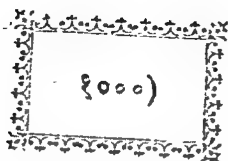
निशानी

द०

हुण्डी खरीद भेजी ममाई से गणेशदास ठाकुरदास भाई श्री गणेशदास नारायणदास श्री जयपुर वाले जोग भाई गणेशदास शिवप्रसाद रतलाम वाला खाते—

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री सवाई जयपुर शुभस्थानेक भाई सुखरामजी गम्भीरमल जोग श्री बम्बई बन्दर से लिखी गणेशलाल सौभागमल को जुहार बंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) की अखरे रु० एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सौ के दूने पूरे यहाँ के भाई गणेश-शदास ठाकुरदास पास मि० सावण सुद १० थी दिन ५१ पीछे सा जोग रुपया हुण्डी चलन का देना संवत् १९७४ सावण सुद १०



नेवे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री सुखरामजी गम्भीरमल जांग
श्री सवाइ जयपुर

(६) भाई गणेशदास शिवप्रसाद ने मुम्बई से भाई गणेशदास ठाकुरदास से उपर्युक्त हुण्डी न ६ प्र० १०३। खरीदवा कर अपने घरू खाते भाई गणेशदास नारायणदास श्री जयपुर वाले को भिजवाया है। अस्तु ; इसका जमा-खर्च इस प्रकार होगा :—

१०३२॥) श्री ममाई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदास का जमा हमारे घरू मि० सावण सुद १० हुण्डी १ श्री जयपुर की हमारे खाते भाई गणेशदास नारायणदास श्री जयपुर वाले को भेजी भाई सुखराम गम्भीरमल ऊपर की लिखी, ममाई से गणेशलाल सौभागमल की राख्या तुम्हारा मि० सावण सुद १० थी दिन ५१ पीछे की प्र० १०३।) लेखे सो जमा की।

१०००) श्री जयपुर खाते भाई गणेशदास नारायणदास के लेखे हमारे घरू मिती आसोज सुद १ हुण्डी १ जैपुर की हमारे खाते ममाई से भिजाई जिसके तुम्हारे नांवें लिखे।

३२॥) श्री हुण्डावण खाते लिखे।

१०३२॥)

हमारे घरू हुण्डी ७

सं०

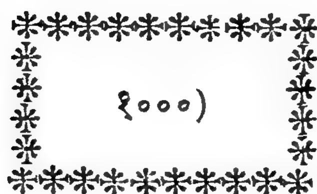
निशानी

द०

हुंडी भेजी ममाई से गणेशदास ठाकुरदास भाई गणेशदास
शिवप्रसाद श्री रतलाम वाला जोग 'तुम्हारे घरू'

।१॥ श्री परमेश्वर जी

।१॥ सिद्ध श्री मन्दसोर शुभस्थानेक भाई गणेशदासजी पूनमचन्द जोग श्री ममाईसे लिखो गणेशलाल सौभागमल को जुहार वञ्चना। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोहके दूने पूरे राख्या भाई गणेशदास शिवप्रसाद रतलाम वाला पास मारफत गणेशदास ठाकुरदास की मि० सावण वद १ से दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना सं० १९७४ मि० साशण वद १ एकम्।



नेमे-नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर लेना

।१॥ भाई श्री गणेशदासजी पूनमचन्द जोग
श्री मन्दसोर

(७) नक़ल ७ की हुंडी मन्दसोर की है। भाई गणेशदास शिवप्रसाद ने मुम्बई से भाई गणेशदास ठाकुर दास की मारफ़त खरीदवा कर यह मँगाई है। उसकी चिट्ठी में इसके ख़रीदने का भाव प्र० ७९॥≈) का आया है। अस्तु, इसका जमा-खर्च इस प्रकार होगा:—

१०००) श्री दिसावरों की हुंडी खाते लेखे मि० भादवा सुद ७ हुंडी १ श्री मन्दसोर की मुम्बई से मँगाई भाई गणेशदास पूनमचन्द ऊपर की लिखी मुम्बई से गणेशलाल सौभागमल की राख्या हमारा मारफत भाई गणेशदास ठाकुर दास के मिती सा० वद १ थी दिन ५१ पीछे की प्र० ७९॥≈) लेखे सो नाँवें लिखी

७९६।) श्री मुम्बई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदास का जमा मि० सावण वद १ हुंडी १ मन्दसोर की रु० १०००) की हमारे खाते मगाई उसके तुम्हारे लिखे मुनाफिक जमा किये प्र० ७९॥≈) लेखे।

२०३।) श्री हुंडावण खाते जमा

१०००)

'हमारे घरू' हुण्डी ८

सं०

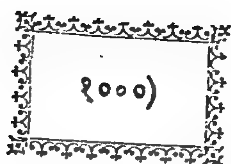
निशानी

द०

हुंडी वटावणी भेजी रतलाम से गणेशदास शिवप्रसाद भाई
गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाला जोग 'हमारे घरू'

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री सवाई जयपुर शुभस्थाने भाई सुखरामजी गम्भीर मल जोग श्री रतलाम से लिखी मगनीराम वभूतसिंह की जुहार बञ्चना। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) की अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास शिवप्रसाद पास मिती भादवा वद १० थी दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना संवत् १९७४ मिती भादवा वद १०



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री सुखरामजी गम्भीरमल जोग
श्री सवाई जयपुर

(८) नक़ल ८ की हुण्डी जैपुर की है। इसे रतलाम से भाई गणेशदास शिवप्रसाद ने बम्बई में भाई गणेशदास ठाकुरदास को वटाने अर्थात् बेचने को भेजी है; इसके जवाब में भाई गणेशदास ठाकुरदास ने लिखा कि हुण्डी रु० १०००) की जैपुर की पहुँची प्र० १०३॥) लेखे मिती भादवा सुद १ को बेच दी है, सो हमारे नाँवे माँडना।

१३००) भाई मगनीरामजी बभूतसिंह की जमा मिती भादवा वद १० हुण्डी १ रु० १०००) की जयपुर की तुम्हारी ली; सुखराम गम्भीरमल ऊपर की लिखी; यहाँ से तुम्हारी राख्या हमारा मिती भादवा वद १० थी दिन ५१ पीछे की प्र० ३०) लेखे सो जमा की।

१०३५) श्री ममाई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदास के लेखे मिती सावण सुद १ हुण्डी १ जयपुरकी तुम को वटानी भेजी हमारे घरू उसके तुम्हारे लिखे मुताबिक नाँवें माँड़े प्र० १०३॥) लेखै।

२६५) श्री हुण्डावण खाते लेखै

१३००)

'तुम्हारे घरू' हुण्डी की आठ नक़लें ।



१०४। 'तुम्हारे घरू' हुण्डी भी आठ प्रकार की होती है, जैसेः —

(१) दिसावर वाला अपनी इच्छा से हमारे ऊपर हुण्डी करे ।

(२) हमसे अपने ऊपर करावे ।

(३) दिसावर वाला अपने खाते हुण्डी हमें लेनी भेजे ।

(४) दिसावर वाला अपने खाते हुण्डी दूसरे दिसावर लेनी भेजवावे ।

(५) दिसावर वाला अपने खाते हुण्डी ख़रीदवाकर दिसावर वटानी भिजावे ।

(६) अपनी इच्छा से हुण्डी वटानी भेजे ।

(७) दिसावर की आपके घरू हुण्डी हमारे मारफ़त करावे ।

(८) हमारी निशानी की करे ।

उपर्युक्त ८ प्रकार की हुण्डियों का जमा-ख़र्च ।

१०५, ये हुण्डियाँ बम्बई के व्यापारी भाई गणेशदास :ठाकुर-

दास ने अपने खाते भाई गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलाम वाले पर या तो की हैं या अपने ऊपर उससे कराई हैं अथवा उसने लेनी भेजी है अथवा लेनी मँगाई हैं। निशानी की हुण्डी करी हैं अथवा किसी दिसावर से किसी दिसावर को हुण्डी भिजाई हैं। इन सबका जमा-ख़र्च रतलाम वाला व्यापारी गणेशदास शिवप्रसाद अपनी बहियों में कैसे कर सकता है, उसका ज्ञान नीचे के जमा-ख़र्च से विद्यार्थी को होगाः—

'तुम्हारे घरू' हुण्डी १

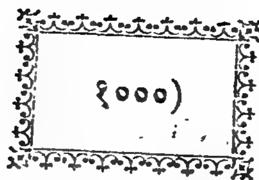
सं०

निशानी हमारे घरू खाते नाँवें माँडना

द०

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री रतलाम शुभस्थाने भाई गणेशदास शिवप्रसाद जोग श्री ममाई बन्दरसे लिखी गणेशदास ठाकुरदास की जैगोपाल बञ्चना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोहके दूणे पूरे यहाँ रखे। गणेशलाल सौभागमल पास मिती आषाढ़ सुद ११ दिन ५१ पीछे साह जोग हुण्डी चलन का देना संवत् १९७४ मिती आषाढ़ सुद ११—



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री गणेशदासजी शिवप्रसाद जोग
श्री रतलाम

(१) हुण्डी १ ली । भाई गणेशदास ठाकुरदास वम्बई वाले ने अपने घरू खाते अपने रतलाम के आढ़तिये भाई गणेशदास शिवप्रसाद पर की है । उक्त हुण्डी रतलामके व्यापारी जोग लेनी आई है । अस्तु जब गणेशदास शिवप्रसाद हुण्डी सिकारता है, तो रोकड़ वही में हुण्डी की रक़म मगनीराम बभूतसिंह के नाँवें माँड़ देता है और इसका जमा-ख़र्च पीछा नक़ल में वही द्वारा फिरा देता है ; अर्थात् गणेशदास ठाकुरदास वम्बई वाले के नाँवें माँड कर मगनीराम बभूतसिंह की जमा कर लेता है ।

१०००) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाले के लेखै मि० भादवा सुद २ हुण्डी १ हमारे ऊपर की तुम्हारी लिखी सिकारी, राख्य गणेशदास सौभाग-मल का मि० आषाढ़ सुद ११ श्री दिन ५१ पीछे की सो नावे माँड़ी

१०००) मगनीराम बभूतसिंह का जमा मिती भादवा सुद २ हुण्डी १ हमारे ऊपर की आई सो जमा की ।

'तुम्हारे घरू' हुण्डी २

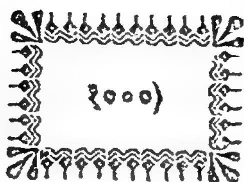
सं०

निशानी तुम्हारे घरू नाँव माँडना

द०

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री मुम्बई बन्दर शुभस्थाने भाई गणेशदास ठाकुरदास जोग लिखी रतलाम से गणेशदास शिवप्रसाद की जैगोपाल बञ्चना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार का नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे रक्खे भाई मगनीराम वभूनसिंह पास मि० भादवा वदी १३ थी दिन ४५ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन के देना। संवत् १९७४ भादवा वदी १३ तेरस।



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री गणेसदासजी ठाकुरदास जोग
श्री बम्बई बादर

(२) यह हुण्डी वम्बई वाले गणेशदास ठाकुरदास ने अपने ऊपर रतलाम वाले आढ़तिये भाई गणेशदास शिवप्रसाद की मारफत कराई है। अस्तु; इसका जमा-खर्च भाई गणेशदास शिवप्रसाद की वहियों में इस प्रकार होगा :—

१२४६।) भाई मगनीराम वभूतसिंह के लेखै मि० भादवा वद १३ हुण्डी १ तुम को दी वम्बई की भाई गणेशदास ठाकुरदास ऊपर लिखी यहाँ से हमारी राख्या तुम्हारा मिती भादवा वद १३ से दिन ४५ पीछे की प्र० २४॥≈) लेखै सो नाँवैं लिखी

१२४५) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाले के जमा मि० भादवा वद १३ हुण्डी १ तुम्हारे घरू तुम्हारे ऊपर की जिसके प्र० २४॥≈) लेखै वाद हमारी आढ़त के प्र०≈) लेखै जाते वाकी तुम्हारे जमा किये।

१।)* श्री हुण्डावण खाते जमा

१२४६।)

---

* व्यापारी लोग हुण्डी का व्यापार भुगताने के एवज में ≈) सैकड़ा आढ़त लेते हैं। यह आढ़त पृथक नहीं लगाकर हुण्डी के भाव से ही ≈) घटा देते हैं और उसको आढ़त खाते जमा न कर हुण्डावण खाते जमा करते हैं। हुण्डी के व्यापार में मिलने वाली आढ़त का खास शब्द हुंडावण है।

'तुम्हारेघरू' हुण्डी ३

सं०

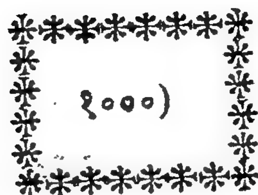
निशानी

रु०

हुण्डी लेनी भेजी ममाई से भाई गणेशदास ठाकुरदास
भाई गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलाम वाला जोग हमारे घरू

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री रतलाम शुभस्थाने भाई मगनीरामजी यभूतसिंह जोग श्री ममाई से गणेशलाल सौभागमल को जुहार बच्चना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे प्र० पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास ठाकुरदास पास मिती आषाढ़ सुद ८ से दिन ६१ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन के देना संवत् १९७४ आषाढ़ सुद ८ आठम।



नेमे नेमेरुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१।। भाई श्री मगनीरामजी बभूतसिंह उ
श्री रतलाम

(३) यह हुण्डी बम्बई से भाई गणेशदास ठाकुरदास ने भाई गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलाम वाले को अपने घर लेनी भेजी है। अस्तु ; वह ऊपर वाले धनी के नाँवें मांड़ कर सिकरी मिती की बम्बई वाले की जमा कर लेता है।

१०००) भाई मगनीरामजी बभूतसिंहजी के लेखे मि० भादवा वद १४ हुंडी १ तुम्हारे ऊपर की लिखी मुम्बई से गणेशलाल सौभागमल की राख्या गणेशदास ठाकुरदास पास मिती आषाढ़ सुद ८ थी दिन ५१ पीछे की उसके नाँवें लिखे।

१०००) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाला के जमा मिती भादवा वद १४ हुण्डी १ तुम्हारी लेनी आई रतलाम की उसके जमा किये।

१०००)

'तुम्हारे घरू' हुण्डी ४

सं०

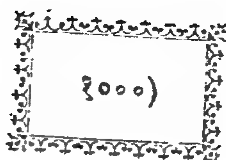
निशानी

द०

हुण्डी लेनी भेजी हंसराज गम्भीरचन्द भाई गणेशदास शिव प्रसाद श्री रतलाम वाला जोग भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाले खाते—

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री रतलाम शुभस्थाने भाई धनरूपमल राजमल जोग श्री अजमेर से लिखी धनरूपमल बागमल की जुहार वञ्चना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) की अखरे रु० एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ राखे भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाला पास मारफत भाई हंसराज गम्भीरचन्दजी की मिती सावण सुदी १५ थीं दिन ३१ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन के देना सं० १९७४ सावण सुद १५ पूनम।



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री धनरूपमलजी राजमल योग्य
श्री रतलाम

(४) हुण्डी नं० ४ भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाले ने अजमेर से भाई हंसराज गम्भीरदास द्वारा अपने खाते लिखवा-कर (अथवा ख़रीद्वा कर) रतलामवाले गणेशदास शिवप्रसाद को भिजवाई है।

१०००) भाई धनरूपलाल राजमल के लेखे मि० भादवा दूजा सुद ६ हुंडी १ तुम्हारे ऊपर की लिखी अजमेर से धनरूपमल वागमल की राख्या भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाले पास मारफत हंसराज गम्भीरचन्द की मिती सावन सुद १५ थी दिन २१ पीछे की जिसके तुम्हारे नाँवें लिखे।

१०००) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाले का ज़मा मि० भादवा दूजा सुद ६ हुण्डी १ धनरूपमल राजमल ऊपर की तुम्हारे खाते अजमेर से भाई हंसराज गम्भीरचन्द लेनी भेजी उसके तुम्हारा जमा किया।

'तुम्हारे घरू' हुण्डी ५

सं०

निशानी

द०

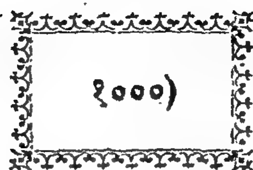
हुण्डी वेची सिवईराम हिम्मतराम भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाला जोग मारफत हंसराज मेघराज की

हुण्डी भेजी इन्दौर से हंसराज मेघराज ने भाई गणेशदास शिवप्रसाद जोग भाई गणेशदास ठाकुरदास ममाई वाला खाते

हुण्डी वेची गणेशदास शिवप्रशाद भाई शिवलाल मोतीलाल जोग

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री ममाई बंदर शुभस्थाने भाई सूरतराम रायमाण जोग श्री सवाई जयपुर से लिखी लछमनदास सेवादास का जयगोपाल बंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १,०००) का अखरे एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोहके दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई सिवईराम हिम्मतराम पास मि० भादवा वद १ थी दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना सं० १६७९ मि० भादवा वद १ एकम्।



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।६॥ भाई सूरतराम रायभाण जोग
श्री ममाई बन्दर

(५) हुण्डी नं० ५ गणेशदास ठाकुरदास मुम्बई वाले ने इन्दौर में भाई हंसराज मेघराज मारफत ख़रीदवाई है और वह रतलाम भाई गणेशदास शिवप्रसाद की भिजवाई है। उसकी चिट्ठी से गणेशदास शिवप्रसाद ने इस हुण्डी को प्र० २६॥-) लेखै सह व्याज भाई शिवलाल मोतीलाल को वेची है। अस्तु, वह अपनी आढ़त काट कर रक़म नीचे मूजिब जमा करता है :—

१२६५॥=) भाई शिवलाल मोतीलाल के लेखे मि० भादवा सुदी ६ हुण्डी १ तुमको वेची मुम्बई की भाई सूरतराम रायभाण ऊपर की लिखी जैपुर से भाई लछमनदास सेवादासकी राख्या सिवईराम हिम्मतराम पास मि० भादवा वद १ थी दिन ५१ पीछे की प्र० २६॥-) लेखै मितियों का व्याज भाव में लिया।

१२६४।=) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाला के जमा मि० भादवा सुद ६ हुंडी १ तुम्हारे खाते मुम्बई की इन्दौर से भाई हंसराज मेघराज वटानी भेजी उसके गई मितियों सहित वटाई प्र० २६।=) लेखै

१।) श्री हुण्डावण खाते जमा

१२६५॥=)

'तुम्हारे घरू' हुण्डी ६

सं०

निशानी

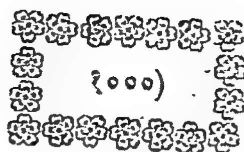
द०

हुण्डी वटावणी भेजी इन्दौरसे हंसराज मेघराज भाइ गणेशदास शिवप्रसाद श्री रतलामवाला जोग

हुण्डी लेनी भेजी रतलामसे गणेशदास शिवप्रसाद भाई खेतसीदास गोविन्दराम श्री मन्दसोरवाला जोग हमारे घरू

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्धश्री मन्दसोर शुभस्थाने भाई गणेशदास पूनमचन्द जोग श्रीइन्दौरसे भाई गंभीरचन्द लखमीचन्द की जुहार वंचना अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार नेमे रुपया पाँच सोहके दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई हंसराज मेघराज पास मि० भादवा वद १ थी दिन ५१ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना मि० भादवा वद १ सं० १९७४



नेमे नेमे रुपया अढ़ाइ सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई गणेशदास पूनमचन्दजोग
श्री मन्दसोर

(६) नं० ६ हुंडी इन्दौर से भाई हंसराज मेघराजने लिखवा कर रतलाम वटाने के लिये भाई गणेशदास शिवप्रसाद को भेजी है। गणेशदास शिवप्रसाद इसे बाज़ारके भाव मुताबिक़ अपने घरू ख़रीद कर अपने मन्दसोर के आढ़तिये को अपने खाते लेनी भेज देता है। इस दुतरफ़ी लेन-देन का जमा-खर्च उसकी वही में इस प्रकार निकलता हैं :—

१०००) श्री मन्दसोर खाते भाई खेतसीदास गोविन्द राम के लेखे मि० भादवा सुद १ हुंडी श्री मन्दसोरकी गणेश दास पूनम चन्द ऊपर की तुमको हमारे घरू लेनी भेजी जिसके नाँवें लिखे।

९९६।) भाई हंसराज मेघराज श्री इन्दौर वालेके जमा मि० भादवा सुद १ हुंडी १ मन्दसोरकी तुम्हारी वटानी आई भाई गणेशदास पूनमचन्द के ऊपर की लिखी इन्दौर से गंभीरचन्द लखमीचन्द की राख्या तुम्हारा मि० भादवा वद १ थी दिन ५१ पीछे की गई मिती की वटाई प्र० ९९॥≈) लेखे सो तुम्हारे जमा की।

३॥) श्री हुंडावन खाते जमा।

१०००)

"हमारे घरू हुण्डी" ७

सं०

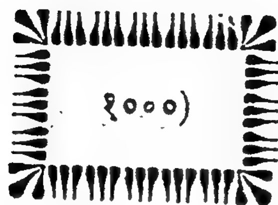
नि०

ह०

हुंडी भेजी रतलाम से गणेशदास शिवप्रसाद भाई
गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाला जोग तुम्हारे घरू

।१॥ श्री परमेश्वर जी ।

।१॥ सिद्ध श्री मुंबई शुभस्थाने भाई गणेशलाल सौभागमल योग्य श्रीरतलाम से लिखी मगनीराम वभूत सिंह का जुहार वञ्चना। अपरञ्च हुंडी १ रु० १०००) की अक्षरे रुपया एक हज़ार नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास ठाकुर दास श्री मुम्बई वाले पास मारफत गणेशदास शिवप्रसाद की मिति भादवा सुदी ७ से दिन ४५ पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना। सं० १८७४ मि० भादवा सुदी ७ सातम।



नेमे नेमे रुपये अढ़ाई सोहके चौगुने पूरे एक हज़ार कर देना

।६॥ भाई श्री गणेशलाल सौभागमल

श्री मुम्बई

(७) न० ७-की हुंडी रतलाम से गणेशदास शिवप्रसादने भाई गणेशदास ठाकुरदास मुम्बईवाले के खाते खरीदकर मुम्बईकी भेजी है। भाव खरीदने का प्र० २५॥) का है तो इसका जमा-खर्च इस प्रकार निकलता है:—

१२५६।) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाले के लेखे मि० भादवा सुद ७ हुंडी १ मुम्बई की तुमको भेजी तुम्हारे घरूँ भाई गणेशलाल सौभागमल ऊपर की लिखी यहाँसे मगनीराम बभूतसिंह ऊपरकी राख्या तुम्हारी मारफत हमारी मि० भादवा सुद ७ थी दिन ४५ पीछेकी प्र० २५॥≈) लेखै सो तुम्हारे नाँवें लिखा

१२५५) भाई मगनीराम बभूतसिंह का जमा मि० भादवा सुद ७ हुंडी १ तुम्हारी ली मुम्बई की प्र० २५॥)

१।) श्री हुंडावण खाते जमा

१२५६।)

'तुम्हारे घरू' हुण्डी ८

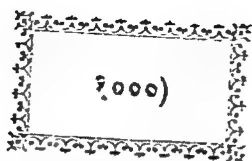
सं०

निशानी:—भाई गणेशदास शिवप्रसाद रतलाम वाले के खाते नाँवें लिखना

रु०

।१॥ श्री परमेश्वर जी ।

।१॥ सिद्ध श्री इन्दौर शुभस्थाने भाई हंसराज मेघराज जोग श्री ममाई वन्दर से लिखी गणेशदास ठाकुरदास की जुहार वंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १,०००) अखरे रुपया एक हज़ार नेमे रुपया पाँच सोहके दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशलाल सौभागमल पास मिती भादवा सुद ७ से दिन ४५ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना मिती भादवा सुद ७ सं० १९७४



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई हंसराज मेघराज जोग
श्री इन्दौर

(८) हुण्डी नं० ८ भाई गणेशदास ठाकुरदास ने अपने खाते इन्दौर की भाई हंसराज मेघराज ऊपर भाई गणेशदास शिवप्रसाद रतलाम वाले की निशानी की हैं। उसने गणेशदास शिवप्रसाद को यह हुण्डी सिकरा देने की अपने इन्दौर के आढ़तिये भाई हंस-राज मेघराज को सूचना दे देने की चिट्ठी भी उसी रोज़ दे दी है। इस तरह की हुंडियों को अङ्गरेज़ीमें ऐकमोडेशन बिल कहते हैं। इनका जमा-ख़र्च नीचे लिखी भाँति किया जाता है :—

१०००) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाईवाला के लेखै मि० भादवा सुद ७ हुण्डी १ इन्दौर की तुमने हमारी निशानीकी की, भाई हंसराज मेघराज ऊपर लिखी मुम्बई से तुम्हारी राख्या गणेशलाल सौभागमल पास मि० भादवा सुद ७ थी दिन ४५ पीछे की प्र० २६॥) लेखै सो नाँवें लिखो।

१०००) श्री इन्दौर खाते भाई हंसराज मेघराज का जमा हमारे घरू मि० कातिक वद १२ हुण्डी १ तुम्हारे ऊपर हमारे खाते की ममाई से भाई गणेशदास ठाकुरदास ने की सो जमाकी

मिश्र हुण्डी।

१०६। गत पृष्ठों में उन्हीं हुंडियों का जमा-ख़र्च बताया गया है कि, जो 'हमारे घरू' अथवा 'तुम्हारे घरू' ही हों। परन्तु व्यापारी ऐसी हुण्डी भी लिखते हैं कि, जो कुछ अंश में हमारे घरू और कुछ अंश में तुम्हारे घरू हैं। ऐसी हुण्डियों को हम मिश्र हुण्डी भी कहें तो कुछ अत्युक्ति न होगी। उदाहरण स्वरूप हमने भाई गणेश दास शिवप्रसाद रतलाम वाले की भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री ममाई वाले ऊपर की हुण्डी ला है। इस हुण्डी में लेखक ने हुण्डी सोंपने के पहले निशानी के स्थान पर 'हुण्डी रु० ५००) की हमारे घरु नाँवें माँडजो" और हुण्डी रु० ५००) की तुम्हारे घरु नाँवें माँड़जो" ऐसा लिखकर ऊपर वाले धनी को यह सूचना दे दी है कि, इस हुण्डी की सारी रक़म का मैं जिम्मेवार नहीं हूं। जो इस प्रकार की मिश्र हुण्डियाँ लिखी जाती हैं, तो उनका जमा-ख़र्च भी मिश्र ही होता है। जैसा कि नीचे दिया हुआ है :—

सं०

निशानी

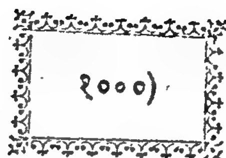
। हुण्डी रु० ५००) की तुम्हारे घरू नाँवे माँडना

॥ हुण्डी रु० ५००) की हमारे घरू नाँवे माँडना

द०

।१॥ श्री परमेश्वरजी

।१॥ सिद्ध श्री ममाई वन्दर शुभस्थाने भाई गणेशदास ठाकुर दास जोग श्री रतलाम से लिखी गणेशदास शिवप्रसाद की जैगोपाल वंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोह का दूना पूरा यहाँ रक्खे भाई गणेशदास किशनजी पास मि० भादवा सुदी ७ श्री दिन ४५ पीछे साह जोग रुपया हुंडी चलन का देना सं० १९७८ भादवा सुदी ७ सातम्।



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई गणेशदास ठाकुरदास जोग
श्री बम्बई

सं०

निशानी

। सिरे निशानी रु० ५००) हमारे घरू नाँवें माँडना

। सिरे निशानी रु० ५००) तुम्हारे घरू नाँवें माँडना

द०

।१।। श्रीपरमेश्वरजी

।१।। सिद्धश्री ममाई बन्दर शुभस्थाने भाई गणेशदास ठाकुरदास जोग श्रीरतलामसे लिखी गणेशदास शिवप्रसादका जैगोपाल बंचना। अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ार की नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई मगनीराम बभूतसिंह पास मिती सावण सुद १ थी दिन ८५ पीछे साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना। सं० १९७८ सावण सुद १ एकम् ।



नेमे-नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई श्री गणेशदास ठाकुरदास जोग
श्री बम्बई

१२५१।) भाई गणेशदास किसनाजी के लेखै मिती भादवा सुद ७ हुण्डी १ मुम्बई की तुम को दीनी भाई गणेशदास ठाकुरदास ऊपर की लिखी यहाँ से हमारी राख्या तुम्हारा मि: भादवा सुद ७ थी दिन ४५ पीछे की प्र० २५≈) लेखै सो नाँवें लिखी।

५२५) भाई गणेशदास ठाकुरदास श्री मुम्बई वाले का जमा मि: भादवा सुद ७ हुण्डी १ रु० १०००) की तुम्हारे ऊपर की उसमें रु० ५००) तुम्हारे घरू नाँवें माँडे प्र० २५) लेखे

५००) श्री मुम्बई खाते भाई गणेशदास ठाकुरदासके जमा मि: भादवा सुद ७ हुण्डी १ तुम्हारे ऊपर रु० १०००) की की; उसमें रु० ५००) की हमारे घरू की जिसके नाँवें लिखे

२२६।) श्री हुण्डावण खाते जमा

१२५१।)

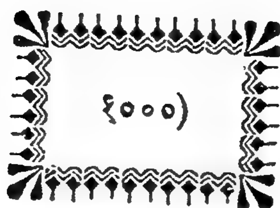
सं०

निशानी सिरे मिती भादवा सुद ८ का नाँवें माँडना

द०

।१।। श्री परमेश्वरजी

।१।। सिद्धश्री ममाई बन्दर शुभस्थाने भाई गणेशदास ठाकुरदास जोग श्रीरतलामसे लिखी गणेशदास शिवप्रसाद की जैगोपाल वंचना अपरञ्च हुण्डी १ रु० १०००) अखरे रुपया एक हज़ारकी नेमे रुपया पाँच सोह के दूने पूरे यहाँ रक्खे भाई गणेशदास किसनाजी पास मि० भादवा सुद १ पूग्याँ तुरन्त साह जोग रुपया हुण्डी चलन का देना। सं० १९७४ मि० भादवा सुदी १ एकम्



नेमे नेमे रुपया अढ़ाई सोह का चौगुणा पूरा
एक हज़ार कर देना

।१॥ भाई गणेशदास ठाकुरदास जोग
श्री बम्बई

'सिरे मिती की हुंडी।

१०७। मिश्र हुण्डियों के अतिरिक्त व्यापार में सिरे निशानी की हुण्डियाँ लिखी जाती हैं। उनका जमा-ख़र्च भी ख़ास तौर पर किया जाता है और उसे सीगेवाला जमा-ख़र्च कहते हैं। इस हुण्डी का नमूना हमने दे दिया है। बहुत कम प्रचलित होने के कारण इसका जमा-ख़र्च इस पुस्तक में नहीं दिया है।

दर्शनी हुण्डियाँ सिकारने पर पूगती मिती से दूसरी मिती की लिखनेवाले आढ़तिये के नाँवें माँड़ी जाती हैं। जो हुण्डियाँ घूमती-घूमती आती हैं, उनके सिकरने तक उनकी मुद्दत बीते बहुत दिन हो चुकते हैं। अस्तु, व्यापारी को इतनी मितियों का व्याज मुफ्त में मिल जाता है। इस लाभ को बचाने की ग़रज़ से हुण्डी-लेखक अन्दाज़ा लगाकर उस हुण्डी में सिरे मिती लिख देता है। ऐसा लिख देने से हुण्डी सिकारने वाला हुण्डी की रक़म लेखक के सिरे मिति की ही नाँवें माँड सकता है, न कि पूगती मिती की।



नवाँ अध्याय।



विदेशी हुण्डी।



विदेशी हुण्डी के सेट।



१०८। वृटिश भारत की सीमाओं से परे वाले देशों पर लिखी हुण्डियाँ विदेशी हैं। इनका मज़मून अंगरेज़ी-देशी हुण्डियोंसे कुछ-कुछ भिन्न होता है। हमारी देशी हुण्डियों की तरह अँगरेज़ी हुंडी की पैठ, परपैठ, अथवा मेजरनामा नहीं होता; केवल वैदेशिक हुंडियाँ एक के वजाय दो अथवा तीन एक साथ लिखी जाती हैं। इन्हें अगरेज़ी में 'सेट ऑफ विल्स' कहते हैं। इस प्रकार एक साथ दो अथवा तीन हुण्डी लिखने का तात्पर्य यह है कि, इनमें से दो हुण्डियाँ पृथक्-पृथक् डाक में भेज दी जाय, यदि एक किसी प्रकार से न पहुँच सके, गुम हो जाय अथवा देर से पहुँचे तो दूसरी के समय पर पहुँच जाने से रुपया मिलने में देर नहीं होती। तीसरी हुण्डी लिखने वाले के पास रक्खी रहती है। जब पहले

विदेशी हुण्डी (दूसरी)

No. 6. Exchange for £1000=15=10d. *Bombay, 20th September, 1921.*

Stamp
Rs. 13·8·0

Ninety days after sight, pay this Second of Exchange (First & Third of the same tenor and date not paid) to the order of the Eastern Bank Limited the sum of Pounds One thousand Shillings fifteen and Pence ten only, value received, and charge the same to our account.

To

Messrs Thornett & Fehr.
No. 3, Axela Chapel
London E. C. 2.

Banthiya & Co

Accepted 4th October 1921
Payable at the
Lloyds Bank Ltd.
Thornett & Fehr

बिदेशी हूण्डी (तीसरी)

No, 6. Exchange for £ 1000=15=10d. *Bombay. 20th September, 1921.*

Stamp
Rs. 13-8-0

Ninety days after sight, pay this Third of Exchange (First and Second of the Same tenor and date not paid) to the order of the East rn Bank Limited, the sum of Pounds One thousand Shillings fifteen and Pence ten only, value received and charge the same to our account.

To

Messrs Thornett & Fehr.
No. 3, Axela Chapel.
London E. C. 2.

Banthiya & Co

की पृथक्-पृथक् डाक में भेजी हुई दोनों हुण्डियाँ भी नहीं पहुँचनीं तो फिर इत्तिला मिलने पर यह तीसरी हुण्डी भेज दी जाती है। इन तीनों के मज़मून में भी सिर्फ़ थोड़ा सा अन्तर होता है। पहिली हुण्डी का नमूना पृष्ठ २३७ में दिया गया है। दूसरी और तीसरी का नमूना इस प्रकार है; जो सामने के पृष्ठ ३३१ क और ख में है।

वैदेशिक हुण्डियों के इन सेटों पर प्रत्येक पर टिकट लगाना होता है। इन टिकटों की दर परिशिष्ट में दे दी गई है। जब वैदेशिक हुण्डी एक से अधिक संख्या में लिखी जाती है, तो प्रत्येक हुण्डी पर टिकट लगाने होते हैं। विलायत आदि देशों में इन हुण्डियों पर छपे हुए (Impressed) टिकट लगाने होते है। यहाँ पर भी स्टाम्प आईन का यही नियम है। परन्तु फिर भी छपे हुए टिकट के स्थान में चिपकानेके टिकट भी उपयोग में आते हैं। इन विदेशी हुण्डियों पर दुतरफ़ा टिकट लगाने पड़ते है। पहले तो हुण्डी जहाँ लिखी जाय, वहाँ के लिखने वाला लगाता है। दूसरे जहाँ हुण्डी सिकरे, वहाँ के सिकारने वाला लगाता है। चिपकाये हुए टिकट को रद्द करने की जिम्मेदारी आईन ने टिकट चिपकाने वाले पर रक्खी है। जब तक ये टिकट रद्द नहीं करा

दिये जाते, आईन की रूह से तब तक ऐसी हुण्डियाँ बिना टिकट की हुण्डियाँ ही मानी जाती हैं।

अँगरेज़ी देशी व विदेशी हुण्डियों के रिवाज।

१०६। जो हुण्डियाँ दर्शनी होती हैं उनका रुपया तो दिखाते ही मिल जाता है; परन्तु मुद्दती हुण्डी में यह बात नहीं है। जैसा कि पहले अध्याय साँतवें के पैरे ८ (५) में लिखा जा चुका है, इन हुंडियों की मुद्दत कभी लिखी मिती से और कभी दिखाने की मिती से शुरू होती है। लेखक और स्थानीय रिवाज के अनुसार यह मुद्दत डाली जाती है। मुद्दती अथवा दर्शनी हुण्डी के पाते ही टिकट लगाकर सिकारने वाला ऊपरवाले धनी को हुण्डी दिखलाने भेजता है। इसको अगरेज़ी में प्रज़ेन्टेशन (Presentation) कहते हैं। अधिकांश विदेशी हुण्डियाँ मुद्दत दिखाने की मिती से होती हैं। जब ऊपरवाले को वह हुण्डी दिखायी जाती है, तो वह उसे यदि सिकारना हो तो स्वीकार कर लेता है। यह स्वीकार करना साधारण और विशेष दो प्रकार का होता है। इसे अँगरेज़ी में स्वीकृत यानी एक्सेप्टेन्स (Acceptance) कहते हैं। स्वीकृत में तारीख़ और सही दोनों का होना ज़रूरी है। इसी स्वीकृति की तारीख़ से हुण्डी की मुद्दत प्रारम्भ होती है। स्वीकृति का ढंग और भाषा, दोनों विदेशी हुण्डी के नमूने में बता दिये गये

हैं। यह एक विशेष स्वीकृति है। साधारण स्वीकृति में केवल स्वीकृति का शब्द, तारीख़ और ऊपर वाले धनीकी ही सही होनी चाहिये। इससे विशेष लिखावट होने से वह विशेष स्वीकृति हो जाती है। विशेष स्वीकृति कई प्रकार की है। जैसे, रक़म-सम्बन्धी, समय-सम्बन्धी, स्थान-सम्बन्धी, भुगतान-सम्बन्धी इत्यादि। जब सिकरानेवाला स्वीकार करते समय हुण्डी की रक़म से कमती रुपये मुद्दत पकने पर भरने का स्वीकार करता हैं, तो वह रक़म-सम्बन्धी विशेष स्वीकृति मानी जाती है। इसी प्रकार अन्य भेद हैं। साधारणतया स्वीकृति में किसी प्रकार की शर्त न होनी चाहिए। शर्तबन्ध या विशेष स्वीकृति का मानना अथवा न मानना हुंडी लेखक अथवा ग्राहक के अधिकार की बात है। यदि यह मंजूर न हो तो वह इस हुंडी को एक प्रकार से बिना सिकरी हुंडी मान सकता हैं। स्वीकृति के उपर्युक्त दो भेदों के अतिरिक्त एक और भेद हैं। इसे अङ्गरेज़ी में 'एक्सेप्टेन्स फार आनर' (Acceptance for honour) यानी 'साख रक्षा के लिए स्वीकृति है।' यह स्वीकृति बतौर हमारी 'जिकरी चिट्ठी' के हैं। और जो शख्स हुंडी पर ऐसा इशारा कर देते हैं, हुंडी ऊपर वाले के अस्वीकार कर देने पर जिकरी वाले को स्वीकृति के वास्ते दिखाई जाती है। उसके भी इनकार कर जाने पर वह अस्वीकृति एवम् पीछी लौटाई हुई मानी जाती है।

हुण्डी सम्बन्धी अँगरेज़ी पारिभाषिक शब्द।

११०। हुंडी के बेचने अथवा वटाने अथवा आढ़तियेको लेनी

भेजने को अँगरेज़ी में निगोशियेटिंग कहते हैं। जो हुंडी स्वीकार न हो अथवा स्वीकार होने पर मुद्दत पर न सिकरे, तो उसे अँगरेज़ी में 'डिसऑनरिङ्ग' कहते हैं। हुण्डी नहीं स्वीकार की गई अथवा नहीं सिकारी गई, इसका प्रमाण पत्र देने वाला अधिकारी 'नाट रिपब्लिक' कहलाता है। प्रमाण पत्र देने के पहले उसे ऊपर वाले धनी को स्वयमेव जाकर अथवा अपवे आदमी को भेज कर दिखाना अथवा भुगतान माँगना पड़ता है; उसके इनकार कर देने पर उसका सवव पूछना होता है। सवव वताना अथवा न वताना यह ऊपर वाले धनी के अधिकार की वात है। हुंडी के नोटिङ्ग का चार्ज सरकार से निश्चित है। नहीं सिकरी हुई हुंडी के एवज़ में जो नई हुंडी मिले सो वह अङ्गरेज़ी में 'रिन्यूड' हुंडी कहलाती है, इन सवका जमा-खर्च आठवें अध्याय में वताये हुए जमा-खर्च से भिन्न नहीं है।



दसवाँ अध्याय।



हिसाब तैयार करना।

१११। व्यापारी को आढ़त आदि के अलावा प्रति वर्ष व्याज की भी ख़ासी आमदनी होती है। सराफों को तो अधिकांश व्याज ही की आमदनी होती है। यह व्याज उन आढ़तियों से वसूल किया जाता है कि, जो उनकी आढ़त में व्यापार कर उनकी पूंजी भी उपयोग में लाते हैं। व्यापारी की वहियों में प्रत्येक आढ़तिये का चालू खाता होता है। उससे जो माल भेजा जाता है वह इसी चालू खाते में नाँवें माँडा जाता है और उसका भेजा हुआ रुपया सब इसी खाते में मितिवार जमा होता जाता है। अस्तु, जितनी अवधि तक एक रक़म की बाक़ी लेनी अथवा देनी रहे, उसका उतने ही दिन का व्याज जोड़ा जाता है। इस प्रकार के व्याजको व्यापारी लोग 'कटमिति' का व्याज कहते हैं। प्रत्येक हिसाब का व्याज जोड़ने के लिये व्यापारियों के यहाँ एक पृथक् वही रहती है। इसे कहीं 'लेखापाड़' कहीं 'हिसाब-वही' और कहीं 'व्याज-वही' कहते हैं। इसमें सारे चालू खाते के व्याज लगा

कर 'अङ्क' जोड़ लिये जाते हैं। इन अङ्कों का फिर नक़ल-वही में इस वही से जमा-ख़र्च कर लिया जाता है। वाक़ी लेने निकलते अंकों का व्याज धनीके नाँवें माँड़ कर व्याज खाते जमा और वाक़ी निकलते अङ्कों का व्याज धनी का जमा कर व्याज खाते नाँवें माँड़ा जाता है। यह कटमिति का व्याज मारवाड़ी व हिन्दुस्थान के व्यापारियों में मिती से और गुजरात व महाराष्ट्र के लोगों में वारों से फैलाया जाता है। इन दोनों रीतियों से फैलाये गये व्याज में वहुत थोड़ा अन्तर रहता है। अँगरेज़ी में व्याज तारीख़ों से फैलाते हैं।

व्याज फैलाना।



११२। व्याज फैलाने के लिये पहले रक़म के अंक निकाले जाते हैं। रक़म और अवधि के गुणन फल को हमारे यहाँ अंक (आँक) और पाश्चात्य देशों में इण्टरेस्टप्रोडक्ट (Interest Product) कहते हैं। यद्यपि ज्योतिष के गणित से प्रत्येक चान्द्रवर्ष लगभग ३५६ दिनका और महीना २८ दिनका होता है परन्तु, हमारे व्यापारी १ वर्ष ३६० दिनका और एक महीना ३० दिनका गिनते हैं। अँगरेज़ी में साल के ३६५ दिन माने जाते हैं। परन्तु महीने के दिनों का एक क्रम नहीं है। फरवरी का महीना साधारणतः २८ दिनका और वह वर्ष यदि ४ से विभाज्य

हो तो २६ दिन का होता है। शेष ग्यारह महीनों में जनवरी, मार्च, मई, जुलाई, अगस्त, अक्टूबर, दिसम्बर ३१ दिनके और बाक़ी ३० दिन के होते हैं। हमारे यहाँ ये व्याज के अङ्क दो प्रकार के माने गये हैं। जिनमें अवधि महीना होती है वे तो पक्के और जिनमें अवधि दिन, वे कच्चे आँक कहे जाते हैं। कच्चे आँकों में ३० का भाग देने से ये पक्के बन जाते हैं। परन्तु अँगरेज़ी में कच्चे-पक्के का कोई भेद नहीं है। सब अङ्क दिनों की ही अवधि से फैलाये जाते हैं। इस प्रकार हरेक रकम के आँक निकाल लेने पर जमा और नावें के आँकों की जोड़ लगाई जाती है। जिधर आँक ज़ियादा हों, उतनाही धनी से व्याज लिया अथवा दे दिया जाता है। १०० पक्के आँक का व्याज हमारी व्याज की दर है। आज तक यह दर सर्वत्र साहूकारों में ।≤॥) की रही है। परन्तु पिछले चन्द वर्षों से आर्थिक संकीर्णता के कारण यह दर ॥≤) और कहीं-कहीं ॥) तक बढ़ा दी गई है। अस्तु; व्याज की दर के अनुसार प्रति १०० पक्के आँक के हिसाब से अङ्कों का व्याज फैला लिया जाता है। इन अङ्कों को कहीं-कहीं 'दुकड़ा' भी कहते हैं।

कट मिती का व्याज।

११२। यह व्याज वारों एवम् मिती—इस प्रकार दो तरह से फैलाया जाता है, यह तो पहले ही कहा जा चुका है। परन्तु मिती

का कटमिती व्याज फैलाने की भी दो शैलियाँ हैं। इनमें पहिली 'चक़ायों' पर व्याज फैलाने की शैली है। यही साधारणतः उपयोग में आती है। परन्तु कभी-कभी चक़ायों पर व्याज न फैला कर जमा और नांवे की रक़म का पृथक्-पृथक् उनकी अवधि से अन्तिम अवधि तक व्याज फैला लिया जाता है। इसमें पहले जमा हुई रक़म में से पीछे नाँवें मँडी रक़म का व्याज न तो उसमें से उसी समय काट लिया जाता है और न इससे विपरीत अवस्था में जोड़ा जाता है। यही दोनों निम्न उदाहरणोंसे स्पष्ट किया गया है:—

उदाहरण २४। नीचे लिखे हिसाब का ब्याज 'बक़ाया' की रीति से फैलाइए। और ब्याज का जमा-ख़र्च कर हिसाब नक्को कर दीजिए।

।१॥ हिसाब १ भाई गणेशदास किसनाजी को

७००) बाक़ी देना मि० कातिक सुदी १	५००) मि० पौष सुद १२
२०००) मि० चैत वद १	११००) मि० फागुन सुद २
२१५१) मि० जेठ वद ८	१५००) मि० वैशाख वद ६
१०००) मि० असाढ़ वद ७	१७००) मि० जेठ सुद ५
५८५१)	१८५१) मि० सावन वद १०
८३।) ब्याज का आँक १७५२ प्र०।३॥।)	६६५१)
५८५१।३।)	७६१॥)॥ बाक़ो लेना मि० कातिक सुद १ ताईं श्री ममाई चलण का
७६१॥)॥ बाक़ो लेना	
६६५१)	

।१॥ ब्याज फैलाया भाई गणेशदास बिसना जी वा।

६६० रु० ७००) मि० कातिक सुद १
१९८३। रु० ५००) मास २, ११ दिन
८ ६॥। रु० २००) मास ४, १ दिन
१२८३। रु० २००८) मि० चेत वद १
० रु० ६००)——
१२८३ रु० १९००) मास १, ५ दिन
७८५॥ रु० २१५१) मि० जेठ वद ८
० रु० ४००)——
६८० रु० १७०८) मा० १।, ३ दिन कम
१८५॥ रु० ५१) मा० २, २ दिन
११०० रु० १०००) मि० आषाढ़ वद ७ मा० १,३ दिन
० रु० ८००) बाकी लेना मि: कातिक सुद १ तक
० रु० ८००)

५१५८॥

रु० ५००) मि० पौष सुद १२
४२० रु० ११००) मि० फागुन सुद २
० रु० २००)——
४२० रु० ६००) मास ॥, १ दिन कम
४२६॥। रु० १५००) मि० वैशाख वद ६
० रु० ११००)——
४२१॥। रु० ४००) मास १, २ दिन
० रु० १४७०० मि० जेठ सुद ५
२५६० रु० १८५१ मि० सावन वद १०
० रु० ५१)——
० रु० १०००)——
२५६० रु० ८००) मा० ३, ६ दिन

३४०६॥

११४। ब्याज फैलाने के लिये पहले ८ सला कागज़ तैयार कर लेना चाहिये। तत्पश्चात् आरम्भ में 'ब्याज फैलावा भाई गणेशदास किशना जी का' शीर्षक देकर संगों के नीचे 'सिरा' ब्याज के आँकों के लिये खाली छोड़ जमा की प्रथम रक़म जमाकी ओर और नांवें की प्रथम रक़न नांवें की ओर मिती सहित सीधी सतर में लिखनी चाहिये। (देखो आदर्श उदाहरण पृ० ३३६) तत्पश्चात् जो रक़म ज़ियादा हो, उसही के पेटे में दूसरी रक़म का बच्चा तोड़ देना चाहिये।

इस प्रकार बच्चा तोड़ देने से बड़ी सिरे की रक़म कैसे टुकड़े में और कब पीछी जोड़ गई है अथवा आई है, इसकी ब्याज फैलाने वाले को सूचना हो जाती है। वह ब्याज की अवधि गिनते समय सिरे की रक़म की अवधि न गिन कर इन पेटे के बच्चों की अवधि गिनता है। जैसे आदर्श उदाहरण जमाकी पहली रक़म रु० ७००) है और नांवें की केवल ५००)। अस्तु, रु० ५००) का एक बच्चा रु० ७००) के पेटे में तोड़ दिया गया है। इन रु० ५००) की अवधि कातिक सुद १ से पौष सुद १२ तक है।

११५। जिस ओर की रक़म का बच्चा तोड़ा गया है, उसी ओर फिर नयी रक़म उतारी जाती है। इस रक़म से फिर पहले के बच्चेके नीचे एक और बच्चा तोड़कर रक्खा जाता है कि ताकि दोनों बच्चों की जोड़ सिरे की रक़म के बराबर हो जायँ। यदि यह नई रक़म काफी बड़ी न हो और पूरी ही बच्चे के रूप में पेटे में समा जाय, तो फिर तीसरी रक़म उतार कर उसमें से दूसरे

बच्चे के नीचे बच्चा तोड़ कर रक्खा जाता है। जब तक इन बच्चोंका जोड़ सिरे के रक़म के बराबर न हो, दूसरी ओर रक़म के पीछे रक़म सिलसिलेवार उतारी जाती है। यहाँ तक कि अन्तिम बच्चे के लिए जब इस ओर की उतारी हुई रक़म का भी बच्चा करना आवश्यक हो जाता है, तो फिर उस ओर जिधर अभी तक बच्चे तोड़े गये हैं, नई रक़म उतारी जाती है, और उसमें से बच्चा तोड़ कर दूसरी ओर की रक़म के पेटे की भरती भरी जाती है। जमा का पेटा भर जाने पर नाँवें की, और नाँवें का पेटा भर जाने पर जमा की रक़म अनुक्रम से उतारते जाते हैं। जब किसी एक ओर की रक़म शेष होकर दूसरी ओर की रक़में उतारनी बाक़ी रह जाती हैं, तो उसी ओर यदि जमा की रक़में शेष हो गईं तो नाँवें की ओर बाक़ी लेना और यदि नाँवें की रक़में शेष हो गई हों तो जमा की ओर बाक़ी देना लिखकर पेटे में शेष बची हुई सारी रक़में उतार ली जाती हैं। ब्याज फैलाने में आठ आने से विशेष का रुपया मान लिया जाता है। और आठ आने से कमती रक़म छोड़ दी जाती है। यानी ब्याज फैलाने में केवल रुपयों ही का ब्याज फैलाया जाता है। इस आसन्न क्रिया (Approximation) से लम्बे हिसाबों में कभी-कभी दो-चार रुपयों का फ़र्क़ पड़ जाता है, परन्तु ज़ियादा नहीं। यदि हिसाब की ओर ब्याजकी बाक़ी न मिले तो ब्याजकी फैलावट के बच्चे तोड़ने में भूल है अथवा कोई रक़म ही समूची उतरनी रह गई है। अस्तु, ब्याज फिर फैलाना होता है। यही बात उदाहरण से स्पष्ट होती है। जमा

की यह रक़म रु० ७००) और नाँवें की पहली रक़म रु० ५००) ही है। अस्तु रु० ५००) का रु० ७००) सौ के पेटे में बच्चा तोड़ कर उसी ओर फिर रु० ११००) की रक़म उतारी गई है। इसमें रु० २००) का बच्चा तोड़ कर रु० ७००) का पेटा पूरा कर दिया गया है। इस रु० ११००) की रक़म में से रु० २००) काम आ चुके हैं और अब इसमें से केवल रु० ९००) के व्याजकी अवधि निकालनी शेष है, इसको प्रकट करनेके लिए रु० ११००) के नीचे एक रु० २०००) का बच्चा तोड़ दिया गया है। जमा की ओर रु० ७००) का पेटा पूरा भर जाने से नई रक़म उतार कर उसकी नाँवें की रु० ११००) की रक़म के पेटे भरे गये हैं।

अवधि गिनना।

११६। प्रत्येक रक़म के इस प्रकार विश्लेषण कर जाने पर उनकी अवधि गिनी जाती है। अवधि गिनने में एक दिन आगे अथवा पीछे का छोड़ दिया जाता है। जिन रक़मोंमें पेटा हो उनके केवल पेटे की ही रक़मों की अवधि गिनी जाती है। सिरे की और पेटे की दोनों ही अवधि नहीं गिनी जातीं। अङ्क फैलाने में एक महीना तीस दिन का गिना जाता है। अवधि के अनुसार आँक (पक्के आँक) फैलाकर सिरे भर दिये जाते हैं।

आँक फैलाने के सम्बन्ध में एक गुर है। ३० कच्चे आँकका

एक पक्का आँक होता है और ३० तीन और दस का गुणन-फल है। इसलिये यदि हम किसी भी रक़म में दश का भाग दें तो भागफल उस रक़म के तीन दिवस का पक्के आँक होगा। अस्तु, तीन दिन की अवधि के पक्के आँक रक़म के प्रथमांक को लोप कर देने से प्राप्त हो जाते हैं। इसी को गणित की भाषा में दशमलव विन्दु को एक अंक बाईं ओर कर देना कहते हैं। यदि प्रथमाङ्क और तीन का गुणन फल अथवा पाँच से अधिक हो तो पाँच और १० अथवा दस से अधिक हो तो आधा और बीस अथवा बीस से अधिक तो पौन अंक बढ़ा दिया जाता है। कच्चे आँकों से पक्के आँक बनाने को निम्नलिखित अङ्क बहुत सहायक होते हैं। अस्तु, स्मरण रखना उपयोगी है।

कच्चे आँक	पक्के अङ्क
५०	१॥
६०	२
७५	२॥
९०	३
१००	३।
१५०	५
२००	६॥
३००	१०
४००	१३।

कच्चे आँक	पक्के आँक
५००	१६ँ□
६००	२०
७००	२३।
८००	२६ँ□
९००	३०
१०००	३३।
२०००	६६ँ□
३०००	१००
४०००	१३३।
५०००	१६६ँ□

उदाहरण २५ । भाई पदमसीजी तेजसीजी श्रीजयपुरवाले के नीचे लिखे हिसाब का व्याज फैलाइए ।

। हिसाब १ भाई पदमसीजी तेजसीजी श्री जयपुर वाले का ।

७०००) मि० कातिक सुद १ बाक़ी	५०००) मि० मगसर वद १
५०००) मि० मगसर बद १२	१००००) मि० मगसर सुद १
४०००) मि० माह वद ३	५०००) मि० पौष वद १
८०००) मि० फागुन वद १	२५००) मि० माह सुद १
४५००) मि० चैत सुदी १	१५०००) मि० चैत वद १
५०००) मि० जेठ सुद १	१००००) मि० चैत सुद १
६०००) मि० असाढ़ वद २	२०००) मि० वैशाख सुद २
२०००) मि० सावन सुदी १	१०००) मि० असाढ़ वद ३
३०००) मि० आसोज वद २	१५००) मि० आसौज वद १
२०००) मि० कातिक वद ७	
४६५००)	५२०००)

२४३०॥) बाक़ी लेना मि० कातिक सुद १
सं० १९७८ ताईं

५२४३०॥)

४३०॥) ब्याज का सं० १९३० का कातिक
सुदी १ सुधी आँक ८८९३३। दर ।≡)॥

५२४३०॥)

२९३०॥) बाक़ी लेना मि० कातिक सुद १ सं०
१९७८ ताईं जयपुर चलन का

ब्याज फैलायो भाई पदमसोजी तेजसजी श्री जयपुरवाला को

८८६३३। ब्याज का कातिक सुद १ सं० १६७८ तक आँक—
४४१८६६॥ लेखे पासे की रकमों की आँक

५७५०० रु० ५०००) मगसर वद १ मास ११॥,
११०००० रु० १००००) मगसर सुद १ मास ११,
५२५०० रु० ५०००) पौष वद १ मास १०॥,
२२५०० रु० २५००) माह सुद १ मास ६,
११२५०० रु० १५०००) चेत वद १ मास ७॥,
७०००० रु० १००००) चेत सुद १ मास ७,
११६३३। रु० २०००) वैशाख सुद २ मास ६,१ दिन कम
३४३३। रु० १०००) असाढ़ वद ३ मास ३॥ २ „
१५०० रु० १५००) आसोज सुद १ मास १

४४१८६६॥

३५२६३३।) वाद जमा पासे की रकमों के आँक

८४००० रु० ७०००) कातिक सुद १ मास १२
५५५०० रु० ५०००) मगसर वद १३ मास ११, ३ दिन
३७७३३। रु० ४०००) माह वद ३ मास ६॥ २ दिः कम
६८००० रु० ८०००) फागुन वद १ मास ८॥
३१५०० रु० ४५००) चेत सुद १ मास ७
२५००० रु० ५०००) जेठ सुद १ मास ५
४०२०० रु० ६०००) आषाढ़ वद २ मास ६॥ १ दिः कम

६००० रु० २०००) सावन सुद १ मास ३
४५०० रु० ३०००) आसोज वद २ मास १॥, १ दिःकम
६०० रु० २०००) कातिक वद ७ दिन ६

३५२६६३।

८८६३३। बाकी रहा

व्यापारियों में यह दूसरी फैलावट काम में नहीं आती। व्यापारी लोग प्रथम ही की फैलावट से अपने हिसाबों का व्याज फैलाया करते हैं। इसलिये हमने उस ही का विस्तृत विवेचन किया है और दूसरे का नहीं किया है। परन्तु फिर भी पाठकों को उदाहरण से यह शीघ्र समझ में आजावेगा।



ग्यारहवाँ अध्याय।

तोल व माप।

माप की व्यवस्था।

११७। संसार के अधिकांश सभ्य देशों ने मैत्रिक पद्धतिके तोल व माप स्वीकार कर लिये हैं। केवल यूरोप ही में निम्न-लिखित १६ देशों में यह पद्धति प्रचलित है। संयुक्त साम्राज्य (युनाईटेड किङ्गडम) में सन् १८६७ से युनाईटेड स्टेट्स आफ अमेरिका में सन् १८६६ से और जापान में सन् १८८५ से यह पद्धति प्रचलित करा दी गई है। परन्तु अभी तक इन देशों में यह स्थायी तौर से जम नहीं सकी है।

मैत्रिक पद्धति वाले देश।

आस्ट्रिया-हंगरी	जरमनी	नारवे
बेलजियम	ग्रीस	पुर्तगाल

बलगेरिया	इटाली	रूमानिया
बेलजियनकाँगो	लक्षमबर्ग	सरबिया
डेनमार्क	मेक्सिको	स्पेन
फिनलेंड	मान्टीनिग्रो	स्वीडन
फ्रान्स	नीदरलैंड्स	स्वीज़रलैंड

मध्य व दक्षिण अमेरिका के प्रजातंत्र राष्ट्र, डच उपनिवेशों, मिश्र, फ्रान्सीसी उपनिवेश, जरमन उपनिवेश, फिलीपाइन प्रदीप और तुर्किस्तान में भी यह पद्धति स्वीकृत हो चुकी है और स्थानीय मापों के साथ-साथ व्यवहृत होती है।

ग्रेटब्रीटन, जापान, वृटिशभारत, अमेरिका का संयुक्तराज्य, कनाडा, और रूस में यह पद्धति आईन द्वारा स्थापित कर दी गई हैं, परन्तु प्रचलित नहीं हुई है।



इङ्गलैंड के माप व तौल ।

११८। नीचे की तालिका में माप की अङ्गरेज़ी मुख्य इकाइयाँ व उनके मेत्रिक तुल्यार्थक दिये गये हैं; ताकि अङ्गरेज़ी से मेत्रिक परिवर्तन सुलभ हो जाय।

माप	मुख्यइकाई	मैत्रिकतुल्यार्थक	घातकांक गणक
लम्बाई	फुट	०·३०४८ मी०	१·४८४००७१
	गज़	०·९१४३९९ मी०	१·९६११२८३
	मील	१·६०९३ कि·मी·	०·२०६६४२०
धरातल	व· फुट	०·०९२९०३ व·मी·	२·९६८०१४२
	वर्ग मील	२५८·९९९ हेक्टेर	
	एकड़	०·४०४६८ हेक्टेर	१·६०७१०२१
घनफल	पैंट (द्रवकामाप)	०·५६८२ ली०	
	गैलन	४·५४५९ ली०	
	बुशल घानादिका	०·३६३७ है०ली०	

तोल	टन	१०१६·०६४कि·ग्रा·	
	पौंड	४५३·५९२४२ ग्रा·	२·६५६६६६६०
	औंस	२८·३५ ग्रा·	
	ग्रेन (ट्राय)	०·०६४८ ग्रा·	
	औंस (ट्राय)	३१·१०४ ग्रा·	

चीन के माप व तौल।



११६। अब जिन देशों से भारतवर्ष का व्यापार अधिकतर है उन देशों के माप व तोल जानना हमारे लिए उपयोगी होगा। सब के पहिले चीन देश ही को लीजिए। चीन में भिन्न-भिन्न प्रकार के माप व तोल हैं। इतना ही नहीं, परन्तु एक प्रान्त से दूसरे प्रान्त के तोल व माप के अपवर्त्य और अवान्तरापवर्त्य (Multiples & Submultiples) में एवम् मूल्य में अन्तर है, हाँकाँग व ट्रीटी पोर्ट्‌स में सर्वत्र अङ्गरेज़ी तोल व माप उपयोग में है। परन्तु इनके साथ-साथ वहाँ के प्राचीन तोल व माप भी कुछ-कुछ प्रचलित हैं। वहाँ की पद्धति थोड़ी बहुत दशमलव पद्धति है।

माप	मुख्य इकाई	तुल्यार्थक	घाताङ्कगणक
लम्बाई	सून (१० फनका)	१·४१ इंच	०·१४९२१११
	चीह (१० सूनका)	१४·१०५ फुट	०·०७००३७६
	चंग (१० चीहका)	११·७५ फुट	१·०७००३७६
	ली०	२·११५·०० फुट	३·३२५२१०४
धरातल	वर्ग चंग	१२१·० वर्गफुट	२·०८२७८५४
घनफल	हो (१० शाओका)	२·० पिंट	०·३०१०३००
	शींग (१० होका)	२०·० पैंट	१·३०१०३००
ताल	टेल	१·३३३ औंस	०·१२४९३७७
	चित व कट्टी (१६ टेलकी)	१·३३३ पौंड	०·१२४९३७७
	पिकलयाटान(१०० चिनकी)	१३३⅓ पौंड	२·१२४९७७

१२० । मिश्र के तोल व माप ।

माप	मुख्य इकाई	तुल्यार्थक	घाताङ्कगणक
लम्बाई	रूब (६ कीरानकी)	६·७५ इञ्च	०·०२६३०३८
	गासाब (१६ रूबकी)	३·० गज	१·४७७१२१३
धरातल	फीदान (४०० वर्ग गासाब)	१·१०१६ एकड़	०·०४२१४२२
तोल	आरदेब (गेहूँ और सक्री के लिए ११८ आँक का	३२४·६ पौंड	२·५११३४८५
	"जवका (८८आँक)	२४२·६"	२·३८४८६०७
	चावलका १५२ आँकका)	४१८·३"	२·६२१४८९६
	ओका	२·७५१३ पौंड	०·४५६२१४२
	ओका (अन्य	२·७५६ पौंड	
	व्यापार का कन्तार	९९·०५ पौंड	

जापान के तोल व माप ।

१२१ । जापान में दोनों ही प्रकार के तोल व माप प्रचलित हैं। मैत्रिक पद्धति के तोल व माप के अतिरिक्त अन्य प्रचलित तोल व माप भी अधिकांश दशमलव-पद्धति के हैं। जापान का लम्बाई माप शाकू है। यह अँगरेज़ी फुट के लगभग बराबर है। इसकी लम्बाई ११·९३१ इञ्च है। धरातल के माप और तौल आदि सर्व दशमलव पद्धति के हैं।

माप	मुख्यइकाई	तुल्यार्थक	घाताङ्कगणक
लम्बाई	शाकू=१० सून =१००बू= १००० रिंग	११.६३०३२ इञ्च	१.०७६६७६८
	जो=१० शाकू	३.३१४ गज	०.५२०३५२५
	री = ३६ शो	२.४४०३ मील	०.३८७४४३२
	शो=६० केन	११६.३०३ गज व ५.४२२६ चेन	०.७३४२३१६
	केन=६ शाकू	१.६८८४ गज	०.२६८५०३८
धरातल	शाकू (कपड़े का)	१४.६१२६ इञ्च	
	वर्गरी	५.६५५२ वर्गमील	१.७७४८६६४
	वर्गशो=	२.४५०७ एकड़	०.३८६२६०२
	शूबो =१० गो १०० शाकू	३.६५३८ व०गज	०.५६७०१४७
	वर्गशाकू= १०० वर्गसून	०.६८८५ व० फुट	१.६६४६७६७
घनफल	सई=१० सात	०.००३१७६ पैंट	३.५०१६१७४
	शो=१००० सई	३.१७२७ पैंट	०.५०१६१७४
	(द्रव) (सूखा)	०.१६७५ पैंक	१.२६७७६०५
	कोकू= १०० शो	३६.७०३३ गैलन	१.५६८८२६६
	(द्रव) (सूखा)	४.६६२६ बुशाल	०.६६५७३५५
तोल	रिन=१० मो	०.५७६७ ग्रेन	१.७६३२०३३
	फन=१० रिन	५.७६७ ग्रेन	.७६३२०३३
	मोमी=१० फन	५७.६७ ग्रेन	१.७६३२०३३
	कान=१००० मोमी	८.२०१७ पौंड	०.६१८११६५
	फिन=१६० मोमी	१.३२२८ पौंड	
	फिन=१२० मोमी	६६२० पौंड	

अमेरिका के संयुक्त साम्राज्य के माप व तौल।

१२२। अमेरिका के संयुक्त साम्राज्य में अँगरेज़ी तोल व माप ही प्रचलित है। सन् १८६६ से यद्यपि मैत्रिक पद्धति वहाँ भी स्वीकार कर ली गई है, परन्तु अभी तक सर्वत्र व्यवहृत नहीं हुई है। अगरेज़ी व अमेरिकन तोल व माप में केवल इतनाही अन्तर है कि, अमेरिका में गैलन व बुशल आदि का वही तोल है जो विनचेस्टर गैलन व बुशल के नाम से परिचित है। इङ्गलैण्ड में इनके स्थान में अब इम्पीरियल बुशल व गैलन व्यवहृत होते हैं। पुराना अङ्गरेज़ी वाइन गैलन (Wine gallon) २३१ घनमूलीय इञ्च (क्यूबिक इंच) है; परन्तु इम्पीरियल गैलन २१६ घन-मूलीय इञ्च नियत किया गया है। इम्पीरियल गैलन की परि-भाषा तोल व माप के आइन (१८७८) में इस प्रकार दी है :—

"१० इम्पीरियल स्टैण्डर्ड पौंड स्वच्छ पानी के घनमूल को, जब कि वह हवा में पीतल के बाँटों से तोला जाय और जब हवा की और पानी की गरमी ६२° फैले और हवा का दबाव ३० इञ्च ही है।" यह इम्पीरियल पौंड ७००० ग्रेन का है। एक घनमूल इञ्च स्वच्छ पानी में २५२·४५८ ग्रेन वज़न है और एक पौंड पानी का घनमूल २७·७२७४ घनमूल इञ्च है।

व्यवहार में विनचेष्टर बुशल ०-९६९४ इम्पीरियल बुशल के बराबर; द्रव गैलन ०-८३३ इम्पीरियल द्रव गैलन के बराबर माना जाता है। दोनों देशों के जिन तौल व मापों में भेद हैं, वे नीचे दिये गये हैं :—

माप	मुख्य इकाई	अँगरेज़ी तुल्यार्थक
घनफल	पैंट (सूखा)	०·६६६४ पैंट
	गैलन (सूखा)	०·६६६४ गैलन
	बुशल	०·६६६४ बुशल
	पैंट (शराबका)	०·८३३१ पैंट
	गैलन (शराबका)	०·८३३१ गैलन
तोल	किंटल वा संटनर	१०० पौंड
	आटे का बेरल	१६६ पौंड
	छोटा टन	२००० पौंड
	लंब टन	२२४० पौंड

फ्रान्स के तोल व माप

१२३। फ्रान्समें जो तोल व माप की पद्धति प्रचलित है, उसे मैत्रिक दशमलव पद्धति कहते हैं। मीटर से ही वहाँ सब प्रकार के तोल व माप की इकाइयाँ निश्चित की गई हैं और छोटे

मोटे तोल माप सब दशमलव के विन्दु को एक स्थान इधर उधर सरकाने से प्राप्त होते हैं । इसमें प्रयुक्त उपसर्गों की सूची इस प्रकार है :—

* मेग (Mega)	=१०००,०००
* मीरिआ (Myria)	=१०,०००
किलो (Kilo)	=१,०००
हेक्टो (Hacto)	=१००
डेक (Deca)	=१०
इकाई	
	इकाई
डेसी (Deci)	=·१ वा $\frac{१}{१०}$
सेन्टी (Centi)	·०१ वा $\frac{१}{१००}$ "
* मीली (Milli)	=·००१ वा $\frac{१}{१०००}$ "
* डेसी मिली (Decimilli)	=·०००१ वा $\frac{१}{१०,०००}$ "
* सेन्टी मिली (Centimilli)	=·००००१ वा $\frac{१}{१००,०००}$ "
* माइक्रो मिली (Mycromilli)	·०००००१ वा $\frac{१}{१,०००,०००}$ "

लम्बाई की इकाई मीटर (Metre) धरातल की इकाई एर

* ये केवल वैज्ञानिक गवेषणाओं में ही प्रयुक्त होते हैं

(Are) घनफल की स्टीर (Stere) द्रव पदार्थ की लीटर (Litre) और तोल की ग्राम (Gramme) है।

उपर्युक्त उपसर्ग किसी भी इकाई के साथ जोड़ देने से उसी मापके अपवर्त्य और अवान्तरापवर्त्य (Multiples & Submultiples) प्राप्त हो जाते हैं।

मैत्रिक पद्धति पेरिस की

१२४। मीटर पहले-पहल याम्योत्तरवृत (Meridian) के एक चतुर्थांश का $\frac{१}{१०,०००,०००}$ हिस्सा निश्चित किया गया था। परन्तु पीछे डीलामरे (Delambre) और मीचेन (Michain) ने वारसीलोना और डनकर्क के बीच के पेरिस के याम्योत्तरवृत (Meridian) के चाप की लम्बाई निर्णय की और उसके अनुसार मालूम हुआ कि, ध्रुव से भू-मध्यरेखा तक के इस चाप की लम्बाई ३०,७८४, ४४० पुराने पारिस फुट के बराबर है और तब मीटर की लम्बाई आईन द्वारा ४४३,२९६ पुरानी पारिस लकीरें (पारिसफुट=१४४ लकीरें) नियत कर दी गईं। हालाँकि पीछे उक्त चाप की लम्बाई में कुछ अन्तर भी मालूम पड़ा, परन्तु मीटर की लम्बाई सदा के लिए वही रही। उसमें किसी प्रकार का परिवर्तन नहीं किया गया। मीटर की उक्त परिभाषा से यह सहज ही मालूम हो जाता है कि, इसका किसी भी पुरातन माप

से तनिक भी सम्बन्ध नहीं है। और यह एक मनोनीत इकाई मात्र है। फ्रान्स के सावरे नगर के पैविलाडीब्रेटूल (Pavillo-nde Breteull) स्थान में इन्द्र-प्लातीनम (Iridio-platinum) कासरिया सुरक्षित स्थान में रक्खा है। उस पर बहुत ही बारीक दो लकीरों के चिह्न तोल व माप के अन्तर्राष्ट्रीय ब्यूरो की आज्ञा से कर दिये गये हैं और इन्हीं के बीच की लम्बाई मीटर का माप है।

माप	मुख्य इकाई	अँगरेज़ी तुल्यार्थ	घातांङ्कापाक
लम्बाई	मीटर	१·०९३६ गज़	०·०३८८७१७
	किलो मीटर	०·६२१४ मील	१·७९३३५६०
धरातल	वर्गमीटर	१०·७६४३ व: फुट	१·०३१९८५८
	वर्ग किलो मीटर	०·३८६३ व० मील	१·५८६७१८०
	एर	०·०२४७ एकड़	१·३९२८९८०
	हेक्टेर	२·४७११ एकड़	०·३९२८९८०
घनफल	लीटर (द्रवकामाप)	१·७६०८ पैंट	०·२४५७०३५
	हेक्टोलीटर ,,	२२·००९७ गैलन	१·३४२६१३५
	,, (धानादि)	२·७५१२ बुशल	०·४३९५२३५
तोल	ग्राम	१५·४३२३ ग्रेन	१·१८८४३२०
	किलो ग्राम	२·२०४६ पौंड	०·३४३३३४०
	क्विंटल,मेट्रीक सेंट-नर मेट्रीक द्विगुण	२२०·४६ पौंड	२·३४३३३४०
	टोनो (कोयला)	२,२०४·६ पौंड	३·३४३३३४०

जरमनी के माप व तोल।

१२५। जरमनी में सन् १८७२ से मैत्रिक पद्धति के माप व तोल स्वीकार कर लिये हैं। परन्तु कतिपय माप पुरातन अभी तक व्यवहृत होते हैं। वहाँ दशमलव के 'विन्दु' के स्थान में कामा का प्रयोग होता है। इसके अतिरिक्त फ्रान्स और जरमनी के माप व तोल में कुछ भी अन्तर नहीं है।

मैत्रिक पद्धति के जरमन नाम

मीली मीटर	—	स्ट्रिच (Strich)
सेन्टीमीटर	—	न्यूज़ोल (Newzoll)
मीटर	—	स्टाव (Stab)
डीकामीटर	—	किट्टी (Ketty)
लीटर	—	कानी (Kanne)
हेक्टोलीटर	—	फास (Fass)
डिकाग्राम	—	न्यूलोद (Newloth)

भारतवर्ष के माप व तोल

१२६। भारतवर्ष में भी तोल व माप की समस्या अभी तक हल नहीं हुई है। यद्यपि सन् १८७० के भारतीय तोल व माप के आइन द्वारा मैत्रिक पद्धति का उपयोग प्रचलित कर दिया गया है। परन्तु अभी तक यह व्यवहृत नहीं हुआ है। जितना

विस्तृत भारतवर्ष का प्रदेश है, उतने ही भिन्न-भिन्न यहाँ पर तोल व माप भी हैं। यह विभिन्नता अकेले भारतवर्ष में हो, सो बात नहीं है। इङ्गलैण्ड जैसे सभ्य देश में अभी तक एक प्रान्त के तोल व माप दूसरे प्रान्तके तोल व माप से बिल्कुल विभिन्न हैं। भारतवर्ष में माप की मुख्य इकाई 'गज़' व तौल की मुख्य इकाई 'मन' है; परन्तु यह सर्वत्र एकसी नहीं है। बंगाली गज़ ३६ इञ्च का, वम्बैया गज़ २७ इञ्च का और मद्रासी गज़ ३३ इञ्च का होता है। माप की इकाई को इस देश में 'वार' भी कहते हैं। जिस प्रकार स्थानान्तर में गज़ भिन्न-भिन्न लम्बाई का होता है उसी प्रकार वार भी कहीं ३६ इञ्च, कहीं २७ इञ्च और कहीं ३३ इञ्च का होता है। प्रायः ऐसा भी देखा गया है कि, जहाँ गज़ ३६ इञ्च का माना जाता है, वहाँ वार २७ अथवा ३३ इञ्च का गिना जाता है और इससे विपरीत में विपरीत। इसी प्रकार तोल की इकाई 'मन' सर्वत्र एकसा नहीं है। यद्यपि प्रत्येक मनके ४० सेर माने गये हैं; परन्तु उसका वज़न पौंड में पृथक्-पृथक् है इसी प्रकार व्यापार विशेष का मन कहीं ४८॥ कहीं ४०, कहीं ९२॥, कहीं ५० कहीं ४३।, कहीं ४६ और कहीं कहीं ५१ सेर का माना जाता है।

१२७। माप व तौल केवल भिन्न-भिन्न ही नहीं है, परन्तु दशमलव की सरल पद्धति के भी नहीं हैं। एक गज़ के सोलह गिरह और एक सेर की १६ छटाँक। एक छटाँक के पाँच तोले, एक तोले के बारह माशे, और एक माशे की ८ रत्ती होती है। उपर्युक्त क्रम अवान्तरापर्त्य माप व तौल का है; परन्तु इसा

प्रकार भिन्न-भिन्न अपवर्त्य हैं। अस्तु व्यापारियों को इससे बड़ी हानि और असुविधा होती है। इसके सुधारने की सरकार और जनता की ओर से लगभग ५० वर्ष से पूर्ण चेष्टा की जा रही है। इतना ही नहीं, वरन् इसको एक प्रकार से उत्तेजन देने के लिये सरकार व रेलवालों ने १८० ग्रेन के तोले, ८० तोले के सेर और ४० सेर के मन को यहाँ के तोल की मुख्य इकाई नियत कर व्यवहृत कर भी दिया है। परन्तु इन लोगों के ये प्रयत्न अभी तक फलीभूत नहीं हुए हैं। सरकार की ओर से समय-समय पर इस विषय की उचित सलाह देने के लिए कमीशन भी नियत किये गये और उन्होंने सर्वत्र १८० ग्रेन के तोलवाला माध्यम व्यवहृत करने की सलाह भी दी है; परन्तु सफलता अभी दूर मालूम पड़ती है। अन्तिम सन् १९१३ की कमीशन ने निम्न-लिखित तोल के माध्यम की सिफारिश की थी :—

८ खसखस	= १ चाँवल
८ चाँवल	= १ रत्ती
८ रत्ती	= १ माशा
१२ माशा वा ४ टाँक	= १ तोला
५ तोला	= १ छटाँक
१६ छटाँक	= १ सेर
४० सेर	= १ मन

नीचे भारतवर्ष के भिन्न-भिन्न तोल व माप की मुख्य इकाइयें और उनके अङ्गरेज़ी व मैत्रिक तुल्यार्थक दे दिये गये हैं।

भारतवर्ष के प्रचलित मापों की तालिका।

माप	मुख्य इकाई	अँगरेज़ी तुल्यार्थक	मैत्रिक तुल्यार्थक
लम्बाई	जव (प्राचीनमाप)	०·०२५० इञ्च	६·३५० मिनी०
	३ जव=उङ्गली	०·०७५० इञ्च	१·९०५ से० मी०
	गिरह=३ उङ्गली	२·२५० इञ्च	५७१५ से० मी०
साधारण माप	हाथ=८ गिरह	१८·००० इञ्च	४·५७२० से० मी०
	गज=२ हाथ	३६ इञ्च वा ३ फुट	·९१४४० मीटर
परिवर्त्तनशील माप	डंड=२ गज	६ फुट	१·८२८८ मीटर
	बाँस=२॥ डंड	१५ फुट	४·५७२० मीटर
	कोस=४०० बाँस	६००० फुट २००० ग०	१·८२८८००० किमी
	इञ्च (नवीन माप)		२·५४ से० मी०
साधारण माप	फुट=१२ इञ्च		०·३०४८ मीटर
	गज=३ फुट		०·९१४४ मीटर
गहराई का माप	फैदम=२ गज		१·८२८८ मीटर
	बाँस=२॥ फैदम		५·०२९२ मी०
भूमिनापने के परिमाणशील माप	चेन=४ बाँस		२०·११६८ „
	फरलांग=१० चेन		२०१·१६८ „
	मील=८ फरलाँग		१·६०९३ कि० मि०

माप	मुख्य इकाई	अङ्गरेज़ी तुल्यार्थक	मैत्रिक तुल्यार्थक
		प्राचीन माप	
धरातल	बीघा= ० कट्ठा		
	छङ्काल	१६०० व॰ग॰०·३३० एकड़	१३·३७·७०३ व॰म
	बनारसी	३१३६,, = ०·६४८	२६२१·८५२ ,,
	बंबैया	३६२७,, = ०·८११	३२८३·४६१व॰मी॰
	गुजराती व युक्तप्रदे	३०२५,, = ०·६२५	२५२१·०१५व॰मी॰
		अङ्गरेज़ी माप	
	वर्ग इञ्च		६·४५१६ व॰से॰मी॰
	वर्गफुट= ४४ व॰ इ		९·२९०३ व॰डे॰मी॰
	वर्गगज=९व॰ फु		०·८३६१२६ व॰मी॰
	व॰ बाँस=३०। व॰ग		२५·२९३ ,,
	रूड=४० व॰ बाँ॰		१०·११७ एर
	एकड=४ रूड		४०·४६८ एर
	वर्गमील६४० एकड़	३०,९७,६०० व॰गज	२५८·९९५ हे॰एर
		प्राचीन तोल	
तोल	रत्ती	१·८७५ ग्रेन	१२·१५० सेग्र॰
	माशा=८ रत्ती	१५·० ग्रेन	०·९७२ ग्राम
	तोला=१२ माशा	१८०ग्रेन ·४१२५ औन्स	११·६६४ ग्राम
	छटांक=५ तोला	२·०५७१ औंस	५८·३२० ग्राम
	सेर=१६ छटांक	२·०५७१ पौंड	०·९३३१२ कि॰ग्राम

माप	मुख्य इकाई	अंगरेज़ी तुल्यार्थक	मेत्रिक तुल्यार्थक
	मन=४० सेर	८२·२८५ पौंड	३७·३२४८कि०ग्रा०
	बंगाली मन	८२·२८५ ,,	३७·३२४८ ,,
	,, फैक्टरी मन	७४·६ ,,	३३·९६८८ ,,
	बंबैया मन(४०सेर)	२८·०० ,,	१२·७००८ ,,
	,, ४२ सेरा	२९·४० ,,	१३·३३५८४ ,,
	कराचीमन ४०सेरा	८०·४० ,,	३६·२८८ ,,
	पूनासाई मन ,,	७८·८४८२	३५·७६५५ ,,
	सूरती मन ,,*	३७·३ ,,	१६·९३४४ ,,
	मद्रासी मन ,,	२५०० ,,	११·३१ ० ,,
	पल्ला=३ मन	२·२०४ हंडरवेट	१११·९७० ,,
	मानी १२ मन=४ पल्ला	८·८१७ ,,	४४७·८८१
	मणासा १००मानी	४४·०८१६ टन	
	कणासा१००मणा·	४४०८·१७ टन	
	मानी ६ मन	४·४०८६	
बंबया	खंडी (२० मनी)	५६० पौंड	२५४·०१६ कि·ग्रा०
,,	,, (२१ ,,)	५८८ ,,	२६६·७१६८ ,,
,,	,, (२२ ,,)	६१६ ,,	२७९·४१७६ ,,
सूरती	,, (२१ ,,)	७८४ ,,	३५५·६२२४ ,,
मद्रासी	,, (२० मनी)	५०० ,,	२२६·८ ,,

*सूरती मन ४१,४२,४३,४३१,४४ और ४५ सेर का भी होता है।

माप	मुख्य इकाई	अँगरेज़ी तुल्यार्थक	मेत्रिक तुल्यार्थक
	नवीन तोल		
	औन्स		२८·३५ ग्रा०
	पौण्ड=१६ औन्स		४५३·५६२४२ ग्रा०
	कार्टर=२८ पौण्ड		१२·७००८कि०ग्रा·
	हंडरवेट=४कार्टर		५०·७०३२ ,,
	टन=२० हंडरवेट		१०१६·०६४कि·ग्रा
	खंडी (रूई)=७हंडरवेट ७८४ पौंड		३५५·६२२४ ,,
	पिकल (रूई)=	१३३ पौंड	

बारहवाँ अध्याय।

विदेशी सिक्का।

सिक्के की आवश्यकता।

१२८। व्यापार में इस बात की बड़ी आवश्यकता है कि, वस्तुओंका मूल्य व एवज़ जहाँ तक हो सके ठीक-ठीक आँका जाय, ताकि दोनों ही व्यक्तियों—क्रेता व विक्रेता—को उससे सन्तोष हो जाय और झगड़े का कोई कामही न रहे; परन्तु एवज़ आँकने के लिए किसी एक प्रकार के माप की और मूल्य आँकने के लिए मुद्रा की आवश्यकता है।

सिक्कों की भिन्नता।

१२९। यह माप और मुद्रा प्रत्येक देश में भिन्न-भिन्न है। यद्यपि उन्नीसवीं शताब्दी की अन्तिम चौथाई से समस्त सभ्य देशों के लिए एक ही पद्धति की माप व मुद्रा निश्चित करने की कोशिश की जा रही है और माप का प्रश्न तो किसी क़दर हल भी हो चुका है। परन्तु विश्वव्यापी मुद्रा का प्रश्न अभी ज्यों का त्यों है।

भिन्न-भिन्न देशों में केवल भिन्न तोल व शुद्धता के सिक्के ही नहीं हैं, वरन् भिन्न-भिन्न धातु के भी सिक्के हैं। कई अमरीकन देशों में तो धातु का सिक्का देखने में भी नहीं आता। सिवा छोटे-छोटे ताँबे, और चाँदी के सिक्कों के प्रधान सिक्के का कार्य सब क़ाग़ज़ के सिक्के से लिया जाता है। अधिकांश देशों में प्रधान सिक्का सोने का और छोटे-छोटे सिक्के चाँदी और ताँबे के हैं; परन्तु भारतवर्ष जैसे कुछ देश ऐसे भी हैं, जिनमें प्रधान सिक्का भी चाँदी ही का है।

प्रधान व सांकेतिक सिक्के।

१३० । जिन देशों में सोने का सिक्का है, वहाँ पर सिक्के को वही मूल्य दिया गया है, जो उसके सोने को बेच कर प्राप्त हो सकता है। जिन सिक्कों का चलन उनकी धातु के मूल्य के बराबर हो, वे सिक्के प्रधान सिक्के (Standard Coins) कहे जाते हैं। जो छोटे-छोटे चाँदी और ताँबे के अन्यान्य सिक्के होते हैं, उनकी चलनी क़ीमत उनकी धातु की क़ीमत से विशेष होती है। इन सिक्कों को सिक्का-शास्त्र में सांकेतिक या सङ्केत सिक्के (Token Coins) कहते हैं। सिक्कों का वज़न तथा उनकी धातु में खार और चलनी वज़न सब आईन द्वारा स्थिर होते हैं। इनसे न्यूनाधिक वज़न अथवा खार के सिक्के टकसाल से बाहर नहीं जाने दिये जाते और फिर पिघला कर बराबर वज़न और शुद्धता के सिक्के पाड़े जाते हैं। घूमते-घूमते सिक्के जब इतने घिस जाते हैं कि, उनका वज़न नियमित वज़न से भी कम हो जाता है तो वे बाज़ार में से

खैंच लिये जाते हैं और पिघलाकर अन्य सिक्कों के साथ पुर्ननियत तोल और शुद्धता के पाड़ लिये जाते हैं। पृष्ठ (३८६ क) में देश विदेश के सिक्कों की एक तालिका भी दी गई है।

शृङ्खला रीति।

१३१। एक सिक्के की दूसरे सिक्के में क़ीमत फैलाने की रीति को अङ्गरेज़ी में 'शृङ्खला' रीति यानी चेनरूल (Chain Rule) कहते हैं। उदाहरण के लिये अङ्गरेज़ी सावरिन और जरमन मार्क को ही लीजिये। सावरिन का वज़न १२३·२७४ ग्रेन अथवा ७·६८८ ग्राम ११/१२ शुद्धता का स्टैण्डर्ड सोना है। और जरमनीमें ५०० ग्राम शुद्ध सोने में ६६॥ पास मार्क के सुवर्ण सिक्के (९।१० शुद्ध) पाड़े जाते हैं। तो सावरिन की मार्क में कीमत इस प्रकार निकाली जायगी

उदाहरण २६।

? मार्क=१ पौंड

अगर १ पौंड=७·६८८ ग्राम $\frac{११}{१२}$ शुद्ध स्टैन्डर्ड सोने के

और स्टैन्डर्ड सोने में है १२ ग्राम=११ ग्राम शुद्ध सोना

और शुद्ध सोना ५०० ग्राम=१३९५ मार्क (६६$\frac{१}{२}$×.. मार्क)

अस्तु १ पौंड $=\frac{७·६८८×११×१३९५}{१२×५००}$=२०·४ ६ याना २०·४३

मार्क के लगभग।

उपर्युक्त उदाहरण यद्यपि स्वयम् उक्त शृङ्खला·· ि का स्पष्ट कर

रहा है, परन्तु फिर भी इस विषय की दो तीन बात ख़ास तौर से ध्यानमें रखने योग्य हैं। पहली बात तो यह है कि, उक्त रीतिमें सब से पहला प्रश्न ही समीकरण के रूप में लिखा जाता है और फिर प्रत्येक समीकरण की पहली भुजा विगत समीकरण की दूसरी भुजा की श्रेणी की होती हैं। इस प्रकार विगत-आगत समीकरणों की एक श्रृङ्खला बनती जाती है और जहाँ समीकरण की दूसरी भुजा सबसे पहले प्रश्नद्योतक समीकरण की पहली भुजा की श्रेणी की आ जाती है, तो वही यह श्रृङ्खला-पूर्ण हो जाता है। और फिर सब पहली भुजाओं के गुणनफल का दूसरी भुजाओं के गुणनफल में भाग देने से प्रश्नाङ्क प्राप्त हो जाता है।

उपर्युक्त उदाहरण में हमारा प्रश्नाङ्क है पौंड की मार्क में क़ीमत निकालना। अस्तु, पहला समीकरण हमारे प्रश्न का द्योतक है। दूसरे समीकरण का पहला भुज पौंड की श्रेणी का होना चाहिए। परन्तु पौंड का वज़न ७·९८८ स्टैंडर्ड सोना (११/१२ शुद्ध) है। अस्तु दूसरा समीकरण पौंड के स्टेन्डर्ड सोने के वज़नका द्योतक है। अब तीसरे समीकरण का पहला भुज स्टेन्डर्ड सोने के ग्राम की श्रेणी का होना चाहिये, परन्तु स्टेन्डर्ड सोना केवल ११/१२ मांश ही शुद्ध होता है। अस्तु तीसरा समीकरण स्टेन्डर्ड और शुद्ध सोने का सम्बन्ध बताता है। इसका अन्तिम चरण शुद्ध सोने का ग्राम है और ५०० ग्राम शुद्ध सोने में १/२ शुद्ध सोने के ६.९॥ बीस मार्क यानी ... ६५ मार्क बनते हैं। अस्तु यही हमारे इस प्रश्न का

अन्तिम समीकरण है। इस समीकरण का दूसरा भुज प्रश्नाङ्क के पहले समीकरण के पहले भुज की ही श्रेणी का है। अस्तु शृङ्खला-पूर्ण है।

उदाहरण २७। फ्रान्स के मुद्रा आईनके अनुसार १५५ बीस फ्राँक के सिक्के १ किलो ग्राम (१००० ग्राम) ९/१० शुद्ध सोने में पाड़े जाते हैं ; तो बताइए एक पौंड कितने फ्राँक का होगा ?

? फ्राँक =१ पौंड

अगर पौंड १८६९ =४८० औंस स्टैंडर्ड सोना

और स्टेन्डर्ड सोना १२ औंस=११ औंस शुद्ध सोना

और औंस १ =३१·१०३५ग्राम के

और शुद्ध ९०० ग्रा०=३१०० फ्रांक सिक्के

अस्तु १ पौंड $= \frac{४८० \times ११ \times ३१·१०३५ \times ३१००}{१८६९ \times १२ \times ९००}$

=२५·२२१५ अथवा २५·२२ १/२ आँक के

दूसरा उदाहरण पहले उदाहरण से कुछ भिन्न है। उसमें ५०० ग्राम शुद्ध सोने में ६९॥ बीस मार्क अर्थात् १३९५ मार्क के ९/१० शुद्ध सोने के सिक्के पाड़े जानेका विधान बनाया गया है। परन्तु दूसरे उदाहरण में १००० ग्राम ९/१० मांश शुद्ध सोने में १५५ बीस फ्राँक का यानी ३१०० फ्राँक का विधान है।

उदाहरण २८। अमरीका के मुद्रा आईन के अनुसार १० डालर के सोने के सिक्के में २५८ ग्रेन ९/१० शुद्धता का सोना होता है। अस्तु पौंड की क़ीमत डालर में कितनी होगी ?

? डालर=१ पौंड

अगर १ पौंड =१२३·२७४ ग्रेन स्टेण्डर्ड सोनेके

१२ ग्रेन=११ ग्रेन शुद्ध सोने के

९/१० ×२५८ ग्रेन=१० डालर

अस्तु १ पौंड=१२३·२७४×११×१०

१२×२३२·२

=४·८६६६ डालर अथवा

१ डालर=४९ ५/११ पेंस के

उपर्युक्त तीनों उदाहरणों में पौंड की तीन विदेशी मुद्राओं में क़ीमत निकाली गई है। इससे सहज ही शंका उत्पन्न हो जाती है कि, यह क़ीमत एक प्रकार से निश्चित एवम् अपरिवर्तनशील है; परन्तु बाज़ार में जब कभी हमें एक देश से दूसरे देश को रक़म भेजनी पड़ती है, तो हमें उसके दाम इसी हिसाब से नहीं, परन्तु कुछ कमी अथवा ज़ियादा भरने होते हैं। यानी बाज़ारू हुण्डी का भाव इस निश्चित भाव से कभी ऊँचा और कभी नीचा होता है। अस्तु जो निश्चित भाव है वह क्या है? और जो भाव रोज़ घटना बढ़ना रहता है वह क्या है और उसके घटने-बढ़ने के क्या कारण है?

मिन्टपार और विनिमय का भाव।

१३२। पहला भाव और कुछ नहीं, केवल दो समान धातुओं

के सिक्कों का पारस्परिक सम्बन्ध या निष्पत्ति मात्र है। इस सम्बन्ध को अँगरेज़ी में 'मिण्टपार' (Mint Par) कहते हैं। दूसरा भाव है, वह विनिमय-सम्बन्धी है । यह पैसेके एक स्थान से दूसरे स्थान को भेजने की सुविधा या असुविधा आदि कारणों से घटता व बढ़ता रहता है। परन्तु 'मिन्टपार' उस समय तक जब तक, कि इन सिक्कों का निर्माता आईन किसी प्रकार नहीं बदलता, सदा स्थिर रहता है। बाज़ारू सिक्कों को लेकर तोलने से शायद 'मिण्टपार' के बराबर उनका सुवर्ण न उतरे और वह उतरता भी नहीं है ; परन्तु इससे मिण्टपार में कुछ फ़र्क नहीं आता। वह आईन द्वारा निर्णीत सम्बन्ध है और आईन ही उसे पलट भी सकता है।

१३३। एक बात और है। क्या भिन्न-भिन्न धातुओं के अथवा कागज़ी और धात्विक सिक्कों में भी यह सम्बन्ध हो सकता है या नहीं? जिस देश में सुवर्ण माध्यम है, वहाँ पर चाँदी के सिक्के भले ही प्रचलित हों ; परन्तु चाँदी वहाँ सिर्फ व्यापारी माल है, जो बाज़ार में ख़रीद फ़रोख्त होता है। यही नहीं इस माल की निर्ख़ भी अन्यान्य मालकी तरह घटती और बढ़ती रहती है। अस्तु चाँदीकी सुवर्ण-क़ीमत भी तदनुसार परिवर्तित होती रहती है। सोने के सम्बन्ध में यह बात नहीं है। सुवर्ण माध्यम-देशों में पहले तो सोने का कोई निर्ख़ या भाव नहीं होता। फिर भी यदि हम मानलें, कि आईनमें जो प्रधान सिक्के के सोनेके वज़न का विधान है, वही उस सोनेकी क़ीमत है तो भी हमारे सिद्धान्त में कोई आपत्ति

नहीं आती। यह क़ीमत न तो घटती और न बढ़ती है; सदा वही बनी रहती है। आवश्यकतानुसार सोना अथवा सिक्का देकर टकसाल से उतने ही प्रधान सिक्के अथवा सोना प्राप्त हो सकता है। अस्तु दो भिन्न-भिन्न धातुओं के माध्यम वाले देश के सिक्कों में किसी प्रकार का परस्पर क़ानूनी सम्बन्ध अथवा निष्पत्ति नहीं हो सकती। यही बात काग़ज़ी चलन वाले देशों के सिक्कों की है। हाँ, दो रौप्य माध्यमिक देशों के सिक्कों में उसी प्रकार सम्बन्ध हो सकता है। उदाहरण के लिये जापान और भारतवर्ष को ही लीजिए। ये दोनों रौप्यमाध्यम वाले देश हैं। जापान के चाँदी के येन में ४१६ ग्रेन $\frac{९}{१०}$ शुद्ध चाँदी है। और हमारे रुपये में १६५ ग्रेन शुद्ध चाँदी है। अस्तु।

? रुपये=१ येन

अगर १ येन =४१६ ग्रेन $\frac{९}{१०}$ शुद्ध चाँदी

और १० ग्रेन=९ ग्रेन शुद्ध चाँदी

१६५ ग्रेन=१ रुपये

अस्तु $\text{१०० येन} = \frac{\text{१००×४१६×९}}{\text{१०×१६५}}$

=२२६·९१ रुपये

लेन-देन चुकाने के साधन।

१३४। अस्तु, यदि हमारा व्यापार आज भी वैसा ही सरल

हो, जैसा कि इतिहास के आदि में इतिहासज्ञों ने बताया है, और हम सदा अपने साथ पर्याप्त चलनी सिक्का ले जाया करें व अपना लेन-देन रूबरू ही तय कर लिया करें, तो 'मिण्टपार' के अनुसार हम कर सकेंगे। परन्तु व्यापार न तो इतना सरल ही रहा है और न आयातनिर्यात का लेन-देन इतना थोड़ा होता है कि, इस प्रकार निपटा लिया जाय। अस्तु, इसका निपटारा करने के लिये अन्यान्य साधनों की हमें शरण लेनी पड़ती है। इनमें से एक निर्यात का लेना आयात के देने से बराबर करना भी है; परन्तु इससे हमें यहाँ पर विशेष प्रयोजन नहीं।

हुण्डी का प्रयोग।

१३५। दूसरे साधन जो हैं, वे हुण्डी-सम्बन्धी हैं। उदाहरण लीजिए कि, एक भारतीय व्यापारी ने लन्दन को अलसी भेजी। इसका रुपया पाने के लिए या तो उसे लन्दन के व्यापारी पर खुद हुण्डी करनी होगी अथवा लन्दनके व्यापारी को भारतवर्ष की हुण्डी भेज देने के लिए लिख देना होगा। इसी प्रकार लन्दन से आये हुए माल के लिए या तो यहाँ से लन्दन की हुण्डी ख़रीद कर भेजना होगा अथवा वहाँ से अपने ऊपर हुण्डी करवाना होगा। अस्तु दो विदेशों के पारस्परिक व्यापार-सम्बन्ध के द्योतक चार प्रकार की हुण्डयाँ होंगी। इन्हीं हुण्डियों को परस्पर ख़रीद-बेच कर दोनों विदेशों के व्यापारी अपना लेन-देन चुकता कर सकेंगे

और जहाँ तक ख़रीद-फ़रोख्त से इनका ताल्लुक रहेगा, ये भी अन्य व्यापारी माल की सी रहेंगी। इनका भाव भी व्यापारी माल के मिल के अनुसार आमद व ख़र्च पर घटता व बढ़ता रहेगा। यही कारण है कि, विनिमय भी घटता-बढ़ता रहता है।

हुण्डी के भाव की दो सीमायें।

१३६। इस घट-बढ़ की भी सीमा है। उदाहरण लीजिए, कि फ्रान्स के २५·२२१५ फ्राँक अङ्गरेज़ी १ पौंड के बराबर है। यदि इङ्गलैण्ड में फ्राँक और फ्राँन्समें पौंड उपलब्ध हो तो इसी हिसाब से लेन-देन चुकता हो सकता है; परन्तु यह सम्भव नहीं। इङ्गलैंड में फ्राँक लाने के लिए अथवा फ्राङ्क में पौंड लानेके लिए हमें राह व बीमा आदिका ख़र्च भी उठाना पड़ता है। यह ख़र्च लगभग १० सांटीम है। अस्तु; जब तक हुण्डी का भाव २५·३२१५ (२२·२२१५+·१०) फ्राँक है, तब तक फ्रान्स का व्यापारी अपना देना चुकाने के लिए हुण्डी का उपयोग कर कुछ लाभ कमा सकता है। इससे तेज़ भाव होने पर हुंडी की अपेक्षा फ्राँक भेजकर अपने देने में उन्हें सोने के बराबर तोल देना लाभ-कारी है। अस्तु एक सीमा तो २५·३२१५ फ्राँक है। अब दूसरी सीमा का विचार कीजिए। हुण्डी का भाव जिस प्रकार बढ़ता है, गिर भी जाता है। परन्तु जब तक वह २५·२२१५ (२५·२२

१५—१०) फ्राँक से नीचे नहीं गिरता, तब तक हुण्डी का उपयोग लाभकारी है। इससे नीचा गिरने पर इङ्गलैण्ड के व्यापारी को अपना पेरिस के व्यापारी का देना चुकता करने के लिए वहाँ से पौंड भेज देना ही लाभदायक है। अस्तु; दूसरी सीमा २५·१२१५ फ्राँक है। यानी साधारणतः फ्रान्स और इङ्गलैण्डकी हुंडी का भाव २५·३२ से ऊँचा और २५·१२ से नीचा इङ्गलैण्ड में नहीं जा सकता।

भारतवर्ष और इङ्गलैण्ड की हुण्डी।

१३७। भारतवर्ष और इङ्गलैंड की हुण्डी के भाव की भी इसी प्रकार दो सीमा हैं। भारतवर्ष का प्रधान सिक्का चाँदी का है, इतनाही नहीं, वरन् उसकी चलनी क़ीमत उसकी धात्विक क़ीमत की अपेक्षा बहुत है। अस्तु; इन दिनों में 'मिण्टपार' का सा कोई सम्बन्ध नहीं हो सकता। परन्तु आईन द्वारा यह स्थिर कर दिया गया है कि, विदेशी लेन-देन के लिए यदि सुवर्ण की आवश्यकता पड़े तो रु० १५) के एक पौंड अथवा रु० १) के ७·५३३४ ग्रेन शुद्ध सोने के हिसाब से सोना दे दिया अथवा ले लिया जाय; अस्तु १ रुपया १ शि० और ४ पे० के बराबर हुआ। यहाँ इस प्रकार से हमारा 'मिन्टपार' है। भारतवर्ष से इङ्गलैंड को सोना ले जाने

अथवा वहाँ से यहाँ लाने का राह एवम् बीमा-ख़र्च एक रुपये पर लगभग १/८ पैन्स पड़ता है। अस्तु; १ शि० ४ १/८ पैंस हमारी हुंडी के भाव की ऊंची सीमा और १ शि० ३ ७/८ पस नीची सीमा हुई। यदि हमारे यहाँ भी रुपये के साथ सोने के सिक्के का चलन हो, तो हुंडी का भाव साधारणतः इन दोनों सीमाओं को परित्यक्त कर बाहर नहीं जा सकता। सोने के सिक्के के अभाव की पूर्त्ति सरकार को हुण्डी देने का अभिवचन किसी क़दर पूरा कर देता है। सरकार भारतवर्ष पर की हुण्डी अपरिमित तादाद में साधारणतः १ शि० ४ ३/३२ पंस में और इङ्गलैण्ड परकी हुण्डी १ शि० ३ २९/३२ पंस में देने को सदा तैयार है। सोने का प्रचलित सिक्का न रखकर भी जो हमें सुवर्ण माध्यम जैसे देशों की सी सुविधा अपने वैदेशिक लेन-देन को निपटाने में प्राप्त है, उस पद्धति को अङ्गरेज़ी "सुवर्ण विनिमय माध्यम पद्धति" कहते हैं।

१३८। उपर्युक्त विवेचन से यह स्पष्ट है कि विदेश की हुण्डी के सदा दो भाव होने चाहिए। एक तो वह जिस समय में हुण्डी ख़रीदी जाय और दूसरा वह जिसमें बेची जाय। वैदेशिक हुन्डी का व्यापार हमारे देश में अधिकांश बैङ्क ही करते हैं। पाश्चिमात्य देशों की भांति यहाँ पर 'डिस्काउण्टिङ्ग हाउस' यानी हुण्डी बटाने के व्यापारी-घर नहीं हैं। जब हुण्डी का भाव विदेशी मुद्रा में होता है, तो ख़रीद का भाव बिक्री के भाव की अपेक्षा ऊंचा और हमारी ही मुद्रा में हो तो नीचा होता है। इन दोनों भावों के बीच का फ़ायदा बैङ्कों का लाभ है।

मुद्दती और दर्शनी हुण्डी का भाव।



१३६। हुण्डियों का विवेचन करते हुए सातवें अध्यायके ८४ पैरेमें यह भी कहा जाचुका है कि, हुण्डी दर्शनी व मुद्दती दो प्रकार की होती है। इसी के अनुसार विनिमय भी दो प्रकार का का होता है। (एक दर्शनी और दूसरा मुद्दती) इन दो के अतिरिक्त एक तारका विनिमय भी होता है। परन्तु उसका दर्शनी विनिमय के अन्दर ही समावेश हो जाता है। दर्शनी हुण्डी का रुपया तो फौरन प्राप्त हो जाता है; परन्तु मुद्दती हुण्डी वाले को रुपया पाने के लिये कुछ मुद्दत तक इन्तज़ार करना पड़ता है। अस्तु मुद्दती हुण्डी ख़रीदते समय व्याज की हानि का भी भाव में विचार करना आवश्यक है। इतना ही नहीं, मुद्दती हुण्डी के ख़रीदार को भुगतान पानेके लिए उस पर सरकारी टिकट जिनकी तादाद हुण्डी की रक़म के अनुसार बढ़ती जाती है, लगाना पड़ता है। इसीलिए मुद्दती हुण्डी का भाव = दर्शनी हुंडी का भाव + व्याज (विदेश के व्याज की दर के मुताबिक़) + विदेशी हुंडी का टिकट। अब उदाहरण लीजिए। कल्पना कीजिए कि लन्दन में पेरिस की दर्शनी हुंडी का भाव २५.१७ फ्रांक है। यदि पेरिस में बैङ्क की मुद्दती हुंडी के घटाने का दर २½ प्रतिशत हो और १००० फ्रांक की हुंडी पर ½ फ्रांक का टिकट लगाया जाता हो, तो मुद्दती हुंडी का क्या भाव होगा?

दर्शनी हुंडी······	२५·१७ फ्रांक
व्याज मास ३ का दर २$\frac{1}{2}$ प्र० श०	·१५$\frac{1}{2}$"
टिकट का दर $\frac{1}{2}$ फ्रांक प्रति सहस्र	·०१$\frac{1}{8}$
अस्तु मुद्दती हुंडी का भाव	=२५·२३$\frac{3}{4}$

यदि कोई लन्दन का व्यापारी २५,२३७$\frac{1}{2}$ फ्रांक की ३ महीने की मुद्दती हुण्डी ख़रीद करे, तो उसे लन्दन में उसके लिए पौंड १००० देना होगा और फिर इसको पेरिस भेजकर वटाने से केवल २५,१६६ फ्राँक प्राप्त होंगे।

हुंडी की रक़म		२५,२३७·५०
बाद व्याज मास ३		
दर २$\frac{1}{2}$ टका···	१५८·२५	
टिकट···	१३·००	
		१७१·३५
	फ्रांक	२५,१६६·१५

और यह लन्दन में पेरिस की दर्शनी हुंडी के भाव के बराबर है।

अब यदि यही पड़ताल हम पेरिस के व्यापारी की दृष्टि से लगावें तो हमें व्याज व टिकट के दाम ज़ोड़ने के स्थान में घटाने होंगे।

आरबिट्रेज या हुंडीका सट्टा।

२४०। यदि हम यहाँ पर किसी विदेश पर बरलिनकी हुंडी

ख़रीदें और उसे सीधी बरलिन में भेजकर वहाँ बेच दें ; तो जो भाव हमें मिलता है उसे अँगरेज़ी में 'डाईरेक्ट् रेट' कहते हैं। और इस हुंडी के व्यापार को 'डाईरेक्ट् एक्सचेंज' कहते हैं। परन्तु बहुधा इस हुंडी के भाव में भिन्न-भिन्न देशों में ऐसा फ़र्क रह जाता है कि, इस प्रकार के सीधे विनिमयकी अपेक्षा वक्र विनिमय लाभ प्रद होता है ; यानी बरलिन भेजने के लिये हमें सीधी बरलिनकी हुंडी ख़रीदने की अपेक्षा लन्दनकी हुंडी ख़रीद कर लन्दन भेजने और उसको वहाँ बेचकर वहाँ से बर्लिनकी हुंडी ख़रीद कर भेज देने से हमें लाभप्रद भाव मिल जाता है। कई बार एक से अनेक वक्र विनिमय करना विशेष फलप्रद होता है। इस प्रकार हुंडी के भिन्न-भिन्न भावों के लाभ उठाने के लिये किये गये हुंडी के व्यापार को अङ्गरेज़ी में 'आरबिट्रेज' कहते हैं। केवल एक वक्र विनिमयवाला सीधा आरबिट्रेज और एक से विशेष विनिमय वाला मिश्र आरबिट्रेज कहलाता है।

सीधे आरबिट्रेज का उदाहरण।

मैंने एमस्टर्डमकी एक हुंडी दर १२-३ स्टीवर * प्रति पौंडके हिसाब से ख़रीद की और वहाँ भेज दी। अब यदि उसे बेचकर उसका उत्पन्न दर ४८ फ्लोरिन प्रति १०० फ्रांक के हिसाब से पेरिस भेजूँ तो मुझे क्या भाव मिलेगा ?

---

*हालैंड का सिक्का फ्लोरिन=१०० सेंट के है। इसका अपरनाम गिल्डर (Guilder) भी है। स्टीवर हालैण्ड का पुराना सिक्का है, जिस में अभी तक हुंडी का भाव दिया जाता है। १ फ्लोरिन २० स्टीवर का होता है।

? फ्रांक=१ पौंड

अगर १ पौंड०=१२·१५ फ्लोरिन (३·स्टीवर=१५ सेण्ट

४८ फ्लो·=१०० फ्रांक

अस्तु १ पौंड=$\frac{१००\times१२·१५}{४८}$=२५·३१ फ्रांक

मिश्र आरबिट्रेज का उदाहरण।

मुझे पेरिस को पैसा भेजना है और लन्दन में पेरिसकी दर्शनी हुंडी का भाव दर २५·२० फ्रांक है। यदि मैं एमस्टर्डमकी दर्शनी हुंडी दर १२·२ स्टीवर में ख़रीद लूँ, और इसके विक्रय से बरलिन की ३ महीने की मुद्दती हुंडी दर ५६ ख़रीदकर पेरिस भेज दूँ और वह पेरिस में दर १२३ के भाव बिके, तो बताइये मुझे लाभ है अथवा हानि ?

? फ्राङ्क=१ पौंड

अगर १ पौंड=१२·१० फ्लोरिन

५६ फ्लोरिन=१०० मार्क

१०० मार्क=१२३ फ्राङ्क

अस्तु १ पौंड=$\frac{१२३\times१००\times१२·१०}{५६\times१००}$

=२५·२२½ फ्राङ्क

अस्तु मेरा लाभ=२५·२२½—२५·२०

=२½ सेंट प्रति पौंड

उदाहरण २८ ।

मैंने पौंड १०००) की तीन महीने की बर्लिन की हुंडी प्र० २०·५० में ख़रीदी और वह अमस्टर्डम में प्र० ५७·७५ में बेच दी । जो कुछ मिला उससे मिलन (Milan) इटाली की दर्शनी हुंडी प्र० ४२ लेखे ख़रीद कर पेरिस में इसे ११ टके बट्टे से बेच दी । वहाँ से बारसीलोना की ३ महीने की मुद्दती हुंडी प्र० ५ फ्राङ्क प्रति पीसो के भाव से ख़रीद कर लन्दन भेजी और वहाँ ४८ पेनी के भाव से बेच दी । अब बताइये मुझे क्या लाभ रहा ?

? पौंड=१००० पौंड

अगर १ पौंड=२०·५० मार्क

१०० मार्क=५८·७५ फ्लोरिन

४२ फ्लो०=१०० लायर

१०० लायर=८९ फ्रांक

१०० फ्रांक=२० पीसो

१ पीसो=४८ पेन्स

२४० पेन्स=१ पौंड

अस्तु हुंडी की उत्पन्न

$$=\frac{१०००×२०·५०×५८·७५×१००×८९×२०×४८}{१००×४२×१००×१००×२४०}$$

$$=\frac{२०·५०×५८·७५×८९×२}{१०×२१}$$

=१०२० पौंड १७ शिः

अस्तु लाभ २० पौंड और १७ शि० है ।

उदाहरण २६ ।

चाँदी का विलायत में यदि ३ शि० ४ पेन्स भाव हो, तो बताइये हमारे रुपये की क्या क़ीमत होगी ?

? पैन्स=१ रुपये

यदि १ रुपया=१६५ ग्रेन फाइन

फाइन ६२५=१००० स्टेण्डर्ड ग्रेन्स

स्टे० ग्रेन ४८०=४० पैन्स

अस्तु १ रुपया=$\frac{१६५\times१०००\times४०}{६२५\times४८०}$

=१४·८६ पैन्स

चाँदी की पड़तल लगाना ।

१४१ । हिन्दुस्थान में विलायत से चाँदी आती है । चाँदी का भाव विलायत में स्टेण्डर्ड औंस पर है । स्टेण्डर्ड औंस में $\frac{३७}{४०}$ हिस्से शुद्ध और $\frac{३}{४०}$ हिस्से खार होता है ; यानी १००० स्टेण्डर्ड औन्स में ६२५ औन्स भर शुद्ध चाँदी होती है । विलायत तक का भाव पैन्सों में आता है । यहाँ पर इसका भाव १०० तोले पर है । यह भाव शुद्ध चाँदी का है । अस्तु पड़तल लगाने की रीति यह है :—

? रु=१०० तोले चाँदी

अगर १ तोला=१८० ग्रेन

(ख)

यूरोप
मिश्र रा
„

अमेरि — रौप्यसुवर्ण — प्रचलित मध्यम
मध्य
मेक्सि स
ग्वाटे — रौप्य — मेक्सिको में यहां
होंडूर — „ — यह प्राचीन स्पेन के
„ — „ — का प्रधान माध्यम है
सुवर्ण

न
शाल — रौप्य
निक — ना
कोस — „ — है।
दक्षि — „
अरज पंस
वोल — अधिकांश दक्षिण
ब्राज पैस — मूल्यापकर्ष कागज़ी
चिल पेस — मिण्टयार विशेष उपचार
कोल — को 'सेंटेसीमो' कहते
इक्वे
पेरु — या
ल

उदाह

च

बताइये

सुवर्ण है।

का डालर व पीसो एक मुख्य निर्यात की वस्तु है।
डालर के बराबर है। पूर्वके कई देशों में यही विनिमय
।

१

भाव

हिस्से

औन्स अमरीका के राज्यों में सुवर्ण माध्यम है परन्तु सब में भाव इसका कहीं जियादा और कहीं कम प्रचलित है। अस्तु यह भंगी नहीं है। पेरू में 'पीसो' को 'सोल' और 'सांटवोज' यह हैं।

६२५ ग्रेन=१००० स्टैण्डर्ड ग्रेन

४८० स्टे० ग्रेन=प० पैन्स

हुँ० पैंस=१ रु०

$$\text{अस्तु १०० तोले} = \frac{१०० \times १८० \times १००० \text{ प० पैन्स}}{६२५ \times ४८० \times \text{हुँ० पैन्स}}$$

$$= \frac{४०·५४ \times \text{प० पैन्स}}{\text{हु० पैन्स}}$$

जहाँ प=विलायत की चाँदी का भाव है।

और हुँ=हिन्दुस्थान में विलायती हुंडी का भाव है।

उपर्युक्त गणित में जहाज़ व बीमे आदि खर्च बैंक की कमीशन और दलाली का विचार नहीं किया गया है। बैंकों ने इन सबका हिसाब लगाकर ४०·५४ के स्थान में ४०·८ का अङ्क ध्रुव ले लिया है।

$$\text{अस्तु} \quad \text{१०० तोले} = \frac{४०·८ \times \text{प० पैन्स}}{\text{हु० पैन्स}} \text{ रुपये}$$

उदाहरण ३०। चाँदी का भाव १ शि० ११ पैन्स है, तो भारत वर्ष का 'मिन्टपार' क्या होगा?

उदाहरण ३१। इङ्गलैंड और जरमनी के बीच का मिन्टपार बताइये।

उदाहरण ३२। समाचार पत्र में यह खबर छपी है कि "इण्डिया काउन्सिल ने आज ४० लाख रुपयोंकी हुंडी की आफर दी, जिस

में से केवल २ लाखकी हुंडी १ शि० ३ २९/३२ पैन्स में दी गई।" इससे आप क्या समझें ?

उदाहरण ३३। लन्दन में पेरिस की दर्शनी हुंडी का भाव २५·२४ है और पेरिस में लन्दन की हुंडी का भाव २५·१६, तो बताइये इससे लाभ कैसे उठाया जा सकता है ?

उदाहरण ३४। लन्दन और न्यूयार्क का मिन्टपार कैसे निकाला जायगा ?

उदाहरण ३५। एक व्यापारी ने बम्बई से पौंड १००० का माल लन्दन भेजा। यदि हुंडो का भाव १·३ ३/४ अथवा १·३ ५/८ होतो बताइये वह किस भाव में हुंडी बेचे ?

उदाहरण ३६। यदि चाँदी विलायत में २ शि० ६ पैन्स हो जाय तो बताइये हमारा हुंडी का भाव क्या होगा और चाँदी की पड़तल क्या पड़ेगी ?

उदाहरणमाला।

(१) सम्वत् १९७३

वैशाख वदी	१ देवीदास के रुपये	२५०)	आये
,,	२ चाँदकरण के रुपये	३००)	आये
,,	३ विश्वनाथ को	१५०)	दिये
,,	४ गोविन्दसिंह को	५०)	दिये
,,	५ विश्वनाथ को	३००)	दिये

,,	६ वैकुण्ठ नाथ के	१००) आये	
,,	७ रमापतिने	१८०) दिये	

उपर्युक्त लेन-देन का रोकड़ मेल तयार कीजिये।

(२) सम्वत् १६७४

वैशाख वदी	८ रोकड़ बाक़ी रु०	३३०)	
,,	८ हरीसिंह को रु०	२००) दिये	
,,	६ गोपालसिंह को	१००) दिये	
,,	१० अ० ब० कम्पनीके	७००) आये	
,,	११ विन्धेश्वरी प्रसादको	२५०) भेजे	
,,	१२ मूलचन्द के	१६०) आये	
,,	१३ सेवाराम ने	२५०) दिये	
,,	१४ सेंट्रल बेङ्क में	६००) जमा कराये	

(३) सं० १६७४

वैशाख वदी	१५ गत दिवस का रु०	२६०) शेष बचा	
,, सुदी	१ हरनाम सिंह को	१३०) दिये	
,, ,,	२ कल्याण मल से	३६०) आये	
,, सुदी	३ क० च० कम्पनीने	२८०) दिये	
,, ,,	४ वेतन चुकाया	१००)	
,, ,,	५ माल ख़रीदा	४७०)	
,, ,,	६ माल आया	३६०)	
,, ,,	७ बैंङ्क में जमा कराया	६२०)	

मालखाता तैयार कीजिये।

(४) सम्वत् १९७४

कातिक सुद	१ लक्ष्मीचंद से माल ख़रीदा	रु०	२०००)
„	२ दीनानाथ को माल वेचा	„	५००)
„	३ नक़द खेरूँज विका	„	१८०)
„	४ लालाराम का माल आया	„	४५०)
„	५ नक़द माल ख़रीदा	„	२३०)
„	६ कामताप्रसाद को वेचा	„	१०००)

(५) सम्वत् १९७४

कातिक सुद	७ गतवर्ष का बचा माल	रु०	१२००)
„	८ नक़द से माल ख़रीदा		४००)
„	९ हरिश्चन्द को माल वेचा		३७३।)
„	१० नक़द वेचा		१५१॥)
„	११ ईश्वर सरनका माल आया		७००)
„	१२ कल्याण कम्पनी ने ख़रीदा		१५३०)
कातिक सुद	१३ शंकर और कम्पनीको वेचा		२८०)
	शेषमाल	रु०	३१५)

(६) सं० १९७४

कातिक सुद	१४ माल पोते	रु०	३१५)
„	सुद १ शिवराम कम्पनीसे ख़रीदा		५३५)
„	२ नर्मदा प्रसादको वेचा		३००)
„	३ स्मिथब्रादर्स का माल लिया		५५०)
„	४ शंकर प्रसाद को माल वेचा		६४०)

"	५ वामनरावको माल वेचा	६०)
"	६ नक़द माल वेचा	५०)
"	शेप वचे मालकी क़ृत	रु० १६०)

(७) मैंने इस भाँति माल वेचा है। इसका खाता तैयार कीजिए।

सम्वत् १६७४ पौष सुद १	गयाप्रसाद को माल वेचा	रु० १००)
" २	" "	३२॥)
" ३	गयाप्रसाद से नक़द आये	१००)
" ४	गयाप्रसाद को माल वेचा	८७॥)
" ५	गयाप्रसाद के रुपये आये	३२॥)
पौष सुद ६	" को माल दिया	४०)
" ७	" के रुपये आये	८७॥)

(८) श्रीयुत गयाप्रसाद में मेरे रु० ४०) मिती पौष सुद ८ सं० १६७४ तक वाक़ी लेना निकलते हैं। पौष सुद ६ को रु० १५०) और सुदी १० को रु० ७०) का और माल दिया। सुद ११ को उसके यहाँ से २००) का माल मैं पीछा ले आया। सुदी १२ को उसने रु० ६०) मुझे दिये। सुद १३ को वह फिर ३१३।≈॥) का माल ले गया और सुद १४ को मैं उसके यहाँसे ४०३।≈॥) का माल ले आया। गयाप्रसाद का हिसाव तैयार कर वताइये कि मेरा क्या लेना देना रहा?

(६) सं० १६७४ मि० माह वद १ तक श्रीयुत गयाप्रसाद के

खाते में रु० ६०) लेना निकलता है। वद २ मेरे यहाँ उसका रु० २३५) का माल आया और वद ३ को मेरा माल रु० २१५)का उसके यहाँ गया। वद ४ को वह रु० ११०) नक़द ले गया। वद ५ और ६ को उसके यहाँ रु० १६५) और रु० १५५) का माल और गया। वद ७ को उसके रु० ३२०।) आये। अब बतलाइये माह वद ८ सं० १९७४ तक मेरा उसमें क्या बाक़ी लेना रहा?

(१०) निम्नलिखित हिसाब से वृद्धिखाता तैयार कीजिए॥

सम्वत् १९७४ चैत्र सुद	१	वेतन दिया रु०	३५।)
"	२	बिजली चार्ज का	७॥)
"	३	मकान किराया	१००)
"	४	वेतन	३५।)
"	५	म्युनीसिपल टेक्स	१०॥)
"	१५	मालपर कुल बटाव दिया	५)
"	१५	" आया	५४)
"	१५	मुनाफा माल पर	२००)
"	१५	आड़त के जमा हुए	६०)

(११)

सं० १९७४ वैसाख वद	१	वेतन चुकाया रु०	६३)
"	५	विज्ञापन ख़र्च के	५०)
"	६	मरम्मत आदिके	८०)
सुद	१	वेतन	६३)
"	१५	मज़ूरी गाड़ीभाड़ा	१५३।≠)

"	१५ बटाव आदि जमा		१०)
"	१५ कपड़े का मुनाफा		३५०)

(१२) मेरे साबुन व मोमबत्तीका धन्धा है। मि०जेठ बद ५ सं० १९७४ तक मैंने साबुन में १०२००) और मोमबत्ती में रु० १३४१०) कमाये। इसके अतिरिक्त साल में रु० ९३०) बटाव मिले और ख़र्च इस प्रकार हुआ:—

किराया रु० ३०००) सरकारी कर रु० ४००) गेस व कोयले का ख़र्च रु० ३५०) बीमेमें रु० २६०) वेतन मजदूरीमें रु० ११२५०) ग्राहकों के बटाव रु० १३७०) अब बताइये मेरा असली मुनाफा क्या रहा ?

आँकड़ा तैयार कीजिए :—

(१३) सम्वत् १९७४ के मि० चैत सुद १५ तक मेरा निम्न-लिखित लेन-देन था :—

रोकड़ पोते बाक़ी	रु०	१२६०)
माल "		२०३०)
गयाप्रसाद में लेना		१०००)
बाबूलाल में लेना		३७०)
ओंकारनाथ में लेना		१८०)
लक्ष्मणप्रसाद का देना		८४०)
शिवशंकर का देना		११९०)
देवीदास का देना		२५०)

(१४) मि० अषाढ़ सुद १५ को मेरी स्थिति इस प्रकार थी।

नक़द रुपया	७०३।≠)
कोयला शेष	६८०)
कोयला भरने की गाड़ी	८००)
घोड़े आदि	१३००)
भिन्न-भिन्न व्यापारियों में लेना	८४६॥-)
रानीगञ्ज कोल कम्पनीका देना	३४८०)
दफ्तर व गोदाम का किराया	५००)
बङ्गालनागपुर रेलवे का देना	२७०)
बैङ्क के खाते में देना	३४५०)

(१५) मिति भादो सुद १५ तक मेरी व्यवस्था इस प्रकार है।

नक़द रुपया	६००)
बैङ्क में जमा	२५०)
माल पोते	३२००)
दूकानकी क़ीमत	२४००)
लेना गयाप्रसाद में	६३०)
„ सदाशिवमें	२६०)
देना तारा चन्द का	६८०)
„ हरप्रसाद का	१०३०)
„ बनवारी लाल का	४०००)
„ प्यारे लाल का	१३००)
„ कन्हैया लाल का	३६०)

(१६) श्रीयुत यज्ञदत्त मि० वैशाख कृष्ण १ से व्यापार करते हैं वैशाख सुद १५ तक निम्नलिखित लेना होता है। खाता रोकड़ व नक़ल तैयार कर उनका नफ़ा-नुकसान बना-इये आँकड़ा भी तैयार कीजिए।

	पूँजी	रु० ५२००)
मि० वैशाख कृष्ण	२ नक़द से माल ख़रीदा	३२८८।)
”	५ गयाप्रसादको माल बेचा	१००)
”	६ खैरूज बिक्री	४८१॥)
”	९ गयाप्रसाद के आये	१००)
”	९ माल बेचा गयाप्रसादको	३२॥)
”	१३ ” ”	८७॥)
”	१५ ” ” गोकलचन्द	८७३।≈)
सुदी	१ गयाप्रसाद से आये रु०	३२॥)
”	४ फूलचन्द का माल लिया	५००)
”	७ गयाप्रसाद को माल दिया	४०)
”	११ फूलचन्द को दिये रु०	२५०)
”	१३ गयाप्रसाद से आये	८७॥)
”	१५ गोकलचन्द से आये	५३७।≈)
”	” किराया दिया	१००)
”	” माल शेष रहा रु०	२५०३≡)

(१७) श्रीयुत माताप्रसाद बलरामप्रसाद कपड़े के व्यापारी हैं

उनका मि॰ कातिक सुद १ सं०१९६८ तक निम्न लिखित लेन-देन था।

लेना		देना	
६०००)	रोकड़ पोते बाक़ी	७०००)	धनीवार का देना
२००००)	माल पोते बाक़ी	४०००)	शिवकुमार
२५५०)	धनीवारमें लेना	३०००)	बाबूलालके
१०००)	सुखवीर सहाय	७०००)	
५००)	गदाधरसिंह	२१५५०)	पूंजी
३५०)	सेवाराम	२८५५०)	
७००)	बब्बूलाल		
२५५०)			
२८५५०)			

मि॰ कातिक सुद २ को शिवकुमार कम्पनी से २० थान काला कश्मीरा वार ८२५ प्र० २॥) लेखे और १० थान असमानी वार ४१४ प्र० २।) लिखे और ८ थान विकुनास काला आसमानी वार २८० पड़त २॥) लेखे ख़रीदा। मि० कातिक सुद ३ को शिवकुमार कम्पनी के पेटे रु० ३०००) दिये। सुद ४ को गदाधरसिंह १०० वार कोजरिंग प्र० १॥) लेखे और ८० वार काला कश्मीरा प्र० ३॥) लेखे और ५० वार वीकुनस प्र० ३।) लेखे ले गया। मि० कातिक सुद ५ सुखवीर सिंह के ५००) आये और वह सुद ७ को १२० गज अस्मानी कश्मीरा प्र० ३) लेखे और ६० गज गर्मसूती

खिकाट प्र० २॥) लेखे ले गया। मि० कातिक सुद ६ को बाबूलाल के नेमे रु० १५००) जमा कराकर माल २० थान कोजारिंग वार ७४२ प्र० १॥) और १५ थान खिकाट वार ५२० प्र० २) लेखे लाये। मि० कातिक सुद ११ गदाधरसिंह के रु० ५००) और सुद १२ बच्चू लाल के ४००) आये। सुद १२ को मजदूरी के फुटकर रुपया १०२॥) चुकाये। मि० मगसर वद ३ को सुखवीरसहाय इस भाँति माल ले गया :—२०० वार इटालियन प्र० ॥।) और १२० वार कोजारिंग प्र० २।) लेखे। मिति मगसर वद ६ गदाधर सिंह के यहाँ माल गया :—५० वार वेनिशियन काला प्र० ४) लेखे ६० वार ग्रिकुनास प्र० ३ लेखे और ५० वार इटालियन प्र० ॥≡) लेखे। मिति मगसर वद ८ सुखवीर सहाय के माल पेटे रु० ५००) आये। मि० वद ८ को शिवकुमार कम्पनी को रु० १०००) दिये। वद १० को गदाधरसिंह से रु० ५६२॥) आये मि० वद १२ को फुटकर मजदूर के रु० ११०) चुकाये। वद १३ को बच्चूलाल को माल दिया इस भाँति :—१०० वार काला कश्मीरा प्र० ३॥) १०० गज कोजारिंग प्र० २, लेखे। १०० गज इटालियन प्र० ॥।) और उसने रुपये ७००) जमा कराकर पहले का हिसाब चुकता कर दिया। मगसर वद १५ तक फैन्सीमाल रु० १०००) का बेचा और परचून खर्च रु० ४० हुआ। शेष माल यदि रु० २३०००) का रहा हो तो नफा-नुकसान बताइए।

(१८) श्रीयुत यज्ञदत्त के निम्नलिखित व्यापार का हिसाब तैयार

कीजिए, उसकी मिति फागुन वद १ से १६७१ तक स्थिति इस प्रकार थी:—

लेन ।	देन ।	
नक़द रु० ४०१६॥-)	फतेचन्द कम्पनी	८८)
माल पोते १७५०)	गोकलचन्द	११४)
ताराचंद में बाक़ी ३००)	कपूरचन्द	१४६)
हरप्रसाद में बाँक़ी ३३॥)	पूंजी	५७५५-)

और महीने भर का व्यापार इस प्रकार था :—

फागुनवद २ सेन्ट्रल बैङ्कमें जमा कराये रु०	३६००)
" ३ कपूरचन्द से माल लिया	२५०)
" ४ चेकबुक	६)
" ५ माल इस प्रकार वेचा ह: गयाप्रसाद	२३॥)
" गोविन्दसिंह	१८०)
ईश्वरसरन	२७५)

" ६ कपूरचंद को हिसाब पेटे चेक १ रु० ३६६) का वैङ्क पर दिया।

फागुनवद ८ कपूरचन्द से माल आया रु० ४५०)

" ६ ईश्वरसरनका चेक रु०२८०) का ईस्टर्न बैंकका आया

" ११ ईश्वरसरन माल लेगया रु० ३४०)

" १२ माल इस भाँति ख़रीदा

" गोकुलचन्द का ... ... २६१)

"	कपूरचन्द का	रु० १००)
"	नक़द से	३३॥)
"	१३ माल चेक से बेचा	५०)
"	१३ मजदूरी चुकाई	४०)
"	१५ ईश्वरसरन का चेक गोकुलचन्द को दे दिया	२००)
सुद	१ हरप्रसादका चेक १ मोरवी बैंक का मारूड आया	५७)
"	२ बैंक में जमा कराये	१०७)
"	३ कपूरचन्द को रु० ४५०) और ताराचन्द को रु० १५०) का चेक बैंक के दिये	६००)
"	५ दफ्तर ख़र्च के लिए चेक काटा	१५०)
"	७ गोविन्दसिंह ने माल ख़रीदा ...	१००)
"	९ फतेहचन्द कम्पनी का माल आया	१७०)
"	११ फतेहचन्द कम्पनी को चेक भेजा	८८)
"	१३ ताराचन्द का चेक आया	४५०)
सुद	१५ मकान किराये का चेक दिया "	१००)
"	गैस ख़र्च का गैस कम्पनी को चेक दिया	८३॥)
"	खेरूँज बिक्री हुई	६०३।=)
"	माल शेष रहा	१६६०)

१६ वहीखाता तैयार कीजिए :—

सं० १९७५ वैशाख वद १ रोकड़िये के पास नक़द २०००)

" २ बैंक में जमा कराये १२५००)

" ३ प्यारेलाल कम्पनी से

५०० वार कपड़ा लिया — १६००)

" ४ कन्हैया लाल का ३२० वार

कपड़ा आया — ४००)

" ४ चेक काटा — ४००)

" ४ कन्हैयालाल को नोट ४ रु० १००) के दिये — ४००)

" ५ वामनराव को १२० गज़ कपड़ा दिया — ३०२।≠)

" ६ वामनराव के दो नोट रु० १००) के आये — २००)

" ६ कन्हैयालाल कम्पनी से रेशम लिया — १४५०)

साटन — ७२८॥)

" ८ माल की आग का बीमा उतराया — २१७८॥)

उसके प्रीमीयम के — ४५)

" ६ वामनराव को पारसल किया

३० वार मखमल — रु० ३००)

साटन — २६३)

५६३)

बद १० नक़द्से रेशम ख़रीदा — १२५)

" ११ बैंक में जमा कराये — २००)

" १२ देवदास कम्पनी का चेक आया — १००)

" १२ वामनराव से ३०० वार कपड़ा लिया — ६६०)

" १४ देवदास कम्पनी के आर्डर का माल भेजा

रेशम ३८०)

कपड़ा १६०)

५४०)

१५ नक़द बिक्री १४५।)

सुद १ कन्हैयालाल कंपनी का माल आया २००)

४ बेलदयाल का आया

मलीना ... ३७५)

खेरूज ... १७७५) २१५०)

११ म्युनीसिपलिटि का टेक्स का चेक दिया ५२॥)

१४ खेरूँज बिक्री ४०००)

१५ बैंक में जमा कराये ३५००)

वेतन में रुपया १००) के नोट दिये १००)

मुत्फरक़ात ख़र्च को दिये २५०)

माल शेष रहा ३२२५)

(२०) निम्न लिखित लेन-देन का वही खाता तैयार कीजिये :—

चैत्र वद १ स० १९७५ नक़द पोते ३६५)

बैंक में जमा ३३२४)

माल पोते ३५०५)

ताराचन्द में लेना ३५५)

प्यारेलाल कंपनी का देना ५०६)

,, ४ आतमाराम के रु० ३०८) और ताराचन्द को

रु० ४५६) का माल बेचा ७६४)

५ नक़द बिक्री हुई ३७३।)

१०	आत्माराम से रोकड़ा रु० ३००) आये और उसे छूट के रु० ८) काट दिये	४००)
११	चेक काटा	१००)
१२	ताराचन्द ने मेरे बैंक के खाते में जमा कराये	५००)
,,	माल दिया आत्माराम को	२४७॥)
	,, फूलचन्द को	४८२॥)
१४	मुत्फरक़ात स्टेशनरी के दिये	४८)
१५	प्यारेलाल कम्पनी से माल आया	५६८)
	प्यारेलाल कंपनी को चेक दिया	१०००)
	उन्होंने छूट मुझे काट दी	५०)
वद: १५	फूलचन्द से नोट आये	४००)
सुद ५	खेरूँज विक्री	३६६।)
१४	फूलचन्द कंपनी से आर्डर आया	८०)
	और मैंने छूट दी	२॥)
१५	गोदाम भाड़े का चेक दिया	२००)
,,	बैंक में जमा कराये	७५०)
,,	मुत्फरक़ात ख़र्च में लगे	७८॥।)
,,	मज़दूरी चुकाई	४५)
,,	पूँजीका व्याज	२७॥)
	माल बचा	३१००)

(२१) श्रीयुत यज्ञदत्त की जेठ वद १ सं० १९७५ तक स्थिति यह है

लेना	देना
१२३७॥) आदित्यराम से	१३५०) शंकरलाल का देना
७९०) शेअर कंपनी में	१६५०) रुद्रदत्त का
७००) चुन्नीलाल से	२०९०) कस्तूरमल का
१०००) हरिशंकर में	५९७॥) बाबूलाल का देना
१२३७५) बैंक में	१८५००) पूंजी
५३५) रोकड़ पोते बाकी	२४१८७॥)
७५५०) माल बचा हुआ	
२४१८७॥)	

जेठ वद २ आदित्यराम नक़द से माल ले गया रु० १२५०)

,, २ रुद्रदत्त को चेक दिया रु० १६४१)

उसने छूट दी ९)

बैङ्क में जमा कराये १०००)

शंकरलाल के देने पेटे एक चेक भेजा १०००)

,, ३ चुनीलाल को उसमें लेने ७००) का

चुकतीचेक ॥) आने प्रति रुपयेके हिसावसे आया ३५०)

५ केवलदास को माल बेचा ९००)

,, आदित्यराम को ,, ४३०)

६ आदित्यराम का चेक आया १०००)

,, बाबूलाल का ,, ५००)

७ आये हुए चेक बैंक में जमा दिये	१५०)
६ कस्तूरमल से माल ख़रीद किया	५५००)
और हिसाब पेटे चेक भेजा	२०००)
११ बाबूलाल माल लेगया	७८५)
१२ एक चेक के एवज़ माल बेचा और	
उसे बैंक में जमा दिया	६३०)
१४ बैंक पर एक चेक ख़र्चे के लिये काटा	५००)
१५ गाड़ी भाड़ा चुकाया	१८५)
जेठ सुद २ मरम्मत कराई	१७७॥)
,, ३ शेयर कम्पनी माल ले गई नक़दसे	१६००)
और उधार	१०१०)
,, ५ बाबूलाल का माल आया	२०२॥)
,, ८ माल खरीदा चेकसे नक़द	
३०००) २००)	३२००)
,, ९ भाड़े का चेक दिया	४००)
आदित्यराम का चेक आया	६००)
और उसमे छूट दी	३७॥)
,, १० बाबूलाल का चूकती हिसाबका	
चेक भेजा और रु० ४०) छुट काटा	७६)
,, १२ शेयर कम्पनी के रु० १८००) के	
लेने पेटे ॥=)८ की रुपये के हिसाब का	
चूकता आया	१२००

,,	१४ बैङ्क में जमा कराये	२१००)
,,	१५ मुत्फरक़ात ख़र्च में लगे	२८६।८३)
,,	१५ गाड़ीभाड़े के मुकादम को देने	२३२८)
,,	१५ पूँजी पर व्याज	७७)
	,, बैङ्क के खातेमें व्याज के जमा हुए	३२॥)
	,, पोते के माल की क़ीमत	६६००)

(२२) श्रीयुत रामचन्द्र ने सम्वत् १९७० की मिती जेठ वद १ से कपड़े का व्यापार करना शुरू किया। उस समय उनके पास रु० १००००) मौजूद थे। मि० जेठ वद २ को जमनादास हीरजी से ७२० गज ज़ीन दर ॥-) वार और ६७२ गज साटनडक दर ॥≈) वार लिया। मि० जेठ वद ३ को हीराचन्द गुलाबचन्द रतलाम वाले को साटन डक गज ८० प्र० ।) और ज़ीन वार ३६ दर ॥) लेखे बेच दिया। वद ४ को रामकरण रामविलास से ३३६ गज रेशमी साटन प्र० २।≈) गज मोल लिया। वद ६ को अमृतलाल परमार को साटन डक वार ४८ प्र० १) वार बेचा। वद ८ खैरूँज कपड़ा ४६७॥) का खरीद किया। वद ९ जमनादास हीरजी से १०००) वार ज़री खीनखाप दर १॥) वार से ख़रीद किया। वद १० खैरूँज बिक्री के रु० ३१०॥) आये। हीराचन्द गुलाब चन्द को मि० जेठ वद १२ को १०० वार खीनखाप प्र० २) वार से भेजा। मि० जेठ वद १३ जमनादास हीरजी को ९८२) रु० दिये। मि० जेठ वद १३ हीराचन्द गुलाबचन्द से रु० ८०) की हुंडी आई। मि० जेठ वद १३ अमृतलाल परवार को २० गज

खीनखाप प्र० १॥) लेखै और २० गज साटन डक प्र० १) लेखै वेची। वद १४ अमृतलाल परमार के रु० ४८) आये। वद १५ नक़द से ५७२॥) का माल ख़रीदा। सुद १ रामकरण रामविलास को रु० ७६८) दिये। सुद २ को जमनादास हीरजीको रु० १५०)दिये सुद २ खैरूँज विक्री हुई रु० ४३०॥) सुद २ जमनादास हीरजीका माल आया १२८० गज शर्टिङ्ग प्र० ।) लेखै १३८ गज वेनीशियन ५।) लेखे। सुद ३ हीराचन्द गुलाबचन्द रतलाम वाले के रु० २००) आये। सुद ४ रामकरण रामविलासके यहाँ से ३८४ गज गवरून प्र० ॥≤) वार की आई। मि० सुद ५ अमृतलाल जी खीनखाप वार २० प्र० १॥) लेखे ले गये। मि० सुद ६ माल के रु० ६५७॥) दिये। सुद ७ विक्री के रु० ४५५॥) आये रामकरण रामविलास के मि० जेठ सुद ८ को रु० २७२) भेजे। सुद १० मजदूरी के रु० ६०॥) चुकाये। सुद ११ को जमनादास हीरजी के हिसाव पेटे रु० २३३७) दिये। सुद १२ रामकरण रामविलास से माल ख़रीदा १६८ गज अल्पका प्र० ३॥) लेखे, ८४ गज रेशमीन साटन दर ५) लेखे। सुद १३ माल ख़रीदा रु० ६७०॥) सुद १४ हीराचन्द गुलाव चन्द रतलामवाले को भेजा ८० गज ज़ीन प्र० ॥) और २० गज अल्पका दर ३॥) लेखे। सुद १४ अमृतलालजी के रु० ६०) आये सुद १५ खैरूज विक्री ५३६।) मकान किराया ५००) मुत्फरक़ात ख़र्च ७६॥) और माल शेप वचा रु० ७८१५)

(२३) श्रीयुत यज्ञदत्त की सं० १९७० जेठ वद १ को स्थिति इस प्रकार थी :—

पोते बाकी रु० ४७७॥) बैङ्क में ६८७२॥)

कपड़ा पोते रु० ६७५०) जमनादास की हुंडी मि० जेठ वद १५ पहुंचती रु० १४८०) लालचन्द की हुंडी जेठ सुद ६ पहुँचती रु० ५००)। मामराज में लेना रु० ७२०) विजय कम्पनी का देना १०७५)। आत्माराम जोग हुंडी रु० ११००) का और सुद १२ पहुँचती दयाराम के राल्या की हुंडी १०५०) की देनी।

जेठ वद	१	आदित्य नारायण माल ले गया रु०	१२५०)
	,,	सरूपचन्द को माल बेचा और उसका चेक बैङ्क में जमा करा दिया	५६०)
	,,	लालचन्द को माल दिया	६५०)
,,	२	विजय कम्पनी से माल आया	२५४०)
	४	विजय कम्पनी को हिसाबका चुकती चेक दिया	१०५०)
		छूट मिली	२५)
	५	आत्माराम जोग की हुंडी सिकराने के लिये उसे चेक भेजा	
	६	मामराज माल ले गया	८७३॥)
	,,	मामराज से रुपये आये	७१२)
	"	उसे छूट काट दी	६)
	१०	आदित्यराम से १ महीने की मुद्दती हुण्डी रु० १०००) और नक़द रुपये २५०) आये	

	१४	माल ख़रीदा और उसके लिये चेक दिया	७३५)
	१५	पन्द्रह दिनकी खैरूँज बिक्री	१५८२॥)
	१५	जमनादासकी हुण्डी की भुगतान आई	१४८०)
	१५	बैङ्क में जमा कराये	२५००)
सुद	१	बैङ्कमें जमा कराये	१४८०)
	३	विजय कम्पनीने ५१ दिन पीछे की हुण्डी की	२०००)
	३	लालचन्दने बैङ्कके खातेमें जमा कराये	८००)
	३	आदित्यरामने माल लिया	६६०)
		मामराजने माल लिया	५२२॥)
	६	लालचन्द की हुण्डी सिकरी और रुपया बैङ्कमें जमा करा दिया	
	१३	दयाराम के राख्याकी हुण्डी सिकारनेको चेक काटा और हुंडी जीवनलाल जोग सिकार दी	
	१४	लालचन्दका काम कच्चा रह गया उसमें बाक़ी लेने रुपये के ॥≈) वसूल हुए	
सुद	१५	खैरूँज बिक्री	१७६५)
		„ ख़रीदी	६७७॥)

वैङ्कमें जमा कराये १४००)

ख़र्च उठाया ७१॥) रोकड़ और वैङ्क

मारफ़त ४२२॥)

माल पोते ३६६०)

(२४) मि० चैत वद १ सम्वत् १९७५ के दिन श्रीयुत देवीदास के व्यापार की स्थिति इस प्रकार है :—

रोकड़ पोते बाकी रु० २८०) वैङ्कमें जमा ३०००) मुख्त्यार सिंह में लेना रु० ४००) हरिश्चन्द्र में १६४०) गंगाराम में ७००) और शंकरलाल में ५००) माल पोते ३००) देना ईश्वरसहाय का १६००) और कन्हैयालाल का ५२०)

मि० चैत्र वद २ हरिश्चन्द्रजी की ३१ दिनकी हुण्डी आई रु० १०००)

„ ३ लालचन्द को माल बेचा ७००)

„ ५ ईश्वरसरन को उसके राख्याकी

हुण्डी ३१ मिती की लिखकर भेजी रु० ६००)

८ बामनराव से माल आया ६७०)

१३ शंकरलाल की हाथ की हुण्डी ३१ मिती की

आई ५००)

सुद ५ बामनराव को ३१ मिती की हुण्डी की ६००)

८ ईश्वरसहाय को चेक दिया ५००)

१० शंकरलाल को माल दिया २०००)

१२ मुख्तारसिंह ने ५१ मिती की हुण्डी लिख दी ४००)

१५ कन्हैयालालको ५१ मिती की हुण्डी लिख भेजी ५२०)
,, मुत्फरक़ात ख़र्च उठे २५०)
,, निजी ख़रच के लिए चेक लिया ४००)
वैशाख वद् १ गंगाराम को माल दिया ४००)
,, वद ८ हरिश्चन्द्र की हुण्डी के रुपये आये और
वेंक में जमा कराये १०००)
,, ११ ईश्वरसरन के राख्या की हुण्डी वैङ्क
मारफत सिकार दी ६००)
,, १३ इन्दरमल का माल आया ६००)
,, १५ इन्दरमल ने हुण्डी दिन ६१ पूगती की ६००)
" १५ गंगाराम को माल वेचा ३००)
सुद ५ शंकरलाल की हुण्डीके रु० वह वैङ्कमें भर गया ५००)
सुद ५ गंगाराम की ६१ मिती की हुण्डी आई १४००)
,, ११ वामनराव की हुण्डी सिकार दी ६७०)
,, ११ कन्हैयालाल से माल ख़रीदा १०००)
१० वेंक पर चेक काटा ६७०)
१२ परचून ख़र्च के लिये चेक दिया ३००)
१५ मुत्फरक़ात ख़र्च चुकाये २५०)
१५ निजी ख़र्च के लिये चेक लिया ३००)
माल शेष रहा ३०००)

पूंजी पर दो महीने का व्याज प्र० ।≋॥) लेखे जोड़िये और खाता तैयार कीजिये ।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग

परीक्षा सम्वत् १९७४।

मुनीमी।

वहीखाता।

[परीक्षक—श्री गौरीशङ्कर प्रसाद, बी, ए, एल.एल. बी.]

समय ३ घंटे

पूर्णाङ्क १००—सब प्रश्नों में बराबर अंक हैं

१ साधारण महाजनी कारबार करने के लिए कम से कम कौन कौन सी बहियें रखनी आवश्यक हैं—उनमें से किस-किस बहीसे क्या काम लिया जाता है, स्पष्ट रीति से लिखिये।

२ नीचे लिखे हुए व्यापारों में कौन-कौन सी बहियें प्रायः काम में लायी जाती हैं, अलग-अलग उनके नाम तथा उपयोग लिखिये।

(क) सर्राफ़ी अर्थात् हुण्डियों का लेन-देन इत्यादि।

(ख) अनाज की आढ़त।

(ग) कपड़े की थोक बिक्री की दूकान जिसमें दिसावर से माल आता-जाता है।

(घ) चीनी और किराने की बड़ी दूकान।

(ङ) छोटी परचून की दूकान।

३ लेखा बही या खतिऔनी किसे कहते हैं? कान कान

में इस वही के द्वारा क्या सुविधा होती है और इस प्रकार की वही न रखने से क्या कठिनाइयाँ हो सकती हैं ?

४ अँगरेज़ी चाल के बैंकों में कौन-कौन रजिस्टर हुआ करते हैं ? उनका अलग-अलग नाम तथा उनके काम का पूरा हाल लिखिये।

जेनरल लेजर और परसनल लेजर किन को कहते हैं—इसमें क्या अन्तर है ?

५ आपने रामप्रसाद श्यामप्रसाद की लिखी लक्ष्मीप्रसाद राधाप्रसाद कलकत्ता ऊपर तथा गयाप्रसाद गोवर्धनदास के रखे ५,०००) की हुण्डी मिति वैशाख वदी १ से दिन ६१ पीछे की मिती जेठ सुदी १ को दर २) वट्टे में मेघराज हरविलास से ख़रीदी, और उसे उसी दिन अपने कलकत्ते के आढ़तिये खड़्गप्रसाद सीतलप्रसाद के नाम भेज दिया।

(क) अपनी वही में इस व्यवहार का जमा-ख़र्च महाजनी रीति से आप कैसे करेंगे ? उत्तर की पुस्तक में वही की रीति से पूरा-पूरा जमा-ख़र्च कीजिये।

(ख) आपका आढ़तिया उस हुण्डी को पाकर वेचा करेगा, उसका पूरा व्यौरा लिखिये।

६ कल्ह की रोकड़ बची हुई आप के पास १४१७।-)। है। आपने गंगाप्रसाद की आढ़त से ११५ कनस्टर घी, जिसमें ।Sे६॥ फ़ी कनस्टर माल है दर ४६।≈) मन के भाव से ख़रीदा और उनको १,०००) दाम मध्ये दिया। रामखिलावन हलवाई

के हाथ आपने २५ कनस्टर घी दर ४७।≈) मन के भाव बेचा, जिसमें से उसने ४००) आप को दिया—भगवानदास हलवाई से पिछले बकाये का ४७६।≈)॥ असल और २७।≈) ब्याज का मिला—१५) आपने अपने मुनीब को तनख़ाह मध्ये दिया—५।≡) घर के ख़र्च में लगा—रामसरन ब्योपारी ने आप को १५० बोरे गोदाम में बतौर आढ़तिये के रख लिया और ब्योपारी को १२०० माल पेटे दिया और बिल्टी छोड़ाने में १७≈)॥ ख़र्च पड़ा।

ऊपर लिखे व्यवहारों को बही की रीति से अपनी उत्तर पुस्तक में लिखिये और विध मिला डालिये।

७ साल के अन्त में अथवा जब चाहें अपनी स्थिति या कारबार की अवस्था स्पष्ट रूप से जानने के लिये आप क्या-क्या करेंगे, उसे विशेष रीति से लिखिये।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

मुनीमी परीक्षा सम्बत् १९७९

गणित।

(परीक्षक—श्री गौरीशङ्कर प्रसाद, बी० ए० एल-एल बी०]

समय तीन घण्टे

पूर्णाङ्क १००—प्रत्येक प्रश्न में बराबर अङ्क हैं।

१ मुद्रऋण साधारण ५) सैकड़े ब्याजवाला दर १४) सैकड़े

भाव में और मामूली गवर्नमेण्ट प्रामेसरी नोट ३॥) सैकड़े व्याज का दर ६६) सैकड़े भाव में मिलता है और इन दोनों में ही व्याज की रक़म पर ≈) प्रति रुपया इनकम टेक्स देना पड़ता है । ५॥) सैकड़े का वार बॉण्ड (War bond) बराबर में मिलता है और इसकी आमदनी पर टेक्स माफ है आपके पास दस हज़ार रुपया है तो आप किस प्रकार के काग़ज़ में रुपया लगावेंगे और हर प्रकार से क्या-क्या वार्षिक नफ़ा होगा ।

२ ।≈) प्रति गज़ के भाव से ४० गज़ मलमल आपने मोल लिया और आध गज़ वर्ग के (मुरब्बा) बराबर बराबर के रूमाल फाड़ कर फ़ी रूमाल)॥ उसके किनारों की सीलाई का दिया और दो-दो आना फ़ी रूमाल बेच डाला तो आप को कुल क्या लाभ हुआ ?

३ जमा-ख़र्चों और कटुआ व्याज फैलाने की रीतियों को उदाहरण के साथ समझाइये—

५०१) सावन वदी ५	१२००) अषाढ़ सुद २
४००) सावन सुदी ८	१३००) सावन सुद ३
११००) भादो वदी १०	२५००) भादो वदी ५
३१००) भादो सुदी ७	७००) भादो सुदी १४
१६००) कुवार वदी १३	१५००) कुवार सुद १
५००) कातिक वदी ११	२७००) कातिक वद ८

ऊपर लिखे सरख़त का महाजनी रीति से कातिक सुद १५

तक का व्याज फैलाकर महीना आँक रखिये और ॥) सैंकड़े के हिसाब से व्याज लगाइये।

४ १५७६ऽ३ गोजई दर ।ऽ२। के भाव खरीदा उसे साफ़ कराने में ।) मन खर्च पड़ा और ६००ऽ गेंहू दर ऽ६ का ५००ऽ जौ दर ।ऽ३ का ७५ऽ सरसों दर ८ऽका और ९५ऽ तीसीदर ऽ८॥ सेर व० २०ऽ चेभरा दर ।ऽ५ का बेच डाला। बाक़ी मिट्टी-कूड़ा निकला तो इस व्योपार में आपको कितने सैंकड़े का नफ़ा हुआ ?

५ नीचे लिखे पत्रों पर कितने का और कैसा स्टाम्प लगेगा और लिखने की तिथि से कितनी मियाद के भीतर उनके बाबत नालिश अदालत में दाखिल होनी चाहिये ?

(क) १०००) की हुंडी कातिक बदी १५ सम्वत् १६७२ से दिन ६१ पीछे की।

(ख) २०००) की पहुँचे दाम की हुण्डी।

(ग) १५) का हैंड नोट।

(घ) १६) की रसीद।

(ङ) १०००) का रेहननामा भोकबन्धक जिसमें ५ बरसकी मियाद बाद रुपया देने की प्रतिज्ञा तथा नालिश करने का अधिकार दिया हुआ है।

(च) १५००) का रेहननामा दृष्टबन्धक।

६ आपका रुपया किसी के यहाँ घी के दाम का बाक़ी है, तो

साधारणतः आपको कितनी अवधि के भीतर नालिश करनी चाहिये ?

उस अवधि को बढ़ाने के लिये आपका असामी क्या-क्या और कब-कब कर दे तो आपकी मियाद बची रहे ?

७ दिये लेख की नागरी अक्षरों में प्रतिलिपि कीजिये।

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

मुनीमी परीक्षा १९७५

बहीखाता

[परीक्षक—श्री गौरीशंकर प्रसाद बी॰ए॰, एल-एल॰ बी॰]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[स्वच्छता और स्पष्टता के लिये १० अङ्क हैं]

१ नीचे लिखे शब्दों से आप क्या समझते हैं स्पष्ट लिखिये—

महाजन, व्यापारी, आढ़तिया, पल्लेदार, बया, मुनीम गुमाश्ता, पसङ्गा. गिरों या गिरवीं, हुंण्डी। १०

२ हुण्डियाँ कितने प्रकार की होती हैं ? उनके भेद स्पष्ट रूप से उदाहरण के साथ लिखिये—ऊपर वाला, लिखो वाला, रखे वाला, बेचो वला किसे कहते हैं ? १०

३ मिती सावन वदी ५ को रामप्रसाद गणेशदास ने पाँच-पाँच हज़ार रुपये लगाकर साझे में दूकान खोली, उसी दिन

भगवानदास का १५५ बोरा गेहूँ उनकी आढ़त में आया और उसे १०००) माल पेटे दिया गया। व्याज दर ॥≠) सैकड़े और बिल्टी छुड़ा कर माल रख लिया, उसका ख़र्चा जो दिया वह उसके नाम लिखा। भादों सुदि ३ को उसका माल गोपालराम के हाथ दर ऽ८।≠ के भाव में बेच दिया। फ़ी बोरा दो मन पन्द्रह सेर की कस्ती थी और ≈) सैकड़े आढ़त, ।) सैकड़े मुनीबी, ≠) सैकड़े बयायी,)। सैकड़े धर्मादा इत्यादि ख़र्चा लगाकर और व्याज भी लगाकर व्यापारी का रुपया चुकता भेज दिया और गोपालराम से दाम मध्ये १२००) नगद पाया।

इन दोनों मितियों का जमा-ख़र्च बही की रीति से पूरा-पूरा लिखिये और हिसाब का पुर्ज़ा व्यापारियों को लिख भेजिये ?

४ खाता या खतियौनी किसे कहते हैं ? इसके व्यौहार करने से क्या लाभ तथा इसके न रखने से क्या-क्या हानियाँ हो सकती हैं, उदाहरण देकर बताइये। किस प्रकार के कार-बार में लोग इस बही का प्रयोग नहीं करते और किस प्रकार के कामों में इसका रखना अत्यावश्यक है ? २५

५ एक छोटी परचूरन की दूकान में कम-से-कम कौन-कौन सी बहियें आप व्यवहार में रखेंगे और उसमें क्या-क्या लिखेंगे उदाहरण देकर लिखिये ? १०

६ तागपट्टी बही किसे कहते हैं उसमें कब और क्या लिखा १०

जाता है और उसमें की लिखी रक़में कहाँ उठकर जाती है और फिर वहाँ से कहाँ या कहाँ-कहाँ जाती हैं। उदाहरण के साथ लिखिये। १०

७ महाजनी से प्रतिलिपि करने के लिये। १५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन प्रयाग।

मुनीवी परीक्षा १६७५

गणित

[परीक्षक—श्री गौरीशङ्कर प्रसाद, बी० ए,० एल-एल० बी०]

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[स्वच्छता और स्पष्टता के लिये १० अङ्क हैं]

१. नीचे लिखे सरख़तका व्याज फैलाकर व्याज की संख्या बताइये। व्याज दर ॥) सैकड़े के हिसाब से जेठ सुदी १५ तक का।

५००) कार्तिक सुदी १	८००) अगहन बदी ५
११००) अगहन सुदी ६	४००) अगहन सुदी ११
६००) पूस बदी ३	१५००) पूस बदी ७
५००) पूस सुदी ११	७००) माघ बदी ५
३००) माघ सुदी १५	६००) फाल्गुन बदी ११
३५०) चैत बदी ७	४५०) बैशाख बदी १२

कच्चा अङ्क और पक्का अङ्क में क्या भेद है। १५

२ आपके पास ११०००) रुपया है—नीचे लिखी भिन्न-भिन्न रीतियों से इसे लगाने में कितना-कितना ब्याज पड़ेगा—

(क) साढ़े तीन टकिया सर्कारी काग़ज़ दर ६४ के भाव में।

(ख) वारलोन (लड़ाई का कर्ज़ा) पाँच रुपये सैकड़े वाला दर ६४) के भाव।

(ग) वारबांड साढ़े पाँच रुपये सैकड़े वाला दर ९८) के भाव।

(घ) नया वारबांड बराबर में जिसका ब्याज दर ५॥) सैकड़े साल मिलेगा और दस वर्ष में १००) असल का प्रति सैकड़े मिलेगा।

सबों का दस वर्ष का हिसाब लगाकर बताइये। १५

३ (क) यदि ५१ मिती की मुद्दती हुंडी का भाव दर ≈) बट्टे में है तो ११ मिती की दर्शनी का क्या भाव पड़ा?

(ख) यदि आप किसी कोठी में ॥) सैकड़े ब्याज पर रुपया जमा करते हैं तब तो छमाही ब्याज मिलता है और यदि उसी हिसाब से १८० मिती की हुण्डी दर ≡) सैकड़े बट्टे में लेते हैं तो ब्याज पहिले से कट जाता है। बताइये इन दोनों में क्या अन्तर है और कितने सैकड़े का। १५

४ (क) ११४।Ṣ५।⸗ चावल दर Ṣ५॥ के बदले में Ṣ८।- का गेहूं कितना मिलेगा?

(ख) आपने ५५Ṣ५Ṣ४ मामूली सोना दर २५) तोले के ख़रीदा और उसे छनवा डाला, ⸗) तोला छनवाई का लिया-

रिये को दिया। उसमें पचास तोला सोना साफ़ दर ३०॥) तोले का और पाँच तोले चाँदी दर १⁄) भरी के भाव की निकली तो बताइये इस रोज़गार में कितने सैकड़े का मुनाफ़ा हुआ। १५

५ यदि किसी काम को २५ आदमी आठ घण्टा रोज़ काम करके १० दिन में समाप्त कर सकते हैं तो उसी काम को ३० आदमी सात घण्टा रोज़ काम करके कितने दिनों में करेंगे? १०

६ यदि एक वर्गगज़ सड़क बनाने में दो आना व्यय होता है तो एक मील लम्बी और ६ फुट चौड़ी सड़क की बनवाई क्या होगी। १०

७ बारह आने सैकड़े महीना के हिसाब से ५००) का छै-छै महीने ब्याज असल में जोड़ते जायें तो पाँच वर्ष में कितना हो जायगा? १०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

मुनीवी परीक्षा १९७७

बहीखाता

समय ३ घन्टे

पूर्णाङ्क १००

[परीक्षक—श्री० गौरीशङ्करप्रसाद, बी० ए० एल-एल० बी०]

(स्वच्छता तथा स्पष्टता के लिये १० अङ्क हैं।)

१—भिन्न भिन्न बहियों के नाम तथा उनकी उपयोगिता को अलग

अलग संक्षेप में बताइये और उदाहरण देकर समझाइये कि किस प्रकार का काम या व्यवहार किस बही में लिखा जायगा? १०

२—शिवप्रसाद ने आपकी आढ़त में ४३८ बोरे गेहूँ भेजे, जिसका रेल-भाड़ा।≈) मन और चुंगी ~)॥ मन तथा लदाई-उतराई इत्यादि)॥ मन आपने उनके बद्द में दिया—हर बोरे में २S माल है—माल पेटे आपने ५०००) उनके पास भेजा। दूसरे व्यापारियों के हाथ सौदा पक्का किया १०० बोरा रामचरण के हाथ दर S६।—१०० बोरा लक्ष्मणप्रसाद के हाथ दर S६। १५० बोरा भरथदास के हाथ दर S६≋ और बाक़ी सब हनूमानप्रसाद के हाथ दर S६≈ में। इन लोगों ने दो दिन बाद माल तौला लिया। किसी बोरे में S~ S≠ कम किसी में बेशी तौल होता था और हर बोरे की तौल एक बही में लिखी जाती थी। अन्त में जोड़ने पर परते साथ फ़ी बोरा दो मन के हिसाब से ही उतरा। रामचरण ने दाम ५००) दिये—लक्ष्मणप्रसाद ने ७००) और भरथदास ने कुल उधार लिया और हनूमानप्रसाद ने चुकता दाम दे दिया। आप के पास पहिले दिन ५७८१≋) रोकड़ थी। कुल माल बिक जाने पर अपने व्यापारी शिवप्रसाद के नाम आपने ℞) सैकड़े आढ़त और ≠) सैकड़ा और खर्च नाम लिखा और जो कुछ उनका हिसाब निकला उनके पास पुर्जे के साथ भेज दिया।

ऊपर के व्यवहारों को बही में महाजनी रीति से जमा-

ख़र्च कीजिये और जिन वहियों में जो-जो माल आप लिखें उनका नाम बताते जाइये।

३—गयाप्रसाद की लिखी रामप्रसाद कलकत्ते वाले ऊपर और घनश्यामदास के रखे की ५०००) की हुण्डी को मिती जेठ वदी ७ से दिन ५१ पीछे की दर २) सैकड़े बट्टे में खरीदा और अपने कलकत्ते के आढ़तिया दामोदरदास के पास भेज दिया—
(क) इस हुण्डी का व्यवहार अपनी वही में महाजनी रीति से लिखिये। ७

(ख) दामोदरदास इस हुण्डी को पाकर क्या करेंगे? दामोदरदास की वही में भी इसका कैसे ख़र्च होगा, स्पष्ट रूप से वही की रीति के अनुसार लिखिये। ८

४—खतौनी या लेखा वही किसे कहते हैं। इसको काम में लाने से क्या लाभ होता है और इसे न लिखने से क्या कठिनाई हो सकती है—इसे कब-कब लिखना चाहिये और क्यों? १०

५—नीचे लिखे शब्दों से आप क्या समझते हैं—पड़ता, खाता ड्योढ़ा, बट्टा, रोकड़ बाक़ी, मुद्दती हुण्डी, दर्शनी हुण्डी, हुण्डी का खोखा, पैठ जाकड़ माल पल्लीदार। १०

६—फिक्स डिपाज़िट, सेविंग्स बैंक, एकाउण्ट और करेंट एकाउण्ट का अन्तर स्पष्ट दिखलाइये। पासबुक, चिकबुक, विद्ड्राअल रिसीट, डिसकाउण्ट, प्रामेसरी नोट से आप क्या समझते हैं? १०

७—महाजनी लेख की नागरी प्रतिलिपि कीजिये। [साथ का परचा देखिये।] १५

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग।

मुनीवी परीक्षा १९७४

गणित

समय तीन घण्टे

पूर्णाङ्क १००

[परीक्षक—बाबू गौरीशङ्करप्रसाद, बी० ए०, एल-एल०, बी०]

(स्वच्छता तथा स्पष्टता के लिये १० अङ्क हैं)

१—आपकी वही में गङ्गादीन का यों हिसाब लिखा है—

६००) सावन सुदी १५	८००) आषाढ़ वदी १२
५२५) भादों वदी ११	१०००) सावन वदी ६
१७००) भादों सुदी ५	१५००) सावन सुदी १३
२०००) भादों सुदी १५	१०००) कुआर वदी ०
१५००) कुआर वदी ५	१५००) कातिक वदी ६

ऊपर लिखे सरखत का व्याज महाजनी रीति से फैलाइये और कातिक वदी १५ तक का महीना आँक रखकर ℔) सैकड़े का व्याज लगाइये। २०

२—५७६। ऽ७॥= चावल दर ऽ५।- वालेके वदले मे गेहूं दर ऽ६= का कितना मिलेगा ?

३—१०००) रुपया दर ॥) सैकड़े व्याज पर इस शर्त से दिया कि हर महीने व्याज असल में जुड़ जाया करेगा और उस पर भी व्याज लगता रहेगा तो एक सालमें कुल कितना हो जायगा। साल के अन्त में जो व्याज इस प्रकारसे हुआ वह सादा व्याज कितने सैकड़े पड़ा ? १०

४—आपके पास कुछ रुपया है तो नीचे लिखी रीतियों से लगानेमें अलग-अलग कितना सैकड़े व्याज पड़ेगा ?

(क) सर्कारी ३॥) सैकड़े प्रामेसरी नोट दर ५६) के भाव में

(ख) युद्ध ऋण ५॥ सैकड़े वाला दर ६८) के भाव में

(ग) युद्ध ऋण ५) सैकड़े व्याज वाला दर ६३) के भाव में

(घ) ५१ मिति की मुद्दती हुण्डी दर १।-) सैकड़े वट्टे की

(ङ) ७॥) सैकड़े व्याज का प्रिफरेंस शेयर दर ११०) के भावमें

५—एक कोठरी २० गज़ लम्बी १६ गज़ चौड़ी और ५ गज़ ऊंची है। उसकी चारों दीवारों में कपड़ा मढ़ना है, जिसकी चौड़ाई ३ फुट है और दाम ॥) गज़ है। कितना ख़र्च पड़ेगा ? १०

६—५०००) की हुंडी जेठ वदी ५ से दिन ५१ पीछे की आपने जेठ सुदी ३ को १≶) सैकड़े वट्टे में ख़रीदी, तो सादा व्याज कितने सैकड़े का सीझा ? ५

७—चैत सुदी ५ को सोना ८१७) ५) दर २८) में ख़रीदा और असाढ़ वदी ६ को दर ३०।-) तोले वेचा तो कितना सैकड़े व्याज नरा। ५

८—रामने २०००) मिती कातिक वदी १५ को लगाकर दूकान

खोली उसीमें लक्ष्मणप्रसाद माघ सुदी ५ को ५,०००) लगाकर साझी हो गये और फाल्गुन सुद १५ को भरथदास भी ३,०००) लगाकर भागीदार हो गये। आसाढ़ सुद २ को हिसाब करने पर १५६६) नफ़ा जान पड़ा तो किसे कितना नफ़ा मिलेगा और कुल पर कितने सैकड़े का नफा हुआ? १०

६—हमने आज ५,०००) की हुंडी मुद्दती ५१ मिति की दर २) सैकड़ा बट्टे में ख़रीदी तो आज से एक महीने बाद हम उसे कितने बट्टे में बेच दें कि हमें १) सैकड़ेका व्याज पड़ सके। १०

हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रायग।

मुनीमी परीक्षा १९७८

बहीखाता।

समय ३ घण्टे

पूर्णाङ्क १००

परीक्षक—श्री० कस्तूरमल बांठिया, बी० काम०

(स्वच्छता तथा स्वष्टता के लिए भी अङ्क हैं, प्रश्न ५ और ६ अनिवार्य हैं। बाकी में से कोई भी चार कीजिए।)

१—निम्न लिखित शब्दों से आप क्या समझते हैं? मेल लगाना पेटा, आंकड़ा, लेखापाड़, सिकमंद, वृद्धि खाता, जमा बही, हुंडी, चेक, हमारे बट्ट, गिलास। १२

२—पौर्वात्य और पाश्चात्य वहीखाता पद्धति में क्या भेद है? क्या पौर्वात्य पद्धति में भी डबल और सिङ्गल एन्ट्री होती है? आवश्यकतानुसार पाश्चात्य वहियों की खानाबन्दी भी दीजिए। १२

३—चेक से क्या अभिप्राय है? हुंडी और चेक में कितना अन्तर है? चेक रेखाङ्कित कर देने से ग्राही को रुपया मिल सकता अथवा नहीं? रेखाङ्कित कौन कर सकता है और कितने प्रकार से होता है? उदाहरण द्वारा समझाइये। १२

४—टिप्पणी कीजिये।

'जहाँ रोकड़ वही की गति नहीं पहुँचती, वहाँ नक़ल वही ही व्यापारी को सहायता देती है।" ऐसे दो उदाहरण भी दीजिये और इसका स्वरूप भी वर्णन कीजिये। १३

५—मि० चैत्र कृष्ण "संवत् १६७७ को मेरी वहियों में इस प्रकार लेना देना था :—

लेना	लेना
२५०) अग्याराम	५००) गाड़ी घोड़ेका ख़र्च
६००) गोपालदास	३००) मुत्फरक़ात
६००) पापामल	४०००) मेज़ कुरसी आदि सामान मि० का० शु० १ तक
१००००) माल पोते मि० का० शु०१६७७ तक	६०००) कारखाने की मशीनरी

३५०००) माल ख़रीदा	२५००) हुंडियाँ सिकरानी बा०
७५०) भाड़ा, सरकारी लगान आदि दिया	५००) मरम्मत खाते
५०००) मज़दूरी चुकाई	५०००) बैङ्क में जमा
६००) कर्मचारियों को वेतन दिया	१००) पोते बाक़ी

देना	देना
२०००) बाबूलाल के	२०००) हाथ की हुंडी लिख कर दी।
३०००) गुलाब राय के	५०००) छुमनिलाल से ब्याज़ू उधार लिये।

४५०००) माल बिका।

मि० चैत्र शुक्ल १, सं० १६७१ को निम्नलिखित लेन-देन हुआ—पापामल का हिसाब रु० ८५५) लेकर चुकता कर दिया। हुंडी रु० ५००) की कस्तूरमल के ऊपर बैङ्क मारफ़त बटाई हुई पीछी लौट आई और उस पर ।) आने ख़र्चा पड़ा सो बैङ्कने खाते में नाँवें मांड़ दिये।

गुलाबराय का हिसाब ५ टके की छूट से चुकता कर दिया।

रु० २५००) की हुंडियाँ बैङ्क में कुल रु० ४५) बट्टे ने बटा डालीं।

कर्मचारियों के वेतन के लिये बैंक पर चेक एक रु० ३००) का; एक निजी ख़र्च के लिये रु० ५००) का काटा।

सुमतिलाल को आज मिती तक ब्याज के रु० ५०) दिये।

माल कुल उक्त मिती तक हमारे पास रु० ६०००) का शेष रहा

उपर्युक्त लेन देन की रोकड़ एवम् आवश्यक खाते तैयार कर बताईये कि, मेरा क्या लेना-देना है और मुझे गत ५ महीनों में कितना लाभ रहा है। माल-सम्बन्धी सारा ख़र्च माल-खाते में ही लगाइये और वृद्धि खाता भी दिखाइये २५

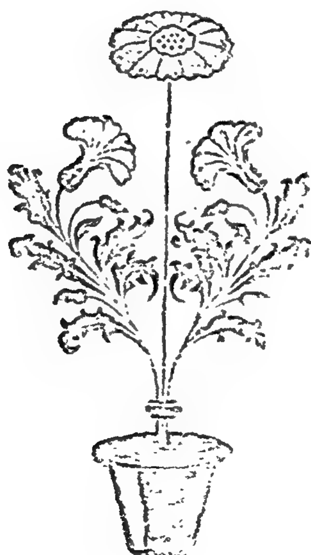
६—मि० फाल्गुन कृष्ण ५ संवत् १६७७ को मैंने बम्बई से सरूपचन्द हरिचन्द कलकत्ते वाले के ऊपर ४१ मिती की हुण्डी १ रु० ३२५०) की शेरसिंह कल्याणमल कोटा वाले को लिख कर दी; जिसे उन्होंने कोटे में जुहारमल गम्भीरमल को ६८॥~) के भाव से बेच दी।

उपर्युक्त हुण्डी लिख कर धनीवार बेची कीजिये। और इसका तीनों व्यापारियों की वहियों में जमाख़र्च भी कीजिये। इस हुण्डी पर टिकट कितने लगाने होंगे? २०

७—श्रीयुत यज्ञदत्त पुस्तक-विक्रेता का व्यापार करना चाहते हैं और वह आपको अपने हिसाब-किताब रखने के काम पर नियुक्त करते हैं। बतलाइये कि आप कौन-कौन सी वहियाँ रखेंगे और उनका किस प्रकार उपयोग करेंगे? मुख्य वहियों के अतिरिक्त कितनी सहायक वहियों की आवश्यकता होगी। १२

८—मि० अगहन सुदी ७ को जीवराज नेणसी के यहाँ से आपने

माल रु० २०००) का खरीदा; इस शर्त पर कि अगर आप रु० उस रोज़से एक महीने में दे दें तो ।) सैकड़े का वह व्याज काट देगा। अगर नहीं तो उसे मिती जेठ सुदी ७ पूगती हुण्डी पूरे दामों की लिखकर देनी होगी। अब यदि उसके बैंक में इस समय रु० ४०००) ३ टके सैकड़े के व्याज से चालू खाते में जमा है तो बताइये उसे क्या करना चाहिये ? १२



परिशिष्ट "क"

दि मारवाड़ी चेम्बर आफ कमर्स बम्बई के हुण्डी चिट्ठी के क़ायदे।



(१) बाहर दिसावरकी लिखी हुई हुण्डी बम्बई में नीचे लिखे मूजब सिकारनी और सिकरानीः—

(क) हुण्डी दिन ११ से कमती मुद्दत की होय, जिसमें गिलास नहीं।

(ख) हुण्डी में मुद्दत दिन ११ से दिन २० ताई की होय, जिसमें गिलास दिन ३ गिनना। खरे दिन में गिलास गिनना नहीं।

(ग) हुण्डी दिन २० से ज़ियादा मुद्दत की होय, जिसमें गिलास दिन ५ गिनना।

(घ) हुण्डी पहुँचा तुरत की में गिलास नहीं गिनना। जिस दिन हुण्डी दिखाई जाय उसी दिन रुपया लेना-देना।

(ङ) हुण्डी मुद्दती कलकत्ते की या अन्य दिसावर की दिन २० से ज़ियादा की में गिलास वारोंके हिसावसे दिन ४ गिनना और दिसावर की हुण्डी में मिती के हिसाव से दिन ५ गिनना, वार लिखा होय तोभी मिती गिननी। यदि वेङ्क जोग आवे तो मिती तीन गिननी।

(२) हुण्डी पहुँचे तुरत की दिसावर से आवे, उसमें जो मिती लिखी होय उसके दूसरे दिन भुगतान लेना-देना। कदाचित् हुण्डी फिरती-फिरती आवे और उसमें देर लगे, तो जिस दिन हुण्डी नियमित समय में दिखाई जाय, उसी दिन रुपया लेना-देना।

(३) हुण्डी जिस दिन देखी गई हो, उस दिन से २—३ दिन खड़ी रहे, उसके बीचमें तिथी कमती हो जाय या बढ़ती हो जाय, जिसका व्याज इस मुजब लेना देना :—

(क) हुण्डी सुदी १ को दिखाई गई हो और सुदी २—३ शामिल हो, उस दिन भुगतावन आवे तो मिती १ और सुदी ४ को भुगतान लिया दिया जाय तो मिती ३ लेनी देनी।

(ख) कदाचित् हुण्डी सुदी १ को देख या दिखाई होय और दूज २ होजाय और तीज को भुगतान दे, तो मिती २ लेनी देना।

(ग) कदाचित् हुण्डी सुदी १ पहिली को दिखाई होय और दूसरी १ होय और उसका भुगतान दूसरी १ को-दिया-लिया जाय तोभी मिती १ लेनी-देनी, तथा २ की मिती को भुगतान दिया-लिया जाय तोभी मिती १ लेनी देनी।

(४) हुंडी दिसावर से आई हुई खड़ी रहे, तो व्याज मिती गिन कर मारवाड़ी साथ में दर ॥) अंकेन आठ आना के हिसाब से लेना-देना तथा गोढ़वाड़िये, गुजराती, पञ्जाबी आदि जो इस चेम्बर के मेम्बर हों उनके साथ भी दर ॥)

लेना-देना, इनके सिवाय और लोगों से ॥।) अंकेन बारह आना के हिसाब से लेना देना।

(५) हुंडी दर्शनी पहुँचा तुरत में जो मिती होय उसके नीचे लिखी मिती एकसरखी नहीं, दूसरी मिती होय तो हुंडी का रुपया लेनेवाला धनी पूरा स्टैम्प मुद्दती हुंडी के क़ायदे मुजब लगावे, या भूल से लिखी गई हो तो सुधरवा कर मगावे।

(६) हुंडी दर्शनी और मुद्दती जिसकी मुद्दत उसी दिन पकती होय तो ४॥) बजे (स्टेण्डर्ड) तक नक़ल लेनी-देनी। कदाचित् हुंडी मुद्दती ४॥) बजे (स्टै० टा०) पीछे हुंडी वाला धनी दिखावे तो नक़ल जब तक सरकारी बत्ती नहीं लगे तब तक लेनी देनी, परन्तु पकती हुंडी का भुगतान दूसरे दिन गली मिती मूजब लेना-देना।

(७) मुद्दती हुण्डी गली मिती की हुंडी वाला ऊपरवाले को दिखावे, जिसका भुगतान दूसरे दिन लेना-देना।

(८) हुंडी मुद्दती स्टैम्प पर लिखी होय, उसकी पैठ लिखावे तो पैठ दिखानेवाला धनी स्टाम्प एक्ट के धारा मूजब स्टाम्प देवे।

(९) हुंडी दिसावर की मुद्दती कमती स्टाम्प पर लिखी आवे, तो हुंडी दिखानेवाला धनी स्टाम्प पूरा लगा दे।

(१०) हुंडी ऊपरवाला धनी खड़ी रक्खे जिसकी विगतः—

[क] हुंडी मुद्दती तथा दर्शनी ऊपरवाला धनी खड़ी रक्खे, तो

जिसके यहाँ हुण्डी लेनी आवे वह दिन ३ पक्के गिनकर खड़ी रख सकता है। चौथे दिन अगर हुण्डी पर जिकरी चिट्ठी नहीं होय, तो चेम्बर में नोंधवा कर, छाप लगवा कर पीछी भेज सकता है।

(ख) अगर किसी हुंडी पर जिकरी चिट्ठी लिखी होय तो चौथे दिन जिकरी वाले को बतावे। अगर जिकरीवाला उसी दिन रुपया भर देवे तो ठीक, और जो रुपया नहीं भरे तो जिकरीवाले को दिखाने के दूसरे रोज़ चेम्बर में नोंधवा कर और छाप लगवा कर पीछी भेज दे।

(ग) जिस हुण्डी पर जिकरी १ से ज़ियादा हो, तो हुण्डी पहली जिकरी वाले को दिखानी, पीछे तरतीब वार और जिकरी वालों को दिखानी।

(घ) दिन ३ पक्के का ब्यौरा इस प्रकार है:—सुदी १ को हुण्डी बतावे तो सुदी ३ तक खड़ी रख कर सुदी ४ को चेम्बर में भेज कर छाप लगवावे, यह दिन मिती के हिसाब से गिनना। (यह क़लम बिना जिकरी की हुण्डी के लिये है)।

(११) हुण्डी का सौदा बम्बई में बाहर दिसावर का हो, तो हुण्डी नीचे लिखे मूजब लेनी-देनी, इस उपरान्त दे तो ब्याज का दर ॥) की लेनी-देनी :—

(क) हुण्डी दर्शनी का सौदा होय तो ४॥ बजे (स्टै० टा०) तक (हुण्डी) लेनी-देनी।

(ख) हुण्डी मुद्दती हो तो तीसरे दिन रात के बारह बजे तक (स्टै० टा०) तक लेनी-देनी।

(१२) हुंडी अमावस तथा पूनम की सौदे की होय, तो नीचे लिखे मूजब लेनी-देनी, उपरान्त दे तो व्याज दर ॥) का लेना देना :—

(क) हुंडी दर्शनी होय तो रातको १२ बजे (स्टै० टा०) तक लेनी-देनी।

(ख) हुंडी मुद्दती का पुर्जा हो तो वदी ५ तथा सुदी ५ का रात के १२ बजे (स्टै० टा०) तक लेनी-देनी।

(ग) हुंडी मुद्दती हाथ की लिखी हो तो तीसरे दिन रात के १२ बजे (स्टै० टा०) तईं लेनी-देनी।

(१३) हुंडी लेनेवाला धनी पैठ मांगे तो नीचे लिखे मूजब लेनी देनी, उपरान्त दे तो व्याज दर ॥) का लेना-देना।

(क) हुण्डी बम्बई की लिखी हुई हो, तो दिन ३ के अन्दर पैठ लिख कर देनी।

(ख) हुण्डी दूसरे दिसावर को लिखी हुई हो, तो पैठ दिन २१ ताईं लेनी-देनी।

(१४) हुण्डी सिकरे बाद रुपया लेकर खोखा भरपाई कर दे, और खोखा गैरबदल पड़ जाय यानी खो जाय और रुपया भरने वाला रसीद माँगे तो रुपया लेनेवाला लिख कर दे, लेकिन स्टाम्प लिखानेवाला दे :—

(१५) हुण्डी ऊपरवाला धनी नहीं सिकारे और जिकरी वाला

धनी सिकारे, तो पीछे भी अगर रुपया ऊपरवाला धनी देना चाहे तो जिकरीवाला धनी हुण्डी पीछी नहीं गई हो जहांतक व्याज धारा मूजब और आढ़त दर ≈) सैंकड़ा लेकर रुपया ले ले और हुण्डी दे दे और रसीद लिख दे, (स्टाम्प -) का रसीद लिखाने वाला देवेगा)।

(क) हुण्डी बैङ्क जोग ऊपरवाला सही नहीं करे और जिकरी वाला सही करे और मुद्दत पर रुपया ऊपरवाला धनी दे, तो ≈) सैकड़ा की आढ़त सहित रुपया लेना।

(ख) हुण्डी बाज़ार जोग जिकरी वाला सिकारे तो हुण्डी यहां के सरिश्ते मूजब रक्खे और रुपया ऊपरवाला देवे, तो आढ़त व्याज सहित रुपया ले लेवे।

(१६) हुण्डी के भुगतान में ऊपर वाला रोकड़ा रुपया दे तो नीचे लिखे मूजब लेना :—

(क) रोकडा रुपया तोड़ा १ रु० १०००) से २५००) तक का होय, तो रुपया लेनेवाला दूसरी जगह भेजे वहां जाना।

(ख) रोकड़ा रुपया तोड़ा १ से ज़ियादा हो और दूसरी जगह भेजे तो एक जगह जाना।

(ग) रोकड़ा रुपया ६००) तक होय, तो लेनेवाला घरमें संभाल ले, दूसरी जगह नहीं भेजे। अगर उसी दिन रोकड़ा रुपया न ले तो रातको या दूसरे दिन बारह बजेके पहले चेम्बर के मारफत भेज देवे।

(१७) रोकड़ा रुपया तोड़े में से बदलना हो, तो रुपया देने वाले से पीछा बदलवा लेना।

(१८) हुण्डी मुद्दतीका भुगतान पूगती मिति टूटती हो, तो शामिल मिती में भुगतान लेना, दूसरे दिन भरे तो १ मिती लेनी।

(१९) हुण्डी मुद्दती का भुगतान पूगती में मिती २ हो तो पहली मिती या दूसरी मिती में भरे तो ब्याज नहीं लेना-देना।

(२०) हर एक बाबत में मेजर का काम पड़े तो चेम्बर में अर्जी करे और सेक्रेटरी द्वारा मेजरनामा मैनेजिङ्ग कमेटी का कराया जाय।

(२१) हुण्डी बम्बई की अथवा दिसावर की लिखी हो और वह हुण्डी दिसावरमें खड़ी रहे तो हुण्डी लेनेवाला धनी जिकरी चिट्ठी माँगे तो जिकरी चिट्ठी देनी, कदाचित् जिकरी चिट्ठी नहीं माँगे और हुण्डी दिसावर से पीछी आवे, तो उस दिसावर के धारे मुजब हुण्डी ठीक पीछी आने की खातरी किये पीछे निकराई-सिकराई लेनी-देनी।

(२२) हुण्डी किसी दिसावर की हो और दिसावर में जाकर नहीं सिकरी हो, तथा जिकरी चिट्ठी दी हो तो वह भी नहीं सिकरी हो और जिकरी हुण्डी पीछी आवे, पीछे से दिसा-वर वाला रुपया लेकर रसीद लिखा दे तो वह रसीद कबूल नहीं करनी, निकराई-सिकराई लेनी।

(२३) हुण्डी का सौदा दूसरे दिसावर का हो, तो दूसरे दिसावर का लिखा हुआ पुर्ज़ा खरीदने वाले की खुशी हो तो लेगा।

(२४) हुण्डी का भुगतान करने की रीति :—

(क) हुंडी दिसावर की तैयार ले तो उसका भुगतान ४॥ बजे (स्टै० टा०) ताईं लेना-देना।

(ख) हुंडी दिसावर की अमावस या पूनम का भुगतान सरकारी बत्ती हो जहाँ तक लेना-देना।

(ग) सरकारी बत्ती लगे पीछे भुगतान आवे तो मिती लेना।

(घ) यहाँ हुंडी देनी लगे उसका भुगतान सरकारी बत्ती लगे पहले लेना-देना

(२५) खाते पेटे रुपया भेजे तथा आवे, जिसमें मिति घटी-बढ़ी हो गिननी नहीं, सुदी १—२ शामिल हो और रुपया ३ को आवे तो मिती २ लेनी तथा सुदी १ दो हों और रुपया २ आवे तो मिती १ लेनी। कदाचित् सुदी १ दो हों तो पहली एकम का रुपया भेजे और दूसरी एकम में रुपया आवे तो मिती १ लेनी और ज़ियादा दिन रुपया रहे तो बढ़ी मिती नहीं गिननी। खाते पेटे के रुपया ४॥ बजे (स्टै० टा०) तईं लेना-देना।

(२६) हुंडी तथा चिक के बदले में नोट या रुपया लेना, चिक नहीं लेना, अगर रोकड़ा नहीं दे तो हुंडी या चिक चेम्बरमें दिखा कर पीछा फेर देना और निकराई-सिकराई के लिये चेम्बर से मेजरनामा करा लेना।

(२७) जो ड्राफ्ट या चिक आफिसवाले के ऊपर आवे और दाम खड़ा रक्खे तो व्याज रुपया ।=) लेना और व्याज नहीं दे तो

चेम्बर में दिखा कर पीछा भेज देना और निकराई-सिकराई के लिये मेजरनामा कराना ।

(२८) हुण्डी दिखाये पीछे यदि खो जावे तो रुपया भर कर रसीद ले लेनी और जो रसीद न ले और पैठ माँगे तो पैठ मंगाकर लेनी-देनी, लेकिन व्याज हुंडी दिखाई मिती से चालू रहेगा तिथि की गिन्ती मुम्बई समाचार के पञ्चाङ्ग से करनी ।

(२९) हुण्डी तथा चिक कोई भी दिसावर से पीछे आवे तो निकराई-सिकराई दर १।।) सैकड़ा लेनी चिट्ठी २ रजिस्ट्रीका ख़र्च लेना तथा व्याज दर ।।।) के हिसाबसे रुपया भरे जिस मिती से पीछा रुपया मिले तब तक का लेना; हुण्डावनके भावका फ़र्क़ लेना नहीं तथा कोई असामी कच्ची रह जावे और हुंडी पीछे आ जावे, तो उसकी निकराई-सिकराई ऊपर मूजब लेनी ।

(३०) आफिसवाले, बैङ्क तथा दी बाम्बे सराफ-महाजन के चेम्बर जिस दिन लेन-देन बन्द रखते हैं, उस दिन यदि कोई हुंडी की नक़ल देने आवे, तो लेनी नहीं ।

(क) बैङ्क और आफिस वालों की मारफत हुंडी आवे, तो ३ बजे (स्टे० टा०) और शनिवार को १ बजे (स्टे० टा०) पीछे नक़ल लेनी नहीं; दूसरे दिन लेनी ।

(ख) सराफ-महाजन धारे वालों की हुंडी आवे तो मुम्बई टाइम ३ बजे तक नक़ल लेनी, भुगतावन ६ बजे (मु० टा०) तक लेना देना । पीछे आवे तो व्याज दर ।।।) लेना ।

परिशिष्ट "ख"

हुण्डी-स्टाम्प।

हुण्डियों पर स्टाम्प इस भाँति लगाना चाहिये।

(१) दर्शनी हुण्डी जो रुपये २०) से ज़ियादा की हो, उस पर -) आना।

(२) मुद्दती हुण्डी जिसकी मुद्दत एक वर्ष से ज़ियादा न हो, उस पर इस भाँति :—

मुद्दती हुण्डी पर टिकट।

रुपये-तक	पौंड-तक	फ्रांक-तक	मार्क-तक	येन-तक	टिकट यदि एक होनो	टि० यदि दो होतोहरेकपर	टि० यदि३हो तो प्रत्येकपर
२००	२०	३३३	२६६	१३३	≡)	=)	-)
४००	४०	६६६	५३३	२६६	।=)	≡)	=)
६००	६०	१०००	८००	४००	॥-)	।-)	≡)
८००	८०	१३३३	१०६६	५३३	॥।)	।=)	।)
१०००	१००	१६६६	१३३३	६६६	॥।≡)	॥)	।-)

१२००	१२०	२०००	१६००	८००	१=)	॥-)	।=)
१६००	१६०	२६६६	२१३३	१०६६	१॥)	॥।)	॥)
२५००	२५०	४१६६	३३३३	१६६६	२।)	१=)	॥।)
५०००	५००	८३३३	६६६६	३३३३	४॥)	२।)	१॥)
७५००	७५०	१२५००	१००००	५०००	६॥।)	३।=)	२।)
१००००	१०००	१६६६६	१३३३३	६६६६	९)	४॥)	३)
१५०००	१५००	२५०००	२००००	१००००	१३॥)	६॥।)	४॥)
२००००	२०००	३३३३३	२६६६६	१३३३७	१८)	९)	६)
२५०००	२५००	४१६६६	३३३३३	१६६६६	२२॥)	११।)	७)
३००००	३०००	५००००	४००००	२००००	२७)	१३॥)	९)
प्रति रु० १००००)	प्रति पौंड १०००)	प्रति १६६६६ फ्रांक	प्रति १३३३३ मार्क	प्रति ६६६६६ येन	९)	४॥)	३)

(३) मुद्दती हुण्डी जिसकी मुद्दत १ वर्ष से ज़ियादा की हो उस पर इस भाँति :—

रु० १०) से कमके लिये			=)
रु० १०) से कम और ५०) से जियादा			।) ८००) ९००) ४॥)
५०)	,,	१००)	॥) ९००) १०००) ५)
,, १००)	,,	२००)	१) हज़ारसे ज़ियादा पर
,, २००)	,,	३००)	१॥) प्रत्येक ५०० पर
,, ३००)	,,	४००)	२) अथवा न्यूनतर २॥)
,, ४००)	,,	५००)	२॥)
,, ५००)	,,	६००)	३)
,, ६००)	,,	७००)	३॥)
,, ७००)	,,	८००)	४)

परिशिष्ट "ग"



बम्बईके भिन्न-भिन्न तोल

तोल पीठिका १

३६ तोले=१ रतल

२८ रतल=१ कार्टर अथवा बम्बई का मन

४ मन=१ हंडरवेट

७ हंडरवेट=१ खण्डी रूई की

२० हण्डरवेट=१ टन

१ पिकल=१३३$\frac{१}{३}$ पौंड

पंसारियों की तोल की पीठिका २

२८ तोला=१ सेर

४ सेर=१ पायली

१६ पायली=१ फरा

८ फरा=१ मंडी

नोट :—बम्बई का मामूली सेर २८ तोले का होता है।

पीठिका ३

१ बम्बई मन=६।।।) सूरती मन
=सूरती ४१ से २६। सेर
= " ४२ ,, २६।।-।। ,,
= " ४३ ,, २७॥=) ,,
= " ४४ ,, २७। ,,
= बङ्गाली सेर १४ का

[बङ्गाली सेर ८० तोलों का होता है।]

सूरती मन १ =	बङ्गाली सेर	१८॥=॥
सूरती ४१ का मन १ =	" "	१६
" ४२ " " =	" "	१६॥
" ४३ " " =	" "	२०
" ४४ " " =	" "	२०॥

सोने-चाँदी के तोलकी पीठिका ४

४॥ ग्रेनका =१ वाल
४० वाल =१ तोला
२$\frac{३}{४}$ वा २॥=) तोला =२ आउन्स

परिशिष्ट "घ"

बम्बई में वैदेशिक हुण्डी का भाव।

लन्दन पर

बैङ्क की हुण्डी टी० टी (T.T) १·३ ३१/३२—१·३ ३९/३२ प्रति रुपया

,, डी० डी (D.D) १·४ —१·३ १५/१६ ,,

बैङ्क खरीदता है डी० प ३ महीनेके १·४ ५/१६

पेरिस पर बैङ्क की हुण्डी	डी० डी (D.D)	३४३ फ्राङ्क	प्रति सौ रुपया
जापान	टी० टी	१७०-१७२ रुपये	प्रति सौ येन
हांकाङ्ग	डी० डी	१९८-२०० रुपये	,, सौ हांकाङ्ग डा०
सिङ्गापुर	डी० डी	१७४-१७६ रुपये	,, सौ डालर
शंघाई	,,	२७६-२८० रुपये	,, सौ डालर
न्यूयार्क	,,	२६०-२६४ रुपये	,, सौ डालर

परिशिष्ट 'ङ'

दि बुलियन मर्चेन्ट्स एसोसियेशन बम्बई।

व्यापार सम्बन्धी नियम।

(२०) ऐसोसियेशन के सभासद् सोना और चांदी के व्यापार में नीचे के नियमों का पालन करेंगे और ऐसोसियेशन के सभासदों के साथ सोना-चांदी के व्यापार करने वाले हर एक व्यक्ति को ऐसोसियेशन के निमय लागू होते हैं।

(२१) ऐसोसियेशन के सभासदों के सिवा अन्य किसी के साथ सौदा नहीं करना होगा।

(२२) यदि असामी से किसी प्रकार का बखेड़ा पड़ जाय तो सीधी ऐसोसियेशन को अर्जी देनी चाहिये। उसे अर्जी दाखिल करने की फीस का एक १) रुपया उसी के साथ भेजना होगा तथा डिलेवर आर्डर न मिलने सम्बन्धी या नीलाम करने की नोंध कराना चाहे, तो उसकी फीस का १) रुपया भेज देना होगा।

(अ) टाइम—सौदा हमेशा सवेरे दस बजे से साढ़े पांच बजे तक और रविवार को सवेरे दस बजे से दोपहर के दो बजे तक किया जायगा।

(ब) निर्धारित समय के विरुद्ध जो कोई सौदा करेगा उसके लिये कमेटी विचार करेगी और ऐसे सौदे का बँधा हुआ बाँध आदि कमेटी नहीं चुकायेगी।

सौदे के वायदे के नियम।

(२३) वायदा।

(अ) सोने का वायदा हर एक महीने को सुदी १५ को माना जायगा।

(ब) सौदा २५० तोले से कम का नहीं होगा।

(क) चलण में सैकड़े पर एक टका छूट देने लेने का नियम है, वे ऐसे वायदों में काम में न आयेगी।

(२४) तेजी-मन्दी का निर्णय सुदी १३ को दिन के तीन बजे होगा अगर उस दिन रविवार हो, तो एक बजे बोली बोल दी जायगी। परन्तु यदि सुद १३ को बाज़ार बन्द हो, यदि सुदी १३ को शनि हो, तो सुदी १४ को तेजी-मन्दी का भाव बोला जायेगा। यदि सुदी १३ दो होंगी, तो पिछली तेरस ही गिनने में आयेगी।

(२५) हवाला सुदी १४ से शुरू किया जायेगा और हवाला उपस्थित होने से बँधनकर्त्ता माना जायगा।

(२६) डिलीवरी आर्डर—चिट्ठी बैंङ्क अथवा व्यापारी गद्दी के ऊपर की एक ठिकाने पर भेजनी होगी। पर, यदि उस बैंङ्क में माल न हो, तो दूसरे बैंङ्क में भेजी जा सकेगी।

(व) चिट्ठी या डिलीवरी आर्डर वदी १ से वदी ५ को दिन के चार वजे तक दी-ली जायेगी। चिट्ठी एकही-वैङ्क की अथवा ग्राम के एक ठिकाने की लिखनी चाहिये।

निश्चित समय चार वजे के वाद चिट्ठी का सौदा नहीं होगा और वदी ५ को वारह वजे तक सौदा करना वन्द कर दिया जायगा।

(क) वेचने वाला धनी लेने वाले धनी को यदि वदी ५ के दिनके ४ वजे तक चिट्ठी नहीं दे, तो वदी ७ को दो वजेसे साढ़े पांच तक लेने वाला धनी वेचने वाले धनी के हिसाब से बाज़ार में से ऐसोसियेशन की मारफ़त माल ख़रीद ले और उसी प्रकार ख़री-दने में हुई नुक़सानी लेने वाले धनी से वसूल कर ले।

(ख) यदि लेनेवाला धनी माल की डिलीवरी वदी ६ के ५ वजे तक नहीं ले जाये, तो चिट्ठी लिखनेवाला धनी वद ७ के दिन १२ से ३ वजे तक उसकी नोंध एसोसियेशन में कराये। वदी ८ के दिन माल ऐसोसियेशन की मारफ़त ज़ाहिर नीलाम से वेच डाले एवं नुक़सानी लेने वाले धनी से वसूल कर ले।

(ग) चिट्ठी के लिख भेजने वाद चिट्ठी का माल ठहरी हुई मियाद के मुताविक़ किसी भी समय पर डिलेवर लेने के लिये तैयार होने पर भी—चिट्ठी देने वाला धनी माल की डिलेवरी नहीं दे सके, तो उसकी फरियाद ऐसोसियेशन में कर माल डिले-वर लेने के लिये जाने वाला धनी चिट्ठी देने वाले के हिसाव से बाज़ार में से ऐसोसियेशन की मारफत माल ख़रीद सकेगा, पर

उस रीति से माल ख़रीदने से पहले चिट्ठी देने वाला धनी माल ऐसोसियेशन के आफिस में जमा करेगा तो माल के लेने जाने में हुआ ख़र्च उसी प्रकार ऐसोसियेशन की फी के साथ चिट्ठी लिखने वाले को देनी होगी।

(घ) डिलेवरी के समय दर २५०) तोले के ऊपर २५) तोला अनुसार माल अधिक और कम डिलीवरी दी-ली जा सकेगी। उस प्रकार की वढ़-घट का भाव उस समय के बाज़ार भाव से निर्णीत होगा।

(च) वायदे में नम्बर वगैरः का कटका नहीं चलेगा। और इसमें २५ तोला से कम वजन का कटका नहीं लिया-दिया जायगा टन्च वगैरहके पटलेके साथ टकसाल का सार्टिफिकेट देना चाहिये। और सार्टिफिकेटकी नक़ल एकआना लेकर ऐसोसियेशन कर देगी।

(छ) चिट्ठी लेते-देते समय लिखी तारीख़ से दूसरे दिन हर एक हज़ार तोला की चिट्ठी के ऊपर हर एक मिति के व्याज की दर नीचे लिखे अनुसार नक्की करने में आई है।

तोले का भाव रु० २०) तक					व्याज रु०		५)
”	२०) ०।	से	२१) तक	”	”		५)
”	२१) ०।	”	२२)	”	”	”	५॥)
”	२२) ०।	”	२३)	”	”	”	५॥।)
”	२३) ०।	”	२४)	”	”	”	६)
”	२४) ०।	”	२५)	”	”	”	६।)
”	२५) ०।	”	२६)	”	”	”	६॥)

„	२६) ०।	„	२७)	„	„	„	६॥
„	२७) ०।	„	२८)	„	„	„	७)
„	२८) ०।	„	२६)	„	„	„	७।
„	२६) ०।	„	३०)	„	„	„	७॥
„	३०) ०।	„	३१)	„	„	„	७॥
„	३१) ०।	„	३२)	„	„	„	८)

(ज) माल की डिलेवरी देने-लेने में बैङ्क की लगड़ी—और व्यापारियों के विलायती दलालों की छाप की लगड़ी इन्वॉइस के टच के हिसाब से चलेगी।

(झ) चिट्ठी के माल की डिलीवरी में ६६ टच के पहले लेने-देने में आयेंगे। यदि उससे कम टच के दिये जायेंगे तो ८६ टच तक हर एक टच पर आध आना और उससे कम टच के ऊपर हर एक टच पर एक आना माल कढ़वाने की फी ली जायेगी।

चाँदी के वायदे के नियम।

(१) वायदे का

(अ) चाँदी का हर एक वायदा महीने की वद ५ को माना जायगा।

(व) चाँदी का सौदा एक पेटी का तोला २८००) के हिसाब से गिना जायगा।

(२) तेज़ी मन्दी सुदी १५ को दिन के तीन बजे और यदि

रविवार हो, तो एक बजे ठीक ठीक बोली जायगी। परन्तु यदि सुद १५ को दिन में बाज़ार बन्द हो, तो वद १ को दिन में तेजी-मन्दी की बोली बोली जायगी। यदि सुदी की पूनम दो हों, तो दूसरी १५ ही हिसाब में ली जायगी। यदि सुद की १५ का क्षय हो तो वदी १ के दिन तेजी-मन्दी की बोली बोली जायगी।

(३) हवाला वद ३ से शुरू किया जायेगा और उपस्थित होने से वन्धन कर्त्ता गिना जायगा।

(४) वद ५ को १२ बजे तौल की वढ़-घट का भाव ऐसोसियेशन निश्चित करेगी। और इसके बाद चिट्ठी निकालेगी।

(५) वदी ८ को दिनके चार वजे वेचनेवाला धनी लेनेवाले धनी को चिट्ठी दे; यदि उस टाइम तक में न दे तो वदी ८ को दिनके ४ वजे बाद लेनेवाला धनी ऐसोसियेशन को ख़बर देकर वेचनेवाले धनी को नोटिस दे। इतने पर भी यदि वद ७ को दिनके १२ वजे तक वेचनेवाला माल नहीं दे, तो वद ७ को २ बजे के बाद ५॥ वजे तक लेने वाला धनी विक्री की दरके हिसाब से बाज़ार में से ऐसोसियेशन के मारफ़त माल ख़रीद ले और उसी प्रकार ख़रीद किये हुए माल की नुक़सानी वेचनेवाले धनीसे वसूल कर ले।

(६) वदी ६ के दिन चिट्ठी का माल यदि नहीं मिले तो वद १० को, दिन में ऐसोसियेशन में १२ वजे से ३ वजे तक नोंध करा देनी चाहिये, ऐसोसियेशन मारफत जाहर नीलाम से उस माल

को बेच डालेगी और नुकसानी लेनेवाले धनी से वसूल करेगी। इसमें कोई पार्टी हस्तक्षेप न कर सकेगी।

(७) चिट्ठी निकाल देने के बाद चिट्ठी का माल लेते हुए समय के अनुसार किसी समय भी लेने जाने पर चिट्ठी देनेवाली आसामी यदि किसी कारणवश माल की डिलेवरी नहीं दे सके तो उसकी फरियाद ऐसोसियेशनमें कर माल लेनेवाला धनी चिट्ठी निकालने के हिसाब से बाज़ार में से ऐसोसियेशन की मारफत माल खरीद सकेगा। पर उक्त रीति से माल खरीदने से पहले चिट्ठी निकालने वाला धनी माल ऐसोसियेशन के आफिस में जमा करेगा, तो माल निकलवाने में हुआ खर्च उसी प्रकार ऐसोसियेशन की फीस चिट्ठी निकालनेवाले को देनी होगी।

(८) चिट्ठी लिखने की तारीख से दूसरे दिन से तो पाव (।) का, दिन एक का बारह आना लेखे ब्याज लेना-देना।

(९) चिट्ठी के सम्बन्ध में—

(क) बैंक तथा आफिस की, चिट्ठी का लेन-देन दो बजे तक और शनिवार को १२ बजे तक तथा अधिक से अधिक ४ बजे तक देनी-लेनी।

(ख) चिट्ठी बैंक अथवा आफिस अथवा व्यापारी गद्दी दोनों में से एक ही जगह पर करनी।

(ग) चिट्ठी का माल बैंक का तथा आफिस का, तीन बजे तक और शनीवार को १२ बजे तक ले लेना और व्यापारी गद्दी को चिट्ठी का माल पाँच बजे तक लेना।

(घ) चिट्ठी का माल लिखी तारीख़ से दूसरे दिन मिले तो उसका व्याज नहीं लेना चाहिये। हाँ यदि उससे भी पीछे मिले, तो लिखी तारीख़ से दिन गिन कर पहले की चिट्ठी पर व्याज ।॥) आना अनुसार और चाँदी की चिट्ठी पर हर पाट पीछे ।॥) मूजब लेना।

(च) चिट्ठी लिखी तारीख़ से दूसरे दिन यदि बैंक बंद हो जाय तो बेङ्क खुलने के दिन बगैर व्याज के माल दे देना; पर यदि उसके बाद माल ले तो लिखी तारीख के अनुसार व्याज लेना।

(छ) चिट्ठी डिलेवरी आर्डर कि जिस पर ऐसोसियेशन की छाप लगी होगी, वही लेने-देने के व्यवहार में आ सकेगी। उसके सिवाय अन्य चिट्ठी नहीं।

(१०) वायदे में चाँदी कोई भी मिण्ट की—टञ्च ९९६ से ९९९ की—चलेगी और चाँदी की पेटी ८०० औंस से कम वजन की नहीं चलेगी। पर हिन्दुस्थान की मिण्ट की ९९६ टञ्च से हलकी चाँदी नहीं चलेगी। उसी प्रकार हर एक पेटी पर मिण्ट की छाप टञ्च और तोला छपा हुआ देख पड़ेगा।

(११) चलणः—वद १३ को दिन के १२ बजे बाद सौदा बन्द कर चलण करना। पर यदि १३ के दिन बैंङ्क बन्द हो जाय, तो बैङ्क के खुलने पर चलण करना।

(१२) नीलाम।

(क) माल उठाने अथवा माल बेचने का नीलाम ऐसोसियेशन

की मारफत होगा। एवं उसके लिये हरएक चिट्ठी पीछे रु० १) फीस का देना होगा।

(ख) नीलाम के दिन भूल से कोई चिट्ठी नीलाम करने से रह जायगी, तो उसके नीलाम का भाव सेक्रेटरी निश्चित करेगा।

(ग) वायदे की चिट्ठी का माल नीलाम करवाने की अर्ज़ी के साथ पटले के धरम के काँटे की तोल की चिट्ठी तथा पटले का नम्बर और चाँदी के सम्बन्ध में उसकी तोल का आँकड़ा उपस्थित करना होगा और वही तोल नीलाम के समय प्रकट की जायगी। इस तोल में ०। तोला की बढ़-घट के लिये नियम की पाबन्दी न होगी।

(घ) नीलाम करने के दूसरे दिन नीलाम में हुए नुक़सान के आँकड़े ऐसोसियेशन के नीलाम के नोटिस के साथ अपनी पारटी के पास पहुँचा देना।

(च) नीलाम का नोटिस वलण से पहले यदि नहीं पहुँचे, तो उसकी रक़म वसूल करने के लिये ऐसोसियेशन मदद नहीं करेगी।

(१३) किसी भी सभासद् की मृत्यु होने पर यदि कमेटी को उचित जँचे अथवा रु० ५०१) ऐसोसियेशन में देने से बाज़ार बंद हो जायगा।

(१४) यदि सोना-चाँदी पर सरकारी ओर से किसी तरह का कर लगाया जायगा, तो वह ख़रीदार को देना पड़ेगा।

(१५) पटला या चाँदी लेते समय टच का फार्म या इनवॉइस

मौजूद न हो, और पेटे में हिसाव निकलता हो, पिछला हिसाव करते समय हिसाव की जो कुछ वढ़-घट लेनी-देनी पड़े, वह रक़म के लिये हिसाव पीछे रु० १००) अधिक हो ; तो उसके हर सैकड़े पर हर मास ॥।) आने का ब्याज लेना-देना ।



चिकित्सा-चन्द्रोदय।

दो भाग।

इस ग्रन्थ के दोनों भाग पढ़ने से सचमुच ही, मनुष्य, बिना उस्ताद के, वैद्यक-शास्त्र के एक बड़े से बड़े अंशका सच्चा जानकार हो सकता है। प्रत्येक बात इस तरह समझा कर लिखी है, कि अनाड़ी से अनाड़ी सहज में समझ सकता है। पहले भाग में वैद्यों के जानने योग्य नियम, नाड़ी देखना, रोग-परीक्षा करना, जुलाब देना, रोगी की आयु-परीक्षा करना प्रभृति सैकड़ों अनमोल और रोज़ काम में आनेवाले विषय लिखे हैं।

दूसरे भाग में सब रोगों के राजा, कालों के काल, ज्वरों का निदान, कारण, लक्षण और चिकित्सा बड़ी ही खूबी से लिखी है। प्रायः हर रोग पर कुछ न कुछ परीक्षित नुसखे भी दिये हैं। हर मनुष्य को चाहे वह वैद्य का धन्धा करता हो और चाहे न करता हो—ये ग्रन्थ मँगा, रोज़, अवकाश के समय, घंटे दो घंटे, पढ़ने चाहियें। दाम पहले भाग का ३) सजिल्दका ३।।।) दूसरे भाग का ५) सजिल्द का ६) डाक-ख़र्च अलग।

